मंगलाचरण

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिताः, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः १
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनेन प्रतिदिनं, कुर्वन्तु वो मंगलम्, २
स्वस्ति श्रीमदर्हतः, सिद्धासिद्धिपुरी पदम्
आचार्याः पंचधाचारं, वाचका वाचना वराम्,
सावधः सिद्धि साधव्यं, वितन्वन्तु विवेकीनाम्,
मंगलाणं च सर्वेषा, माद्यं भवति मंगलम्, ३
नमः श्रीशांतिनाथाय, सर्वविघ्नापहारिणे,
सर्वलोक प्रकृष्टाय, सर्ववांछित दायिने, ४
जवइ जगजीवजोणी, वियाणओ जगगुरु जगाणंदो,
जगनाहो जगबंधु, जगप्पिया महोभयवं,
जयइ सुआणंपभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ,
जयइ गुरु लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो, १
ऊँकार बिन्दु संयुक्तं , नित्यं ध्यायन्ति योगिनः,
कामदं मोक्षदं चैव, ऊँकाराय नमो नमः २
अज्ञानतिमिरांधानाम्, ज्ञानांजन शलाकया,
नेत्रोन्मिलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ३
पुरि चरिमाणं कप्पो, मंगलं वद्धर्मान तित्थंमि,
इह परिकहिया जिण, गणहराइ थेरावली चरियं ४

श्री आत्मरक्षा-नवकार मंत्र स्तोत्र

ऊँ परमेष्ठि-नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं,
आत्मरक्षाकरं वज्र-पंजराभं स्मराभ्यहं, १
ऊँ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितं.
ऊँ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम्, २
ऊँ नमो आयसरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी,
ऊँ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढं, ३
ऊँ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे,
एसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले, ४
सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहि,
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगार खातिका, ५
स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलं,

वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देह रक्षणे, ६
महाप्रभावा रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव-नाशिनी,
परमेष्ठि-पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः, ७
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा,
तस्य न स्याद् भयं, व्याधि-राधिश्चाऽपि कदाचन, ८

श्री पंचिदिय (गुरु-स्थापना) सूत्र

पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर-गुत्तिधरो,
चउविह-कसायमुक्को, इअ अट्ठारस-गुणेहि संजुत्तो १
पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-विहायारपालण-समथ्यो,
पंच-समिओ-तिगुत्तो, छत्तीस-गुणो गुरु मज्झ २

स्तुति संग्रह

प्रभु सन्मुख बोलने की स्तुतियाँ

सौराष्टमां गिरिराज छे. गिरीराज पर जिनराज छे,
पापी अधम छुं तोय मुजने, तरी जवानी आश छे,
मे सांभल्युं छे तीर्थ आ भव जलधिमांही जहाज छे.
धरुं ध्यान गिरि शणगार, जगदाधार आदि जिणंद हे १
भक्तो तणी भीडमां प्रभु मुजने, न तुं भूली जतो,
दूर दूर थी तुजने निरखवा, आश लई हुं आवतो,
क्षणवार पण तुज मुखना, दर्शन थतां हुं नाचतो,
धरुं ध्यान गिरि शणगार, जगदाधार आदि जिणंद हे, २
हे नाथ तारु मुखडुं जोवा, नयन मारा उल्लसे,
हे नाथ तारा वयण सुणवा, श्रवण मारा उल्लसे,
हे नाथ तुजने भेटी पडवा, अंग अंग समुल्लसे,
धरुं ध्यान गिरि शणगार, जगदाधार आदि जिणंद हे, ३
रुप तारुं एवुं अदभुत, पलक विण जोया करुं
नेत्र तारा निरखी निरखी, पाप मल धोया करुं
हृदयना शुभ भाव परखी, भावना भावित बनुं
झंरवना एवी मने के, हुंज तुज रुप बनुं ४
हीरो हाथमां हतो छतां पण, कांच लईने याचुं छुं,
संत पुरुषनो संग छतां पण रंग रागमां राचुं छुं,
अंगे अंगे वरसी रह्या छे, अंगाराओं गरम गरम,
जन्मो जन्मथी भटकी रह्यो छुं, तोय न आवी मुजने शरम, ५
श्री सिद्धाचल नयणे जोता, हैयु मारुं हर्ष धरे,
ए गिरिवरनो महिमा सुणता, तनडु मारुं नृत्य करे,
कांकरे कांकरे अनंता सिध्या, पावन ए गिरि दुःखडा हरे,

ए तीरथनुं शरणुं होजो, भवोभवना बंधन दूर करे, ६
तारा बिना बीजा कोईने मनमां बंधन दूर करे,
तारी प्रतीक्षा ना आ पुष्पो, खील्या छे मारी निगाहें,
होय उदासी के मायुसी, बधु मने मंजुर छे.
शुं करुं आ दुनियामांथी, तुज मुजथी दुर छे. ७
क्यारे प्रभु निज द्वार उभा, बालने निहालशो,
नित नित मांगु भीख गुणनी, एक गुण मुज आपजो,
श्रद्धा दीपकनी ज्योत झांखी, ज्वलंत क्यारे बनावशो,
सुना सुना मुज जीवन गृहमां, आप क्यारे पधारशो. ८
गिरुआ ताहरा गुणों केटला, रुप सागरो ओछा पडे,
रुप लावण्य ताहरा केटला, रुप सागरो ओछा पडे,
सामर्थ्य एवुं अजोड छे, सहु शक्तिओ ओछी पडे,
तारा गुणोना वाद माटे, मां सरस्वती ओछी पडे, ९
सदगुरुना चरणे रही, स्वाध्यायनुं गुंजन करुं
भविजीयोने देइ देशना, हुं धर्मनुं गुंजन करुं
अणसण करी त्यारे प्रभु, निर्लेप थई मुक्ति वरुं, १०
ज्ञान एवुं मांगु जेथी, अंधकार मुज तूटे,
दर्शन एवुं पामु जेथी, तत्त्व सत्वना खूटे,
संयम एवुं पालुं जेथी, भवना बंधन मुज तूटे,
जन्म जन्मना चक्कर मारा, एक संगाथे तूटे, ११
जे गिरितणां कण कण थकी, साधु अनंता शिववर्या
जेना स्मरणथी पापीओए, सर्व निज पापो हर्या,
जेना समुं तारक तीरथ, त्रण भुवनमां बीजुं नहि,
एवा श्री शत्रुंजय गिरीश्वर, चरणमां भावे नमुं, १२
हे नाथ आदीश्वर तमारा, द्वारमां आवी उभो,
मुज रोमे रोमे हर्ष उछल्यो, निरखता तमने विभो,
तारुं अनुपण रुप जोतां उर ढल्यु मुज प्रेमथी,
मारो जन्म पावन थयो, प्रभु तुज नजरनी रहेमथी, १३
तीर्थो जगतमां कैक छे, तीर्थो तणो तोटो नथी,
शाश्वतगिरिश्री सिद्धगिरि छे, क्यांय तस जोटो नथी.
क्रोडो मुनि मोक्षे गया, लई शरण आ गिरिराजनुं,
धरुं ध्यान गिरि शणगार, जगदाधार आदि जिणंद हे, १४
धरणेन्द्र ने पद्मावतीने, प्रेमथी प्यारा कीधा,
आराध्य एना आपथी, अरमान सहु पुरा कीधा,
एवी कृपा दृष्टि प्रभु, आ दास उपर राखजो,

चरणाविंद भक्ति व्हाला, आ दासने पण आपजो, १५
हे शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, एक विनंती मुज अवधारो
भव जगलमां आथडता, आ पापीना दु:ख निवारो,
काल अनादि हुं घणुं भमीयो, हजु न आव्यो भव आरो
कल्पतरु सम तुं हवे मलीयो, भवोभवनो एक सथवारो, १६
जेना स्मरणथी जीवननां, संकट बधा दूरे टले
जेना स्मरणथी मनतणा, वांछित सहु आवी मेल,
जेना स्मरणथी आधिने, व्याधि उपाधि ना टके
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना, चरणमां प्रेमे नमुं १७
विघ्नो तणा बादल भले चोमेर घेराई जतां,
आपतिना कंटक भले, चोमेर वेराई जतां,
विश्वास छे जस नामथी ए, दूर फेंकाई जतां,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना, चरणमां प्रेमे नमुं १८
त्रण कालमां त्रण भुवनमां, विख्यात महिमां जेहनो,
अदभुत छे देदार जेहना, दर्शनीय आ देहना,
लाखो करोडो सूर्य पण, जस आगले झांखा ठरे,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना, चरणमां प्रेमे नमुं १९
कलिकालमां हाजरा हजूर, देवो तणाये देव जे,
भक्तो तणी भव भावठो ने, भांगनारा देव जे,
मुक्ति किरणनी ज्योति ने, प्रगटावनारा देव जे,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना, चरणमां प्रेमे नमुं २०
फरी तमोने मळवा हुं , कोल दईने जावुं छुं,
निभाववानो भार तारे, माथे मुकतो जाऊं छुं
श्वासे श्वासे रटण तहारुं. सोगंदथी कही जाऊं छुं
जुग जुग जीवो झाझी खम्मा, चरण छुमतो जाऊं छुं. २१
स्वार्थ भर्या संसारमां, कांई सार देखातो नही
तारा शरण बिना हवे, उद्धार समझातो नथी,
हुं अज्ञानी आत्मा, भटकी रह्यो अंधकारमां,
ज्ञान रुपी ज्यो प्रगटाववा, आव्यो तुज दरबारमां २२
हुं कदी भूली जाऊं तो, प्रभु तुं मने संभारजे,
हुं कदी डुबी जाऊं तो, प्रभु तुं मने उगारजे,
हुं वस्यो छुं रागमां ने, तुं वस्यो वैराग्यमां,
रागमां रझली रह्यो, संसार पार उतारजे, २३
जेम मोरने मेघ वहालो, चकोर ने जेम चंद छे
मान सरोवर राजहंस, नंदनवन सुरवृद छे
कोकिल चाहे आम्रवन तिम, तुं मुज प्रीतनो कंद छे

तुं कृपानिधि कामकुंभ तुं, तुंहिज ज्ञान दिणंद छे २४
हुं तुं हतो तुं हुं हतो, एवी प्रीति हती आपणी,
प्रीति तणा वादे कहुं, जल्दी बोलवो नाथजी,
तारा विरहनी वेदना, वसमी मने लागे घणी
सांनिध्यमां रहेवां प्रभु, जल्दी बोलावो नाथजी, २५
बावीश परिसह जीतवा हुं , लई रह्यो आगे कदम,
पण एक परिसह आवतां, पाछल हठे मारा कदम,
जे ध्येय माटे भर्या कदम, ते ध्येय चुकी जाऊं छुं
आ विनश्वर देहना रंग रागमां, हुं चुकी जाऊं छुं २६
घणा पापो कर्या जीवनमां, एक एकथी भारे,
आंसु टपके आ हृदयथी, यादि करुं छुं त्यारे
शुं थशे मुझ जईश प्रभु क्यां, भव सागर छे भारे,
पश्चातापे रडी रह्युं छे. अतंर आ अत्यारे, २७
पूर्ण अशुचि देहनी में, रात दिन सेवा करी,
स्वार्थमय सुखोनी खातर, परने पीडा करी,
ईर्ष्या असुया निंदा करता, जिंदगी व्यतीत गई,
छोडाव तुं मुज दुर्गुणोथी, प्रार्थना अंतिम करी २८
वादा किया मुझसे तुने, ना छोडूंगा तुझको कभी,
भक्त को भुला दिया, ये क्यां हुआ देखो अभी,
मैं यहां गया, मैं वहां गया, धोका मिला मुझको सभी,
हे भक्तवत्सल भक्त को, तुं याद कर कभी ना कभी २९
प्रेमना पुष्पो पाथरु छुं हुं, प्रभुजी पगलां पाडो,
हवले हाथ जोडी द्यो ने, आ तन मननी तीराडो,
दिलनी डाले फूल बनीने, आज प्रभु तमे स्पर्शो,
रणवा जेवी जींदगीनी, बादल थई तमे वरसो, ३०
शासन वस्यु छे ताहरुं, प्रत्येक श्वासोश्वासमां,
शासन थकी तरीश हुं, जीवुं छुं एवी आशमां,
सुरज अने चांद झलके, ज्यां लगे आकाशमां,
जयवंतु वर्तो नित रहो, शासन तमारूं प्रकाशमां, ३१
हे आलसु एदी प्रमादी, केदी छुं वली कर्म नो,
गणना कदी ना पार आवे, एटला मुज दुर्गुणो,
तु स्वस्थ पूर्ण स्वतंत्रतानो, स्वामी हुं तुज भक्तनो,
तुजने स्वीकार्या नाथ मे, तेथी ज हुं निश्चित छुं. ३२
वीतराग तारा दर्शने हुं ,आव्यो छुं शुभ भावथी,
लाव्यो छुं भक्ति भेटणुं, स्वीकारजो सदभावथी,
धन्य घडी आ धन्य दिवसे, आव्यो छुं तारी कने,

कृपा करी वीतराग छो, तारो मने तारो मने, ३३
लागणीओथी भीनी भीनी, आंखो आपने झंखे,
आपना विना मननी वीणा पर, सुर एक ना रणके,
तरसीया तरकडीया होठे, गाऊं तमारा गीतोना शब्दो
दिलनी दिवारे कोतरी दियो, मे तारा नामनो नशो. ३४
नाविक बनीने नैया मारी, पार करशो के नही,
महापापी आतमनो, उद्धार करशो के नही,
हाथ पकडी साथ आपी, तरछोडशो मुजने नही,
त्रण जगतमां तारा बिना, मारे कोईनो आधार नही, ३५
आवीने दादा तमे मारी, बलती आग ठारो
आगथी तमे सर्प बचाव्यो, तो मुजने पण तारो
पतित पावन छे बिरुद तमारुं, दादा मुजने बचावो,
विषय कषायमां हुं फसीयो छुं. दादा हाथ लंबावो ३६
निगोदमांथी बहार काढी, एमां हती तारी कृपा.
नरकमांथी निकल्यो, तेमां हती तारी दया,
तिर्यंचमांथी तारनारा, स्नेह सिन्धु तमे हतां,
मानवमांथी मुक्त थतां, पापी पावन थई जतां, ३७
ज्यां देवदुंदुभि घोष गजवे, घोषणा त्रण लोकमां,
त्रिभुवन तणा स्वामी तणी, सौए सुणी शुभ देशना,
प्रतिबोध करता देव मानव ने, वली तिर्यंचने,
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचाग भावे हुं नमुं. ३८
जे कर्मनो संयोग वलगेलो, अनादि कालथी,
तेथी थया जे मुक्त पूरण, सर्वथा सदभावथी,
रममाण जे निजरुपमां, सर्वे जगनुं हित करे,
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचाग भावे हुं नमुं, ३९
भवोभव तमारा चरण पामी, शरणमां बेसी रहुं.
भवोभव तमारी आण पामी, कर्मनो कांटो दहुं,
भवोभव तमारो साथ मलजो, एक छे मुज प्रार्थना
भवोभव तमारु पामुं शासन, एक ए अभ्यर्थना, ४०
याचक थइने हुं मांगु छुं, हे वीतरागी तारी कने,
महाविदेह क्षेत्रमां जावुं मारे, श्री सीमंधरस्वामी कने,
आठ वर्षनी उंमर थतां, संयम लेशुं तारी कने,
घाती अघाती कर्म खपावी, क्यारे पहोंचु तारी कने, ४१
जोवा सरीखुं रुप तारुं, विश्वमांही अनन्य छे,
लेवा सरीखुं नाम तारुं, एकनुं को अन्य छे,
तारा स्वरुपमां लीन थाऊं, एक मुज ए मान्य छे,

रहेतां सदा तुज ध्यानमां, जीवन अमारुं धन्य छे. ४२
आंसु भरीने एकज मागुं, तारा सरीखो बनावो,
मुज आतमने कमल बनावी, तारी मूरति स्थापुं,
ध्यान लगावुं तान जगावुं, कर्म अष्ट ने कांपु,
केवल लब्धि मुजमां प्रगटे, एवुं विक्रम आपो,
यश गावुं हुं निशदिन तारा, मुक्तिपुरीमां स्थापो, ४३

प्रभु स्तुति

प्रभुजी मे तुज पालव पकडयो, हवे कदी ना छोडुजी
तारा दर्शन करवा माटे. नित्य सवारे दोडुं रे,
दरिशन दरिशन करतो प्रभुजी, आव्यो तारे द्वार
आदिनाथनुं मुखडुं जोतां, आनंद अति उभराय रे १
चार गतिमां रझल्यो स्वामी, भवजल पार उतारो रे,
भरी भावना आव्यो स्वामी, खाली हाथ न जावुं रे,
सम्यग् दर्शन मुखने आपो, तो भवजल तरी जावुं रे, २
आत्म दर्शन करवा माटे, अनंत शक्ति आपो रे,
अंतरना अंधारा काढी, झलहल ज्योत जगावो रे,
अनमोलु ए दर्शन् मुजने, एक वार जो थावे रे,
तो मारा भवो भवना संचित, कर्मोनो चुरो थावे रे ३

प्रभु स्तुति

आवी ऊभो छु द्वारे, प्रभु दरिशन देशो क्यारे,
अंदरनी अभिलाषा, प्रभु पूरी करशो क्यारे, आवी... १
सलगी रह्यो छुं आजे, संसार केरा तापे,
शीतल तमारी छाया, प्रभु मुजने देशो क्यारे आवी... २
भक्ति न कीधी भावे, शक्ति वृथा गुमावी
युक्ति न कोई फावी, प्रभु संकट हरशो क्यारे, आवी..३
द्रृष्टि न दूर पहोंचे, सृष्टि आ शून्य भासे,
अंधारे घेर्या उरने, प्रभु उज्ज्वल करशो क्यारे, आवी... ४
भवो भव भमीने, आव्यो तुमारे शरणे,
सुना सुना जीवनमां, प्रभु आवी मलशो क्यारे. आवी... ५

श्री सरस्वती वन्दना

माता सरस्वती तूं वर देना, मेरे गीतों को स्वर देना
अंजलि रचकर नमन करुँ मैं, वन्दन मेरे स्वीकारो माँ ।
नव गीतों से सुकृत कर दो, मन वीणा के तारों को माँ.. १
सम्यक्ज्ञान का कालज मेरी, इन पलकों में भर दो माँ ।
नफरत से मैल इस मन को, ममता से स्वच्छ कर दो माँ.. २

जलते दीप की तपती धरती, स्नेह का शीतल सागर दो माँ।
तेरी कृपा से नीर बहाकर, मेरा जीवन सागर भर दो माँ.. ३
अंधकार हो दूर हृदय का, ज्ञान का नन्हा दीप जला दो माँ।
साँसों में महके तेरी खुश्बु, प्रीत के प्यारे फूल खिला दो माँ.. ४
आँसू उदासी दूर करो माँ, प्यार की ऐसी राह दिखा दो माँ।
स्नेह के रिश्ते बंध सबसे, वैसी हमको रीत सिखा दो माँ.. ५

श्री शारदा देवी की स्तुति

मां शारदे वरदान दे मां, सरस्वती वरदान दे मां, मां शारदे हा.१
मेरी सफळ हो साधना, पूरी करो आराधना,
निज चरणों में स्थान दे मां, सरस्वती वरदान दे मां, मां शारदे हां. २
स्वर ताल २ सजा सकु, मां गीत तेरे गा सकु
ऐसा मुझे वरदान दे मां, सरस्वती वरदान दे मां, मां शारदे हां. ३
कर वीणा मां हंसासनी, धरुं ध्यान ओ पद्मामणी,
स्वर शब्द का मुझे ज्ञान दे मां, सरस्वती वरदान दे मां, मां शारदे हां. ४

श्री सरस्वती देवी की स्तुति

हे भगवती हे भारती हे, जयवती श्रुत देवता,
विबुध बनती अबुध जनता, त्रिविध तुजने सेवता,
श्वेताम्बरी वागेश्वरी, करी महेर हर मुज मूढता,
सकल विद्या दक्षता ने, आपजे पारंगता १
श्री श्रुतदेवी सरस्वती भगवती, हमको वर देना,
जीवन की बांसुरी में देवी, सच्चा स्वर भर देना,
सम्यग ज्ञान का दीप जलाकर, मनका तिमिर हटाना,
ना भूले ना भटके माता, ऐसी राह बताना, २

श्री बीजतिथि के चैत्यवंदन

(१)

श्री जिनपद पंकज नमी, सेवो बहु प्यार,
बीज तणे दिन जिन तणां, कल्याणक सार, १
महा सुदि बीजे जन्मीया, अभिनंदन स्वामी,
वासुपूज्य केवल लह्यो, नमीए शिरनामी २
फागण सुदि द्वितीया वली, चविया श्री अरनाथ,
वदि वैशाखे वीजनी, शीतल शिवपुरी साथ, ३
श्रवण सुदिनी बीज तिथे, सुमति च्यवन जिणंद,
ते जिनवरने प्रणमतां, पामो अति आणंद, ४
अतीत अनागत वर्तमान, जिन कल्याणक जेह,

बीज दिने चित्तधारीए, हियडे हरख धरेह, ५
दुविध धर्म भगवंतजी, भाख्यो सूत्र मोझार,
तेह भणी बीज आराधतां, शिवपंथ साधनहार, ६
प्रह उठीने नित्य नमो, आणी प्रेम अपार,
हंसविजय प्रभु नामथी, पामो सुख श्रीकार, ७

(२)

दुविध बंधने टालीए, जे वली राग ने द्वेष,
आर्त रौद्र दोय अशुभध्यान, नवि करो लवलेश, १
बीज दिने वली बोधिबीज, चित्त ठाणे वावो,
जेम दुःख दुर्गति नवि लहो, जगमां जश चावो, २
भावो रुडी भावनाए, वाधो शुभ गुण ठाण,
ज्ञानविमल तप तेजथी, होये कोडी कल्याण ३

श्री सिद्धाचलजी के चैत्यवंदन

(१)

विमल केवल ज्ञान कमला-कलित त्रिभुवन हितकरं,
सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं १
विमल गिरिवर श्रृङ्गमंडन प्रवर गुणगण भूधरं,
सुर असुर किन्नर कोडी सेवित नमो.२
करती नाटक किन्नरी गुण, गाय जिन गुण मनहरं
निर्जरावली नमे अहर्निश नमो.३
पुंडरीक गणपति सिद्धि साधित, कोडी पण मुनि मनहरं,
श्री विमल गिरिवर श्रृङ्ग सिद्धा नमो.४
निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिअनंत ए गिरिवर।
मुगति रमणी वर्या रंगे नमो.५
पाताल नर सुरलोक मांहे, विमल गिरिवर तो परं,
नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे नमो.६
इम विमल गिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याइए,
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइए नमो.७
जिन मोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरं,
गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं नमो.८

(२)

श्री तरण तारण कुगति वारण, सुगति कारण जगगुरु,
भव भ्रमण करतां मनुष्यना, वांछित करवा सुरतरु १
संसार तापथी तप्त जन्तु, जातने छाया करुं,
छत्राकृति सिद्धाचले, ऋषभेश कलश मनोहरुं २
श्री ऋषभदेव प्रपौत्र द्राविड, वारिखिल्ल सहोदरा,

आदिनाथ भक्ति सुवल्गु तापस, बोधथी तापस वर्या ३
चारण मुनिवर साथ सर्वे, तीर्थ करवा संचर्या,
प्रतिबोधथी मुनिराजना, सर्वे मुनीशपणुं वर्या ४
पूर्व पुण्य पुंज सम पुंडरिकगिरि, निरखता नयणे ठरी,
उल्लास पामी दोष वामी, हर्षथी हृदये धरी ५
वंदन करीने आवीया, गिरिराज उपर पदचरी,
रायणने आदिनाथ चरणे, प्रेमे प्रदक्षिणा फरी ६
पुंडरिक गणधर साथ, आदिनाथने पाये पडी,
चारण मुनिना केणथी, लगावी ध्याने तणी झडी ७
दशक्रोड मुनिवर साथ, कार्तिक पुनमे मुक्ति जडी,
हंसावतार तीर्थ स्थाप्युं, हंस देवे तिण घडी ८

(३)

आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारु नाम,
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम १
शत्रुंजे श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार,
तारंगे श्री अजितनाथ, आबु ऋषभ जुहार २
अष्टापदगिरि उपरे, जिन चोवीशे जोय,
मणिमय मूरति मानशुं, भरते भरावी सोय ३
समेत शिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिन पाय,
वैभारकगिरि उपरे, श्रीवीर जिनेश्वर राय ४
मांडवगढनो राजीयो, नामे देव सुपास,
रिखव कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश५

(४)

तुज नामे संकट टले, नासे विषय विकार,
तुज नामे सुख संपदा, तुज नामे जयकार,
आज सफल दिन माहरो ए, सफळ थई मुज जात्र,
प्रथम तीर्थंकर भेटीया, निर्मल कीधा गात्र,
सुरनर किन्नर किन्नरी, विद्याधरनी कोड,
मुक्ति पहोंच्यां केवली, वंदु बे कर जोड,
शत्रुंजयगिरि मंडणो ए, मरुदेवा मात मल्हार,
सिद्धिविजय सेवक कहे, तुज तरीआ मुज तार,

(५) पुंडरीकस्वामी चैत्यवंदन

श्री शत्रुंजय महात्म्यनी , रचना कीधी सार,
पुंडरगिरिना स्थापनार, प्रथम जिन गणधार १
एक दिन वाणी जिन तणी, सुणी थयो आनंद,
आव्या शत्रुंजय गिरि, पंच क्रोड सह रंग २

चैत्री पुनमने दिने ए, शिवशुं कीधो योग,
नमीए गिरिने गणधरु, अधिक नही त्रिलोक ३

(६)

सोना रुपाना फुलडे, सिद्धाचलने वधावुं,
ध्यान धरी दादा तणुं, आनंद मनमां लावुं १
पूजा करी पावन थयो, अम मन निर्मल देह,
रचना रचुं शुभ भावथी, करु ते कर्मनो छेह २
अभवीने दादा वेगला, भवीने हैडा हजूर,
तन मन धन एक लगनथी, कीधा कर्म चकचूर ३
कांकरे कांकरे सिद्ध थया, सिद्ध अनन्तनुं ठाम,
शाश्वत जिनवर पूजता, जिम पामे विश्राम ४
दादा दादा हुं करुं, दादा वसीया दूर,
द्रव्यथी दादा वेगला, भाव थी हैडे हजूर ५
दुषम काले पूजता, इन्द्र धरे बहु प्यार,
ते प्रतिमाने वंदना, श्वास मांहे सो वार ६
सुवर्ण गुफाए पूजतां, रत्न प्रतिमा इन्द्र,
ज्योतिमां ज्योति मिले, पूजो भवि सुखकंद ७
ऋद्धि सिद्धि सुख संपजेए, पहोंचे मननी आश,
त्रिकरण शुद्धे पूजतां, ज्ञानविमल प्रकाश ८

अष्टमीतिथि चैत्यवंदन

(१)

महा सुदि आठम दिने, विजया सुत जाओ,
तेम फागण सुदि आठमे, संभव चवी आव्यो १
चैतर वदनी आठमे, जन्म्या ऋषभ जिणंद,
दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद २
माघव सुदि आठम दिन, आठ कर्म कर्या दूर,
अभिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपुर ३
एहिज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिणंद,
आठ जाति कलशे करी, नवरावे सुरइंद ४
जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रतस्वामी,
नेम अषाढ सुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ५
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जगभाण,
तेम श्रावण सुदि आठमे, पासजीनुं निरवाण ६
भाद्रवा वदि आठम दिने ए, चविय स्वामी सुपास,
जिन उत्तम पद-पद्मने, सेव्याथी शिववास ७

(२) श्री चैत्रवदि आठम चैत्यवन्दन

चैत्र वदि आठमतणो, दिन अति मनोहार,
जन्मे प्रथम जिनेसर, हुओ जस जयकार, १
छप्पन दिक्कुमरी मली, प्रभुने हुलरावे,
ऋषभ मुख देखी करी, आनंद अदि पावे, २
दीक्षा पण एहिज दिने, प्रथम यतिव्रत धार,
आठम दिन जिन गावतां, धर्मरत्न लहे पार ३

श्री पौष दशमी के चैत्यवंदन

(१)

महिमा पोष वदि तिथि, दशमी अपरंपार,
पार्श्व जिनेसर पूजए, जिम लहीए भवपार १
ऊँ ह्रीँ श्री पार्श्वनाथ अर्हते नमः जाण,
गणणुं प्रभुना नामनुं, दोय हजार प्रमाण २
एकासन दिन त्रण हुवे, अथवा अट्ठम सार,
धर्मरत्न प्रभु पासजी, तार तार भवपार ३

(२)

कल्याणक जिनपासनुं, पोष दशमी दिन जाण,
पोष वदि अग्यारशे, संयम पास वखाण १
पोष वदि नवमी थकी, त्रण दिन आराधो,
पार्श्वनाथाय नमः वली, अर्हते नमः साधो २
त्रीजे दिन नाथाय नमः वीश माला कीजे,
एकादश के अठ्ठमे, ज्ञानविमल शिव लीजे ३

श्री एकादशीतिथि के चैत्यवन्दन

(१)

शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो,
संघ चतुर्विध स्थापवा, महसेन वन आयो, १
माघव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ,
इन्द्रभूति आदे मल्या, एकादश विज्ञ, २
एकादशसे चउ गुणो, तेहनो परिवार,
वेद अर्थ अवलो करे, मन अभिमान अपार, ३
जीवादिक संशय हरीए, एकादश गणधार,
वीरे थाप्या वन्दीए, जिन शासन जयकार, ४
मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी,
ऋषभ अजित सुमति नमी, मल्लि घनघाती विनासी, ५
पद्मप्रभु शिववास पार, भव भवना तोडी,
एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघली जोडी,६
दश क्षेत्रे त्रिहु कालनां, त्रणसो कल्याण,

वर्ष अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण, ७
अग्यार अंग लखावीए, एकादश पाठां,
पूंजणी ठवणी विंटणा, मसी कागल काठां, ८
अग्यार अव्रत छंडवाए, वहो पडिमा अग्यार,
क्षमाविजय जिन शासने, सफल करो अवतार ९

(२)

आज ओच्छव थयो मुज घरे, एकादशी मंडाण,
श्री जिननां त्रणसें भला, कल्याणक घर जाण १
सुरतरु सुरमणि सुरघट, कल्पवेली फली मारे,
एकादशी आराधतां, बोधि बीज चित्त ठारे २
नमे जिनेश्वर पूजतांए, पहोच मनना कोड,
ज्ञानविमल गुणथी लहो, प्रणमो बे कर जोड ३

श्री मेरु तेरस चैत्यवन्दन

अयोध्या नयरी भली, अनन्तवीर्य राजन,
प्रियमति पटराणी वली, गुणवंता पुरिजन १
कोणिक साधु विचरता. आवे वहोरण काज,
राजा राणी उल्लसे, वहोरावे मुनिराज २
पुत्र होशे मुजने कदा, भाखो तेह विचार,
मुनि कहे सुणो राजवी, ए नही अम आचार ३
अति आग्रहथी विनवे, भाखे तव मुनिराय,
पुत्र होशे पण पांगळो, जन्म थकी महाराय ४
विहार करंता आवता, चउनाणी मुनिराज,
गांगिल सूरि सोहामणा, देशना सुणे महाराज. ५
जन्म थकी सुत पांगळो, कवण कर्म विरंतत,
किण विध कर्म खपे प्रभु, भाखो करुणावंत ६
मृगली तणा पग छेदीया, इण कर्म पांगल,
वदि तेरस आराधीए, कर्म नाश होय मूल ७
पारगताय नमः सहित, आदिजिनेसर राय,
दोय हजार गणणुं गणो, मेरु पंच महाराय ८
आदिजिन निर्वाणथी, मोटो दिन छे एह,
मेरु तेरस जगमांही, करे कर्मनो छेह ९
पिंगल पुत्र पांगलो, आराधे उल्लास,
शुभ कर्म उदये थयो, सुन्दर शरीर सुवास १०
भुक्त भोगी दीक्षा लही, केवली मुक्ते जाय,
मेरु तेरस उजवता, धर्मरत्न पद थाय ११

श्री चैत्रसुदितेरस चैत्यवन्दन

चैत्री तेरसने दिने, जनम्या श्री महावीर,
छप्पन दिक्कुमरी मली, हुलरावे प्रभुवीर १
मेरुगिरि पर उजवे, कल्याणक महावीर,
इन्द्र तणी शंका तिहां, फेडे श्री प्रभुवीर २
ज्ञानविमल ने पामतां, भक्ति करे जे धीर,
वीर प्रभु ध्याने लहुं, परम पद गंभीर३

श्री अक्षय तृतीया चैत्यवन्दन

छट्ठ तप करी व्रत लीये, आदीश्वर जिनराय,
आहारादिक तणो हुओ, प्रभुजीने अंतराय १
एक वरस ने अन्तरे, श्री श्रेयांस कुमार,
प्रभु करावे पारणुं, वर्षीतप तिणे सार२
वैशाखी त्रीजना दिने, धर्मरत्न गुणगाय,
अखात्रीज नामे घणो, महिमा लोक गवाय ३

श्री पर्युषण पर्व के चैत्यवन्दन

(१)

पर्व पर्युषण गुणनीलो,नव कल्प विहार,
चार मासांतर स्थिर रहे, एहिज अर्थ उदार १
अषाढ़ सुद चौदस थकी, संवत्सरी पचास,
मुनिवर दिन सीतेरमे, पडिक्कमतां चौमास २
श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान,
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थइ एकतान३
जिनवर चैत्य जुहारीए, गुरु भक्ति विशाल,
प्रायेः अष्ट भवांतरे, वरीये शिव वरमाल ४
दर्पणथी निज रुपनो, जुवे सुद्रष्टि रुप,
दर्पण अनुभव अर्पणे, ज्ञान रयण मुनि भूप ५
आत्म स्वरुप विलोकतां, प्रगट्यो मित्र स्वभाव,
राय उदायी खामणा, पर्व पर्युषण लाव ६
नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा,
पंचमी दिन वांचे सुणे, होय विराधक नियमा७
ए नहि पर्वे पंचमी, सर्व समाणी चौथे,
भव भीरु मुनि मानशे, भाख्यु अरिहा नाथे ८
श्रुत केवली वयणा सुणी, लही मानव अवतार,
श्री शुभवीर ने शासने, पाम्या जय जयकार ९

(२)

प्रणमुं श्री देवाधिदेव, जिनवर महावीर,

सुरवर सेवे शांत दांत, प्रभु साहस धीर १
पर्व पर्युषण पुण्यथी, पामे भवी प्राणी,
जैनधर्म आराधीये, समकित हित जाणी २
श्री जिनप्रतिमा पूजीये ए, कीजे जन्म पवित्र,
जीव जतन करी सांभलो, प्रवचन वाणी विनीत ३

(३)

कल्पतरूवर कल्पसूत्र पूरे मन वंछित,
कल्पधरे धुरथी सुणो, श्री महावीर चरित्र १
क्षत्रियकुंडे नरपति, सिद्धारथ राय,
राणी त्रिशला तणी कुखे, कंचन सम काय २
पुष्पोत्तर वरथी चव्याए, उपन्या पुण्य पवित्र,
चतुरा चौद सुपन लहे, उपजे विनय विनीत ३

(४)

भादरवा सुदि चौथने दिने, पर्युषण पर्व श्रीकार,
कालिक सूरिवरे भाख्युं, सूत्र तणे अनुसार १
ते पहेला सात दिन मांहे, अट्ठाई व्याख्यान सार,
देव गुरु ज्ञान पूजा करी, सुणे कल्प एकवीस वार २
अषाढ़ चोमासाथी वीर प्रभु, भाखे दिवस पच्चास,
सित्तेर दिन पाछल रहे, समवायांगे प्रकाश ३
विधि पूर्वक आराधता, सात आठ भव मोजार,
गुरु कर्पूरसूरि अमृत भाखे, तरीए आ संसार ४

श्री सिद्धचक्रजी के चैत्यवन्दन

(१)

पहेले दिन अरिहंतनुं, नित्य कीजे ध्यान,
बीजे दिन वली सिद्धनुं कीजे गुण गान १
आचारज त्रीजे पदे, जपतां जय जयकार,
चोथे पद उवज्झायना, गुण गावो उदार २
सकल साधु वंदो सही, अढीद्वीपंमा जेह,
पंचम पद आदर करी, जपजो धरी सस्नेह ३
छट्ठे पद दर्शन नमो, दरिसण अजुवालो,
नमो नाण पद सातमे, जिम पाप पखालो ४
आठमे पद आदर करी, चारित्र सुचंग,
नवमे पद बहु तप तणो, फल लीजे अभंग ५
एणी परे नवपद भावशुं ऐ, जपतां नव कोड,
पंडित शान्तिविजय तणो, शिष्य कहे करजोड ६

(२)

श्री सिद्धचक्र आराधीए, आसो चैतर मास,
नवदिन नव आंबिल करी, कीजे ओली खास १
केसर चन्दन घसी घणां, कस्तूरी बरास,
जुगते जिवनर पूजीए, जिम मयणा श्रीपाल २
पूजा अष्ट प्रकारनी, देववंदन त्रण काल,
मंत्र जपो त्रण कालने, गुणणुं तेरह हजार ३
कष्ट टल्युं उबर तणुं, जपता नवपद ध्यान,
श्री श्रीपाल नरेन्द्र थया, वांध्यो बमणो वान ४
सातसो कोढी सुख लह्या ए, पाम्या निज आवास,
पुण्ये मुक्ति वधूवर्या, पाम्या लील विलास ५

(३)

बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजे भावे,
सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे १
आचारज गुण छत्रीश, पचवीश उवज्झाय,
सत्तावीश गुण, साधुना, जपतां शिवसुख थाय २
अष्टोत्तरशत गुण मलीए, एम समरो नवकार,
धीरविमल पंडित तणो,नय प्रणमे नित सार ३

(४)

इह परभव आनन्द कंद, जगमांहि प्रसिद्धो,
चिंतामणी सम जास जोग, बहु पुण्ये लीद्धो.
तिहुअण सार अपार एह, महिमा मन धारो,
परिहरी पर जंजाल जाल, नित एह संभारो,
सिद्धचक्र पद सेवतां ए सहजानंद स्वरुप,
अमृतमय कल्याण निधि, प्रगटे चेतन भूप,

(५)

सिद्धचक्र आराधतां, भव सागर तरीये,
भवअटवीथी उतरी, शिववधूने वरीये १
अरिहंत पद आराधतां, तीर्थकर पद पावे,
जग उपकार करे घणां, सिधा शिवपुर जावे २
सिद्धपद ध्याता थकां, अक्षय अचल पद पावे,
कर्म कटक भेदी करी, अकल अरुपी थावे ३
आचारज पद ध्यावतां, युग प्रधान पद पावे,
जिन शासन अजवालीने, शिवपुर नयर सोहावे ४
पाठक पद ध्यावता, वाचक पद पावे,
भणे भणावे भावशुं, सुर शिवपुर जावे ५
साधु पद आराधतां, साधु पद पावे,

तप जप संयम आदरे, शिवसुन्दरीने कामे ६
दर्शन ज्ञान पद ध्यावतां, दर्शन ज्ञान अजवाले,
चारित्र पद ध्यावतां, शिवमन्दिरमां म्हाले ७
केसर कस्तूरी केतकी, मचकुंद मालती चाले,
सिद्धचक्र सेव्या त्रिकाल, जेम मयणाने श्रीपाल ८
नव आयंबिल नववार, शील समकित वहाल,
रुपविजय कविरायनो, माणेक कहे उजमाल ९

श्री ऋषभदेव चैत्यवंदन

आदिदेव अलवेसरु, विनीतानो राय,
नाभिराया कुलमंडणो, मरुदेवा माय १
पांचशे धनुषनी देहडी, प्रभुजी परमदयाल,
चोराशी लख पूर्वनुं, जस आयु विशाल २
वृषभलंछन जिनवर धरु, उत्तमगुण मणिखाण,
तस पद पद्म सेवन थकी, लहिए अविचल ठाण ३

श्री अजितनाथ चैत्यवंदन

अजितनाथ प्रभु अवतर्या, विनितानो स्वामी,
जितशत्रु विजयातणो, नंदन शिवगामी १
बहोंत्तेर लाख पूरवतणुं, पाल्युं जिणे आय,
गजलंछन लांछन लही, प्रणमें सुरराय२
साडा चारशें धनुषनी ए, जिनवर उत्तम देह,
पादपद्म तस प्रणमीये, जिम लहीए शिवगेह ३

श्री संभवनाथ चैत्यवंदन

सावत्थी नयरी धणी, श्री संभवनाथ,
जितारी नृप नंदनो, चलवे शिवसाथ १
सेनानंदन चंदने, पूजे नव अंगे,
चारशें धनुषनुं देहमान, प्रणमो मन रंगे २
साठ लाख पूरवतणुं ए, जिनवर उत्तम आय,
तुरंग लंछन पद पद्मने, नमतां शिवसुख थाय ३

श्री अभिनंदनस्वामी चैत्यवंदन

नंदन संवरायना, चौथा अभिनंदन,
कपि लंछन वंदन करो, भवदु:ख निकंदन १
सिद्धार्था जस मावडी, सिद्धारथ जिनराय,
साडा त्रणशें धनुषमान, सुन्दर जस काय २
विनीतावासी वंदये, आयु लख पचाश,
पूरव तस-पद पद्मने, नमतां शिवपुर वास ३

श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन

सुमतिनाथ सुहंकरु, कोसल्ला जस नयरी,
मेघराय मंगळा तणो, नन्दन जितवयरी १
क्रोंच लंछन जिनराजियो, त्रणशें धनुषनी देह,
चालीस लाख पूरवतणुं, आयु अति गुणगेह २
सुमति गुणे करी जे भर्या ए, तर्यो संसार अगाध,
तस पद-पद्म सेवा थकी, लही सुख अव्यावाध ३

श्री पद्मप्रभस्वामी चैत्यवंदन

कोसंबीपुर राजियो, घर नरपति ताय,
पद्मप्रभ प्रभुतामयी, सुसीमा जस माय १
त्रीश लाख पूरवतणुं , जिन आयु पाली,
धनुष अढीशे देहडी, सवि कर्मने टाली २
पद्म लंछन परमेश्वरु ए, जिन पद-पद्मनी सेव,
पद्म विजय कहे कीजिए, भविजन सहु नितमेव ३

श्री सुपासनाथ चैत्यवंदन

श्री सुपास जिणंद पास, टाल्यो भव फेरो,
पृथिवी मात उरे जयो, ते नाथ हमेरो १
प्रतिष्ठित सुत सुन्दरु, वाणरसी राय,
वीश लाख पूरवतणुं, प्रभुजीनुं आय २
धनुष बसें जिन देहडी ए, स्वस्तिक लंछनसार,
पाद-पद्म जस राजतो, तार तार भव तार ३

श्री चंद्रप्रभस्वामी चैत्यवंदन

लक्ष्मणा माता जनमीओ, महसेन जस ताय,
उडुपति लंछन दीपतो, चन्द्रपुरीनो राय १
दश लाख पूरव आउखुं, दोढसो धनुषनी देह,
सुरनरपति सेवा करे, धरता अति सस्नेह २
चंद्रप्रभ जिन आठमां ए, उत्तम पद दातार,
पद्मविजय कहे प्रणमीये, मुज प्रभु पार उतार ३

श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन

सुविधिनाथ नवमां नमुं, सुग्रीव जस तात,
मगर लंछन चरणो नमुं, रामा रुडी मात १
आयु बे लाख पूरवतणुं, शत धनुषनी काय,
काकंदी नयरी धणी, प्रणमुं प्रभु पाय २
उत्तम विधि जेहथी लह्यो ए, तेणे सुविधिजिन नाम,
नमतां तस पद पद्मने , लहीए शाश्वत धाम ३

श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन

नंदा दृढरथ नंदनो, शीतल शीतलनाथ,
राजा भदिलपुरतणो, चलवे शिवसाथ १
लख पूरवनुं आउखुं, नेवुं धनुष प्रमाण,
काया माया टालीने, लह्या पंचम नाण २
श्री वत्स लंछन सुंदरु ए, पद-पद्मे रहे जास,
ते जिननी सेवा थकी, लहीये लील विलास ३

श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन

श्री श्रेयांस अग्यारमां, विष्णु नृप ताय,
विष्णु माता जेहनी, ऐंशी धनुषनी काय १
वरस चोराशी लाखनुं, पाल्यु जेणे आय,
खड्गी लंछन पदकजे, सिंहपुरीनो राय २
राज्य तजी दीक्षा वरी ए, जिनवर उत्तम ज्ञान,
पाम्या तस पद-पद्मने, नमता अविचल थान ३

श्री वासुपूज्यस्वामी चैत्यवंदन

वासव वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ठाम,
वसुपूज्य कुल चंद्रमा, माता जया नाम १
महिष लंछन जिन बारमां, सित्तेर धनुष प्रमाण,
काया आयु वरस वली, बहोंतरे लाख वखाण २
संघ चतुर्विध थापीने ए, जिन उत्तम महाराय,
तस मुख पद्म वचन सुणी, परमानंदी थाय ३

श्री विमलनाथ चैत्यवंदन

कंपिलपुर विमल प्रभु, श्यामा मात मल्हार,
कृतवर्मा नृपकुल नभे, उगमियो दिनकर १
लंछन राजे वराहनुं, साठ धनुषनी काय,
साठ लाख वरसातणुं, आयु सुखदाय२
विमल विमल पोते थया, सेवक विमल करेह,
तुज पद-पद्म विमल प्रत्ये, सेवुं धरी सस्नेह ३

श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन

अनंत अनंत गुण आगरु, अयोध्यावासी,
सिंहसेन नृप नंदनो, थयो पाप निकासी १
सुजसा माता जन्मीयो, त्रीश लाख उदार,
वरस आऊखुं पालीयुं, जिनवर जयकार २
लंछन सिंचाणा तणुं ए, काया धनुष पचास,
जिन पद-पद्म नम्या थकी, लहीये सहज विलास ३

श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन

भानु नंदन धर्मनाथ, सुव्रता भली मात,
वज्र लंछन वज्री नमे, त्रण भुवन विख्यात १
दस लाख वरसनुं आऊखुं, वपु धनु पीस्तालीश,
रत्नपुरीनो राजियो, जगमां जास जगीश २
धर्म मार्ग जिनवर कही ए, उत्तम जग आधार,
तेणे तुज पाद-पद्मतणी, सेवा करुं निरधार ३

श्री शान्तिनाथ चैत्यवंदन

शांति जिनेसर सोलमा, अचिरा सुत वंदो,
विश्वसेन कुलनभोमणि, भविजन सुख कंदो १
मृग लंछन जिन आउखुं लाख वरस प्रमाण,
हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण २
चालीस धनुषनी देहडी ए, समचउरस संठाण,
वदन पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण ३

श्री शान्तिनाथ चैत्यवन्दन

शान्ति करण प्रभु शान्तिजिन, अचिरा राणी नंद,
विश्वसेनराय कुलतिलक, अमीय तणो ए कंद १
धनुष चालीसनी देहडी, लाख वरसनुं आय,
मृग लांछन विराजतुं, सोवन सम काय २
शरणे आव्यो पारेवडो, जीवदया प्रतिपाल,
राख राख तुं राजवी, मुजने सिंचाणो खाय ३
जीवथी अधिक पारेवडो, राख्यो ते प्रभु नाथ,
देवमाया धारण समे, न चल्यो मेघरथ राय ४
दयाथी दोय पदवी लहि ए, सोलमां शान्तिनाथ,
पुण्ये सिद्धि वधू वर्या, मुक्ति हाथो हाथ ५

श्री कुंथुनाथ चैत्यवंदन

कुंथुनाथ कामित दिये, गजपुरनो राय,
सिरि मात उरे अवतर्यो, सुरनरपति ताय १
काया पांत्रीश धनुषनी, लंछन जस छाग,
केवल ज्ञानादिक गुणो, प्रणमो धरी राग २
सहस पंचाणुं वरसनुं ए, पाली उत्तम आय,
पद्मविजय कहे प्रणमीये, भावे श्री जिनराय ३

श्री अरनाथ चैत्यवंदन

नागपुरे अर जिनवरु, सुदर्शन नृपनंद,
देवी माता जनमीयो, भविजन सुखकंद १
लंछन नंदावर्तनुं , काया धनुष त्रीश,
सहस चोराशी वरसनुं , आयु जास जगीश २

अरुज अजर जस जिनवरू ए, पाम्या उत्तम ठाण,
तस पद-पद्म आलंबतां, लहीए इम निरवाण ३

श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन

मल्लिनाथ ओगणीशमा, जस मिथिला नयरी,
प्रभावती जस मावड़ी, टाले कर्म वयरी १
तात श्री कुभ्भ नरेसरु, धनुष पचवीसनी काय,
लंछन कलश मंगलकरु, निर्मम निरमाय २
वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय,
पद्मविजय कहे तेहने, नमतां शिवसुख थाय ३

श्री मुनिसुव्रतजिन चैत्यवंदन

मुनिसुव्रत जिन वीशमा, कच्छपनुं लंछन,
पद्मामाता जेहनी, सुमित्र नृपनंदन १
राजगृही नगरी धणी, वीश धनुष शरीर,
कर्म निकाचित रेणुव्रज, उद्दाम शरीर २
त्रीश हजार वरसतणां ए, पाली आयु उदार,
पद्मविजय कहे शिव लह्या, शाश्वत सुख निरधार ३

श्री नमिनाथ चैत्यवंदन

मिथला नयरी राजियो, वप्रा सुत साचो,
विजयराय सुत छोडीने, अवरा मत माचो १
नील कमल लंछन भलुं, पन्नर धनुषनी देह,
नमि जिनवरनुं सोहतुं, गुणगण मणि गेह २
दश हजार वरसतणुं ए, पाल्युं परगट आय,
पद्मविजय कहे पुण्यथी, नमिये ते जिनराय ३

श्री नेमिनाथ के चैत्यवंदन

(१)

नेमिनाथ बावीशमा, शिवादेवी माय,
समुद्रविजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना ताय १
दश धनुषनी देहडी, आयु वरस हजार,
शंख लंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार २
सौरीपुर नयरी भली ए, ब्रह्मचारी भगवान्,
जिन उत्तम पद-पद्मने, नमतां अविचल थान ३

(२)

बाल ब्रह्मचारी नेमनाथ, समुद्रविजय विस्तार,
शिवादेवीनो लाडलो, राजुल वर भरथार १
तोरणे आव्या नेमजी, पशुडे मांडी पोकार,

मोटो कोलाहल थयो, नेमजी करे विचार २
जो परणुं राजुलने, जाय पशुना प्राण,
जीवदया मनमां वसी, त्याथी कीधुं प्रयाण ३
तोरणथी रथ फेरव्यो, राजुल मूर्च्छित थाय,
आंखे आंसुडा वहे, लोग नेमजीने पाय ४
सोगन आपुं माहरा, वलो पाछा एकवार,
निर्दय थई शुं वालमां, कीधो मारो परिहार ५
झीणी झबुके वीजली, झरमर वरसे मेह,
राजुल चाल्या साथमां, वैरागे भिजाणी देह ६
संयम लइ केवल वर्या ए, मुक्तिपुरीमां जाय,
नेम राजुलनी जोडने, ज्ञान नमे सुखदाय ७

श्री पार्श्वनाथ के चैत्यवंदन

(१)

आशपुरे प्रभु पासजी, त्रोडे भव पास,
वामा माता जन्मीया, अहि लंछन जास १
अश्वसेन सुत सुखकरुं, नव हाथनी काया,
काशीदेश वाराणसी, पुण्ये प्रभु आया २
एकसो वरसनुं आउखुं ए, पाली पास कुमार,
पद्म कहे मुगते गया, नमतां सुख निरधार ३

(२)

जय जय जय श्री पार्श्वनाथ, सुख संपतिकारी,
अश्वसेन वामां तणो, नंदन मनोहारी १
नील वर्ण नव हस्त देह, अदि लंछन धारी,
एक सो वर्षने आउखे, वरी लक्ष्मी सारी २
जन्म ठाम वाराणसी ए, प्रत्यक्ष परतो देव,
सानिध्यकारी साहिबो, रुप कहे नित्य मेव ३

(३)

ऊँ नमः पार्श्वनाथाय, विश्व चिंतामणीयते,
ह्रीं धरणेन्द्र वैरोट्या, पद्मावती युतायते १
शान्ति तुष्टि महापुष्टि, धृति कीर्ति विधायिने,
ऊँ ह्रीं द्विड् व्याल वैताल, सर्वाधि व्याधि विनाशिने २
जया जिताख्या विजयाख्या, पराजितयान्वितः,
दिशां पालैर्ग्रहैर्यक्षै, विद्यादेवीभिरन्वितः ३
ऊँ असिआउसा नमस्तत्र, त्रैलोक्यनाथतां,
चतुःषष्ठि सुरेन्द्रास्ते, भाषंते छत्र चामरैः ४

श्री शंखेश्वर मंडन, पार्श्वजिन प्रणत कल्पतरुकल्प,
चूरय दुष्टव्रातं, पूरय मे वांछितं नाथ ५

(३)

जय चिन्तामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी,
अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी १
प्रभु नामे आनंदकंद, सुख संपत्ति लहीए,
प्रभु नामे भव भयतणां, पातक सब दहीए २
ऊँ ह्री वर्ण जोडी करीए, जपीए पार्श्वनाम,
विष अमृत थई परगमे, लहीए अविचल ठाम ३

(४)

सकल भविजन चमत्कारी, भारी महिमा जेहनो,
निखिल आतमराम राजित, नाम जपीए तेहनो,
दुष्ट कर्माष्टक गंजरी जे, भविक जन मन सुखकरो,
नित्य जाप जपीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो १
बहु पुण्य राशि देश काशि, तत्थ नयरी वणारसी,
अश्वसेन राजा राणी वामा, रुपे रति तनु सारिखी,
तस कूखे सुपन चौद सूचित, स्वर्गथी प्रभु अवतर्या,
नित्य जाप जपीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो २
पोस मासे कृष्ण पक्षे, दशमी दिन प्रभु जनमीयो,
सुरकुमारी सुरपति भक्ति भावे, मेरु श्रृंगे स्थापियो,
प्रभाते पृथ्वीपति प्रमोदे, जन्म महोत्सव अतिकर्यो,
नित्य जाप जीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो ३
त्रण लोक तरुणी मन प्रमोदी, तरुण वय जब आवीया,
तब मात ताते प्रसन्न चित्ते, भामिनी परणाविआ,
कमठ शठ कृत अग्नि कुंडे, नाग बलतो उद्धर्यो,
नित्य जाप जीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो ४
पोष वदी एकादशी दिने, प्रव्रज्या जिन आदरे,
सुर असुर राजा भक्ति साजा, सेवना झाझी करे,
काउस्सग्ग करतां देखी कमठे, कीध परिषह आकरो,
नित्य जाप जीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो ५
तब ध्यान धारा रूढ जिनपति, मेघ धारे नवि चल्यो,
चलित आसन धरण आयो, कमठ परिषह अटकल्यो,
देवाधिदेवनी करे सेवा, कमठने काढी परो,
नित्य जाप जीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो ६
क्रमे पामी केवलज्ञान कमला, संघ चउविह स्थापीने,

प्रभु गया मोक्षे सम्मेतशिखरे, मास अणसण पालीने,
शिवरमणी रंगे रमे रसियो, भविक तस सेवा करो,
नित्य जाप जीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो ७
भूत प्रेत पिशाच व्यंतर, जलण जलोदर भय टले,
राजा राणी रमा पासे, भक्ति भावे जो मले,
कल्पतरुथी अधिक दाता, जगत त्राता जय करो,
नित्य जाप जीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो ८
जराजर्जरी भूत यादव, सेन्य रोग निवारता,
वढीयार देशे नित्य बीराजे, भविक जीवने तारता,
ए प्रभुतणा पद पद्म सेवा, रूप कहे प्रभुता वरो,
नित्य जाप जीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो ९

श्री महावीरस्वामी के चैत्यवंदन

(१)

सिद्धारथ सुत वंदिये, त्रिशलानो जायो,
क्षत्रिकुण्डमां अवतर्यो, सुर नरपति गायो १
मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय,
बहोतेर वर्षनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राय २
खीमाविजय जिनरायना ए, उत्तम गुण अवदात,
सात बोलथी वर्णव्यो, पद्मविजय विख्यात ३

(२)

सिद्धारथ सुत वंदीए, त्रिशला देवी माय,
क्षत्रियकुंडमां अवतर्या, प्रभुजी परम दयाल १
उज्जवल छट्ठ अषाढ़नी, उत्तराफाल्गुनी सार,
पुष्पोत्तर विमानथी, चवीआ श्री जिनेश्वर राय २
चैत्र सुदि तेरस दिने, जन्म्या श्री जिनराय,
सुरनत मली सेवा करे, प्रभुनुं जन्म कल्याण ३
मागशर वदि दशमी दिने, लीए प्रभु संयम भार,
चउनाणी जिनजी थयां, करवा जग उपकार ४
साडाबार वरस लगे, सह्यां परिषह घोर,
घन घाती चउकर्म जे, वज्रे कर्या चकचूर ५
वैशाख सुदि दशमी दिने, ध्यान शुक्ल मन ध्याय,
शमीवृक्ष तले प्रभु, पाम्या पंचम नाण ६
संघ चतुर्विध स्थापवा, देशना दिये महावीर,
गौतम आदि गणधरु, कर्या वजीर हजूर ७
कार्तिक अमावस्या दिने, श्री वीर लह्या निर्वाण,

प्रभाते इन्द्रभूतिने, आप्युं केवलनाण ८
ज्ञान गुणे दीपा कर्याए, कार्तिक कमला सार,
पुण्ये मुगति वधू वर्या, वरते मंगल माल ९

(३)

वीर प्रभु पावापुरे, अंतिम आयुष्य धार,
सोल पहोर देशना दीए, सुणे राजा अढार १
बहोतेर वर्ष पुरा, पाम्या पद निर्वाण,
भाव दीपक जाता कर्या, द्रव्य दीप सुजाण २
गौतम गणधरे सांभली, धरता खेद अपार,
राग गयो विरागथी, थया केवली धार ३
देववंदन गणणुं गणो, आतम निर्मल थाय,
सहुजन हर्षित थयां, वर्ष नवुं सुखदाय ४
नमुचीने दबवियो, विष्णुकुमारे धार,
ते पण कारण जाणिये, क्षान्ति ललित जुहार ५

(४)

अषाढ़ सुद छट्ठना दिने, देवलोकथी चवीया,
चैत्र सुद तेरस भळी, त्रिशला कुंखे जन्मीया १
कार्तिक वदि दशमी दिने, सुखकर संयम ध्यान,
वैशाख सुदि दशमी खरी, पाम्या केवलज्ञान २
आसो वदि अमावसना, पाम्या वीर निर्वाण,
शान्ति ललित सेवे सदा उपगारी जग भाण ३

श्री दीवाली चैत्यवन्दन

शासनना शणगार वीर, मुक्तिपुरी शणगारी,
गौतमनी प्रीति प्रभु, अन्त समये विसारी १
देवशर्णा प्रतिबोधवा, मोकल्यो मुजने स्वामी,
विश्वासी प्रभुवीरजी, छेतर्या मुज अभिरामी २
हाहा वीर आ शुं कर्युं, भारतमां अंधारु,
कुमति मिथ्यात्वी वधी जशे, कोण करशे अजवालुं ३
नाथ विनाना सैन्य जेम, थया अमे निरधार,
इम गौतम प्रभु वलवले, आंखे आंसूडानी धार ४
कोण वीरने कोण तुं जाणी एहवो विचार,
क्षपक श्रेणिए आरोहता, प्रभु पाम्या केवल सार ५
वीर प्रभु मोक्षे गया, दिवाली दिन जाण,
ओच्छव रंग वधामणां, जस नामे कल्याण ६

श्री गौतमस्वामी चैत्यवन्दन

गौतम गुरु आणा गये, देवशर्मा के हेत,
प्रतिबोधी आवत सुना, जाण्या नहीं संकेत १
वीर प्रभु मोक्षे गया छोडी मुज संसार,
हा हा भरते हो गया, मोह अति अंधकार २
वीतराग नही राह हे, एक पखो मुज राग,
निष्फल एम चिंतवी गयो, गौतम मन से राम३
मान कियो गणधर हुओ, राग कियो गुरु भक्ति,
खेद कियो केवल लह्यो, अद्‌भूत गौतम शक्ति ४
दीप जलावे राय ते, तिणे दीवाली नाम,
पडवाने दिन केवली, उत्सव दिन अभिराम ५

श्री २४ तीर्थंकर आयुष्य चैत्यवंदन

प्रथम तीर्थकर आउखुं, पूर्व चोरासी लाख,
बीजा बउंतेर लाखनुं, त्रीजानुं साइठ लाख १
पचास चालीश त्रीश ने, वीश दश ने दोय,
एक लाख पूर्व तणुं, दशमां शीतल जोय २
हवे चोराशी लाख वर्ष, बारमां बउंतेर लाख,
साठ त्रीश ने दशनुं शान्ति एकज लाख ३
कुंथु पंचाणुं हजारनुं, अर चोरासी हजार,
पंचावन त्रीसने दशनुं, नेम एक हजार ४
पार्श्वनाथ सो वरसनुं बहुंतेर श्री महावीर,
एहवा जिन चौवीशनुं, आयु सुणो सुधीर ५

श्री २४ तीर्थंकर लंछन चैत्यवंदन

आदिदेव लंछन वृषभ, अजितजिन हस्ति मोहे,
संभवनाथने हय भलो, अभिनंदन करि सोहे १
सुमतिनाथने क्रौंच पक्षी, पद्मप्रभ रक्त कमल,
सुपार्श्व जिनने साथीयो, चंद्रप्रभ शशी निर्मल २
सुविधि जिनेश्वर मत्स्यनुं ए, शीतलजिन श्रीवत्स,
खड्गी जिनवर श्रेयांसने, प्रणमो मनधरी रंग ३
वासुपूज्य महिषनुं, विमलजिन सुवर जोय,
सींचाणो पक्षी अनंतने, श्री धर्मने वज्र ए होय ४
शांतिजिन मृगलो भलो, श्री कुंथु वली छाग,
नंदावर्त्त श्री अरप्रभु, श्री मल्ली कुंभ चंग ५
मुनिसुव्रत ने काचबो ए, नील कमल नमिरायो,
दक्षिणावर्त्त शंख ज जयो, श्री नेमिजिनने पायो ६
पुरुषादाणी पार्श्व प्रभु, लंछन नागनुं सार,
वीरजिनेश्वर ने भलु, सिंह कह्यो उदार ७

गर्भकाल थी ए सही, सर्व जिनने तुंग,
जमणे पगे जंघा तणा, ए आकार उत्तंग ८
लंछन ए सवि शाश्वता ए, आगम मांहि जाजो,
क्षमा विजय जश नाम थी, शुभ ने जश सुख होजो ९

श्री २४ तीर्थंकर देहमान चैत्यवंदन

प्रथम तीर्थकर देहडी, धनुष पांचसे मान,
पचास पचास घटाडतां, सो सुधी भगवान १
सो थी दस घटतुं, पचासथी पांच पांच,
नेमिनाथ बावीशमां, दश धनुष्यनुं मान २
पारसनाथ नव हाथनुं सात हाथ महावीर,
एहवा जिन चोवीशनुं, कवियण कहे सुधीर ३

श्री २४ तीर्थंकर भवगिनती चैत्यवंदन

प्रथम तीर्थकर तणा हुवा, भव तेरे कहीजे,
शांति तणा भव बार सार, नव नेम लहीजे १
दश भव पास जिणंदना, सत्तावीश श्री वीर,
शेष तीर्थकर त्रिहुं भवो, पाम्या भवजल तीर २
जिहांथी समकित फरशीयुं ए, तिहाथी गणीए तेह,
धीरविमल पंडित तणो, ज्ञानविमल गुण गेह ३

श्री सीमंधरस्वामी के चैत्यवंदन

(१)

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो,
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो १
सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ,
भवो भव हुं ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ २
सयल संग छंडी करी ए, चारित्र लइशुं,
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरशुं ३
ए अलजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव,
इहां धकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव ४

(२)

समवसरण बिराजता, श्री सिमंधर स्वामी,
मधुर ध्वनी दिये देशना, वाणी सुधा समाणी १
पर्षदा बेठी सांभले, वाणीनो विस्तार
सहु सहुना मनमां थया, आनंद हर्ष अपार २
जाति वैर समावीयुं, प्रभु अतिशय अदभुत,
संशय सर्वना टालता, करता भविजन पुत ३

हुं निभागी रडवडुं इहां, शा कीधा मे पाप,
ज्ञान विनानी गोठडी, क्यां जई करुं विलाप ४
मात विनानो बाल जेम, अथडातो कूटातो,
आव्यो छुं तुज आगले, राखो तो करुं वातो ५
क्रोड क्रोड वंदन माहरी, अवधारो जिन देव,
मागुं निरंतर आपना, चरण कमलनी सेव ६

(३)

सीमंधर परमात्मा, शिव सुखना दाता,
पुक्रवलवई विजये जयो, सर्व जीवना त्राता १
पूर्व विदेह पुंडरिगिणी, नयरी ए सोहे,
श्री श्रेयांस राजा तिहां, भवियणना मन मोहे २
चौद सुपन निर्मल लही, सत्यकी राणी मात,
कुंथुं अरजिन अंतरे श्री सीमंधर जात ३
अनुक्रमे प्रभु जनमीया, भर यौवन पावे,
माता पिता हरखे करी, रुकमणी परणावे ४
भोगवी सुख संसारना, संयम मन लावे,
मुनिसुव्रत नमि अंतरे, दीक्षा प्रभु पावे ५
घातीकर्मनो क्षय करी, पाम्या केवलज्ञान,
वृषभ लंछने शोभता, सर्व भावना जाण ६
चोराशी जस गणधरा, मुनिवर एक सो क्रोड,
त्रण भुवनमां जोवतां, नही कोई एहनी जोड ७
दशलाख कह्या केवली, प्रभुजीनो परिवार,
एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ८
उदय पेढाल जिन अंतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध,
जशविजय गुरु प्रणमतां, शुभ वांछित फल लीध ९

श्री २० विहरमानजिन चैत्यवंदन

सीमंधर युगमंधर प्रभु, बाहु सुबाहु चार,
जंबुद्वीपना विदेहमां, विचरे जगदाधार १
सुजात साहेबने स्वयंप्रभु, ऋषभानन गुणमाल,
अंनतवीर्यने सुरप्रभु, दशमां देवविशाल २
वज्रधर चंद्रानन नमुं, धातकी खंड मोझार,
अष्टकर्म निवारवा, वंदु वार हजार ३
चंद्रबाहुने भुजंगम प्रभु, नमि इश्वर सेन,
महाभद्र ने देवजशा, अजितवीर्य नामेण ४
आठे पुष्कर अर्धमां, अष्टमी गति दातार,
विजय अड नव चउवीशमी, पणवीशमी किरतार ५

जगदायक जगदीश्वरु ए, जगबंधव हितकार,
विहरमानने वंदना, जीव लहे भव पार ६

श्री अतीत चोवीशी चैत्यवंदन

अतीत चोवीशी प्रथम देव, जिन केवलज्ञानी,
निर्वाणी सागर महाजस, विमल अभिधानी १
सर्वानुभूति श्रीधर सुदत्त, दामोदर सुतेजा,
स्वामीसुव्रत सुमति ने, शिवगति सुहेजा २
अस्ताघ नेमीश्वर अनील, यशोधर कृतार्थ जिनेश,
शुद्धमति ने शिवंकरो, स्यंदन संप्रति कहेश ३

श्री अनागत चोवीशी चैत्यवंदन

पद्मनाभ पहेला जिणंद, श्रेणिक नृप जीव,
सुरदेव बीजा नमुं, सुपास श्रावक जीव १
श्री सुपास त्रीजा बली, जीव कोणिक उदायी,
स्वयंभ्रम चोथा जिणंद, पोट्टिल मुनि भाई २
सर्वानुभूति जिन पांचमां ए, द्रढायु श्रावण जाण,
देवश्रुत छठ्ठा जिणंद, कार्तिक शेठ वखाण ३
श्री उदय जिन सातमां, शंख श्रावक जीव,
श्री पेढाल जिन आठमां, आणंद मुनि जीव ४
पोट्टिल नवमां वंदीए, जीव जेह सुनंद,
शतकीर्ति दसमां जिणंद, सत्व श्रावक आणंद ५
सुव्रत जिन अग्यारमां, देवकी राणी जाण,
अमम जिनवर बारमां, जीव केशव गुणखाण ६
निष्कषाय जिन तेरमां, सत्यकी विद्याधर,
निष्पुलाक जिन चौदमां, बलभद्र सुहंकर ७
श्री निर्मम जिन पंदरमां, जीव सुलसा श्राविका,
चित्रगुप्त जिन सोलमां, रोहिणी जीव भावि ८
श्री समाधि जिन सत्तरमां, रेवती श्राविका जाण,
संवर जिन अढारमां, जीव शतानिक वखाण ९
श्री यशोधर ओगणीसमां, जीव कृष्ण द्विपायन,
विजय नामे वीशमां जिन, जीव कर्ण सहायन १०
एकवीशमां श्री मल्लीनाथ, कृष्ण नारद कहीए,
अबंड श्रावक जीव देव, बावीशमां लहीये ११
अंनतवीर्य त्रेवीशमां ए, जीव अमरनो जेह,
भद्रंकर जिन चोवीशमां, स्वातिबुद्ध गुणगेह १२
ए चोवीशे जिनवरो, होशे आवते काले,
भाव सहित ते वंदिए, कर जोडीने भाले १३

लंछन वर्ण प्रमाण आयु, अंतर सवि सरखां,
संप्रति जिन चोवीश परे, चढते नीरख्या १४
पंच कल्याणक तेहनां ए, होशे एहीज दिवस,
धीरविमल गुरुनो कहे, ज्ञानविमल सूरीश १५

श्री १७० जिन वर्ण चैत्यवंदन

सोल जिनेश्वर श्यामला, राता त्रीस वखाणुं,
नीला मरकत मणि सम, अडत्रीशे गुणखाण १
पीला कंचन वरण जीस्या, छत्रीसे जिनपंच,
शंख वरण सोहे घणुं, पचास सुखकंद २
सित्तेरसो सरवाले मली, भरतैरावत विदेह,
अजितनाथ वारे हता, हुं प्रणमुं धरी नेह ३
ध्यान धरंता प्रभु तणुं, सवि पाप पणाशे,
नाम जपंता जिनराजनुं, दु:ख दोहग नाशे ४
प्रभु पूजाथी पामीए ए, सकल मंगल विस्तार,
रुपकीर्ति गुरुध्यानथी, माणेक भव निस्तार ५

श्री रोहिणी तप चैत्यवन्दन

वासुपूज्य जिन वंदिए,जगदीपक जिनराज,
रोहिणी तप वर्णवुं, भवजल तरण जहाज १
सुदि वैशाखे रोहिणी, त्रीज तणे दिन जाण,
श्री आदीश्वर जिनवर, वर्षी पारणे जाण २
रोहिणी नक्षत्रने दिने, चउविहार उपवास,
पोषह पडिकमणुं करो, तोडो कर्म नो पास ३
ते दिनथी तप मांडीए सात वर्ष लगे सीम,
सात मास उपर वली, धरीए एहिज नीम ४
रोहिणी कुंवरी अने, अशोक नामे भूपाल,
ते तप पूरण ध्याइओ, पाम्या सुरगति शाल ५
तिम भविजन तप कीजिए, शास्त्र तणे अनुसार,
जन्म मरणना भय थकी, टाले ए तप सार ६
तप पूरण तेहज समे, करो उजमणुं सार,
यथाशक्ति होय जेहनी, तिम करीए धरी प्यार७
वासुपूज्य जिन बिंबनी, पूजा करो त्रण काल,
देव वंदो वली भावशुं, स्वस्तिक पूरो विशाल ८
ए तप जे सही आदरे, पहोंचे मनना कोड,
मन वांछित फले तेहना, हंस कहे कर जोड ९

श्री २० स्थानक चैत्यवंदन

पहेले पदे अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध,

त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज प्रसिद्ध १
नमो थेराणं पांचमे, पाठक गुण छठ्ठे,
नमो लोए सव्व साहूणं, जे छे गुण गरिठ्ठे २
नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन भावो,
विनय करो गुणवंतनो, चारित्र पद ध्यावो ३
नमो बंभवय धारिणं, तेरमे किरियाणं,
नमो तवस्स चउदमे, गोयम नमो जिणाणं ४
चारित्र ज्ञान सुअस्स ने ए, नमो तित्थस्स जाणी,
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुखरवाणी५

श्री वर्धमान तप चैत्यवंदन

वर्धमान जिनपति नमी, वर्धमान तप नाम,
ओली आंबिलनी कहुं, वर्धमान परिणाम १
एकादि आयत शत्, ओली संख्या थाय,
कर्म निकाचित तोडवा, वज्र समान गणाय २
चौद वरस त्रण मासने, उपर दिन वली वीश,
यथा विधि आराधतां, धर्मरत्न पद इश ३

श्री ज्ञानपंचमी के चैत्यवन्दन

(१)

श्यामल वान सोहामणा, श्री नेमि जिनेश्वर,
समवसरण बैठा कहे, उपदेश सोहंकर,
पंचमी तप आराधतां, लहे पंचम नाण,
पांच वरस पंच मासनो, ए छे तप परिणाम,
जिम वरदत्त गुण मंजरीए, आराध्यो तप एह,
ज्ञानविमल गुरु एम कहे, धन-धन जगमां तेह

(२)

त्रिगडे बेठा वीर जिन, भाखे भविजन आगे,
त्रिकरण शुं त्रिहुं लोकजन, निसुणो मन रागे १
आराधो भली भातसे, पांचम अजुआली,
ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहाली २
ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार,
ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ३
ज्ञान रहित क्रिया कही, काश कुसुम उपमान,
लोकालोक-प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ४
ज्ञानी श्वासोश्वासमां, करे कर्मनो छेह,
पूर्व कोडी वरसो लगे, अज्ञानी करे तेह ५
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान,

ज्ञानतणो महिमां घणो, अंग पांचमे भगवान ६
पंच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी,
पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि७
एकावन ही पंचनो ए, काउसग्ग लोगस्स करो,
उजमणुं करो भावशुं, टालो भव फेरो८
एणी परे पंचमी आराधीए, आणी भाव अपार,
वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ९

श्री ब्रह्मचर्यपद चैत्यवन्दन

सुवर्ण केरा जे करे, जिन प्रतिमा मंदिर,
होड कदी नवि करी शके, ब्रह्मचर्य जे धीर १
सहस चोराशी साधुना, पारणे जे लाभ,
विजय विजया भक्ति करे, पामे तेहिज लाभ २
इच्छित भोजने जे करे, क्रोड श्रावकनी भक्ति,
ब्रह्मव्रतथी जिनदासने, सोहागदेवीनी शक्ति ३
चोरासी चोवीशीमां, अमर कर्यु जे नाम,
स्थूलीभद्र महिमा नीलो, सारे वांछित काम ४
तीर्थकर पद पामतो, चंद्रवर्मा नृपराय,
शीयलवंतने वंदना, धर्मरत्न महाराय ५

स्तवन संग्रह

श्री बीज तिथि स्तवन

वीर प्रभु आत्म गुरु, प्रणमी मन वच काय
पर्व तिथि स्तवन करुं, समरी शारदा माय १
पर्व तिथि जिन शासने, वर्णवे श्री जिनदेव
दुज पंचमी अष्टमी, एकादशी स्वयमेव २
चतुर्दशी सुदि पूर्णिमा, वली अमावस एकबार
आराधे शुभ भावशुं, श्री संघ चार प्रकार ३
दुज एकादशी पंचमी, ज्ञान आराधन सार
अष्टमी पूनम चउदशी, चरण आराधन सार ४
इनमें से दुज तिथि की, स्तवना करुं उदार
पूर्व पुरुष आचार्य की, परंपरा आचार ५

ढाल पहेली (तर्ज : श्री सीमंधरस्वामी मुक्तिना धामी)

दुज तिथि आराधो, आतम साधे भाखे श्री भगवान
धर्म दोय प्रकारे शास्त्रानुसारे भविजन धारे, भाखे १
ज्ञान धर्म श्रुत धर्म के नामे, धर्म का पहेला प्रकार,
चरण धर्म चारित्र के नामे, धर्म का दूजा प्रकार, दुज.२

ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्ष ज कहिये, दोनो एक समान,
ज्ञान चक्षु और पाद क्रिया से, पावे पद निर्वाण रे, दुज.३
अंधा और लुला दोनो मिलकर, पहुंचे स्थित स्थान,
दोनों ही एकांते, पावे पद समान रे, दुज.४
अथवा दुविधा धर्म प्रकाशे, तीर्थकर गणधार,
दोनो से मुक्ति के सादन, सागर गुरु अणगार,दुज.५

ढाल बीजी

कल्याणक पांच जिनवर के, अनादि काल की रीति,
करे उत्सव मिली देवा, जने हे धर्म से प्रीति, कल्याणक १
च्यवन जन्म दीक्षा केवल ज्ञान, पांचमां मोक्ष कल्याणक,
करे सवि देवता भावे, बजावे दुंदुभि आके, कल्याणक २
आराधन करते नर नारी, द्वितीया दिवस शुभ भावे
सुनो द्वितीय के कल्याणक, मनोहर भावना भावे, कल्याणक ३

ढाल त्रीजी (तर्ज : मथुरामां खेल खेली आव्या)

कल्याणक सुखकार रे, प्रभु देवाधिदेवा,
देवाधिदेवा जिनवर सेवा, कल्याणक सुखकार रे, प्रभु. १
माघ सुदि द्वितीया रे जन्मे, अभिनंदन जिनराज रे, प्रभु २
वासुपूज्य जिन केवल पाया, माघ सुदि दुज मास रे, प्रभु. ३
अरनाथजिन च्यवन कल्याणक, फाल्गुन सुद दुज तार रे, प्रभु. ४
वैशाख वदि द्वितीया दिने रे, शीतलनाथ भवपार रे, प्रभु. ५
सुदि दुज नव मास केडे, सुमतिनाथ अवतार रे, प्रभु. ६
ज्ञान ध्यान तप जापे रे, आराधे नर नार रे, प्रभु. ७

श्री पंचमी तिथि के स्तवन

(१)

ढाल-१ (तर्ज - एक भेजु सका , सुंठ शक्कर की बोरी)

पालो पालो पंचमी तप, पंच वर्ष पंच मास,
पंच ज्ञान सहित, पंचमी गति पामवा खास, पालो.१
पंचमी आराधनथी, पंच ज्ञाननी शुद्धि,
पंचाचारे वली थाय, धीरता बुद्धि, पालो.२
वरदत्तादि वृतांत, घणा छे ताहि,
सुणो भविष्यदत्त, संबंध तथापि उच्छांही, पालो.३
कुरु मंडलमां गुरु, शहेर हस्तिनापुर सारुं,
थया शान्ति कुंथु अर, तीर्थकर चक्रधारुं, पालो.४
तिहां चंद्रप्रभु तीर्थकर, तीर्थमां सारा,
श्रेष्ठि धनपति शेठाणी कमल श्री प्यारा, पालो.५

सिंह स्वप्नथी भविष्य , भाखी मुनि सारा,
थयो भविष्यदत्त सुर, राजाने पण प्यारो, पालो.६
तस बंधव बंधुदत्त, नामे नठारो,
रुपवंती मातथी, थायो कुल कुछारो, पालो.७
साथे बे बांधव, देशांतर सिधावे,
वनमां वृद्ध मूकी, लघु सह साथ पलावे, पालो.८
हवे भविष्यदत्तनो भविष्य उपर आधार,
सिंहादि भयानक, वनमां गणे श्री नवकार, पालो.९
फरतां फरतां एक, नगर नजरमां आवे,
धन धान्यथी पूर्ण छतां, कोई जन न दिखावे, पालो.१०
ते शून्य नगरमां फरतां फरतां, देवल दीठुं,
श्री चंद्रप्रभु जिन दर्शन, लाग्युं मीठुं, पालो.११
नमी पूजा स्तुति करी, बहार जई सूतो,
बारमां देवलोके, धर्म मित्र तस हुंतो, पालो.१२
ते यशोधर केवलीने, पूछी तिहां आवे,
श्री चंद्रप्रभु जिन, चरणे शिश नमावे, पालो.१३
निद्रानो छेद न थाय, एम विचारी,
भीते अक्षर पंक्ति, लखी दीधी सारी, पालो.१४
तस रक्षा माणिभद्र, यक्ष ने भलावी,
सुर स्वस्थाने पहोंच्यो, शुभ भावना भावी, पालो.१५
निद्रा छेदे अक्षर, पंक्ति अनुसार,
गयो कनक महेलमां, भविष्यदत्त कुमार, पालो.१६
ते शून्य महेलमां, कन्या एकाकी जोई,
पूछ्युं आ शहेरमां, केम न दिसे कोई, पालो.१७
कन्या कहे राक्षसे, करी नगरमां मारी,
जीवती राखी, भवदत्त तणी हुं, मारी, पालो.१८
तेटलामां आव्यो राक्षस महा विकराल,
श्रेष्ठी सुत सामो, थयो काढी करवाल, पालो.१९
अवधिज्ञाने मुज, उपगारी छे जाणी,
राज्य आपी भविष्य ने, रुपा करी तस राणी, पालो.२०
राय राणी तिलक द्विपमां, राज्य करे छे,
हंस परे चंद्रप्रभु, चरण कमलमां ठरे छे, पालो.२१

ढाल-२ (तर्ज : काशी देश बनारसी)

देखो देखो पंचमीनो प्रभाव, प्रेमथी प्राणी रे,
जेथी पुत्र वियोग पलाय, थाय सुख खाणी रे,

माता कमल श्री चिंतवे, एह पुत्र न आव्यो रे,
बार वर्ष थयां कोई क्षेम, पत्र न लाव्यो रे, देखो.१
रुदती रुदती आक्रंद, करती निवारी रे,
श्रुत देवी समा सुव्रता, साध्वी ए ठारी रे,
कहे शेठाणी पुत्र वियोग, कहो केम जावे रे,
गुरुणी कहे पंचमीथी, सकल सुख पावे रे, देखो.२
चोथने दिन एकासणुं, करी शील पालो रे,
उपवास प्रभु पूजी, पांचम अजुवालो रे,
छठने दिन देई गुरु दान, एकासणुं करीए रे,
मत्सर मुकी भव सागर, पार उतरीए रे, देखो.३
गुरु पंचमी तप पंच वर्ष, पंच मास जाणुं रे,
पंच पक्षे थाय व्रत पूरु, शास्त्रथी वखाणुं रे,
जो शक्ति न होय तो, भक्ति सहित तप कीजे रे,
लघु पंचमी व्रत पंच मास करी, सुख लीजे रे, देखो.४
सुव्रता वचनथी पंचमी, तप स्वीकार्यो रे,
तस साथे देव गुरु वंदी, प्रश्न उच्चार्यो रे,
मम पुत्र परदेशथी, आवशे के नहि स्वामी रे,
ज्ञान तणी तुमे भंडार, नथी कांई, खामी रे, देखो.५
मुनि भाखे परदेशमां, तारो पुत्र छे राजा रे,
इहां अर्ध राज्यने पामशे, पुण्य छे तारा रे,
एवुं तत्त्व ज्ञानीनुं वचन, सुणीने उसलती रे,
दिन ने नित्य देती दान, सुखे ते वसती रे, देखो.६
एक दिन भविष्याने रुपा कहे, सुणो स्वामी रे,
संभलावो निज वृत्तांत, कहे शिरनामी रे,
तव भविष्यदत्ते करी वात, पोतानी वीती रे,
विरहे पीडाती मात, उपर थई प्रीति रे, देखो.७
जाय मलवा मातने, समुद्र तटे राणी साथे रे,
सिंधु ए मोतीडे वधाव्यो, तरंग रुप हाथे रे,
बुरा बधुदत्तना वहाण, आव्यां बुरा हाले रे,
भीखारी वेशे आवता, बांधव ने निहाले रे देखो.८
वस्त्राभूषणादिकथी पोता समो, कर्यो तेणे रे,
कहे राणी भरोसो न करीए, द्रोह कर्यो जेणे रे,
तथापि वहाणमां बेठो, सरल तस संगे रे,
नाम मुद्रा झाड तले, भुवी भामीनि ते मंगे रे देखो.९

गयो लेवा भविष्यदत्त, एकलडो तत्काल रे,
वहाण हंकारी दीधा दुष्टे, मुकी नही चाल रे,
वली भविष्यदत्त थयो, एकलडो निरधार रे,
राणी रुवे झुरेने घणा, करे पोकार रे, देखो.१०
भाभी पासे भडवा परे, आव्यो भामटो मलवा रे,
सती कहे नथी देवर, सुवर समो तु छे छलवा रे,
आ वेलाए वहाणमां, थयो घणो उत्पात रे,
वहाण वटिया खमावे, सतीने थई सुख साता रे, देखो.११
माणिभद्र विमाने बेसाडी, भविष्यदत्तने लावे रे,
निज माताना चरण कमलमां, शिर नमावे रे,
भूपाले सुमित्रा पुत्री, तिहां परणावी रे,
अर्ध राज्य आपीने, प्रीति पूर्ण जणावी रे, देखो.१२
बंधुदत्त बांधी मंगावी, भविष्या अपावे रे,
वियोग तणा दु:ख, धर्म पसाये खपावे रे,
पण वृद्ध राजाने मनावी, छोडवी दीधो रे, देखो.१३
तथापि राजा तस माता, साथे निकाले रे,
निज देश थकी परदेश, अनीति न चाले रे,
माता कमलश्री विघ्न, विलय थया एम विचारे रे,
पंचमी तपनो प्रभाव, प्रेमथी उच्चारे रे, देखो.१४
हवे उजमणो पांच चैत्य, नवा निपजावे रे,
पंच वर्णी प्रतिमां पांच, तिहां पधरावे रे,
इत्यादिक बहु विस्तार, उजमणा करो रे,
करो अनुमोदनानी साथे, टले भवफेरो रे, देखो.१५
भविष्यदत्तने भलावी राज्य, पुत्र ने मोटु रे,
लीधी दीक्षा जाणी संसार, सुख सवि खोटुं रे,
पहेली प्रिया अने मात, साथे प्रव्रज्या पाली रे,
दशमे स्वर्गे थया देव, त्रणे भाग्यशाली रे देखो.१६
त्यांथी च्यवी मातानो जीव, थयो चक्रवर्ती रे,
वसुंधर नामे धरापाल, फोज तस फरती रे,
भविष्यानुं रुपानो जीव, थयो तस बेठो रे,
नंदिवर्धन नाम कुमार, जेवो वर टेरो रे, देखो.१७
श्री भविष्यदत्तनो जीव, थयो लघु भ्राता रे,
श्रीवर्धन नामे कुमार, जीवोने च्हाता रे,
चक्रवर्ती अने बे पुत्रोए, दीक्षा पाली रे,

केवली थई मोक्षमां गयां, ज्यां नित्य दिवाली रे देखो.१८
श्री विजयानंद सूरिराज, थया भाग्यशाली रे,
जेनुं वचन जगतमां गवाय, घणुं टंकशाली रे,
तस प्रथम शिष्य श्री लक्ष्मीविजय, गुरु मलिया रे,
कहे हंस पसाए तास, मनोरथ फलिया रे, देखो१९
तेणे पंचमी तपनुं स्तवन, कर्यु शुभ भावे रे,
श्री आदि मंडल, अरज करीने करावे रे,
आ मंडल सुंदर शहेर, वडोदरे रंगे रे,
करे भक्ति प्रभुनी, संगीतथी मन चंगे रे, देखो.२०

(२)

श्री गुरु चरण नमी करी, रेस प्रणणी सरस्वती माय,
पंचमी तपविधि शुं करो रे, निर्मल ज्ञान उपाय
भविकजन, कीजे ए तप सार, जन्म सफल निरधार,
भविकजन, लहिए सुख श्रीकार भविकजन, कीजे ए तप सार१
समोवसरण देवे रच्युं रे, बेठा नेमि जिणंद, बारे पर्षदा आगले रे,
भाखे श्री जिनचंद, भवि.२
ज्ञान वडो संसारमां रे, शिवपुरनो दातार,
ज्ञान रुपी दीवो कह्यो रे, प्रगट्यो तेज अपार, भवि.३
ज्ञान लोचन जब निरखीये रे, तब देखे लोकालोक,
पशुआ परे ते मानवी रे, ज्ञान बिना सवि फोक, भवि.४
ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कर्म करे जे नाश.
नारकीना ते जीवनने रे, कोडी वरस शुं विलास, भवि.५
आराधक अधिको कह्यो रे, भगवती सूत्र मोझार,
क्रियावंतने आगले रे, ज्ञान सकल शिरदार, भवि.६
कष्ट क्रिया तो सहुकरे, तेहथी नही कोई सिद्ध,
ज्ञान क्रिया जब दो मिले रे, तव पामे बहुली रिद्ध, भवि.७
कुण आराधी एहवी रे, कोणे फली तत्काल,
तेह उपर तमे सांभलो रे, एहनी कथा रसाल, भवि.८
जंबूद्वीप सोहमणो रे, भरत क्षेत्र अभिराम,
पद्मपुर नगरे शोभतो रे, अजितसेनराय नाम, भवि.९
शील सोभागी आगले रे, यशोमती राणी नार,
वरदत्त बेटो तेहनो रे, मुरखमां शिरदार, भवि.१०
मात पिता मन रंगशुं रे, मूके अध्यापक पास,
पण तेहने नवि आवडे रे, विद्या विनय विलास, भवि.११
जिम जिम यौवन जागतो रे, तिम तिम तनु बहु रोग,
कोढ थयो वली तेहने रे, विषमां कर्मना भोग, भवि.१२

आदरी ए आदर करी रे सौभाग्य पंचमी सार,
सुख सघला सहेजे मीले रे, पामे ज्ञान अपार, भवि.१३

(३)

(तर्ज - वीर कुंवरनी वातडी...)

आगमनी आशातना नवि करीये, हांरे नवि करीये रे, नवि करीये रे,
हारे श्रुतभक्ति सदा अनुसरीये, हांरे शक्ति अनुसार, आगम.१
ज्ञान विराधक प्राणिया मति हीना, हांरे ते तो परभव दु:खीया दीना,
हांरे भरे पेट ते पर आधीना, हांरे नीच कुल अवतार, आगम.२
अंधा लुला पांगुला पिंड रोगी, जनम्याने मात वियोगी
हांरे संताप घणोने शोगी हांरे योगी अवतार आगम.३
मूंगाने वली बोबडा धन हीना, हांरे प्रिया पुत्र वियोगे लीना
हांरे मुरख अविवेके भीना, हांरे जाणे रणनुं रोझ, आगम.४
ज्ञान तणी आशातना करी दूरे, हांरे जिन भक्ति करो भरपूरे,
हांरे रहो श्री शुभवीर हजुरे, हांरे सुख मांहे मगन्न, आगम.५

(४)

पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी, जिम पामो निर्मल ज्ञान रे,
पहेलुं ज्ञान ने पछी क्रिया, नहि कोई ज्ञान समान रे, पंचमी.१
नंदीसूत्रमां ज्ञान प्रकाश्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे,
मति श्रुत अवधि ने मन:पर्यव, केवलज्ञान श्रीकार रे, पंचमी.२
दोय भेदे मन: पर्यय दाख्युं, केवल एक उदार रे, पंचमी..
चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक आकाश रे,
केवलज्ञान समो नहि कोई, लोकालोक प्रकाश रे, पंचमी.३
पारसनाथ पसाय करीने, पूरो माहरी उमेद रे,
समयसुन्दर कहे हुं पण प्रणमुं, ज्ञाननो पांचमो भेद रे, पंचमी.४

श्री अष्टमी तिथि स्तवन

हांरे मारे ठाम धरमना साडा पंचवीश देश जो,
दीपे रे तिहां देश मगध सहुमां शिरे रे लोल. १
हांरे मारी नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो,
राजे रे तिहां श्रेणिक गाजे गज परे रे लोल २
हांरे मारे गाम नगरपुर, पावन करतां नाथ जो,
विचरंता तिहां आवी, वीर समोसर्या रे लोल ३
हांरे मारे चौद सहस मुनिवरना, साथे साथ जो,
सुधा रे तप संयम शीयले अलंकर्या रे लोल ४
हांरे मारे फूल्या रसभर, झुल्या अब कदंब जो,
जाणुं रे गुणशीलवन होसी रोमांचियो रे लोल. ५
हांरे मारे वाया वाय, सुवाय तिहां अविलंब जो,

नासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लोल ६
हांरे मारे देव चतुर्विध, आवे कोडा कोड जो,
त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनुं, ते रचे रे लोल ७
हांरे मारे चोसठ सुरपति, सेवे होडा होड जो,
आगे रे रस लागे, इंद्राणी नाचे रे लोल ८
हांरे मारे मणियम, हेम सिंहासन बेठा आप जो,
ढाले रे सुर चामर, मणि रत्ने जड्या रे लोल ९
हांरे मारे सुणंता, दुंदुभिनाद टले सवि ताप जो,
वरसे रे सुर फुल सरस, जानु अड्या रे लोल १०
हांरे मारे ताजे तेजे, गाजे घन जेम लुंब जो,
राजे रे जिनराज समाजे, धर्म ने रे लोल ११
हांरे मारे निरखी हरखे, आवे जन मन लुंब जो,
पोषे रे रस पडे, घोषे भर्ममां रे लोल १२
हांरे मारे आगम जाणी, जिननुं श्रेणीकराय जो,
आव्यो रे परवर्यो हय गय रथ पायगे रे लोल १३
हांरे मारे दई प्रदक्षिणा, वंदी बेठी ठाय तो,
सुणवा रे जिनवाणी, मोटे भायगे रे लोल १४
हांरे मारे त्रिभुवन नायक, लायक तव भगवंत जो,
आणी रे जन करुणा, धर्म कथा कहे रे लोल १५
हांरे मारे सहज विरोध, विसारी जगना जंत जो,
सुवणा रे जिनवाणी, मनमां गहगहे रे लोल १६

ढाल -२

वीर जिनवर इम उपदेशे, सांभलो चतुर सुजाण रे,
मोहनी निंदमां कां पडो, ओलखो धर्मना ठाण रे १
विरति ए सुमति धरी आदरो, परिहरो विषय कषायरे,
बापडा पंच प्रमादथी, कां पडो कुगतिमां धाय रे, वीर.२
करी शको धर्म करणी सदा, तो करो एह उपदेश रे,
सर्व काले करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेष रे, वीर.३
जुजुआ पर्व षटना कह्यां, फल घणा आगमे जोय रे,
वचन अनुसार आराधतां, सर्वथा सिद्धिफल होय रे वीर.४
जीवने आयु परभव तणो, तिथि दिने बंध होय प्रायः रे,
ते भणी एह आराधतां, प्राणीयो सद्गति जाय रे, वीर.५
तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे श्री गौतम स्वामी रे,
भविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रभु ताम रे, वीर.६
अष्ट महासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे,
बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी, अष्ट गुण सिद्धि रे, वीर.७

आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजितनो जन्म कल्याणक रे,
च्यवन संभव तणो एह तिथे, अभिनंदन निरवाण रे, वीर.८
सुमति सुव्रत नमि जनमिया, नेमनो मुगति दिन जाण रे,
पार्श्व इण तिथे सिद्धला, सातम जिन च्यवनमाण रे, वीर.९
एह तिथि साधतो राजीयो, दंडवीरज लहयो मुक्ति रे,
कर्म हणवा भणि अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे, वीर.१०
अतीत अनागत कालना, जिनतणां केई कल्याणक रे,
एह तिथे वली घणा संयमी, पामशे पद निरवाण रे, वीर.११
धर्म वासित पशु पंखीया, एह तीथे करे उपवास रे,
व्रतधारी जीव पोसह करे, जेहने धर्म अभ्यास रे, वीर.१२
भाखियो वीर आठम तणो, भविक हित ए अधिकार रे,
जिन मुखे उच्चरी प्राणीया, पामशे भवतणो पार रे, वीर.१३
एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोडी रे,
सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे शांति कर जोडी रे, वीर.१४

कलश

इम त्रिजग भासन, अचल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरुं,
बुध प्रेम गुरु, सुपसाय पामी, संथुण्यो अवलेसरुं,
जिन गुण प्रसंगे, भण्यो रंगे, स्तवन ए आठम तणो,
जे भविक भावे, सुणे गावे, कांति सुख पावे घणो.

श्री मौन एकादशी के स्तवन

(१)

ढाल -१

प्रणमी पूछे वीरने रे, श्री गौयम गणराय,
मृगशिर सुदि एकादशी रे, तपथी शुं फल थाय रे,
जिनवर उपदिशे, तिहां सांभले सहु समुदाय रे, जिनवर.१
वीर कहे गोयम सुणो रे, हरि आगल कहयो नेम,
तेम तुम आगल हुं कहुं रे, सांभलो मनधरी प्रेम रे, जिनवर.२
द्वारिका नगरी समोसर्या रे, एक दिन नेमि जिणंद,
कृष्ण आव्यां तिहां वांदवा रे, पूछे प्रश्न नरिंद रे, जिनवर.३
वर्ष दिवसमां दिन मली रे, तीन सो साठ कहंत,
तेहमां कुणदिन एहवो रे, तपथी बहुफल हुंत रे, जिनवर.४
मृगसिर सुदि एकादशी रे, वर्णवी श्री जगनाथ,
दोढसो कल्याणक थयां रे, जिनना एकण साथ रे, जिनवर.५
श्री अरजिन दीक्षा ग्रही रे, नमि ने केवल नाण,
जन्म दीक्षा केवल लह्यां रे, श्री मल्लि जग भाण रे, जिनवर.६

वर्तमान चोवीशीना रे, भरते पंच कल्याणक,
ए पंच भरते थई रे, पंचाधिक कई वीर जाण रे, जिनवर.७
पांच ऐरावते मिली रे, कल्याणक पंच पंच,
दश क्षेत्रे सहुए मिली रे, पचास कल्याणक संच रे, जिनवर.८
अतीत अनागत कालना रे, वर्तमानना वली जेह,
दोढसो कल्याणक कह्यां रे, उत्तम इण दिन एह रे, जिनवर.९
जे एकादशी तप करे रे, विधिपूर्वक गुण गेह,
दोढसो उपवास तणो रे, फल लहे भवियण तेह रे, जिनवर.१०

ढाल - २

हवे एकादशी तप तणो माधवजी, विधि कहुं निर्मल बुद्धि, हो गुणरागी
नरेश्वर सांभलो जादवजी, देव जुहारो देहरे, माधवजी,
गुरु वंदो भाव विशुद्धि, हो गुण.१
अहोरत पोसह करी, माधव. गुरु मुखे करो पच्चक्खाण, हो गुण.
देव वंदो त्रण टंकना, माधव. सांभलो सदगुरु वाणी, हो गुण.२
दोढसो कल्याणक तणे, माधव. गुणणो गुणो एक मने, हो गुण.
भणण गुणण किरीया विना, माधव. नवि बोले अन्य वचन, हो गुण.३
मौन ग्रहो निशी दिवसनो, माधव. राखो शुभ परिणाम, होगुण.
मौन एकादशी ते भणी, माधव. निरुपम एवुं नाम, हो गुण.४
प्रथण दिने एकासणुं, माधव. पारणे एहिज रीत, हो गुण.
बार वर्ष तप इम करे, माधव. शुद्ध धर्म शुं प्रीत, हो गुण.५
अंग अगियार रे भणे, माधव. पडिमातप, अग्यार, हो गुण.
प्रतिमासे उपवास तणो, माधव. तप करे निरुपम वार, हो गुण.६
सुव्रत शेठ तणी परे, माधव. मन राखे स्थिरता जोग, हो गुण.
तो एकादशी दशमे भवे, माधव. लहे शिववधू संजोग, हो गुण.७

ढाल - ३

हवे उजमणुं तप तणुं, एकादशी दिन सार ललना,
दिन अग्यार देहरे, स्नान पूजा अधिकार ललना, भगवंत भाखे हरि भणी १
ढोलुं ढोविये देहरे, धान्य अग्यार प्रकार ललना,
श्रीफल फोफल सुखडी, नवी नवी भात अग्यार ललना, भगवंत.२
केशर सुखड धोतीयां, कांचन कलश शृंगार ललना,
धूप धाणा ने वाटकी, अंग लुहणा घनसार ललना, भगवंत.३
अंग अग्यारे लखावीये, पुंठाने रुमाल ललना,
झीबी डोरा ने डाबड़ी लेखण कांबी निहाल, ललना, भगवंत.४
झीलमील चन्दुआ भला, ठवणी स्थापना काज ललना,
पाटी जपमाला भली, वासना वटुआ साज ललना, भगवंत.५

वींजणा ने वली पुंजणां, कवली कोथली ताम ललना,
रेशम पाटी रुयड़ी, मुहपत्ति जयणा काज ललना, भगवंत.६
ज्ञाननां उपरगण भलां, अग्यार अग्यार मान ललना,
साधर्मिक अग्यार ने, पोषीजे पकवान ललना, भगवंत.७
ते सांभली हरि हरखीया, आदरे व्रत पच्चक्खाण ललना,
तिथि एकादशी तप करे, बारवर्ष गुण खाण ललना, भगवंत.८
तीर्थंकर पद तिण थकी, गोत्र निकाचित कीध ललना,
अमम नामे जिन बारमां, होशे तप फल सिध ललना भगवंत.९
इण विधी श्रीवीरे कह्यो, ए अधिकार अशेष ललना,
तेह भणी तप तुमे आदरो, लेशो सुख सुविशेष ललना, भगवंत.१०

(२)

जगपति नायक नेमिजिणंद, द्वारिका नगरी समोसर्या,
जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव कोडशुं परिवर्या १
जगपति धीगुण फूल अमूल, भक्ति गुणे माला रची,
जगपति पूजी पूछे कृष्ण, क्षायिक समकित शिवरूचि२
जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंभ परिग्रहे,
जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम बिन कोण कहे ३
जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे गुण निलो,
जगपति कोई उपाय बताय, जिम करे शिववधु कतलो ४
नरपति उज्जवल मागशिर मास, आराधो एकादशी,
नरपति एक सौ ने पच्चास, कल्याणक तिथि उल्लसी ५
नरपति दश क्षेत्रे त्रण काल, चोवीसी त्रीसे मली,
नरपति नेवुं जिनना कल्याण, विवरी कहुं आगलवली ६
नरपति अरदीक्षा नमी नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली,
नरपति वर्तमान चोवीसी मांहि, कल्याणक कह्यां वली ७
नरपति मौनपणे उपवास, दोढसो जप माल गणो,
नरपति मन वश काय, पवित्र चरित्र सुनो सुव्रत तणो ८
नरपति दाहिण धातकी खंड, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी,
नरपति विजय पाटन अभिधान, साचो नृप प्रजापालथी ९
नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गज गामिनी,
नरपति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शियल सलीला कामिनी १०
नरपति पुत्रादिक परिवार, सार भूपण चीवर धरी,
नरपति जाये नित्य जिन गेह, नमन स्तवन पूजा करे ११
नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायिक पोषध करे,
नरपति देव नंदन आवश्यक, काल वेलाये अनुसरे १२

श्री रोहीणी तप स्तवन

ढाल-१

हांरे मांरे वासुपूज्य नो नंदन, मधवा नाम जो,
राणी तेहनी कमला पंकज, लोयणी रे लो,
हांरे मांरे आठ पुत्र ने, उपर पुत्री एक जो,
मात पिता ने वहाली, नामे रोहिणी रे लो १
हांरे मांरे पेरवी यौवनवय, निज पुत्री भूप जो,
स्वयंवर मंडप मांडी, नृप तेडावीया रे लो
हांरे मांरे अंग वंग ने, मरुधर केरा राय जो,
चतुंरगी फोजाथी, चंपाए आविया रे लो २
हांरे मांरे पूरव भवना रागे, रोहीणी ताम जो,
भूप अशोक ने कंठे, वरमाला धरे रे लो,
हांरे मांरे गज रथ घोडा, दान अने बहुमान जो,
देई वोलावी बेटी, बहु आडंबरे रे लो ३
हांरे मांरे रोहीणी राणी, भोगवतां सुखभोग जो,
आठ पुत्र ने पुत्री चार, सोहमणी रे लो,
हांरे मांरे आठमां पुत्रनुं, लोकपाल छे नाम जो,
ते खोले लई बेठी, गोरवे भामीनी रे लो ४
हांरे मांरे एहवे कोईक, नगर वणिकनो पुत्र जो,
आयुक्षये थी बालक, मरणदशा लहे रे लो.
हांरे मांरे मात पितादिक, सहुं तेहनो परिवार जो,
रडतो पडतो गोख तले, थई ने वहे रे लो ५
हांरे मांरे ते देखी अति हर्षित, रोहिणी ताम जो,
पियुने भाखे ए नाटक, कुण भातिनुं रे लो,
हांरे मांरे दीप कहे ए, पूरव पुण्य संकेत जो,
जन्म थकी नवी दीठुं, दु:ख कोई जातनुं रे लो ६

ढाल-२ (तर्ज - आघा आम पधारो)

पियु कहे जोवन मत माती, सहुने सरखी आशा,
ए बालकना दु:खथी रोवे, तुजने होवे तमासा,
बोलो बोल विचारी राज, एम केम कीजे हांसी १
तव राणीने रीस करी खोलेथी, पुत्रने खेची लीधो,
रोहीणी राणी नजरे जोतां, गोखेथी नाखी दीधो, बोलो.२
ते देखी सहु अंतेउरमां, सज्जने पोकार कीधो,
एम जाणे के बालक, कोई के रमवा लीधो, बोलो.३
नगर तणे रखवाले देवे, अधर ग्रह्यो तिहां आवी,
सोनाने सिंहासने थाप्यो, आभूषण पहेरावी, बोलो.४

नगर लोक सहु भाग्य वखाणे, राजा विस्मय थावे,
दीप कहे जस पुण्य सखाइ, तिहां सहु नव निधि थावे, बोलो५

ढाल-३ (तर्ज - निज पूर्व भव सांभली)

एक दिन वासुपूज्य जिनवरना, अंतेवासी जिनराज वाला,
रुपकुंभ ने सुवर्णकुंभजी, चउज्ञानी भव जहाज वाला,
रोहिणी तप जग जयवंतु, १
पाउधर्या प्रभु नयर समीपे, हरख्यो रोहिणी कंत वाला,
सहु परिवारशुं पद जुग वंदे, निसुण्यो धर्म एकंत वाला रोहिणी. २
कर जोडी नृप पूछे छे गुरुने, रोहिणी पुण्य प्रबंध वाला,
शुं कीधुं प्रभु सृकृत तेणे, भांखो तेह संबंध वाला रोहिणी ३
गुरु कहे पूरव भवमां कीधुं, रोहिणी तप गुण खाण, वाला,
तेथी जन्म थकी नवि दीठुं, सुख दु:ख जाण अजाण, वाला.. ४
भाखशे गुरु हवे पूरवभवनो, रोहिणीनो अधिकार वाला,
दीप कहे सुणजो एक चित्ते, कर्म प्रपंच विचार वाला.. ५

ढाल-४ (तर्ज : रंग रसिया)

गुरु कहे जबूक्षेत्र भरतमां, सिद्धपुर नगर मोजार रे,
पृथ्वीपाल नरेश्वर राजा, सिद्धमती तस नार, राजन सुणजो रे,
कांइक पूरव भव अधिकार, दिलमां धरजो रे, १
एक दिन आव्या चंद्र उद्याने, राणी ने राजन रे,
खेले क्रीडा नव नव भाते, जो जो कर्म निदान, राजन.. २
एहवे कोईक मुनि तिहां आव्यो, गुणसागर तस नाम रे,
राजा ते मुनिवर ने देखी, राणी ने कहे ताम, राजन.. ३
उठो ए मुनिने वहोरावो, जे होय सुजतो आहार रे,
निसुणी राणीने मुनि उपर, उपन्यो क्रोध अपार, राजन.. ४
विषय थकी अंतराय थयो ते, मनमां बहु दु:ख लावे रे,
रीसे बलती कडवुं तुंबडु, ते मुनिने वहोरावे रे, राजन.. ५
मुनिने आहार थकी विष व्याप्युं, कालधर्म तिहां कीधो रे,
राजा ए राणी ने ततक्षण, देश निकालो दीधो रे, राजन.. ६
सातमे दिन मुनि हत्या पापे, गलत कोढ थयो अंगे रे,
काल करीने छठ्ठी नरके, उपनी पाप प्रसंगे, राजन.. ७
नारकी ने तिर्यंच तणा भव , भटकी काल अनंत रे,
दीप कहे हवे धर्म जोगनो, कहीशुं सरस वृतांत, राजन.. ८

ढाल-५ (तर्ज :- आ संसार असार छे चित्त चेतो रे)

ते राणी मुनि पापथी, केशरीयालाल, चरती भवचक्र फेर रे, केशरीया.

तारा नयरमां उपनी केशरीया, वन मित्र शेठने घरे रे, केशरीया.
जुओ जुओ कर्म विटंबना केशरीया. १
धनवंती कुखे उपनी केशरीया, दुर्गधा तस नाम केशरीया.
नगर वणिकना पुत्रने केशरीया, परणावी बहुमान रे के. जुओ.. २
सुख शय्यानी उपरे केशरीया., आवी कंथनी पास रे, केशरीया.
बहु दुर्गंधता उछली केशरीया, स्वामी पाम्यो त्रास रे, के जुओ.. ३
मुकी परदेशे गयो केशरीया, जुओ जुओ कर्म स्वभाव रे, केशरीया.
एक दिन कन्यानो पिता केशरीया, ज्ञानीने पूछे भाव रे, के जुओ.. ४
ज्ञानीए पूर्व भव कह्यो केशरीया, भाख्यो सहु अवदात रे, केशरीया.
फरी पूछी गुरु रायने केशरीया, केम होवे सुख शात रे, के जुओ.. ५
गुरु कहे रोहिणी तप करो केशरीया, सातवरस सात मास रे, केशरीया.
रोहिणी नक्षत्रने दिने केशरीया, चोविहारो उपवास रे, के जुओ.. ६
वासुपूज्य भगवंतनी केशरीया, पूजा करो शुभ भाव रे, केशरीया.
एम ए तप आराधता केशरीया, प्रगटे शुद्ध स्वभाव रे, के जुओ.. ७
करजो तप पूरण थये केशरीया, उजमणुं भली भात रे, केशरीया.
तेहथी एक भव आंतरे केशरीया, लहेशो ज्योति महंत रे, के जुओ.. ८
इम मुनि मुखथी सांभळी केशरीया, आराधी ते सार रे केशरीया.
ए ताहरी राणी थई केशरीया, रोहिणी नामे नार रे, के जुओ.. ९
एम निसुणी हरख्या सहु केशरीया, रोहिणीने वली राय रे, के,
दीप कहे मुनि कुंभने केशरीया, प्रणमी थानक जाय रे, के जुओ.. १०

ढाल-६ (तर्ज :- भरत नृप भावशुं ए)

एक दिन वासुपूज्यजी ए, समोसर्या जिनराज, नमो जिन, राजने रे,
रायने रोहिणी हरखीयां रे, सीध्यां सघलां काज, नमो.. १
बहु परिवारशुं आवियां ए, वंदे प्रभुना पाय, नमो...
श्री मुखथी वाणी सुणीए, आनंद अंग न माय, नमो.. २
रायनो रोहिणी बेहु जणां ए, लीधो संजम खास, नमो...
धन्य धन्य संजम धर मुनि ए, सुरनर जेहना दास नमो.. ३
तप तपी केवल लहिए, तार्या बहु नरनार, नमो...
शिवपद अविचल पद लह्युं ए, पाम्या भवनो पार, नमो.. ५
एम जे रोहीणी तप करे ए, रोहिणीनी परे तेह, नमो...
मंगल माला ते लहे ए, वली अजरामर गेह, नमो.. ५
धन्य वासुपूज्यना तीर्थने ए, धन्य धन्य रोहिणी नार, नमो...
ए तप जे भावे करे ए, पामे ते जय जयकार, नमो.. ६
संवत अढार ओगणसाठनो ए, उज्जवल भाद्रव मास, नमो...
दीपविजय तस गाईओ ए, करी खंभात चौमास नमो.. ७

कलश

वासुपूज्य जगनाथ साहेब, तास तीर्थ ए थयां,
चार पुत्रीने आठ पुत्रथी, दंपती मुक्ते गया,
तपागच्छ विजयानंद पटधर, विजय देवेन्द्र सूरीश्वरुं,
तास राजे स्तवन कीधुं, सकल संघ सोहंकरुं,
सकल पंडित प्रवर भूषण, प्रेमरत्न गुरु ध्याइया,
कवि दीपविजये पुण्य हेते, रोहिणी गुण गाइया,

श्री पर्युषण के स्तवन

(१)

पर्व पजुसण आविया रे लोल, हैयामां हरख न माय रे सलुणा,
त्रिकरण योगे सेवता रे लाल, पातक दूरे पलाय रे सलुणा, १
पर्व आराधना कीजिए रे लाल, पामीए भवोदधि पार रे स,
नंदीश्वर ओच्छव करे रे लोल, सुर सफल अवतार रे, स. पर्व. २
जीव अमारी पलावीये रे लाल, आरंभनो करी त्याग रे, स.
नरनारी शुद्ध भावथी रे लाल, धर्म धरो अनुराग रे, स. पर्व ३
गिरिमां मेरुगिरि वडो रे लाल, मंत्रमांहि नवकार रे, स.
शत्रुंजय तीरथ वडो रे लाल, देव वीतराग धार रे, स. पर्व ४
रत्न विषे चिंतामणी रे लाल, कल्पवृक्ष सुखकार रे, स.
कामधेनु उत्तम गणी रे लाल, तेम आ पर्व सार रे, स. पर्व ५
अठ्ठाई महोत्सव कीजिये रे लाल, प्रतिदिन पूजा भणाय रे. स.
अंगरचना अनुपम करो रे लाल, जिनघर रुडुं जाण रे, स. पर्व ६
कल्पसूत्र कामित दीये रे लाल, पूजो धरी बहु प्रीत रे, स.
खमो खमावो खंतथी रे लाल, ए जिन शासन रीत रे, स. पर्व ७
वांजित्र विध विध वागता रे लाला, गाता मांगलिक गीत रे, स.
श्रेष्ठ वरघोडो चढावीये रे लाल, आवी गुरुनी पास रे, स. पर्व. ८
ज्ञान गुरु नुं पूजन करो रे लाल, प्रीते करी पचक्खाण रे, स.
छठ्ठ अठ्ठमादि तप करे रे लाल, दानादि धर्म वखाण रे, स. पर्व. ९
चैत्य परिपाटी थकी रे लाल, जुहारे सविजिनराज रे, स.
काउस्सग्गमां मन स्थिर करी रे लाल, सारे आतम काज रे, स. पर्व. १०
स्वामिवत्सल स्नेहे केरे लाल, प्रभावना बहु होय रे, स.
उजमणादिक आदरे रे लाल, इम सम पर्व न होय रे, स. पर्व. ११
इणविध जेह आराधशे रे लाल, करे शासन सुर सहाय रे. स.
क्षांति पुष्प क्षमावडे रे लाल, इह परभव सुख थाय रे, स. पर्व. १२

(२)

(तर्ज : बोल बोल आदीश्वर व्हाला)

हां पर्व पर्युषण आया, जैनों के दिल हर्ष सवाया,
द्वीप नंदीश्वर जाय के सुर आनंद पाया रे, पर्व पर्युषण.. १

आठ दिवस समता रस चाखो, झुठ वचन मनसे मत भाखो,
पालो शील अखंड, जीव की जतना राखो रे, पर्व पर्युषण.. २
मन मंदिर में महोत्सव कीजे, मुनि को दान सुपात्रे दीजे.
चंचलमाया जान के, नरभव फल लीजे रे, पर्व पर्युषण.. ३
कल्पसूत्र को घर् ले जावो, ज्ञान जागरण रात जगावो,
मोटो महोत्सव मांड के, वरघोडे लावो रे, पर्व पर्युषण.. ४
अठ्ठम तप शुभ भावे कीजे, नववाचना कल्प सुणीजे,
जन्म महोत्सव वीर को, करता शीव सुख लीजे रे, पर्व पर्युषण.. ५
संवत्सरी प्रतिक्रमण कीजे, लाख चोरासी जीव खमीजे,
राखो उज्जवल भावना, जिम कारज सीजे रे, पर्व पर्युषण.. ६
एक स्थान मिलीये संघ सारो, चैत्यपरिपाटी देव जुहारो,
स्वामीवत्सल प्रभावना, करी, आतम तारो रे, पर्व पर्युषण.. ७
रुडी रीते पर्व आराधो, नीत नीत मानव भव लाधो,
ज्ञान चिंतामणी पाय के, निज आतम साधो रे, पर्व पर्युषण.. ८

(३)

सरस्वती श्रावण विनती, सदगुरु लागुजी पाय,
संघे संघे वधावीया, त्रिभुवन तारण नाथ,
हिवडे वसीया हो वीरजी, मनडे वसीया महावीरजी. १
एत दिन वर्धमान उपन्या, स्वप्ना लाधा दोय चार,
आधा पाछा ओछी करे, स्वप्ना ल्यो ने विचार, हिवडे.. २
केतकी तारो दीसे घणो, पहोंच्यो नगरी दो चार,
कुंडलपुर नगर सोहामणुं, सिद्धारथजीनुं राज्य, हिवडे. ३
वे माता बारणे पधारीया, विधाता आगे पधार,
कुंवर ने वासाजी उपन्या कुंवर ने शब्दे सुणाव, हिवडे ४
जाय दासी जगाडीया, जागो सिद्धारथ राय.
घरे कुंवर जन्मीया, घणा उत्सव कराव, हिवडे. ५
कंकु करजो जी घोलीयाने, मोतीडे चोक पुराव,
जठे कुंवर जन्मीया, घणा उत्सव कराव, हिवडे. ६
ढोल ददामन वाजीयो, झालर रो झणकार,
वाजा छत्रीशे वाजीया, पहेला वाज्या छे थाल, हिवडे. ७
मेरु शिखरे परेठीया, मुकीया माताजी रे पास,
इन्द्र करेलो आरती, सुरज भरेलो साख, हिवडे. ८
हीर वटावुं जी हींगलोर, ल्यो कटोरीजी हाथ,
नामे वर्धमान स्थापीयुं, विधाता केवेला आश, हिवडे. ९
शाही घलाईजी सावली, ओरीया लखजो दोय चार,
दोय लखजो ओजे पखे, दोय चांदरनोजी मांय, हिवडे. १०

एकदिन वर्धमान युं कह्युं, सुण सुण कृष्ण महाराज,
एक मोमा शक्ति गणी, दूजी नदी रे लगाई, हिवडे. ११
कोतो पृथ्वी पाये करुं, लंका लावुं उपाय,
चार समुद्रनी घुंटी भरु, एक दिन नाथोजी नाथ, हिवडे. १२
वर्धमान पजुसण थापीया, दहाडा थाप्या छे आठ,
चार थाप्या ओले पखे, चार चांदरनाजी मांय, हिवडे. १३
पांचम करजोजी पारणा, रहेजो काउस्सग्ग मांय,
वर्षे बहोतेर थापीया, दहाडा तीनसो साठ, हिवडे. १४
जेमां जीवे हण्या घणा, उत्तम लेजोजी आश,
हीरविजय गुरु हीरलो, लब्धिविजय गुण गाय, हिवडे. १५

(४)

(तर्ज : प्रभु पार्श्वनुं स्तवन)

प्रभुवीर जिणंद विचारी, भाख्या पर्व पजुषण भारी,
आखा वर्षमां ए दिन मोटा, आठे नही तेमां छोटा रे,
ए उत्तम ने उपगारी, भाख्या.१
जेम औषध मांहे कहिये, अमृत ने सारुं लहिये रे,
महामंत्रमां नवकार वाली, भाख्या. २
तारा गणमां जेम चन्द्र, सुरवर मांहे जेम इन्द्र रे,
सतीओमां सीता नारी, भाख्या. ३
वृक्ष मांही कल्पतरु सारो, एम पर्व पजुषण धारो रे,
कल्पसूत्रमां भवतारी, भाख्या. ४
ते दिवसे राखी समता, छोडो मोह माया ने ममता रे,
समता रस दिलमां धारी, भाख्या. ५
जो बने तो अठ्ठाई कीजे, वली मासखमण तप लीजे रे,
सोल भत्तानी बलीहारी, भाख्या. ६
नही तो चोथ छठ्ठ तो लहिये, वली अठ्ठम करी दु:ख सहीये रे,
ते प्राणी जुज अवतारी, भाख्या. ७
नव पूर्व तणो सार लावी, जेणे कल्पसूत्र बनावी रे,
भद्रबाहु वीर अनुसारी, भाख्या. ८
सोना रुपाना फुलडे धरीए, ए कल्पनी पूजा करीये रे,
ए शास्त्र अनुपम भारी, भाख्या. ९
सुगुरु मुखथी ते सार, सुणे अखंड एकवीश वार रे,
ए जुवे अष्ट भवे शिव प्यारी, भाख्यां. १०
गीत गान वांजित्र बजावे, प्रभुनी आंगी रचावे रे,
करे भक्ति वार हजारी, भाख्या. ११
एवा अनेक गुणना खाणी, ते पर्व पजुषण जाणी रे,

सेवो दान दया मनोहारी, भाख्या. १२

(५)

(तर्ज : घोडे पडे धरती)

पर्व पजुषण आवीया रे, करलो धर्म शुं प्रेम
पजुषण आवीया रे, १
मासखमण करो पास खमन रे, अठ्ठाईनो पच्चक्खान
पजुषण आवीया २
जप-तप करवा जावजो रे, गुरुजीनी सुणजो सीख,
पजुषण आवीया ३
इण ने धर्म रे मारगे, चालजो चित्त लगाय,
पजुषण आवीया ४
हे राग द्वेष री पोटली रे, ए फेकजो मनशुं दूर,
पजुषण आवीया ५
हे रगडा-झगडा मीटावजो रे, त्याग जो वैर विरोध,
पजुषण आवीया ६
प्रेमना प्याला लावजो रे, हे पीलो सब मिल आज,
पजुषण आवीया ७
हे मोहमायीने छोडजो रे, हे दुखीयारो करजो विचार,
पजुषण आवीया ८
हे लाख चोरासी जीव ने रे, हे मन शुं खमावो आज,
पजुषण आवीया ९
हे रूपविजय गुण गावता रे, हे करलो प्रभुजी शुं प्रीत,
पजुषण आवीया १०

श्री अक्षय तृतीया स्तवन

(तर्ज : जाईजो बना सब सब शहेर)

दीठा दीठा सब सब देव, ऐसा नही देखीया जी,
आदीश्वर अरिहंत प्रथम में पेखीया जी, वरस दिवस नही लीधो आहार,
थया व्रतधार, मुडे नही बोलीया जी, दीठा. १
आव्यां आव्यां श्रेयांसने घेर, वडी थई महेर, करी नही देर,
प्रभुजी कीधुं पारणुं जी, दीठा, २
हर्षित हो सर्वेइ शहेर, वधाई घेर घेर,
सोनानो सूरज उगीयो जी, दीठा. ३
मीठा मीठा अमीय समा, शेलडी रस वहोरीया जी,
थया थया जय जयकार, वाजाओ घणा वाजीयाजी, दीठा. ४

घडा घडा एकसो ने आठ, भरी संग माठ,
हुओ घणो ठाठ, प्रभुजी कीधुं पारणुं जी, दीठा. ५
वरस दिवसनी ए भुख, मांडी प्रभुए बुक,
पाया घणा सुख, प्रभुजी कीधु पारणु जी दीठा. ६
माता मरुदेवीनो नंद, नाभिराजा कुल जगतीलो जी,
देखीयो श्री जगत दयाल, त्रिभुवनमे लीयो जी, दीठा. ७
युगलाधर्म निवार, भवि हितकार, प्रथम जिनवर कियो जी,
तुं प्रभु आदि अनंत, धुलेवानो तुं घणीजी, दीठा. ८
दीजिये सुबुद्धि अपार, मायाओ मुजने घणी जी, नारी सुनंदानो कंत,
सुमंगलानो कंत, भजो भगवंत, हुकम दियो महावीरने जी, दीठा. ९
आखातीज तेवार, सुनो नरनार, पाम्या भवनो पार,
प्रभुजी कीधुं पारणुं जी, दीठा. १०
चंद्रविजय जयकार, हितविजय गुण गाय, पहोंच्या मुक्ति मोजार,
पाम्या भवनो पार, प्रभुजी कीधो पारणो जी, दीठा. ११

वर्षीतप पारणा स्तवन

(१)

दादा ऋषभ स्वामी, मारा अंतर्यामी,
वरसीतप रो कर्यो पारणो शेलडी रस रो,
नाभि नरेश्वर नंदन प्यारो, मरुदेवी माय को लाल दुलारो, १
पूर्व लाख त्याशी. वरस संसार वासी, वरसीतप,
चैत्रवदि आठम दिन आवे, सिद्ध नमी प्रभु दीक्षा लेवे,
पहेला राजा दानी, पहेला जिन मुनि (महाज्ञानी मुनि) वरसीतप, २
आव्या पूर्व उदय, अंतराय, भिक्षा कही से प्रभुजी न पाया,
एक वरस होवे, आखात्रीज आवे, वरसीतप, ३
हस्तिनापूर विचंरता आया, प्रभुजीना पोतरा श्रेयांस राया,
एक सो आठ घड़ा लईने द्वार खडा, वरसीतप. ४
शेलडी रसनुं पारणु करावे नेमि लावण्य मनोहर गावे,
पंच दिव्य प्रगटे, अंतराय विघटे, तीन भुवन हरखे,
सारो मलक मलके, वरसी तपरो करीयो पारणो सेलडी रस रो. ५

(२)

दादा मारा सासरीये वलाव, सासरीये जायो छे शत्रुंजय भेटवा रे,
जासे जासे जेठाणीनी जोड, देराणी जाशे रे दुरित ने भेटवा रे, १
दीकरी मारी शत्रुंजय छे दूर, सासरवासो रे मने नथी सज्यो रे,
वली कठण छे आ उनाला नो काल, लुनी लहरे शरीर रही बले रे, दादा. २
दादा मोरा पापी रे छे दूर, सासरवासो रे, मने पोलो सेवे रे,
भले रह्यो आ उनालानो काल, भवमां भमंताने जाणुं छुं रे दादा. ३

घेली बेटी घेलडीया शा बोल, देशावर जाता ने दुख बहु वेठवुं रे,
दादा मोरा नजरे देखुं ए देश, तो दुख सघला सुखकारी लेखवुं रे, दादा. ४
दादा मोरा दुर्गतिनां पाडुं दांत, सुगति वसावुं सहेजे हाथमां रे,
जाशुं जाशुं शेत्रुंजानी जात्रा, समकित धारे रे स्वामीजी साथमां रे, दादा. ५
दादा मोरा सहेजे चलावे लोक, माडीनो जायो रे साथे मोकलुं रे,
अगाऊ चलावे हो राज, खबर देवा ने कागज मोकलुं रे, दादा. ६
पूरु मारा मनडाना कोड, हाल हाल करी होंशे चालशुं रे,
लेवा लेवा मुक्तिनी मोज, शोख करीने पंथे चालशुं रे, दादा. ७
एवो एवो करे छे आनंद, आलोच स्वामी नुं तेडी आव्युं रे,
तेणे समे बोलावी लीधी छे तेने, बेटा शेत्रुंजे जइने रुषभने ते नमे रे, दादा. ८
भांगी भांगी भवनी हो भुख, गिरिवर देखीने मनडुं गहगहयुं रे,
दादा वुठ्या दुघडे मेह, हर्ष पूरे ने हैयुं हसी रह्युं रे, दादा. ९
जम तणुं तिहां नही जोर, जेणे प्रभु पूज्या फुल फुलडे रे,
शुं करे तेहनो हो रोग, अमीरस पीधो रे जेणे घुटडे रे, दादा. १०
देश मांहे सोरठ देश, तीरथ मांहे शत्रुंजय तेणे लीधो रे,
हारे मारे हारमां नगीन तेम, उदयरत्न कहे साचुं सदा हो, दादा. ११

(३)

(तर्ज : सिद्धाचल ना वासी)

कंचनगिरिना वासी, जिनने क्रोडो प्रणाम, जिनने क्रोडो प्रणाम, १
माता मरुदेवीना नंदन, जन्म मरणना तोडो फंदन,
सदा रहो शिरताज, जिनने. २
लाख चोराशी योनी भटक्यो, कर्मोथी प्रभु हुं नही अटक्यो,
राखो मारी लाज, जिनने, ३
महापुण्ये प्रभु दर्शन पायो, मनुष्य भव ने सफल करायो,
धन्य दिवस घडी आज, जिनने. ४
भव संसारी ते क्याथी तरीये, नाव हमारुं छे भर दरिये,
पार करो महराज, जिनने. ५
कांकरे कांकरे सिद्ध अनंता, ए गिरिवरनुं ध्यान धरंता,
मिले मुक्तिनुं राज, जिनने. ६
आत्म कमलमां लब्धि आपो, जयंता ना सब टालो पापो.
सीजे सघला काज, जिनने क्रोड प्रणाम. ७

श्री सिद्धचक्रजी के स्तवन

(१)

ढाल-१

आसो मासे ते ओली आदरी रे लोल, धर्यु नवपदजीनुं ध्यान रे,
श्रीपाल महाराजा मयणासुन्दरी रे लोल. १
मालवदेशनो राजीओ रे लोल, नामे प्रजापाल भूप रे, श्रीपाल. २
सौभाग्यसुन्दरी रुपसुन्दरी रे लोल, राणी बे रूप भंडार रे, श्रीपाल. ३
एक मिथ्यात्व धर्मने रे लोल, बीजीने जैनधर्म राग रे, श्रीपाल. ४
पुत्री एकेक बेऊने रे लोल, वधे जीम बीज केरो चन्द्र रे, श्रीपाल. ५
सौभाग्य सुंदरीनी सुरसुन्दरी रे लोल, भणे मिथ्यात्वीनी पास रे, श्रीपाल ६
मयणासुन्दरीने रुपसुन्दरी रे लोल, भणावे जैनधर्म सार रे, श्रीपाल. ७
रुप कला गुणे करी शोभती रे लोल, चोसठ कलानी जाण रे, श्रीपाल. ८
बेठा सभामां राजवी रे लोल, बोलावे बालिका दोय रे, श्रीपाल. ९
सोले शणगारे शोभती रे लोल, आवी उभी पितानी पास रे, श्रीपाल. १०
विद्या भण्यानुं जोवा पारखु रे लोल, राजा पूछे तिहां प्रश्न रे, श्रीपाल. ११

साखी

जीव लक्षण शुं जाणवुं, कुण कामदेव घरनार, शुं करे परणी कुमारिका,
उत्तम कुल आचार, राजा पूछे चारनो, आपो उत्तर एक,
बुद्धिशाली कुमारीका, आपे उत्तर छेक, श्रीपाल. १२
श्वास लक्षण पहेलुं जीवनुं रे लोल, रति कामदेव घरनार रे, श्रीपाल. १३
जाईनुं फूल उत्तम जातिनुं रे लोल, कन्या परणीने सासरे जाय रे, श्रीपाल. १४

साखी

प्रथम अक्षर विण, जीवाडनार जगनो कह्यो, मध्यम अक्षर विना,
संहार ते जगनो थयो, अंतिम अक्षर काढ़ता, सहु मन मीठुं होय,
आपो उत्तर एकमां, जेम सौ मन वहालुं होय श्रीपाल. १५
आपे उत्तर मयणासुन्दरी रे लोल, नारी आंखोमां काजल सोहाय रे, श्री पाल. १६

साखी

पहेलो अक्षर काढ़तां, सौए नरपति वृंदने होय, मध्यम अक्षर विना,
सौ मन वहालुं होय, अंतिम त्रीजो अक्षर काढ़तां, पंडित ने प्यारो थयो,
मांगु उत्तर एकमां, ताते पुत्री कह्यो, श्रीपाल. १७
मयणाए उत्तर आपीयो रे लोल, अर्थ त्रणनो वादल थाय रे, श्रीपाल १८
राजा पूछे सुरसुन्दरी रे लोल, कहो पुण्यथी शुं शुं पमाय रे, श्रीपाल १९
धन यौवन सुन्दर देहडी रे लोल, चोथो मन गमतो भरथार रे, श्री. २०
मयणा कहे निज तातने रे लोल, सहु पामीए पुण्य पसाय रे. श्री. २१
शियल गुणे शोभे देहडी रे लोल, बीजी बुद्धि न्याये करी होय रे, श्री. २२
गुणवंत गुरुनी संगति रे लोल, मले वस्तु पुन्यने जोग रे, श्री. २३
बोले राजा अभिमाने करी रे लोल, करुं निर्धनने धनवंत रे, श्री. २४

सर्वलोक सुख भोगवे रे लोल, ए सघलो छे मारो पसाय रे, श्री. २५
सुरसुन्दरी कहे तातने रे लोल, ए साचने शेनो संदेह रे, श्री. २६
राय तुठ्यो सुरसुन्दरी रे लोल, परणावी पहेरामणी कीध रे श्री. २७
शंखपुरीनो राजीयो रे लोल, अरिदमन जेनुं नाम रे, श्री. २८
राय सेवार्थे आवीया रे लोल, सुरसुन्दरी आपी सोय रे, श्री. २९
राये मयणाने पूछीयुं रे लोल, मारी वातमां तने संदेह रे, श्री. ३०
मयणा कहे निज तातने रे लोल, ए शाने करो अभिमान रे,, श्री. ३१
संसारमां सुख-दुख भोगवे रे लोल, ए कर्म तणो पसाय रे. श्री. ३२
राजा क्रोधे बहु कलकल्यो रे लोल, मयणा शुं भाखे वयण रे, श्री. ३३
रत्न हिंडोले हिंसती रे लोल, पहेरी रेशमी ऊँचा पट्कुल रे, श्री. ३४
जगत सौ जीजी करे रे लोल, तारी चाकरी करे पण सोय रे, श्री. ३५
ते मारा पसायथी जाणजो रे लोल, रूठे राली नाखुं पलमांय रे, श्री. ३६
मयणा कहे तुम कुलमां रे लोल, उपजवाने क्यां जोयो तो जोश रे, श्री, ३७
कर्म संयोगे उपनी रे लोल, मल्या खान पान आराम रे, श्री. ३८
तमे म्होटा मने मल्हावता रे लोल, मुज कर्म तणो पसाये रे, श्री. ३९
राजा कहे कर्म उपरे रे लोल, दिसे तने हठवाद रे, श्री. ४०
कर्मे आणेला भरथारने रे लोल, परणावी उतारुं गुमान रे, श्री. ४१
राजाना क्रोधने शमाववा रे लोल, लई चाल्या रयवाडी प्रधान रे, श्री. ४२
नवपद ध्यान पसायथी रे लोल, सवि संकट दूर पलाय रे, श्री. ४३
कहे न्यायसागर पहेलो ढालमां रे लोल, नवपदथी नवनिधि थाय रे, श्री. ४४

ढाल-२

राजा चाल्यो रयवाडीये, साथे लीधो सैन्यनो परिवार रे,
साहेली मारी ध्यान धरो रे अरिहंतनुं. १
ढोल निशान तिहा धुम छे, बरछीओने भालानो झंकार रे, सा. २
धुल उड़ेने लोको आवता, राजा पूछे ए कोण रे, सा. ३
प्रधान कहे सुणो भूपति, ए छे सातसे कोढीयानुं सैन्य रे, सा. ४
राजानी पासे आवे याचवा, कोढ़ीओ स्थापित राजा एह रे, सा. ५
कोढे गली छे जेनी आंगली, याचवा आव्यो कोढीया केरो दूत रे, सा. ६
राणी नही रे अम रायने, ऊंचा कुलनी कन्या भले कोय रे, सा. ७
काढे खटके रे जाणे कांकरो, नयण खटके ए तो रेणु समान रे, सा. ८
वयण खटके रे जेम वाउलो, राजना हैडे खटके मयणाना बोल रे सा. ९
कोढीया राजाने कहेवडावीयुं, आवजो नगरी उजेणीनी माय रे, सा. १०
कीर्ति अविचल राखवा, आपीश मारी कुमारी राजकन्याय रे, सा. ११
उंबर राणो हवे आवीयो, साथे सातसें कोढीयानुं सैन्य रे, सा. १२
आव्यो वरघोडो मध्य चोकमां, खच्चर उपर बेठो उंबरराय रे, सा. १३
कोई लुंला ने कोई पांगलां, कोईना मोटा सुपडा जेवा कान रे, सा. १४

मुखे ते चांदा चगमगे, मुख उपर माखीनो गणकार रे, सा. १५
शोरबकोर सुणी सामटा, लाखो लोको जोवाने भेगा थाय रे सा. १६
सर्व लोक मली पूछता, भूत प्रेत के होय पिशाच रे, सा. १७
भूतडा जाणीने भसे कुतरा, लोकोने मन थयो छे उत्पात रे, सा. १८
जान लइने अमे आवीया, परणे अमारो राणो राजकन्या रे, सा. १९
कौतुक जोवाने लोको साथमां, उंबर राणो आव्यो राजनी पास रे, सा. २०
हवे राय कहे मयणा सांभलो, कर्मे आव्यो करो भरथार रे, सा. २१
तमे करो अनुभव सुखनो, जुओ तमारा कर्म तणो पसाय रे, सा. २२
कह्युं न्यायसागरे बीजी ढालमां, नवपद ध्याने थाय मंगलमाल रे, सा. २३

ढाल-३

तात आदेशे मयणा चिंतवे रे लोल, ज्ञानीनुं दीठुं ते थाय रे,
कर्म तणी गति पेखजो रे, लोल. १
अंश मात्र खेद नथी आणती रे लोल,
न मुखडानो रंग पलटाय रे, कर्म. २
हशे जायो राजानो के रंकनो रे लोल,
पिता सोंपे छे पंचनी साख रे, कर्म. ३
एने देवनी परे आराधवो रे लोल,
ऊंचा कुलनी स्त्रीनो आचार रे, कर्म. ४
मुखरंग पूनमनी चांदनी रे लोल,
शास्त्रे लग्न वेला जाणी शुद्द रे, कर्म. ५
एम विचारी मयणासुन्दरी रे लोल,
कर्युं तातनुं वचन प्रमाण रे, कर्म. ६
आवी उंबरराणानी डाबी बाजु ए रे लोल,
जाते करे छे हस्तमेलाप रे, कर्म. ७
कोढीया राणाए कहेवरावीयुं रे लोल,
काग कंठे मोतीना सोहाय रे, कर्म. ८
होय दासी कन्या तो परणावजो रे लोल,
कोढीया साथे शुं राजकन्याय रे, कर्म. ९
माता मयणानी झुरती रे लोल,
रोवे माता कुटुम्ब परिवार रे, कर्म. १०
राजा ते हठ मूके नही रे लोल,
कहे मारो नहि होय दोष रे. कर्म. ११
कोई राजाना रोषने धिक्कारतुं रे लोल,
कोई कहे कन्याना अपराध रे, कर्म. १३
देखी राजकुंवरी अति दीपती रे लोल,
रोगी सर्व थया रलीयात रे, कर्म. १४

चाली मयणा उंबरनी साथमां रे लोल,
कोढ़ीया तणे आवास रे, कर्म. १५
हवे उंबरराणो मन चिंतवे रे लोल,
धिक् धिक् मारो अवतार रे, कर्म. १६
सुन्दर रंगीली छबी शोभती रे लोल,
तेनुं जीवन कर्युं मे धूल रे, कर्म. १७
तारी सोना सरखी देहडी रे लोल,
मारी संगतथी थासे विनाश रे, कर्म. १८
तुं तो रुपे करी रंभा सारीखी रे लोल,
मुज कोढ़ीया साथे शुं स्नेह रे, कर्म. १९
पति उंबरराणाना वचन सांभली रे लोल,
मयणा हैडे ते दुख न माय रे, कर्म. २०
ढ़लक ढ़लक आंसु ढले रे लोल,
काग हसवुं देडक जीव जाय रे, कर्म. २१

साखी

कमलिनी जलमां वसे, चन्द्र वसे आकाश,
जे जिहां रे मन वसे, ते तिहां रे पास कर्म. २२
हवे मयणा कहे उंबर रायने रे लोल,
तमे व्हाला छो जीवनप्राण रे, कर्म. २३
पश्चिम रवि उगे नही रे लोल,
नवि लोपे जलधि मर्याद रे, कर्म. २४
सती अवर पुरुष इच्छे नहि रे लोल,
कदी प्राण जाय परलोक रे, कर्म. २५
पिताए पंचनी साखे परणावीया रे लोल,
अवर पुरुष बंधव होय रे, कर्म. २६
हवे पाय लागीने विनवुं रे लोल,
तमे बोलो विचारी ने बोल रे, कर्म. २७
रात्री वीती वातमां रे लोल,
बीजो दिन थयो प्रभात रे, कर्म. २८
हवे मयणा आदेश्वर भेटवा रे लोल,
जाय साथे लई भरथार रे, कर्म. २९
प्रभु केशर चन्दन करी पूजीया रे लोल,
वली कंठे ठवी फूलमाल रे, कर्म. ३०
करी चैत्यवंदन भावे भावना रे लोल,

धरे मयणा काऊस्सग्ग ध्यान रे, कर्म. ३१
प्रभु हाथे बीजोरुं शोभतुं रे लोल,
वली कंठे ठवे फुलमाल रे, कर्म. ३२
शासनदेवता सहु देखता रे लोल,
आप्युं बीजोरुं फूलमाल रे, कर्म. ३३
लीधुं उंबरराणाए ते हाथमां रे लोल,
मयणा हैडे ते हर्ष न माय रे, कर्म. ३४
पौषधशालामां गुरु वांदवा रे लोल,
लई चाली मयणा भरथार रे, कर्म. ३५
गुरु आपे छे धर्म देशना रे लोल,
दोहिलो मनुष्य अवतार रे, कर्म. ३६
पांच भुल्यो ने चार चुकीयो रे लोल,
त्रणनुं न जाण्युं नाम रे, कर्म. ३७
जगत ढंढेरो फेरीयो रे लोल,
बोले छे श्रावक मारुं नाम रे, कर्म. ३८
लालच शुं लागी रह्यो रे लोल,
वाला नन्नो रह्यो हजुर रे कर्म. ३९
उंबर मयणाए गुरु वांदिया रे लोल,
गुरुए दीधो छे धर्मलाभ रे, कर्म. ४०
सखी परिवारे तुं शोभती रे लोल,
आजे सखी न दीसे कोई केम रे, कर्म. ४१
सर्व वृतान्त सुणावीया रे लोल,
छे एकवातनुं मने दुख रे, कर्म. ४२
देखी जैनशासननी हेलना रे लोल,
करे मूर्ख मिथ्यात्वी लोक रे, कर्म. ४३
हवे मयणा गुरुने विनवे रे लोल,
रोग मटे जो भरथार रे, कर्म. ४४
मंत्र जंत्र बुट्टी औषधी रे लोल,
भणी मंत्र बीजा उपचार रे, कर्म. ४५
गुरु कहे मयणासुन्दरी रे लोल,
नही ए अमारो आचार रे, कर्म. ४६
गुरु कहे मयणासुन्दरी रे लोल,
आराधो नवपद ध्यान रे, कर्म. ४७
तेनाथी विष सवी दूरे थशे रे लोल,
धर्म उपर राखो द्रढ मन रे, कर्म. ४८
कहे न्यायसागर त्रीजी ढालमां रे लोल,

तमे सांभलजो नरनार रे. ४९
कर्म तणी गति पेखजो रे लोल.

ढाल-४

मयणा सिद्धचक्र आराधे, गुलाबमां रमतीती,
निज पति उंबरनी साथे जापोने जपतीती. १
पहले पदे अरिहंत पूजे, गुलाबमां.
हण्या घाती अघातीजे, जापोने. २
त्रण लोकनी ठकुराई छाजे, गुलाबमां.
वाणीपुर जोजनमां गाजे, जापोने ३
बीजे पदे सिद्ध महाराज, गुलाबमां,
त्रण लोकमां थई शिरताज. जापोने. ४
त्रीजे पदे आचार्य ज जाणो. गुलाबमां.
मली लाकडी अंध प्रमाणो. जापोने. ५
चोथे पदे उपाध्याय सेवे, गुलाबमां.
भणे भणावे जग मन, मोहे जापोने. ६
पद पांचमे साधु मुनिराया, गुलाबमां.
गुण सत्तावीस सोहाया, जापोने. ७
मन वचन गोपवी काया, गुलाबमां.
वंदु तेवा मुनिवर राया, जापोने. ८
छठ्ठे दरिसण पद छे मूल, गुलाबमां.
कोई आवे नहि तस तोले, जापोने. ९
सोहे सातमुं पद वर नाण, गुलाबमां.
तेना भेद एकावन जाण, जापोने १०
ज्ञान पांचमुं केवल थाय, गुलाबमां.
त्रण लोकना भाव जणाय. जापोने. ११
पद आठमे चारित्र आवे, गुलाबमां.
देव इच्छा करे ना पावे. जापोवे. १२
भवी जीवो ते भावना भावे. गुलाबमां.
कोई रीते उदयमां आवे जापोने १३
करे नवमे तपपद भावे, गुलाबमां.
आठ कर्म बली राख थावे, जापोने. १४
सिद्धि आतम अनंती पावे, गुलाबमां.
देव देवी मली गुण गावे, जापोने. १५
प्रभु पूजो केशर पद धोली, गुलाबमां
भरी हरखे हेम कचोली, जापोने. १६
भरी शुद्ध जले संघोली, गुलाबमां.

चउ गतिनी आपदा चोली, जापोने. १७
दुर्गतिना दु:ख हरे ढोली, गुलाबमां.
आसो सुद सातमनी ओली, जापोने. १८
करी नव आबिलनी ओली, गुलाबमां.
मली सरखी सहियरनी टोली. जापोने १९
मयणा धरे नवपद ध्यान, गुलाबमां
पति काया थई कंचनवान, जापोने. २०
सहु मंत्रमां छे शिरदार, गुलाबमां.
तमे आराधो नरनार, जापोने. २१
न्यायसागरे ढाल कही चोथी, गुलाबमां.
हवे पूजजो ज्ञानथी जापोने जपतीती. २२

(२)

(तर्ज: अखियन में अविकारा)

नवपदनो महिमा सांभलजो, सहुने सुखडुं थाशे जी,
नवपद स्मरण करतां प्राणी, भव भवना दु:ख जासे जी, नवपदनो. १
नवपदना महिमाथी प्यारे, कुष्ट अढारे जावे जी,
खांसी खयन ने रोगनी पीडा, पासे कदी नवी आवे जी, नवपदनो. २
अरि करी सागर जलण जलोदर, बंधनना भय जासे जी,
चोर चरड ने शाकण डाकण, तुज नामे दूर नासे जी, नवपदनो. ३
अपुत्रीयाने पुत्र होवे, निर्धनीया धन पावे जी,
निराशंसपणे ध्यान धरीजे, ते नर मुक्ते जावे जी, नवपदनो. ४
श्रीमतीने ए मंत्र प्रभावे, सर्प थयो फूलमाल जी.
अमर कुमार नवपद महिमाथी, सुख पाम्यो सुरसाल जी, नवपदनो. ५
मयणा वयणा ए सेव्या नवपदश्री, श्रीपाल उल्लासे जी,
रोग गयो ने संपदा पाम्या, नवमे भवे शिव जाशो जी, नवपदनो. ६
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु महागुणवंता जी,
दर्शन ज्ञान चरण तप रुडा, ए नवपद सोहंता जी, नवपदनो. ७
सिद्धचक्र महिमा अनंतो, कहेता पार न आवे जी,
दु:ख हरे ने वंछित पूरे, वंदन करीये भावे जी, नवपदनो. ८
भावसागर कहे सिद्धचक्रनी, जे नर सेवा करशे जी,
आत्म गुण अनुभवीने प्राणी, मंगल माला वरशे जी, नवपदनो. ९

(३)

(तर्ज : आछेलालनो)

समरी शारद माय, प्रणमी निजगुरु पाय, आ छे लाल,
सिद्धचक्र गुण गावशु जी, ए सिद्धचक्र आधार, भवि उतारे भव पार,

आ छे लाल, ते भणी नवपद ध्यावशुं जी, १
सिद्धचक्र गुण गेह, जस गुण अनंत अछेह, आ छे लाल,
समर्या संकट उपशमे जी, लहीए वंछित भोग,
पामी सवि संजोग आ छे लाल, सुरनर आवी बहु नमे जी. २
कष्ट निवारे एह, रोग रहित करे देह, आ छे लाल,
मयणा सुंदरी श्रीपालने जी, ए सिद्धचक्र पसाय,
आपदा दूर पलाय आ छे लाल, आपे मंगल माल ने जी. ३
ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय, आ छे लाल,
मन वच काया वश करी जी, नव आंबिल तप सार,
पडिक्कमणुं दोय वार , आ छे लाल, देववंदन त्रण टंकना जी. ४
देव पूजो त्रण वार, गणणुं ते दोय हजार, आ छे लाल,
स्नान करी निर्मल जले जी, आराधे सिद्धचक्र,
सांनिध्य करे तेने शक्र, आ छे लाल, जिनवर जन आगे भणी जी. ५
ए सेवो निशदिश, कहीए ते वीशवावीश, आ छे लाल,
आल जंजाल सवि परिहरो जी, ए चिंतामणीरत्न,
एहना कीजे जतन्न आ छे लाल, मंत्र नहि एह उपरे जी. ६
श्री विमलेश्वर यज्ञ, होजो मुज प्रत्यक्ष, आ छे लाल,
हुं छुं किंकर ताहरो जी, पाम्यो तुंहिज देव,
निरंतर करुं हवे सेव, आ छे लाल, दिवस वल्यो हवे माहरो जी, ७
विनंति करुं छुं एह, धरजो मुजशुं नेह, आ छे लाल,
तमने शुं कहीए वली वली जी, श्रीलब्धिविजय गुरुराय,
शिष्य केशर गुण गाय, आ छे लाल, अमर नमे तस लळी लळी जी, ८

(४)

भवि तुमे नवपद धरजो ध्यान, भवि तुमे नवपद धरजो ध्यान,
ए नवपदनुं ध्यान करंता, पामे जीव विसराम. भवि. १
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल गुणवान. भ. २
दर्शन ज्ञान चरित्र ए, उत्तम तप तपो करी बहुमान. भ. ३
आसोज चैत्रनी सुद सातमथी, पूनम लगे परमाण. भ.४
एम एक्यासी आंबिल कीजे, वरस साडा चारनुं मान. भ. ५
पडिकमणा दो टंकना कीजे, पडिलेहण बे वार. भ. ६
देव वंदन त्रण टंकना कीजे, देव पूजा त्रिकाल. भ. ७
वार आठ छत्रीस पंचवीसनो, सत्तावीस सडसठ सार. भ. ८
एकावन सित्तेर पच्चासनो काउस्सग करो सावधान. भ. ९
एक एक पदनुं गणिये, गणणुं दोय हजार. भ. १०
ए विधि जे ए तप अराधे, ते पामे भवपार. भ. ११
कर जोडी सेवक गुण गावे, मोहन गुण मणिमाल,

तास शिष्य मुनि हेम कहे, जन्म मरण दुःख वार. भ. १२

(५)

(तर्ज : बोल बोल आदेश्वर वाला)

आज रंग वरसे रे, आज रंग वरसे ये तो.
सिद्धचक्र महाराज, पूजी मन मेरो हरखे रे, आज. १
श्वेत वर्ण पहले पद पूजो, अरिहंत श्री वीतरागी रे,
रक्त वर्ण दूजे पद अरचो, सिद्ध सोभागी रे, आज. २
स्वमत मंडन कुमति विहंडन, जिन केशरीया कीना रे,
त्रीजे पद आचार पूजी, शिव सुख लीना रे, आज. ३
नीलवर्ण चोथे पद नमीये, द्वादशांगना पाठी रे,
ज्ञान दाता उपाध्याय पूजतां, कुमति नाठी रे, आज. ४
श्याम वर्ण पद पांचमे पूजो, मुनिवर गुणना दरिया रे,
षट खंड केरी छोडी साहेबी, शिवसुख वरिया रे, आज. ५
श्वेत वर्ण दर्शन पद पूजो, बीज मोक्ष नो जाणी रे,
करणी सहु परिणाम हुवे, स्वस्थापिछाणी रे, आज. ६
उज्जवल वर्ण ज्ञान पद पूजो, लोकालोक प्रकाशे रे,
भक्षाभक्ष तेहथी लहीये, निज आतम भासे रे, आज. ७
श्वेत वर्ण अष्टम पद पूजो, चारित्र मोक्ष को दाता रे,
अचल अटल शिवपुर के माही, पावे शाता रे, आज. ८
नवमे पद निर्वाण कारणे, श्वेत वर्ण तप पूजो रे,
इन्ही सिवाय मुक्ति को दाता, नही कोई दूजा रे, आज. ९
साडा चार वर्ष कोई लगती, आंबिल ओली करशे रे,
भक्ति सहित उजमणो करता, शिवसुख तरशे रे, आज. १०
जैसे मयणा श्री श्रीपालजी, सिद्धचक्र आराध्यो रे,
कष्ट रोग भयो सब दूरे, निज आतम साधो रे, आज. ११
उपकेश गच्छ के नायक सदगुरु, रत्नसूरि मन भाया रे,
ज्ञानसुन्दर कहेता सुप्रसादे, सुख सवायो रे, आज. १२

श्री वर्धमानतप स्तवन

ढाल-१ (तर्ज -जिम जिम ए गिरि भेटीए)

जिम जिम ए तप कीजिए रे, तिम तिम भव परिपाक सलुणा
निकट भवी जीव जाणवो रे, इम गीतारथ साख सलुणा, जिम. १
आंबिल तप विधि सांभलो रे, वर्धमान गुण खाण सलुणा,
पाप मलक्षय कारणे रे, कतक फल उपमान सलुणा, जिम. २
शुभ मुहूर्त शुभ योगमां रे, सदगुरु नांदी योग सलुणा,
आंबिल तप पद उच्चरी रे, आराधे अनुयोग सलुणा, जिम. ३

गुरु मुख आंबिल उच्चरी रे, पूजी प्रतिमां सार सलुणा,
नवपदनी पूजा भणी रे, मांगो पद अणाहार सलुणा, जिम. ४
षट रस भोजन त्यागवा रे, भूमि संथारो प्राय सलुणा,
ब्रह्मचर्यादि पालवा रे, आरंभ जयणा थाय सलुणा, जिम. ५
तपपदनी आराधना रे, काउस्सग्ग लोगस्स बार, सलुणा,
खमासमणा बार आपवा रे, गुणणुं दोय हजार सलुणा, जिम. ६
अथवा सिद्धपद आश्रयी रे, काउस्सग्ग लोगस्स आठ सलुणा,
खमासमणा आठ जाणवा रे, नमो सिद्धाणं पाठ सलुणा. जिम.७
बीजे दिन उपवासमां रे, पौषधादि व्रत युक्त सलुणा,
पडिक्कमणादिक क्रियाकारी रे, भावना परिमल युक्त सलुणा, जिम. ८
इम आराधो भावथी रे, विधि पूर्वक धरी प्रेम सलुणा,
भावो ध्यावो भविजना रे, धर्मरत्न पद एम सलुणा, जिम. ९

ढाल-२ (तर्ज - नवपद धरजो ध्यान भविक जन)

तपपद धरजो ध्यान भविक तमे, तपपद धरजो ध्यान,
नामे श्री वर्धमान भविक. दिन दिन चढते वान भविक. सेवो थइ सावधान,
भविक. तप पद धरजो ध्यान, प्रथम ओली एम पालीने रे,
बीजी ए आंबिल दोय, भविक. त्रीजी ए त्रण चौथी चार छे,
उपवासांतर होय, भविक. १
एम सो आंबिल व्रतनी रे, सोमी ओली थाय,
भविक. शक्ति अभावे आंतरे रे, विश्रामे पहोंचाय, भविक. २
चौद वर्ष त्रण मासनी रे, उपर संख्या दिन वीश,
भविक. काल मान ए जाणवुं रे, कहे वीर जगदीश भविक. ३
अंतगड अंगे वर्णव्युं रे, आचार दिनकर लेख,
भविक. ग्रंथांतरथी जाणवो रे, ए तपनो उल्लेख, भविक. ४
पांच हजार पचास छे रे, आंबिल संख्या सर्व,
भविक. संख्या सो उपवासनी रे, तपमां न करो गर्व, भविक. ५
महासेन कृष्णा साध्वी रे, वर्धमान तप कीध,
भविक. अंतगड केवल पामी ने रे, अजरामर पद लीध, भविक. ६
श्री चंद केवली ए तप सेवी ने रे, पाम्या पद निर्वाण, भविक.
धर्म रत्न पद पामवा रे, ए उत्तम अनुष्ठान, भविक. ७

ढाल-३ (तर्ज - निलुडी रायण तरुतले सुण सुन्दरी)

जिन धर्म नंदनवन भलो, राजहंसा रे, तप सुर तरु उपमान, अहो राजहंसा रे,
शीतल छाया सेवीने, रा. प्राणी तुं था सावधान, अहो राज. १
अमृत फल आस्वादी ने, रा. काल अनादिनी भूख, अहो राज.

भव परिभ्रमण मग्न तुं, रा. अवसर पामी न चुक, अहो राज. २
शत शाखाथी शोभतो, रा. पांच हजार पचास, अहो राज.
आंबिल फूले अंलकर्यो रा. अक्षय पद फल तास, अहो राज. ३
विमलेश्वर सुर सानिध्ये, रा. तुं निर्भय थयो आज, अहो राज.
कृत कृत्य थइ माग तुं रा, अकल स्वरुपी राज, अहो राज. ४
विग्रह गति वोसिरावी ने, रा. लोकाग्रे कर वास, अहो राज.
धन्य तुं कृत पुण्य तुं, रा. सिद्ध स्वरुप प्रकाश, अहो राज. ५
तप चिंतवणी कउस्सगे, रा. वीर तपोधन ध्याव, अहो राज.
महासेन कृष्णा साध्वी, रा. श्रीचंद भवजल नाव, अहो राज, ६
सूरि श्री जगचंद्रजी, रा. हीर विजय गुरु हीर, अहो राज.
मल्लवादी प्रभु कूरगडु, रा. आर्यसुहस्ती वीर, अहो राज. ७
पांरगत तप जलधिना, रा. जे जे थया अणगार, अहो राज.
जीत्या जिह्वा स्वादने, रा. धन्य धन्य तस अवतार, अहो राज. ८
एक आंबिल टूटशे, रा. एक हजार क्रोड वर्ष, अहो राज.
दस हजार क्रोड वर्षनुं, रा. उपवासे नरक आयुष्य, अहो राज. ९
तप सुर्दशन चक्रथी, रा. करो कर्मनो नाश, अहो राज.
धर्मरत्न पद पामवा, रा. आदरो तप अभ्यास, अहो राज. १०

कलश

तप आराधन धर्म साधन, वर्धमान तप परगडो,
मन कामना सहुं पूरवाने, सर्व थाये सुरघडो,
अति दानथी शुभ ध्यानथी, भवि जीव ए तपस्या करो,
श्री विजयधर्मसूरीश, सेवक, रत्नविजय कहे शिरवरो १

श्री वीशस्थानक स्तवन

हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती मांगु वचन विलास जो,
वीश रे तप स्थानक महिमां गाइशुं रे लोल,
हां रे मारे प्रथम अरिहंत पद लोगस्स चौवीस जो,
बीजे रे सिद्ध थानक पंदर भावशुं रे, लोल, १
हांरे मारे त्रीजे पवयणशुं गणो लोगस्स सात जो,
चउथे रे आयरियाणं छत्रीशनो सही रे लोल,
हारे थेराणं, पद पंचमे दश लोगस्स उद्धार जो,
छट्ठे रे उवज्झायाणं पंचवीशनो सही रे, लोल, २
हांरे सातमे नमो लोए सव्वसाहू सत्तावीश जो,
आठमे नमो नाणस्स पंच लोगस्स भावशुं रे, लोल,
हांरे नवमे दरिसण सडसठ मनने उद्धार जो,
दशमे नमो विणयस्स दश वखाणी ए रे, लोल, ३
हांरे अघ्यारमे नमो चारित्रस्स लोगस्स सत्तर जो,

बारमे नमो बंभस्स नव गणो सही रे, लोल,
हांरे किरियाणं पद तेरमे वली गणो पचवीस जो,
चौदमे नमो तवस्स बार गणो सही रे, लोल, ४
हारें पदरमे नमो गोयमस्स अट्ठावीश जो,
नमो जिणाणं चउवीश गणशुं सोलमे रे, लोल,
हांरे सत्तर मे नमो चारित्र लोगस्स सित्तेर जो,
नाणस्स पद गणशुं एकावन अढारमे रे, लोल, ५
हांरे ओगणीश मे नमो सुअस्सवीश पीस्तालीश जो,
वीश मे नमो तिथ्थस्सवीश लोगस्स भावशुं रे, लोल,
हांरे ए तपनो महिमा चारसे उपवासे करी जो,
षट मासे एक ओली पूरी कीजिए रे, लोल. ६
हांरे तप करता वली गणीए दोय हजार जो,
नवकारवाली वीशस्थानक भावशुं, रे, लोल,
हांरे प्रभावना संघ स्वामीवत्सल सार जो,
उजमणा विधि कीजिए विजय लीजिए रे, लोल, ७
हांरे ए तपनो महिमा कह्यो श्री वीर जिनराज जो,
विस्तारे इम संबंध गोयम स्वामी ने रे, लोल,
हांरे ए तप करतां वली तीर्थकर पद होय जो,
देव गुरु एम कांति स्तवन सोहामणो रे, लोल. ८

श्री सीमंधरस्वामी के स्तवन

(१) पत्र रूपे स्तवन

स्वस्ति श्री महाविदेह क्षेत्रमां, जिहां राजे तीर्थकर वीश,
तेणे नमुं शीश, कागल लखुं कोड थी, १
स्वामी जघन्य तीर्थकर वीश छे, उत्कृष्टा एकसो सीत्तेर,
तेमा नही फेर, कागल. २
स्वामी बार गुणे करी युक्त छो, अंगे लक्षण एक हजार,
उपर आठ सार , कालगल. ३
स्वामी चोत्रीश अतीशये राजता, वाणी पांत्रीश वचन रसाल,
गुणो तणी माल, कागल. ४
स्वामी गंधहस्ती सम गाजता, त्रण लोक तणा प्रतिपाल,
छो दीन दयाल कागल. ५
स्वामी काया सुकोमल शोभती, शोभे सुवर्णसमान वान,
करुं हुं प्रणाम, कागल. ६
स्वामी गुण अनंता छे ताहरा, एक जीभे कह्या केम जाय,
लख्या न लखाय, कागल. ७
भरत क्षेत्रथी लिखीतंग जाणजो, आप दर्शन इच्छु दास,

राखुं तुम आश, कागल. ८
में तो पूर्वे पाप कीधा घणा, जेथी आप दर्शन रह्यो दूर,
न पहोचुं हजुर, कागल. ९
मारा मननां संदेह अतिघणा, आप विना कह्या केम जाय,
अंतर अकलाय, कागल. १०
आडा पहाड पर्वत ने डुंगरा, तेथी नजर नाखी नव जाय,
दर्शन केम थाय, कागल. ११
स्वामी कागल पण पहोंचे नही, नवि पहोंचे संदेशो सांइ,
हुं तो रह्यो अही, कागल. १२
देवे पांख दीधी होत पीठमां, उडी आवुं देशावर दूर,
तो पहोंचुं हजुर, कागल. १३
स्वामी केवलज्ञाने करी देखजो, मारा आतमना छो आधार,
उतारो भवपार, कागल. १४
ओछुं अधिकु ने विपरीत जे लख्युं, माफ करजो जरुर जिनराज,
लागु तुम पाय, कागल. १५
संवत अढार त्रेपन्ननी सालमां, हरखे हर्षविजय गुण गाय,
प्रेमे प्रणमुं पाय, कागल. १६

(२)

धन्य धन्य महाविदेहजी, धन्य पुन्डरगिरि गाम,
धन्य तिहां ना मानवीजी, नित्य ऊठी करुं रे प्रणाम,
सीमंधर स्वामी कहीये रे, हुं महाविदेह आवीश,
जयवंता जिनवर कहिये रे, हुं तमने वांदीश. सीमंधर. १
चांदलीयो संदेशडोजी, कहेजो सीमंधर स्वाम,
भरत क्षेत्रनां मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम, सीमंधर. २
समवसरण देवे रच्युं रे, तिहां चोसठ इन्द्र नरेश,
सोनावणे सिंहासण बेठा, चामर छत्र धरेश, सीमंधर. ३
इन्द्राणी काढे गहुंलीजी, मोती ना चोक पूराय,
लली लली लीये लुंछणाजी, जिनवर दीये उपदेश, सीमंधर. ४
एहवे समे में सांभल्युंजी, हवे करवा पच्चक्खाण,
पोथी ठवणी तिहां कनेजी, अमृतवाणी वखाण, सीमंधर. ५
राय ने वहाला घोडलाजी, वेपारी ने वहाला छे दाम,
अमने वहाला सीमंधर स्वामी, जेम सीताने श्रीराम, सीमंधर ६
नही मांगु प्रभु राज ऋद्धि, नही मांगु अरथ भण्डार,
हुं मांगु प्रभु एटलुं जी, तुम पासे अवतार, सीमंधर. ७
देव न दीधी पांखडीजी, केम करी आवुं हजुर,
मुजरो मारो मानजोजी, प्रह उगमते सुर. सीमंधर. ८

समयसुंदरनी विनतीजी, मानजो वारंवार,
बे कर जोडी विनवुंजी, विनतडी अवधार, सीमंधर. ९

(३)

(तर्ज : आवो आवो देव मारा)

श्री सीमंधर साहिबा, हुं केम करी आवुं तुम पास,
दूर वच्चे अंतर घणो, मने मलवानी घणी आश, हुं तो भरतने छेडे, १
हुं तो भरत ने छेडले कांई, प्रभुजी विदेह मोझार,
डुंगर वच्चे दरिया घणा, कांई कोशना कोश हजार, हुं तो. २
प्रभु देता हशे देशना, कांई सांभले तिहांना लोक,
धन्य ते गाम नगर पुरी, जिहां वसे छे. पुण्यवंत लोक, हुं तो. ३
धन्य ते श्रावक श्राविका, जे नीरखे तुम मुखचंद,
पण ए मनोरथ अम तणो, कांई फलशे भाग्य अमंद, हुं तो. ४
वर्तारो वर्ती जुओ, कांई जोषीए मांड्यो लगन,
क्यारे सीमंधर भेटशुं, मने लागी एह लगन, हुं तो. ५
पण कोई एहवो जोषी नही जे, भांजे मननी भ्रांत,
अनुभव मित्र कृपा करो, तुमे मलवो तिणे एकांत, हुं तो. ६
वीतराग भावे सही, तुमे वर्तो छो जगनाथ,
में जाण्यु तुम केणथी, हुं थयो स्वामी सनाथ, हुं तो. ७
पुष्कलावती विजये वसो, कांई नयरी पुंडरिकिणी सार,
सत्यकीनंदन वंदणा, अवधारो गुणना धाम, हुं तो. ८
श्री श्रेयांस नृप कुल चंदलो, रुकमणी राणीनो कंत,
वाचक रामविजय कहे, तुम ध्याने होजो मुज चित्त, हुं तो. ९

(४)

मलपति टोपी हीरले गूंथी, गूंथी मलपति टोपी रे, बाल कुंवरने माथे सोहीजे,
नानडीयाने माथे रे, लोक आणा सीमंधर स्वामी, आदीश्वरने गाईए रे १
एक ओढाडे रत्न पछेडी, बीजी ओढाडे मोती रे,
अणीयाली काजल सोहीए, नजर करी नीहाली रे, २
एक फूलनी छाब भरावे, बीजी हार गूंथावे रे,
एक प्रभुने कंठे सोहावे, हरखे भावना भावे रे, ३
काकी मामी लाड लडावे, बेनी मंगल गावे रे,
फोई प्रभुनुं नाम धरावे, इन्द्राणी हुलरावे रे, ४
सोना रुपाने पारणे पोढवुं, हीरनी दोरी हीचोलुं रे,
माता प्रभुनुं हालरडुं गावे, इन्द्राणी हुलरावे रे, ५
प्रभुजीने पाये घुघरा घमके, मोजडीये मोती वरसे रे,
प्रभुजी हाले ने घुघरा घमके, माता मनमां हरखे रे, ६
एम कहे सुण बालुडा, मुजने लागे प्यारो रे,

आपण शुं छाती भींजे, मुक्ति तणा सुख मांगे रे, ७
वीरविजय कहे तुमारी सेवा, अमने घणी होजो रे,
ज्यां समरुं त्यां केवल होजो, तुम चरणे अम सेवा रे, ८

(५)

कोटे कोटालो केवलोजी साहिब,
जरमरीया पोनोरी खजुरो जिनराज,
सीमंधर स्वामी री ओलु घणी आवे हो राज,
जयवंता स्वामी री ओलु घणी आवे हो राज, १
ओलुडी तो महाविदेह क्षेत्रमांजी साहिब,
ओलुडी पुण्डरीकिणी मांहे मोरा राज, सीमंधर. २
आप तो वसीया महाविदेह क्षेत्रमांजी साहिब,
हुं तो इण भरतक्षेत्र मोजारो मोरा राज, सीमंधर. ३
कागदीयो तो किनो साथे मोकलुंजी साहिब,
वाटलडी न चाले विशेष मोरा राज. सीमंधर. ४
पंख होत तो उडी मिलुं हो साहिब,
दाखु दाखु मनडा केरी वातो, मोरा राज, सीमंधर. ५
घाटी डुंगर तो अतिघणा हो साहेब,
नदी नाला रो नही पार मोरा राज, सीमंधर. ६
राणी रुकमणीना लाडका ओ साहेब,
थे तो मोरा जीवनरा आधारो मोरा राज, सीमंधर. ७
जिम जिम तुम गुण सांभलु हो साहेब,
तिम तिम ध्यावुं दिन ने रातो मोरा राज, सीमंधर. ८
शुं शुं कहीने दाखवुं हो साहेब,
तुमे तो सकलरा जाणो मोरा राज, सीमंधर. ९
मुजरो मारो मानजोजी साहिब,
सत्यकी देवीना नंद मोरा राज, सीमंधर. १०
मानविजय कहे मुज भणोजी साहिब,
देजो देजो तुम पाय सेवो मोरा राज, सीमंधर. ११

(६)

(तर्ज : वासुपुज्य विलासी चंपाना वास)

श्री सीमंधर स्वामी, मुक्तिना धामी, दीठे परमानंद,
प्रभु सुमति आपो, कुमति कापो, टालो भवभय फंद
कर्म अरिगण दूर करीने, तोडो भवभय फंद रे, श्री सीमंधर. १
चोत्रीश अतिशय राजता रे, पांत्रीश वाणी रसाल,
आठ प्रतिहार्य दीपता रे, बेठी छे पर्षदा बार रे, श्री सीमंधर. २
एकवार दरिसण दीजिये रे, दासनी सुणी अरदास,

गुण अवगुण न लेखवे रे, ते गिरुआनो आचार रे, श्री सीमंधर. ३
महागोप महामाहण कहीये, निर्यामक सत्थवाह,
दोष अढार दूर करीने, भवजल तारण नाव रे, श्री सीमंधर. ४
अगणित शंकाए हुं भर्यो रे, कोण करे तस दूर,
ज्ञानी तुमे दूर वस्या रे, हुं पड्यो भवकूप रे, श्री सीमंधर. ५
जो होवत मुज पांखडी तो, आवत आप हजुर,
ए लब्धि मुज सांपडे तो, न रहुं तुम थकी दूर रे, श्री सीमंधर. ६
शासन भक्त जे सुखरा रे, विनवुं शीर्ष नमाय,
श्री सीमंधर स्वामिना रे, चरण कमल भेटाय रे, श्री सीमंधर. ७
धन्य महाविदेहना जीवने रे, जे सदा रहे तुम पास,
हुं निर्भागी भरते रह्यो रे, शा कीधां में पाप रे, श्री सीमंधर. ८
अरिहंत पद सेव्या थकी रे, देवपालादिक सिद्ध,
हुं पण मांगु एटलुं रे, सौभाग्य पद समऋद्ध रे, श्री सीमंधर. ९

(७)

(तर्ज : जी रे आज सफल दिन माहरो)

साहिब शीवपुर नगर सोहमणुं, साहिब जई वस्या छे बहु दूर,
साहिब तुम गुण घणा में सांभल्या, साहिब किम करी आवु हजुर,
साहिब तुम दर्शननी झंखना, १
साहिब जल विना तरफडे माछली, साहिब पियु विना प्रमदानी जेम,
साहिब तुम विरह अति आकरो,
साहिब मल्या विना नवी होय क्षेम, तुम. २
साहिब राजलोक चौदने छेडले, जोजन असंख्य एक राज विराट,
साहिब ऊँट गाडा तो आवे नही, साहिब तिंहा नथी पगनी रे वाट, तुम. ३
साहिब मोटर पण आवे नही, साहिब साईकिलनी रे शी आश,
साहिब पाटा नथी रेलगाडीना, साहिब शी रीते आवुं तुम पास, तुम. ४
साहिब न आवे जेट विमान त्यां, साहिब अन्य विमाने शुं थाय,
साहिब रोकेट पण आवे नही, साहिब शुं करुं कहोने उपाय, तुम. ५
साहिब रेडियो संदेशो पहोंचे नही, साहिब नही टेलीविजन व्यवहार,
साहिब केवलज्ञानथी जाणजो, साहिब मुज मन भाव अपार, तुम ६
साहिब कोई विज्ञानी पाक्यों नही, साहिब पाकशे नही कदी कोय,
साहिब जे आवी शके जट शोभता, साहिब मुज मन निश्चय सोय, तुम. ७
साहिब साचा विज्ञानी तो आप छो, साहिब जाण्युं में गुरुजीनी पास,
साहिब गणधरे गुंथी वाणी आपणी, साहिब आगम शास्त्रमां खास, तुम. ८
साहिब घाती अघाति क्षय करी, साहिब एक समयमां अवाय,
साहिब शीवसुखनी बहु लालसा, साहिब जाण्यो में हवे रे उपाय तुम. ९
साहिब दान शीलादिक पालवा, साहिब बालवा राग ने द्वेष,

साहिब इन्द्रिय पांच ने जीतवी, साहिब जीतवा मोह कषाय, तुम. १०
साहिब मीठी नजर हवे राखीने, साहिब सदाय करो जिनराज,
साहिब सूरि सुरेन्द्र पसायथी, साहिब राजेन्द्र विनवे छे आज. तुम. ११

श्री ऋषभजिन के स्तवन

(१)

(तर्ज : जिम जिम ए तप कीजिये रे)

ऋषभ जिणंद ने वंदिये रे, सिद्धाचल शणगार, सलुणा,
मां मरुदेवीना नंदने रे, भेटता परम आनंद, सलुणा,
जिम जिम प्रभु गुण गावतां रे, लहिए सुख अपार, सलुणा, १
अविनाशी अरिहंतजी रे, विमलाचल शणगार सलुणा,
सुरनर सहु सेवा करे रे, पामता सुख आराम सलुणा, २
देव जगतमां छे घणा रे, मोहरायना दास सलुणा,
तेहथी मुज चित्त नवी चढे रे, आव्यो तुमारी पास, सुलाणा. ३
दीक्षा लेई प्रभु आदर्यो रे, वरसीतप गुणखाण सलुणा.
अंतराय उच्छेदीने रे, पाम्या केवलज्ञान, सलुणा. ४
पूर्वनवाणुं आवीया रे, कंचनगिरी पर नाथ, सलुणा,
तेहथी ए गिरिराजनो रे, महिमा थयो विख्यात सलुणा. ५
भरतादिक सो पुत्रने रे, दीधुं अविचल राज, सलुणा,
मरुदेवी माता भला रे, सार्या तेहना काज, सलुणा. ६
आशधरी हुं आवीयो रे, तुम शरणे दीनानाथ, सलुणा.
भवोदधि डुबतां रंकनो रे, झालजो स्वामी हाथ, सलुणा, ७
भवोभव तुम पद सेवना रे, आपजो दीन दयाल सलुणा.
रंगविमल तुज दासनी रे, आश फले तत्काल, सलुणा. ८

(२)

(तर्ज : लावे लावे मोतीशा शेठ न्हवण जल लावे छे)

आहे जशघर जावेजी वहोरवा, होय आनंद अंग न मांय,
ऋषभ घरे आवे छे वहोरवा, १
आहे मणि रे माणेक मोती भर्या, कोई रत्न भरी भरी थाल, ऋषभ २
आहे कोई रे घोडा कोई पालखी, कोई आपे हाथी केरा दान, ऋषभ. ३
आहे कोईज पुत्री वल्लभा. कोई आपे कन्या केरा दान, ऋषभ. ४
आहे कोई नवि आपे सुझतो, कोई व्होरावे नही आहार, ऋषभ. ५
आहे तेणे समे स्वप्न ज पेखीयो, आहे दश भव केरो स्नेह, ऋषभ. ६
आहे इक्षु रे रस वहोरावीओ, तिहां ऋषभ ने उपजी छे लब्धि, ऋषभ. ७
आहे त्यां उभा कीधुं पारणुं, एक वरसे मलीयेलो आहार, ऋषभ. ८
आहे पंच दिव्य रे प्रगट थया, तिहां अहोदान महादान गवाय, ऋषभ. ९

आहे त्यां कने वृष्टि सोनातणी, थई साडा बार क्रोड, ऋषभ. १०
आहे मेरु शिखर रे खसी गया, श्रेयांसे दीधा छे थंभ, ऋषभ. ११
आहे त्यां जातिस्मरण पामतां, तिहां माणेकविजय गुण गाय, ऋषभ. १२
आहे हीरविजय गुरु हीरलो, तिहां माणेकविजय गुण गाय, ऋषभ. १३

(३)

(तर्ज : सिद्धाचलना वासी)

रुडा आदेश्वर विना, मुज दिलडा सुना,
कोण तारे, मुज पापीने, कोण उगारे. १
मारुं हैयुं प्रीतथी ड़ोले, मुज अंतर वेदनाथी बोले,
दु:खथी करुं छुं पोकार, तेथी आव्यो तारे द्वार, कोण. २
मुज अंतरमां वहेती नदीयो, मोह ममताना जालनी कडीयो,
गावे ध्यावे तुजने, तारो सेवक पोकारे, कोण. ३
मुज आंखे नयनो तारा, मुज दिलडाना तुमे सितारा,
दु:ख भंजन मनोहार, साचा तारणहार, कोण. ४
क्रोध कषाय कष्टथी पीडायो, लोभे मुजने घणोज सतायो,
तारी ज्योति देखी, मारुं मनडुं नाच्युं, कोण. ५
तारा वियोगना बादल छाया, वरस्या विना मारो वियोग जगायो,
ठाम ठेकाणुं तारुं, क्यां जइ पूछुं कोण. ६
सूर्य ने पूछुं तोय जवाब न आपे, नव लाख तारलीया त्यारेज बोले,
मारा अंतरमां वसनारो, प्यारो आदेश्वर, कोण. ७
सुंदर तारुं शत्रुंजय धाम, प्राण समो तुम बालकुमार,
निशदिन देजे टकोरो, मुज पापनो पतंगो, कोण. ८
मुज अंतरनी आशाओ विनवे, ज्ञानविमलनी ज्योति जगावे,
नेह नजर निहालो, तारो सेवक संभालो, कोण. ९

(४)

नगरी विनीता भले बिराजे, झगझग झगझग शोभेजी,
कंचन मांय कोट विराजे, सुरनरना मन मोहेजी, १
श्री श्री क्रोड, पूरव लगे पामे शाता, मरुदेवी माताजी,
नगरी विनीता बारे जोजन, पूर्व पश्चिम जाणुंजी,
नव जोजन उत्तरने दक्षिण, सूत्र मांहे वखाणोजी, श्री श्री क्रोड. २
पांच वर्णरा मणी कांगरा, जारी झरोखा गोखोजी,
दरवाजा तो घणा दीपता, देख देख मन मोहेजी, श्री श्री क्रोड. ३
आदिनाथजी आवी उपन्या, मरुदेवीने कुखेजी,
जगमां जामण हो गया सावा, जाया ऋषभ सरिखा बेटाजी, श्री श्री क्रोड. ४
सहेजो उपर बेठा सोहे, तेवड तकीया गादीजी,
भरत बाहुबली सरीखा पोता, जगमां दीपे दादीजी, श्री श्री क्रोड. ५

अठाणुं वली नाना पोता, लली लली लागे पायजी,
रूप अनुपम भले बिराजे, झलकंता मन मोहेजी, श्री श्री क्रोड. ६
ब्राह्मी सुंदरी दोनो बेनी, रेगी अखंड कुंवारीजी,
करणी कर सती मुक्ते पहोंची, जगमां महिमा भारीजी, श्री श्री क्रोड. ७
क्रोड पूरवनो पूरो आउखो, पांचसो धनुष्यनी कायाजी,
जीवीया जतरे जोवन रह्या, देखो पूर्वनी मायाजी, श्री श्री क्रोड. ८
पेसठ हजार पेढीया माजी नजरे निरखी, नाम ज ज्यारा धरीयाजी,
शोक संताप माजी कदही न दीठा, पुरव पुण्य सयाजी, श्री श्री क्रोड. ९
अंगमां अशाता कहदी न आवी, व्यक्त ने ठसको कदही न कीधोजी,
ज्यां तक मरुदेवी माता औषध न लीधोजी, श्री श्री क्रोड. १०
उपवास एकासणुं माजी कदही न कीधो, आंबिल ने वली नीवीजी,
मरुदेवी माता मुक्ति लीधी, अविचल पदवी लाधीजी, श्री श्री क्रोड. ११
जूना कपडा अंग न पहेरीया, पहेरीया पिताम्बर साडीजी,
नित्य नवला तो चुडला पहेरीया, कसुंबल साडीजी, श्री श्री क्रोड. १२
तीन वधाई नितकी आवे, कर्मना फल देखोजी,
हाथी घोडा माल खजाना, माणेक ने वली मोतीजी, श्री श्री क्रोड. १३
कुल वहुओं तो पाय लागे, माजी आशिष देदे थाकाजी,
बेटा पोताने परपोतानो, नही लेखोजी, श्री श्री क्रोड. १४
रत्न कांबलीरो क्रोड उपन्यो, दियो साधुजी ने दानजी,
जिण कारण माता मरुदेवी, उघडी रत्ननी खाणजी, श्री श्री क्रोड. १५
आदिनाथजी दीक्षा लीधी, पडीयो पुत्र वियोगजी,
जिण कारण माता मरुदेवी, मनमां आणी शोकजी, श्री श्री क्रोड. १६
आदीनाथजी आवी उतरीया, भरतने दीधी वधाईजी,
हर्ष धरी माजी हस्ती बेठा, पुत्र वंदनने भावेजी, श्री श्री क्रोड. १७
मार्ग वहेता मरुदेवी कहेवे, भरतने एमजी,
मीठाबोला, बेर गंमेरा, ए वाजा क्या वाजेजी, श्री श्री क्रोड. १८
इन्द्र इन्द्राणी देवी देवता, नर नारी ने वृंदोजी,
समवसरण विषे साहिब सोहे, जेम तारामां चंदोजी, श्री श्री क्रोड. १९
मरुदेवी माता कहेवे, मोह किधो में झुठोजी,
में जाणीयो मारो ऋषभ ते दु:खीयो, ए तो घणो सुखियोजी, श्री श्री क्रोड. २०
मेरुदेवी माता केवे, मोह कीदो में थोथोजी,
मां बापरा काचा सगपण, जाता न लागे वारजी, श्री श्री क्रोड. २१
अनंत चौवीशी सघला पहेला, शिवरमणीमां बेठाजी,
मरुदेवी माता मुक्ति पहोच्यां, हस्ति होदे बेठाजी, श्री श्री क्रोड. २२
मरुदेवी माता मुक्ति पहोंच्या, जगमां आनंद थयाजी,

रुपविजय प्रभु दर्शन करके, हरखविजय गुण गायाजी, श्री श्री क्रोड. २३

(५)

(तर्ज : सिद्धनी शोभा हुं शी कहुं)

भरतजी कहे सुणो मावडी, प्रगट्या नवे निधान रे,
नित्य नित्य देता ओलंभडा, हवे जुओ पुत्रना मान रे,
ऋषभनी शोभा हुं शी कहुं, (ए आंकणी) १
अढार कोडा कोडी सागरे, वसीयो नयर अनूप रे,
चार जोयणनुं रे मान छे, चालो जोवाने भुप रे, ऋषभ.२
पहेलो रुपानो कोट छे, कांगरा कांचन साज रे,
बीजो कनकनो कोट छे. कांगरा रतन समान रे, ऋषभ. ३
त्रीजो रत्ननो कोट छे. कांगरा मणिमय जाण रे,
तेहमां मध्य सिंहासने, हुकम करे प्रणाम रे, ऋषभ. ४
पूर्व दिशीनी संख्या सूणो, पगथीयां वीश हजार रे,
इणी परे गणतां चारे दिशे, पगथीयां एशी हजार रे, ऋषभ. ५
शिरपर त्रण छत्र जलहले, तेहथी त्रिभुवन राय रे,
तीन भुवननो रे पादशाह, केवलज्ञान सहाय रे, ऋषभ. ६
वीश बत्रीश दश सुरपति, वली दोय चंद ने सुर रे,
दोय कर जोडी उभा खडा, तुम सुत ऋषभ हजुर रे, ऋषभ. ७
चामर जोडी चोवीश छे, भामंडल झलकंत रे,
जागे गगने रे दुंदुभी, फुल पगर वंरसत रे, ऋषभ. ८
बार गुणो प्रभु देहथी, अशोक वृक्ष श्रीकार रे,
मेघ समाणी रे देशना, अमृतवाणी जयकार रे, ऋषभ.९
प्रातिहारज आठथी, तुम सुत दीपे देदार रे,
चालो जोवाने मावडी, गयवर खंधे असवार रे, ऋषभ. १०
दूरथी वाजां रे सांभली, जोवा हर्ष न माय रे,
हर्षना आंसुथी फाटिया, पडल ते दूर पलाय रे, ऋषभ. ११
गयवर खंधेथी देखीया, निरुपम पुत्र देदार रे,
आदर दीधो नही मायने, माय मन खेद अपार रे, ऋषभ. १२
कहेना छोरु ने केहना मावडी, ए तो छे वीतराग रे,
इणी पेरे भावना भावतां, केवल पाम्या महाभाग रे, ऋषभ. १३
गजवर खंधे मुक्ति गया, अंतगड केवली ऐह रे,
वंदो पुत्र ने मावडी, आणी अधिक स्नेह रे, ऋषभ. १४
ऋषभनी शोभाने वरणवी, समकित पुर मोझार रे,
सिद्धगिरि माहात्म्य सांभलो, संघ ने जय जयकार रे, ऋषभ. १५
संवत अठार एशीये, मागसर मास सोहाय रे,

दीपविजय कविरायने, मंगलमाल सवाय रे, ऋषभ. १६

(६)

(तर्ज : मारा प्रभुजी मुजने ने तारो रे)

सिद्धाचल वासी प्यारा रे, आदि जिणंदा, मुज हृदय
कमल वसनारा रे, आदि जिणंदा, जिनवरजी व्हाला,
विनीता नगरीना राया, वली नाभिराया कुल आया रे, आदि. १
प्रभुजी प्यारा, मरुदेवी माताना जाया, छो त्रण भुवनना राया रे, आदि. २
प्रीतम प्रभु प्यारा, परण्या सुनंदा नारी, सुमंगला दोय प्यारी रे, आदि. ३
आंनदघन व्हाला, जुगला धर्म निवारी, सहस चतुर अणगारी रे, आदि.४
जिनवरजी तुं तो, सकल गुणोथी भरीयो, हुं तो अवगुण नो छुं दरियो रे आदि. ५
भगवंतजी हुं तो, भव अटवीमां भमियो, मोह अरि मुज दमीयो रे, आदि. ६
दयाना दरिया, दासानुदास छुं तारो, भवसागर पार उतारो रे, आदि. ७
जिनवरजी हुं तो, क्रोध जालमां हुं फसीयो, वली लोभ सर्प मुज डसीयो रे,आदि. ८
मोहनजी हुं तो, मोह प्रपंचे पकडायो, जेथी चार गति अथडायो रे, आदि.९
प्रभुजी हुं तो, बाजी हार्यो निज घरनी, वली निदां करी जग जननी रे, आदि. १०
जिननी व्हाला, केम रह्या छो मुजथी न्यारा, तुज साथे भवो भव प्यारा रे, आदि. ११
दयालु देवा, दया करो प्रभु मारी, छो पंचमी गति दातारी रे, आदि. १२
मुक्ति ना दायक, मुक्तिविमल पद आपो, तुज पद पंकजमां स्थापो रे, आदि. १३
गुणवंता गिरुआ, रंगविमल गुणगावे, शुभ शिव लक्ष्मी पद पावे रे, आदि. १४

(७)

(तर्ज : साहिबा श्री सीमंधर साहिबा)

जी रे आज सफल दिन माहरो, दीठो प्रभुनो देदार, दीठो.
लय लागी जिनजी थकी, प्रगट्यो प्रेम अपार, प्रगट्यो.
घडीये ने विसरो हो साहिबा, साहिबा घणो रे सनेह, साहिबा.
अंतर जामी छो माहरा, मरुदेवाना नंद, सुनंदाना कंत, सुमंगला ना कंत, घडीये. १
साहिबा लघु थकी मन मारु तिहां रह्युं, तमारी सेवाने काज, तमारी,
ते दिन क्यारे आवशे, होसे सुखनो आवास, होसे, घडीये. २
जी रे प्राणेश्वर प्रभुजी तुमे, आतमना रे आधार, आतमना.
मारे तो प्रभुजी तमे एक छो, जाणजो निरधार, जाणजो, घडीये. ३
साहिबा एक घडी प्रभु तुम विना, जाय वरस समान, जाय,
प्रेम विरह हवे केम खमुं, जाणो वचन प्रमाण, जाणो, घडीये. ४
साहिबा अंतर्गतनी वातडी, कहो कोने कहेवाय, कहो.
वालेसर विसवासीया, कहेता दुःख जाय, सुणंता सुख थाय, सुणंता. घडीये. ५
साहिब देव अनेक जगमां वसे, तेनी ऋद्धि अनेक. तेनी.
तुम बिना अवरने नहि नमुं, एहवी मुज मन टेक. एहवी, घडीये. ६

जी रे पंडित विवेकविजय तणो, प्रणमे शुभपाय, प्रणमे.
हर विजय श्री ऋषभनो, जुगते गुण गाय, जुगते. घडीये. ७

श्री अजितनाथ स्तवन

अजित जिन बाल बोले ते सुणजो, मारी मोह दशा ने हणजो, अजित.
साधु देखी में साधुता लीधी, धारी ए साधता अंगे,
संसार वधार्यो विषयमां राची, रम्यो संसारनी संगे, अजित. १
हाथमां माला मुखमां चाला, एवे उखाणे हुं चाल्यो,
बगलानी पेठे ध्यान धरीने, कांइक उपर घा वाल्यो, अजित. २
मीठुं मीठुं मुखथी बोली, भोलवी जालमां नाख्यां,
स्वारथ साधी हृदयना भावो, किंपाक फल में चाख्यां, अजित. ३
ध्यान धर्युं में लोकोने ठगवा, वैराग्य जगने बतावबा,
भाषण कीधा में कीर्ति फेलावबा, प्रकृति सारी जणावबा, अजित. ४
आवी कपट किया प्रभु अमारी, तारी आगल संभलावुं,
दर्शन देजो लोक न देखे, पण तुं तो छे सदा साचो, अजित. ५

श्री संभवनाथजी स्तवन

(तर्ज : अब सौंप दिया...)

जिन संभवनाथ कृपाज करो, संसारथी मुजने पार करो,
आधि व्याधि उपाधिथी भरीयो, स्वप्ने पण सुख नथी मलीयो, जिन. १
सूक्ष्म निगोदरनी सांकलमां, बहुकाल वेठी गयो बादरमां
थयो कन्दमूल साधारणमां, वली प्रत्येक फल फूल बीजोमां, जिन, २
बितिचउरिन्द्रियमां भमतो, करी करी निर्जरा उंचे चढीयों
वली नरक निर्यचमां हुं गयो, मानव समूर्च्छिम हुं ए थयो जिन. ३
तेम संज्ञी अनार्य मनुष्य थयो, जिनजी तुम दर्शन विण रह्यो
कोई पुण्यथी आर्यपणुं लहियो, उत्तम जाति कुल धर्म मल्यो, जिन. ४
देव गुरु तणा संयोग मल्या, पुस्तक पाना पंडित मल्या
पण अंतराय जिन एवो नडे, मोह काठीओ आवी सामो रहे, जिन. ५
जिन आगम आरिसो मलतां, मोह काठीओ दूर जरा खसता.
जिन भक्ति खरी हैये वसता, परिणाम हवे मननां फरता, जिन. ६
जिन पूजा करवा भाव धरुं, सामायिक ने वली दान करुं,
व्याख्यान सुणी गुरुपाय नमुं, मुज भावना एहवी सिद्ध करुं, जिन. ७
आँखो जिन बिंबो ने जोशे, कानो जिन गुण सांभलशे,
मुखडुं जिन स्तवना करशे, प्रभु दिन हवे मारो फलशे, जिन. ८
गुरु संपन्न गुरु क्षान्ति धरता, मन मेल मुकी भक्ति करता,
विकार रहित चित्त केलवता, कहे ललितविजय जिन सुंदरता, जिन. ९

श्री सुमतिनाथजी स्तवन

सुमतिनाथ गुणशुं, मिलीजी, वाधे मुज मन प्रीती,

तेल बिंदु जिम विस्तेरजी, जल मांहे भली रीति, १
सोभागी जिननुं, लाग्यो अविहड रंग,
सज्जनशुं जे प्रीतडीनी, छानी ते न रखाय,
परिमल कस्तूरी तणोजी, मही मांहे महकाय, सो. २
अंगुलीये नवि मेरु ढंकाये, छाबडीये रवि तेज,
अंजलिमां जिम गंग नमांय, मुज मन तिम प्रभु हेज, सो. ३
हुओ छीपे नही अधर अरुण जिम, खाता पान सुरंग,
पिवत भर भर प्रभु गुण प्याला, तिम मुज प्रेम अभंग, सो. ४
ढांकी इक्षु परालशुंजी, न रहे लहि विस्तार,
वाचक यश कहे प्रभु तणोजी, तिम मुज प्रेम प्रकार, सो. ५

श्री पद्मप्रभुजी स्तवन

मनडुं हाथ न आवे हो, पद्मप्रभु, मनडुं हाथ न आवे,
यत्नकरी निज घरमां राखुं, पल पल पर घर जावे, हो पद्मप्रभु १
ए मनडुं कदी सातमी नरके, कदी स्वर्गमां वसावे,
कदी मानव कदी तिर्यंच भवे, भव अटवी भटकावे, हो पद्मप्रभु. २
विना खाधे पीधे तदुंलने, मनडे मुश्किल किधी,
अन्तमुहूर्त मांही नरकमां, असह्य वेदना दिधी, हो पद्मप्रभु. ३
प्रसन्नचंद्र ने क्षणमां नारक, क्षणमां स्वर्ग बतावे,
क्षणमां केवल दुंदभि वागे, ए मन केर मचावे, हो पद्मप्रभु ४
क्षण ब्रह्मचारी क्षण व्यभिचारी, विरता विरत क्षण मांही,
मदारीना मरकटनी पेरे, भटकावे आहि तांही, हो पद्मप्रभु. ५
ए मनडुं प्रभु तमे वश कीधुं, ए आगमथी में जाण्युं,
तारा शरणथी हुं पण जीतीश, ए में मनमां आण्यु, हो पद्मप्रभु. ६
आत्मकमलमां तेहथी व्हाला, में प्रभु तमने वसाव्यां, लब्धिसूरि जिन सेव्यां,
जेहथी, मिथ्याभाव नचाव्यां हो, पद्मप्रभु मनडुं हाथ न आवे. ७

श्री सुपार्श्वनाथजी स्तवन

क्युं न हो सुनाई स्वामी, ऐसा गुन्हा क्या किया, औरोंकी सुनाई जावे.
मेरी बारी नहीं आवे, तुम बिन कौन है मेरा मुजे क्युं भूला दिया, क्युं. १
भक्तजनों को तार दिया, तार ने का काम किया,
बिन भक्ति वाला मोपे पक्षपात क्युं किया, क्युं. २
रायरंक एक जाणो, मेरा तेरा नहीं मानो,
तरण तारण ऐसा, बिरुद धार क्युं लिया, क्युं. ३
गुन्हा मेरा बक्ष दीजे, मोपे अति रहेम कीजे,
पक्का ही भरोसा तेरा, दिलो में जमा लिया, क्युं. ४
तुंही एक अंर्तयामी, सुनो श्री सुपार्श्वस्वामी,
अब तो आशा पूरो मेरी, कहना था सो कह दिया, क्युं. ५

शहेर अंबोले भेटी, प्रभुजी का मुख देखी,
मनुष्य जन्म का ल्हावा, लेना था सो ले लिया, क्युं. ६
उन्नीसो छासठ छबीला, दीपमाला दिन रंगीला,
कहे वीरविजय प्रभु, भक्ति में जगा दिया, क्युं. ७

श्री चन्द्रप्रभजिन के स्तवन

(१)

(तर्ज : मारी शेरीये थी कानकुंवर आवतारे लोल)

श्री शंकर चन्द्रप्रभु रे लोल, तुं ध्याता जगनो विभु रे लोल,
तिणे हुं ओलगे आवीयो रे लोल, तुमे पण मुज मन भावीयो रे, लोल. १
दीधी चरणनी चाकरी रे लोल, हुं सेवुं हरखे करी रे लोल,
साहिब सामुं निहालजो रे, लोल, भव समुद्रथी तारजो रे लोल. २
अगणित गुण गणवा तणी रे लोल, मुज मन होंशे धरे घणी रे लोल,
जिन नभने पाम्या पंखी रे लोल, दाखे बालक करथी लखी रे लोल. ३
जो जिन तुं छे पासरो रे लोल, कर्म तणो स्यो आशरो रे लोल,
जो तुमे राखशो गोदमां रे लोल, तो किम जाशुं निगोदमां रे लोल. ४
जब ताहरी करुणा थई रे लोल, कुमति कुगति दूरे गई रे लोल,
अध्यात्म रवि उग्यो रे लोल, पापतिमिर किहा पुंगीयो रे लोल ५
तुज मुरति माया जिसी रे लोल, उर्वशी थई उरे वसी रे लोल,
रखे प्रभु टालो एक घडी रे लोल, नजर बादल नी छांयडी रे लोल. ६
ताहरी भक्ति भली बनी रे लोल, जिम औषधि संजीवनी रे लोल,
तन मन आनंद उपन्यो रे लोल, कहे मोहन कवि रुपनो रे लोल. ७

(२)

(राग-वीर कुंवरनी वातडी केने कहीये)

चन्द्र प्रभुजीनी चाकरी नित्य करीये, होरे नित्य करीये रे,
नित्य करीये, हारे करता भवजल निधी तरीये,
हारे होय परम आंनद. चन्द्र.१
लक्ष्मणादेवीना लाड़का जिनराया, हारे जस उडुपति लंछन पाया,
हारे चन्द्रपुरीना राया, हारे नित्य समरीये नाम.. चन्द्र २
महसेन नृप कुलचन्द्रमां सुखदाय, हारे एना दरिशने पाप पलाय,
हारे आत्म निज तत्त्व समाय, हारे भवो भवना दुख जाय. चन्द्र. ३
दोढ़सों धनुष प्रमाण देह, हारे तेजे करी दिणयर जेह,
हारे गुणगण कही न शके तेह, हारे धन्य प्रभुनो देदार, चन्द्र. ४
दश लाख पुरव आऊखुं पाली, हारे निज आतम ने अजुवाली,
हारे दुष्ट कर्मना मर्म ने टाली, हारे वर्या केवल नाण. चन्द्र. ५
समेतशिखर सिद्धि वर्या उछरंगे, हारे एक मुनिवर संगे,

हारे पाली अणसण आत्म रंगे, हारे लह्युं पद निर्वाण, चन्द्र. ६
जिन उत्तम पद पद्मने ध्यावे, हारे रुप कीर्ति कमला जस पावे,
हारे मुनि मोतिविजय गुणगावे, हारे आपो अक्षय राज. इन्द्र. ७

श्री सुविधिजिन स्तवन

में कीनो नहि तुम बिन ओर शुं राग, दिन दिन वान वधे गुण तेरो,
ज्युं कंचन पर भाग, औरन मे हे कषाय की कालिमा,
सो क्युं सेवा लाग, में कीनो१
राजहंस तुं ज्ञान सरोवर, और अशुचि रुचि काग,
विषय भुंजग गरुड तुं कहिये, और विषय विष नाग, में कीनो २
और देव जल छिल्लर सरिखे, तुं तो समुद्र अथाग,
तुं सुरतरु जन वांछित पूरण, और तो सूको साग, में कीनो. ३
तुं पुरुषोत्तम तुंहिज निरंजन, तुं शंकर बड भाग,
तुं ब्रह्मा तुं बुद्ध महाबल, तुंहिज छे वीतराग, में कीनो. ४
सुविधिनाथ तुम गण फुलन को, मेरो दिल है बाग,
जस कहे भ्रमर रसिक होई ताको, दीजे भक्ति पराग, में कीनो. ५

श्री वासुपूज्यस्वामी के स्तवन

(१)

(तर्ज : देख तेरे संसार की हालत...)

धरशो ने दिलमां रीस प्रभुजी, धरशो न दिलमां रीस,
तुं दायक ने हुं मांगण छुं, मांगण तो मांगीश,
हठीलो थई ने हठ मांडीश, प्रभुजी. १
आज काल कही कही ललचाव्यो, दीधुं न हाथथी दान,
फरीफरी फेरा फरी थाक्यो, तोये न दीधुं ध्यान,
हवे हुं घर धरणुं घालीश, प्रभुजी. २
मोक्ष नथी हमणां देवानो, मुखे कहेतां शुं थाय,
सुडी वच्चे सोपारी आवी, एवो बन्यो छे न्याय,
छतां नही लीधा विना जईश, प्रभुजी. ३
ना ना कहेता मान न रहेता, देता न चाले जीव,
दाताथी पण कंजुस सारो, ना कही आप सदैव,
जीणंदजी खाली केम काढीश. प्रभुजी. ४
ओछु थई जशे एवा भयथी, देता करो छो विचार,
मांग जे मांगे आपुं तुजने, ते केम कर्यो न उच्चार,
हवे तुं मुजने शुं आपीश, प्रभुजी. ५
दायक बिरुद धरी ने बेठा, कल्पतरुनी जेम,
हवे याचकनुं वांछित देता, गुंदा गालो छो केम,
जगपति बिरुद केम पालीश, प्रभुजी. ६

धार्याथी तने ओछुं आपीश, काढीश नहि नीराश,
आटलुं पण नवी मुखथी बोलो, शुं अम सरशे आश,
वली मुज दारिद्र शुं टालीश, प्रभुजी. ७
तु दरिद्र्य दावानल समाववा, समजी मेघ समान,
वर्ष वर्ष कहेतो हुं मुखथी, धरुं छुं ताहरुं ध्यान,
छतां मने क्यां सुधी सतावीश, प्रभुजी. ८
वीतराग पद पामी पोते, भक्त ने रागी कीध,
रागी ने शुं आपे निरागी, हवे में समजण लीध,
मुनिवर इच्छा ने वरीश प्रभुजी. ९
नरपति चंपा नगरीना वासी, वासुपूज्य परमेश्वर,
चतुरविजयनो किकंर कहे छे, दर्शन तारुं हमेंश,
मलो मुज उमेद दिल राखीश, प्रभुजी. १०

(२)

(तर्ज : राता जेवा फूलडा)

वासुपूज्य स्वामीजी ने करुं रे प्रणाम, मूरति सुरति निरखी,
हरखीयो, मारो आतमराम, मारा सुखना हो स्वाम,
मीठी आंखे देखत मारी भवट गई, १
अचरिज तारा वारतामां थयो रे करार, मूढ पणे विसारी मूक्यो,
नही कीधो निरधार, मारा सुखना. २
अवगुण मुजमां छे घणा ने, साहिब न आणो चित्त,
लोक कलंकित राख्यो, जेम शशिहर राखो कंत, मारा सुखना. ३
भवमां भमता में जोया, तुम सरिखा देव,
दीठा तेणे कारणे में, निश्चय करवी सेव, मारा सुखना. ४
ज्ञानविमल कहे प्रभु मुज आपो, महेर करी महाराज,
आटलो दिवस लेखे थयो ने, सफल थयो अवतार,
मारा सुखना हो स्वाम, मीठी आंखे देखत मारी भावट गई ५

(३)

(तर्ज : सिद्धचलना वासी)

चुंपापुरीना वासी, मुक्तिपुरीना धामी, आनंदकारा,
वासुपूज्य छो अमने प्यारा, च्यवन जन्म ने मंगल दीक्षा,
लेई लीधी छे कर्मनी शिक्षा,
केवल निर्वाण भूमि, स्पर्शी जाऊं हुं झुमी, आनंदकारा. १
चंपा वृक्षमां खीलेलुं फूल, देखी विश्व बने मशगुल,
तेम जाऊं हुं वारी, देखी मूर्ति तमारी, आनंदकारा. २
प्रभु शिवपुर मारगना दर्शक, सारा विश्वना छो तमे रक्षक,

मारा विघ्नो हटावो, अरजी दिलमां ठावो, आनंदकारा. ३
शोभे मुखडुं पूनम चंदा, जया माताना लाडला नंदा,
पूरो मनोरथ मारा, करवा दर्शन तारा, आनंदकारा. ४
मारी विनंती दिलमां धरजो, मारा अंतर रिपु ने हरजो,
आत्म शक्ति वधारो, भवपार उतारो, आनंदकारा. ५
आत्म कमलमां लब्धिनुं झरणुं, एने पीवानुं मारुं छे शमणुं,
विक्रम मागुं तमारुं, भद्र कल्प सभालुं, आनंदकारा. ६

(४)

लाज राखो प्रभु मारी, दयालु देवा, लाज राखो प्रभु मारी,
बहुभव भटकी शरणे आव्यो, श्री वासुपूज्य तमारे दयालु देवा. १
काल अनंतो नरक निगोदे, खमीयो बहु दुःख भारी,
परमाधामी देवे मुजने, त्रास पमाड्यो भारी, दयालु देवा. २
तिर्यंच गति पण महापाप कारी, वध बंधन करनारी,
सुरनर गतिमां कामे विटंब्यो, कर्म करी किकीयारी, दयालु देवा. ३
एके गतिमां शाता न पाम्यो, शी कहुं कथनी मारी,
तारकता तुज सांभरी आजे, आव्यो छुं आशा धारी, दयालु देवा. ४
मोह पिंजर थी छोडावो मुजने, आपनो हुं छुं आभारी,
दीन दशामां बाकी न कांई, बनी गयो छुं लाचारी, दयालु देवा. ५
निर्यामक थई भव सागरथी, लेजो मुजने उगारी,
शुद्ध बुध मारी गई छे चाली, हिम्मत गयो छुं हारी, दयालु देवा. ६
दयाना सिन्धु करुणा करीने, लेजो सेवक ने तारी,
सूरि नीतीनो बाल उदय थी. मेलवजो शिवनारी, दयालु देवा. ७

(५)

(तर्ज : वासुपूज्य विलासी)

वासुपूज्य स्वामी, गुणोना धामी, तेरो हुं कामी, वंदुं वारं वार,
पुण्यथी पामी, भक्ति छे जामी, देखाडो स्वामी, आव्यो तमारे द्वार. १
मुरति तारी मन हरनारी, करनारी भवपार, जोता जोता तृप्ति न थाय,
आपे सुख अपार रे, वासुपूज्यजी स्वामी. २
चंपापुरीमां दर्शन पामी, भाग्ये मली मनोहार, अनंता भवथी अंतज आव्यो,
मल्यो तारणहार रे, वासुपूज्य स्वामी. ३
तारा बिना आ जीवडला ने, पडे न चेन लगार, रात दिवस दिलमां रमो रे,
देजो दर्शन एक वार रे, वासुपूज्यजी स्वामी. ४
रोमे रोमे हर्षित होऊं रे, उछले आनंद बहार, आप चरणमां राखजो रे,
प्रगटे समकित सार रे, वासुपूज्यजी स्वामी.
जंयत थावे तारी बलिहारी, देखाडे मुक्ति दरबार रे, वासुपूज्यजी. ६

(६)

स्वामी तुमे कांई कामण करशुं, चित्तडुं अमारुं चोरी लीधुं,
अमे पण तुमशुं कामण करशुं, भक्ते ग्रही मन धरमां धरशुं.
साहिबा वासुपूज्य जिणंदा, मोहना वासुपूज्य जिणंदा, १
मन घरमां धरीया घर शोभा, देखत नित रहेशो थिर थोभा,
मन वैकुंठ अकुंठित भगते, योगी भाखे अनुभव युगते, साहिबा. २
कलेश वासित मन संसार, कलेश रहित मन ते भवपार,
जो विशुद्ध मन घर तुमे आव्यां,
प्रभु तो अमे नवनिधि रिद्धि पाया, साहिबा. ३
सातराज अगला जई बेठा, पण भगते अम मनमां पेठा,
अगला ने वगला जे रहेवुं, ते भाणा खड खड दुःख सहेवुं, साहिबा. ४
ध्याता ध्येय ध्यान गुण एके, भेद छेद करशुं हवे टेके,
खीर नीर परे तुमशुं मिलशुं, वाचक जश कहे हेजे हलशुं साहिबा. ५

श्री विमलनाथजी के स्तवन

(१)

सेवो भवियां विमल जिनेश्वर, दुल्लहा सज्जन संगाजी,
एहवा प्रभुनुं दरिसन लेवुं , ते आलसमां गंगाजी, सेवो.
अवसर पामी आलस करशे, ते मुरखमां पहेलोजी,
भुख्या ने जिम घेवर देतां, हाथ न मांडे घेलोजी, सेवो. २
भव अनंतमां दरिसण दीठुं, प्रभु एहवा देखाडेजी,
विकट ग्रंथी जे पोल पोलीयो, कर्म विवर उघाडेली, सेवो. ३
तत्त्व प्रीति कर पाणी पाये, विमला लोके आंजीजी,
लोयण गुरु परमान्न दीए तव, भ्रम भांगे सवी भांजीजी, सेवो. ४
भ्रम भांग्यो तव प्रभु शुं प्रेमे, वात करुं मन खोलीजी,
सरल तणे जे हियडे आवे, तेह जणावे बोलीजी, सेवो. ५
श्री नयविजय विबुध पय सेवक, वाचक जस कहे साचुंजी,
कोटी कपट जो कोई दिखावे, तोही प्रभु विण नवि राचुंजी, सेवो. ६

(२)

हो प्रभुजी मुज अवगुण मत देखो, राग दशाथी तुं रहे न्यारो,
हुं मन रागे वालुं, द्वेष रहित तुं समता भीनो, द्वेष मारग हुं चालु, हो प्रभुजी. १
मोह लेश फरश्यो नहि तुंहि, मोह लगन मुज प्यारी,
तुं अकलंकी, कलंकित हुं तो, ए पण रहेणी न्यारी, हो प्रभुजी २
तुंहि निरागी भावपद साधे, हुं आशा संग विलुद्धो,
तुं निश्चल हुं चल तुं सुधो, हुं आचरणे ऊंधों, हो प्रभुजी. ३
तुज स्वभावथी अवला मारा, चरित्र सकल जगे जाण्या,

एवा अवगुण मुज अति भारी, न घटे तुज मुख आण्या, हो प्रभुजी ४
प्रेम नवल जो होय सवाई, विमलनाथ मुख आगे,
कान्ति कहे भव रान उतरतां, तो वेला नवि लागे, हो प्रभुजी ५

श्री शान्तिनाथजी के स्तवन

(१)

(तर्ज : महेंदी रंग लाग्यो)

देव उदयपुर मंडणो रे, अचिरा राणीनो नंद,
जिनशुं रंग लाग्यो, रंग लाग्यो चोलमजीठ रे, संजम रंग लाग्यो, १
हस्तिनापुरनो राजीयो रे, सोलमो शांति जिणंद, जिनशुं. २
पारेवो उगारीओ रे, मेघरथ राय अवतार, जिनशुं. ३
चक्रवर्ती प्रभु पांचमो रे, छ खण्डनो भर्तार, जिनशुं. ४
नवनिधि चौदह रतन भला रे, लाख चोरासी केकाण, जिनशुं. ५
चोसठ सहस अंतेउरी रे, पायदल छन्नुं करोड, जिनशुं. ६
बोतेर लाख गोकुल वली रे, मुकी तिम जिणे छोड, जिनशुं. ७
सहेजे संजम आदर्यो रे, पामी शिवनुं राज, जिनशुं. ८
वाचक रामना नामनो रे धन्य तुज महाराज, जिनशुं. ९

(२)

शान्ति जिनेश्वर सांभलोजी, मुज मननी एक वात,
रात दिन हुं विनवुंजी, शरणुं मांगु साक्षात जिनेश्वर,
मुज पापी ने तार, मुज पापी ने तार जिनेश्वर, मुज. १
साचा खोटा में कर्याजी, कीधा पाप अपार,
महेर करी मुज तारजो जी, टालो पाप परिताप जिनेश्वर, मुज. २
स्वारथीयो संसार छे जी, लक्ष्मी अथिर निदान,
परमार्थे नवी वापर्युजी, एकला जावुं ते जाण जिनेश्वर, मुज. ३
लक्ष्मी केरी लालचेजी, लुट्या में लोक अनेक,
शासनपतिना मोह पडियाजी, लखाई गया त्यां लेख जिनेश्वर, मुज. ४
कर्या कर्म सहुं अनुभवेजी, कोई न राखणहार,
शान्ति जिनेश्वर जाणजोजी, कोई दिन पामे पार जिनेश्वर. मुज. ५
विश्वसेन कुल दीपावीयोजी, अचिरा मात सुखकार,
लाख वर्षनुं आउखुंजी, मृग लंछन मनोहार जिनेश्वर. मुज. ६
भरणी नक्षत्रमां जन्मीयाजी, मेघ राशी प्रमाण,
गरुड निर्वाणी सेवा करेजी, शासनना शणगार जिनेश्वर, मुज. ७
विनय विजयनी विनंतीजी, स्वीकारो वारंवार,
शरणुं प्रभु तारु मनेजी, आ भव पार उतार जिनेश्वर, मुज. ८

(३)

शांति जिनेश्वर साहेबा रे लाल, सुणो मोरी अरदास रे, रंगीला,
काल अनंत वित्यो ज्यां रे लाल, वसियो निगोद में वास रे, रंगीला
शांति जिनेश्वर सांभलो रे लाल. १
लोक स्थिति भारे लही रे लाल, भव स्थिति भाव विशेष रे, रंगीला,
बादर नगरे आव्यो रे लाल, न लह्यो दर्शन लेश रे,रंगीला, शांति. २
चौदे राजना चोकमां रे लाल, चौगति चौटा मझार रे, रंगीला,
रडवडतो हुं आवीयो रे लाल, मनुष्य गति मिली सार रे, रंगीला, शांति. ३
मन लोभाणुं माहरुं रे लाल, कंचन कामिनी साथ रे, रंगीला,
कुगुरु कुदेव कुधर्मथी रे लाल, मन मान्यो मिथ्यात्व रे, रंगीला, शांति. ४
राग द्वेष किधा घणा रे लाल, सेव्यां विषय़ कषाय रे, रंगीला,
तेथी दु:ख दीठा घणा रे लाल, नरक तिर्यच में जाय रे, रंगीला, शांति.५
देव गति सुख देखीया रे लाल, कोईक पुण्य प्रवेश करे, रंगीला,
कपटी कुगुर तिहां मल्या रे लाल, भम्यो हुं भव विशेष रे, रंगीला, शांति.६
जन्म मरण दु:ख देखतो रे लाल, आव्यो तुज दरबार रे, रंगीला,
वांछित सुख हवे दीजिये रे लाल, आपीये शिवपद सार रे, रंगीला, शांति. ७
पूर्व भवे पारेवडो रे लाल, उगार्यो तुम नाथ रे, रंगीला,
करुणा निधि अरजी सुणो रे लाल, तारो झाली हाथ रे, रंगीला, शांति. ८
नगर धानेरा निरख्यो रे लाल, शांन्ति जिणंद भगवान रे, रंगीला,
कीर्तिचन्द्र गुरुरायना रे लाल, दिन दिन वधते वान रे, रंगीला, शांति. ९

(४)

सुणो शान्तिजिणंद सोभागी, हुं तो थयो छुं तुम गुणरागी,
तुमे निरागी भगवंत, जोतां किम मलशे तंत सुणो. १
हुं तो क्रोध कषाया नो भरियो, तुं तो उपशम रसनो दरियो,
हुं तो अज्ञाने आवरियो, तुं तो केवल कमला वरियो सु. २
हुं तो विषय़ा रसनो आसी, तें तो विषया कीधी निराशी,
हुं तो करमने भारे भर्यो, तें तो प्रभु भार उतार्यो सु. ३
हुं तो मोह तणे वश पडीयो, ते तो सघला मोहने हणीयो,
हुं तो भव समुद्रमां खुच्यो, तुं तो शीव मंदिरमां पहुंच्यो सु. ४
मारे जन्म मरणनो जोरो, ते तो तोड्यो तेहनो दोरो,
मारो पासो न मेले राग, तुमे प्रभुजी थया वीतराग सु. ५
मने मायाए मूक्यो पाशी, तुं तो निरबंधन अविनाशी,
हुं तो समकितथी अधूरो, तूं तो सकल पदारथे पूरो सु. ६
मारो तो प्रभु तूं ही एक, तारे मुज सरीखा अनेक,
हुं तो मनथी न मुकुं मान, तूं तो मान रहित भगवान सु. ७

मारुं कीधुं कशुं नवि थाय, तूं तो रंक करे छे राय,
एक करो मुज महेरबानी, मारो मुजरो लेजो मानी सु. ८
एकबार जो नजरे निरखो, तो करो मुजने तुम सरीखो,
जो सेवक तुम सरीखो थाशे, तो गुण तमारा गाशे सु. ९
भवोभव तुम चरणोनी सेवा, हुं तो मांगुं छुं देवाधिदेवा,
सामुं जुओने सेवक जाणी, एवी उदयरतननी वाणी सु. १०

(५)

हम मगन भये प्रभु ध्यान में, ध्यान में ध्यान में ध्यान में,
विसर गई दुविधा तन मनकी, अचिरासुत गुण ज्ञान में हम. १
हरिहर ब्रह्मा पुरंदर की रिद्धि, आवत नहीं कोई मान में,
चिदानंद की मोज मची हे, समता रस के पान में हम. २
इतने दिन तुम नाहि पिछान्यो, मेरो जन्म गयो छे अजान में,
अब तो अधिकारी होई बेठे, प्रभु गुण अखय खजान में हम. ३
गई दीनता अब सब ही हमारी, प्रभु तुज समकित दान में,
प्रभुगुण अनुभव रस के आगे, आवत नाहि कोउ मान में हम. ४
जिनही पाया तिनही छिपाया, न कहे कोउके कान में,
ताली लागी जब अनुभव की, तब समझे एक सानमे हम. ५
प्रभुगुण अनुभव चंद्रहास ज्यौं, सो तो न रहे म्यान में,
वाचक जश कहे मोह महाअरि, जीत लियो मैदान में हम. ६

(६)

(तर्ज : देखी श्री पार्श्व तणी मूर्ति)

शांति जिणंदनी सुंदर मूरति, भुलाय दिलथी केम, हे मारो अंतरनो दिवडो,
क्षण क्षण सांभलो, पल पल सांभलो, प्रभु विना नही चेन, हे मारो. १
मुख शोभे छे सोल कलाथी, खीलेला चंद्रनी जेम, हे मारो. २
रत्नचिंतामणी निर्धन हाथे, पाम्यो हुं जिनवर तेम, हे मारो. ३
प्रीत अविहड लागी प्रभुजी, मयूर ने जेम मेह, हे मारो. ४
आत्म केमेराथी फोटो उतारुं, मननां मटावुं वेम, हे मारो. ५
दुर्गुणी देवने छोडी दीधा छे, खोटा शा राखवा वेम, हे मारो. ६
निश्चय थई करुं तारी उपासना, साचो तमारो प्रेम, हे मारो. ७
मनफरा मंडल शान्ति जिणंदनी, भक्तिथी कुशल क्षेम, हे मारो. ८
लब्धि शिशु सूरि पद्म कहे छे. राखजो मुज पर स्नेह, हे मारो. ९

(७)

(तर्ज : हरि मारे ठाम धर्मना, साडा पचवीश देश जो)

हरि मारे शान्ति जिणंदशुं, लाग्यो अविहड रंग जो,
भंग न पाडशो भक्तिमां, कोई जातनो रे लोल, १

हांरे मारे नाम जपंता, उछले हरख तरंग जो,
रंग वल्यो घणो सुखकारी, भली भातनो रे लोल, २
हांरे मारे नाम स्थापना देखी, अनुभव प्रभुनो थाय जो,
समवसरणनी रचना, सघली सांभले रे लोल, ३
हांरे मारे भाव अवस्था भावता, पातिक जाय जो,
प्रातिहार्यनी शोभा कहुं, हवे भली परे रे लोल, ४
हांरे मारे वृक्ष अशोके, सुर पुष्प वृष्टि घणी होय जो,
दिव्य ध्वनी सुर चामर, विंजाये घणा रे लोल, ५
हांरे मारे आसन ने, भामंडल पूंठे जाय जो,
दुंदुभी देवने छत्रतणी, कांई मणा रे लोल, ६
हारे मारा जघन्य थकी पण, क्रोड देव करे सेव जो,
कनक कमल नव उपरे, प्रभु पगला ठवे रे लोल, ७
हांरे मारा भक्ति भावथी, पामे शाश्वत मेव जो,
भाव अवस्था वरणवी, कहुं हवे रे लोल, ८
हांरे मारे माता अचिरा, विश्वसेन महाराय जो,
हस्तिनापुर नगर निवासी, जाणिये रे लोल, ९
हांरे मारा मृग लंछन प्रभु, लाख वरसनो आय जो,
चालीश धनुष देहमान, वखाणिये रे लोल, १०
हारे मारे दोष अढार रहित , शिवपुरना साथ जो,
आश्रय करंता भविजन, भवसायर तरे रे लोल, ११
हांरे मारे सूत्र ठाणांगे, कह्यां निक्षेपा चार जो,
मुढमती नवि माने, शुं करवुं तिसे रे लोल, १२
हारे मारे मुक्तिविजय गुरु, चरण कमल आधार जो,
सूत्र उवेखी नव दंडकमां, ते जशे रे लोल, १३

(८)

(तर्ज : प्यार हमारा अमर रहेगा , तर्ज : मेरा जीवन कोरा कागज)

शांति जिनेश्वर साहिबा रे, शांति तणा दातार, अंतर जामी
छो माहरा रे, आतमना आधार, १
चित चाहे प्रभु चाकरी रे, मन चाहे मलवाने काज, मन.
नयन चाहे प्रभु निरखवा रे, द्यो दरिसण महाराज, शांति. २
पलक न विसरुं मन थकी रे, जेम मोरा मनमेह, जेम.
एक पखो केम राखीये रे, राजकपट नो नेह, शांति. ३
नेह नजर निहालता रे, वाधे बमणो वान, वाधे.
अखूट खजानो प्रभु ताहरो रे, दीजिये वंछित दान, शांति. ४
आशा करे कोई आपणी रे, नवि मुकीये निराश, नवि.
सेवक जाणी ने आपणो रे, दीजिये तास दिलास, शांति. ५

दायक ने देता थका रे, क्षण नवि लागे वार, क्षण.
काज सरे निज दासना रे, ए म्होटो उपकार, शांति. ६
एवुं जाणी ने जगघणी रे, दिल मांहे धरजो प्यार, दिल.
रुपविजय कविरायनो रे, मोहन जय जयकार, शांति. ७

श्री कुंथुजिन के स्तवन

(१)

मनडुं किमही न बाजे, हो कुंथु जिन मनडुं किमही न बाजे,
जिम जिम जतन करी ने राखुं, तिम तिम अलगुं भाजे हो, कुंथु. १
रजनी वासर उज्जड, गयण पायाले जाय,
साप खाय ने मुखडुं थोथुं, एह उखाणो न्याय हो, कुंथु. २
मुक्ति तणा अभिलाषी तपीया, ज्ञान ने ध्यान अभ्यासे,
वयरिडुं कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासे हो, कुंथु. ३
आगम आगमधर ने हाथे, नावे किणविध आंकु,
किहां कणे जो उट करी हटकुं तो, व्याल तणीपरे वांकुं हो, कुंथु. ४
जो ठग कहुं तो ठगतुं ने देखुं, शाहुकार पण नांहि,
सर्व माहे ने सहुथी अलगुं, ए अचरिज मन मांहि हो, कुंथु. ५
जे जे कहु ते कान न धारे, आप मते रहे कालुं,
सुर नर पंडित जन समझावे, समझे न माहरुं सालुं हो, कुंथु. ६
में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरद ने ठेले,
बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोई न झेले हो, कुंथु. ७
मन साध्युं तेणे सघलुं साध्युं, एह वात नही खोटी,
इम कहे साध्युं ते नवि मानुं, एक ही वात छे मोटी हो, कुंथु. ८
मन दुराराध्य ते वश आण्युं, ते आगमथी मति आणुं,
आनंदघन प्रभु माहरुं आणो, तो साचुं करी जाणुं हो, कुंथु. ९

(२)

(तर्ज : में करता आश दर्शन की)

कुंथु जिन मेरी भव भ्रमणा, मिटादोगे तो क्या होगा, चौरासी लाख योनि में,
प्रभु मैं नित्य रुलता हूं दयालुं दास को तेरे,
बचालोगे तो क्या होगा, कुंथु. १
घटा घन मोह की आई, छटा अंधेर की छाई,
प्रकाशी ज्ञान वायु से, हटा दोगे तो क्या होगा, कुंथु. २
अहो प्रभु नाम का तेरे, सहारा निशदिन चाहूं,
समर्पी प्रेम अंतर का, विकासोगे तो क्या होगा, कुंथु. ३
नही है काम सोने का, नही चांदी पसंद मुझ को,
चाहुं मैं आत्म की ज्योति, दिखा दोगे तो क्या होगा, कुंथु. ४

सच्ची में देव की सूरत, तुमारे में निहाली हैं,
लगा है प्रेम इस कारण, निभालोगे तो क्या होगा, कुंथु. ५
कमल जैसा तेरा मुखडा, देखा छाया पुरी मांही,
बना लब्धि भ्रमर इसमें, छुपा लोगे तो क्या होगा, कुंथु. ६

श्री अरनाथजी स्तवन

अरजिन दरिशन दीजियेजी, भविक कमल वन सुर,
मन तलसे मलवा घणुंजी, तुमे तो जई वस्या दूर,
सौभागी, तुमशुं मुज मन नेह, तुमशुं मुज मन नेहलो जी,
णिम बपैया मेह, सौ. १
आवागमन पथिक तणुंजी, नही शिवनगर निवेश,
कागल पण हाथे लखुंजी, कोण कहे संदेश, सौ. २
जो सेवक संभारशोजी, अंतरयामी रे आप
यश कहे तो, मुज मन तणोजी, टलशे सघलो संताप, सौ. ३

श्री मल्लिनाथजी के स्तवन

(१)

(तर्ज : द्वारापुरीनो नेम राजियो)

प्रभु मिल्ल जिणंद शांति आपजो, कापजो मारा भवोदधिना पाप रे,
दयालु देवा, प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, १
वीतराग देव ने वंदु सदा, बाल ब्रह्मचारी जग विख्यात रे,
दयालु देवा, प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, २
अचल अमल ने अकल तुं, कषाय मोह नथी लवलेश रे,
दयालु देवा, प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, ३
सर्प डस्यो छे मने क्रोधनो, रगे रगे व्याप्युं तेनुं विष रे,
दयालु देवा, प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, ४
मान पत्थर स्तंभ सरिखो, मने कीधो तेने जडवान रे,
दयालु देवा, प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, ५
माया डाकण वलगी मने, आप विना कोण छोडावण हार रे,
दयालु देवा, प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, ६
लोभ सागरमां हुं पड्यो, उभ गयो छुं भव दुःख पार रे,
दयालु देवा, प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, ७
आप शरण हवे आवियो, रक्षण करो मुज जग नाथ रे,
दयालु देवा, प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, ८
अरजी स्वीकारो आ दासनी, ज्ञानविमल लेजो बाल हाथ रे,
दयालु देवा, प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, ९

(२)

(तर्ज : नित्य समरुं साहिब)

पंचम सुलोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे,
करे विनंति गुणनी राशी, मल्लि जिन नाथजी व्रत लीजे रे,
भवि जीव ने शिवसुख, मल्लि जिन. १
तमे करुणारस भंडार रे, पाम्या छो भवजल पार रे,
सेवकनो करो उद्धार, मल्लि जिन. २
प्रभुदान संवत्सरी आपे रे, जगनां दारिद्र दुःख कापे रे,
भव्य पणे तस थापे, मल्लि जिन. ३
सुरपति सघला मली आवे रे, मणि रयण सोवन वरसावे रे,
प्रभु चरणे शीश नमावे, मल्लि जिन. ४
तीर्थोदक कुंभालावे रे, प्रभु ने सिंहासन ठावे रे,
सुरपति भक्ते नवरावे, मल्लि जिन. ५
वस्त्राभरणे शणगारे रे, फूलमाला हदय पर धारे रे,
दुःखडा इंद्राणी उवारे, मल्लि जिन. ६
मल्या सुरनर कोडा कोडी रे, प्रभु आगे रह्यां करजोडी रे,
करे शक्ति युक्ति मद मोडी, मल्लि जिन. ७
मृगशिर सुदिनी अजुवाली रे, एकादशी गुणनी आली रे,
वर्या संयम वधु लटकाली, मल्लि जिन. ८
दीक्षा कल्याणक एह रे, गातां दुःख न रहे रेह रे,
लहे रुपविजय जस नेह, मल्लि जिन. ९

(३)

सरस्वती स्वामीने विनवुं रे, सदगुरु लागुं पाय रे जिणंदराय,
ऊंचा देरा मल्लीनाथना रे. १
केवल पटेलना खेतमां रे, कुंवा खोदाव्यां बे चार रे, जिणदराय. २
देवताई वाजा वाजीयां रे, प्रगट थयां मल्लीनाथ रे, जिणंद. ३
वगर बलदे रथ जोडीया रे, आव्यां भोयणी गाम रे, जिणंद. ४
सुरज सामा प्रभुना बारणां रे, तेमां प्रभु गुण तेज रे, जिणंद. ५
शेत्रुजे बांध्यां प्रभुना पारणां रे, गिरनारे नाख्यां छे दोर रे, जिणंद. ६
माथे मुगट हेमनो रे, कंठे नवसेरो हार रे, जिणंद. ७
बाये बाजुबंध बेरखा रे, दशे आंगलीये वेढ़ रे, जिणंद. ८
दांत दाढ़म केरी कलीया रे, होठ परवालानो रंग, जिणंद. ९
आजु बाजु बे काउस्सगीया रे, वचमां मारा मल्लिनाथ रे, जिणंद. १०
डाले बेठा बे पंखीडा रे, भोयणी केटलीक दूर रे, जिणंद. ११
धर्मी ने मारग ढुंकडो रे, पापीनो पंथ दूर रे, जिणंद. १२
रजे भर्या मारा धोतीया रे, निर्मल थाय मारो देह रे, जिणंद. १३
हीरविजय गुरु हीरलो रे, लब्धिविजय गुण गाय रे, जिणंद. १४

श्री मुनिसुव्रतस्वामी स्तवन

(तर्ज : भक्ति हृदय मां धारजो रे)

मुनिसुव्रत मन मोह्युं मारुं, शरण हवे छे तुमारुं,
प्रात : समयमां हुं ज्यारे जागुं, स्मरण करुं छुं तुमारुं हो जिनजी,
तुज मुरती मन हरणी, भव सायर जलतरणी हो जिनजी, तुज. १
आप भरोसो आ जगमां छे, तारो तो घणुं सारुं,
जन्म जरा मरणे करी थाक्यो, आशरो लीधो में तारो जिनजी, तुज. २
चुं चुं चुं चुं चिडीया बोले, भजन करे छे तुमारुं,
मूर्ख मनुष्य प्रमादे पड्यो रहे, नाम जपे नही तारुं हो जिनजी, तुज. ३
भोर थतां बहुं शोर सुणुं हुं, कोई हसे कोई रुवे न्यारुं,
सुखीओ सुवे, दु:खीओ रुवे, अकल गतिए विचारुं हो जिनजी, तुज. ४
खेल खलकनो बधो नाटक नो, कुटुंब कबिलो हुं जाणुं,
ज्यां सुधी स्वार्थ, त्यां सुधी सर्वे, अंत समय सहु न्यारुं, हो जिनजी, तुज. ५
माया जाल तणी जोई जाली, जगत लागे छे खारुं,
उदयरत्न एम जाणी प्रभु तारुं, शरण ग्रह्युं छे में सारुं हो जिनजी, तुज. ६

श्री नेमिनाथजी के स्तवन

(१)

(तर्ज - मारा शामला शुं नाथ प्यारा)

आव्या उग्रसेन दरबार, नेम परणवा राजुल नार,
नवभवनी नारीने बुझववा, (२) १
जान तोरण पासे आवे, सखीयो मंगल गीतो गावे,
सजी सोल शणगार, राजुल उभी गोखमाय, शामलीया नेमने निहालवा. २
सुणी नेमजीनुं दिलडुं दुभाय छे, रथडो पाछो वाले छे श्याम रे,
देवा मांड्युं वरसीदान, त्यां तो रुवे राजुल नार, नवभवनी. ३
पति विरह सुणी ने धरणी ढ़ले, राजुल कोटी विलाप करे छे,
मुजने छोड़ी न जाओ नाथ, हुं तो आवुं तुमारी पास, शामलिया. ४
सहसावनमां जई संयम लीये छे, राजुल पण संसार तजे छे,
बुझवी स्नेही राजुलनार, बतलावो मुक्ति मार्ग, नवभवनी. ५
नेम राजुलनी जोड़ी शोभे छे, बन्ने मुक्तिनी मोज माणे छे,
पेला तारी राजुल नार , पछी पहेरे मुक्ति माल, शामलीया. ६
गुरु उदयत्न विनवे छे, भवोभवना दर्शन इच्छे छे,
जेम तारी राजुल नार, तेम तारी ल्यो आ बाल,
नवभवनी नारीने बुझववा ७

(२)

(ढाल-१ , तर्ज : दूर दूरथी अमे आवीया)

समुद्रविजय कुल चंदलो, शामलीयाजी,

शीवा देवी मात मल्हार, वर पातलीयाजी,
एक दिन रमवा निसर्या, शामलीयाजी,
आव्यां आयुद्यशाला मांहे, वर पातलीयाजी, १
सारंग धनुष चढावीयो, शा. तेणे डोल्या आकाशे इन्द्र, वर.
चक्र उपाडीने फेरव्यो, शा. गदा लीधी कर मांहे, वर.२
नेमे शंख बजावीयो, शा. तेणे डोल्या महीना मेह, वर.
शेषनाग तिहां चल चल्या, शां. खल बलिया सायर सर्व, वर. ३
गिरवर टुंक त्रुटी पडी, शा. थर हर कंपे लोक, वर.
कोईक वेरी उपनो, शा. एम करता कृष्ण विचार, वर.४
आव्यां तिहां उतावला, शा. जिहां छे नेम कुमार, वर.
रुपचंद रंगे मल्या, शा. तारो बल जोवा ने खंत, वर. ५

ढाल-२, (तर्ज : उपर प्रमाणे)

कृष्ण कर लंबावीयो, हसी बोलोजी, तमे वालो नेम कुमार, अंतर खोलोजी,
कमल नाल परे वालीयो, हसी. क्षण नवी लागी वार, अंतर. १
नेम कर लंबावीयो, हसी. कृष्णे नवी वाल्यो जाय, अंतर.
हाथे कृष्ण हींचोलीयो, हसी. तिहां हरी मन जको थाय, अंतर. २
नारी जो परणावीये, हसी. तो बल ओछेरुं थाय, अंतर,
एम विचारी कृष्णजी, हसी. निज अंतेऊर समझाय, अंतर. ३
विवाह नेम मनाववा, हसी. सज्जन थाओ सघली नार, अंतर
रुपचंद रंगे मल्या, हसी. तारु अतुली बल अरिहंत, अंतर. ४

ढाल-३, (तर्ज : उपर प्रमाणे)

राधाजी ने रुकमणी, मोरा गिरधारी,
सत्यभामा जबुंवती वार, मुकुट पर हुं वारी,
चंद्रावती शणगारीए, मोरा. गोपी मली बत्रीस हजार, मुकट. १
विवाह मानो नेमजी, देवर मोराजी,
मने करवाना बहु क्रोड, ए गुण तोराजी,
नारी विना नवि आंगणुं, देवर. जेम अलुणो धान, ए गुण. २
नारी जो घर मां वसे, देवर. तो पामे परोणो मान, ए गुण.
नारी विना नवि हली जासे, देवर. वली वाढा कहेशे लोक, ए गुण ३
छोकरवाद न कीजिये, देवर. तमे न करो ताना तान, ए गुण.
रुपचंद रंगे मल्या, देवर. हवे उत्तर आपे नेम, ए गुण. ४

ढाल-४, (तर्ज : उपर प्रमाणे)

नेम कहे तमे सांभलो, मोरी भाभीजी,
किस्यो काम विकार, मे गति पामीजी,

नारी मांहे जे पड्या, मोरी. रडीया गति चार. मे गति. १
रावण सरीखो रोलीयो, मोरी. जे ले गयो सीता नार, मे गति.
नारी विषनी कुंपली, मोरी. माया मोहनी वेल, में गति. २
छप्पन कोडी जादव मल्या, मोरी. इम कहे ते वारो वार, मे गति.
रुपचंद रंगे मल्या, मोरी. नेम नही परणे निरधार, मे गति. ३

ढाल-५, (तर्ज : उपर प्रमाणे)

अबला बोल न बोलीये, वर राजाजी,
तुमे परणो नेम कुमार, मकरो दीवाजाजी,
एकवीश तीर्थंकर थया, वर. ते तो सर्वे परण्या नार, मकरो. १
नारी खाण रतन तणी, वर. तेनुं मूल्याकने नवी थाय, मकरो.
नारी माहेथी नर निपन्या, वर. तुम सरीखा श्री भगवान, मकरो. २
नेम न बोले मुख थकी, वर. मांड्युं विवाहनुं मंडाण, मकरो.
उग्रसेन घर बेटडी, वर. ते नामे राजुल नार, मकरो. ३
लीधो लगन उतावलो, वर. आप्यां लीला श्रीफल हाथ, मकरो.
जमण लाडु लापसी, वर. वली सवेइयो कंसार, मकरो. ४
आछी जलेबी पातली, वर. वली मांहे घेवरनो भाग, मकरो,
खारी पुरीने दहीतरा, वर. वली खाजा ने मगदल, मकरो. ५
लाखण साही रेसमी, वर. मांहे मोतीचूरनो स्वाद, मकरो,
कुर रांध्यो कुमोदनो, वर. मांहे मसुरनी दाल, सबल दीवाजाजी, ६
खारेक खजुरने कोपरुं, वर. वली चारोली ने द्राख, सबल, ७
सज्जन कुटुंब संतोषीयो, वर. बहु कीधी पेरामणी चार, सबल,
जान लई जादव चढ्या, वर. वली पाखरीयो के कान, सबल.८
हाथी रथ शणगारीया, वर. वली केसरीयो असवार, सबल,
इन्द्र जोवाने आवीया, वर. इन्द्राणी गावे गीत, सबल.९
तोरण आव्यां नेमजी, वर. तेणे निरखे राजुल नार, सबल
रुपचंद रंगे मल्या, वर. ए जोवा सरखी जान, सबल १०

ढाल-६, (तर्ज : उपर प्रमाणे)

सखी कहे वर शामलो, ए दीसेजी,
ते निरखे राजुल नार, हइडुं हीशेजी, १
काला गयवर हाथीडा, ए दीसेजी,
वली कालो मेघ मल्हार, हइडु हीशेजी, २
काली अंजन आंखडी, ए दीसेजी,
तेने मूल्य केने नवी थाय, हइडुं हीशेजी, ३
काली कस्तूरी कही, ए दीसेजी,
वली कालो कृष्णा गरुकेश, हइडुं हीशेजी, ४

रुपचंद रंगे मल्या, ए दीसेजी,
सखी शामलीयो भरतार, हइडुं हीशेजी, ५

ढाल-७, (तर्ज : उपर प्रमाणे)

पशुआ पुकार सुणीकरी, शुद्ध. लीधीजी, विचारे श्री वीतराग, तेणे दया कीधीजी, १
जो परणुं तो पशु मरे, शुद्ध. मुकी अनुकंपा जाल, तेणे दया २
इम जाणी रथ वालीयो शुद्ध. फेरवता दिन दयाल, तेणे दया. ३
पशु बंधन सर्वे तोडीया, शुद्ध. ते सर्वे गया वन मांह ,तेणे दया. ४
रुपचंद रंगे मल्या, शुद्ध. प्रभु दीधा वरसीदान, तेणे दया. ५

ढाल-८, (तर्ज : उपर प्रमाणे)

राजिमती धरणी ढल्या, मोरा वालाजी, अवगुण विण दीनानाथ, हाथ न झाल्योजी,
आंगण आवी पाछो वल्या, मोरा. क्षत्रियकुलमां लगावी लाज, हाथ १
तमे पशु तणी करुणा करी, मोरा. तमने मानस नही मेर, हाथ.
आठ भव थया एकठा, मोरा. कीधा तुमसु रंग रोल, हाथ. २
नवमे भवे तमे नेमजी, मोरा. मुजने क्या मेली जाओ, हाथ.
मारी आशा अंबर जेवडी, मोरा. तमे केम उपाडी कंथ, हाथ. ३
में कुडां कलंक चढावीया, मोरा. नाख्यां अणदीठा आल, हाथ.
में पंखी घाल्यां पिंजरे, मोरा. वली जल मे नाखी जाल, हाथ. ४
में साधुने संतोपीया, मोरा. वली मरमना बोल्या बोल, हाथ.
में किडी दर उगाडीया, मोरा में मांय विछोड्य बाल, हाथ. ५
अलगण पाणी में भर्या, मोरा. में गुरुने दीधी गाल हाथ.
मे कठीन करम कीधा हशे, मोरा. ते आवी लागा पाप, हाथ. ६
इम करता राजुल आवीया, मोरा. श्री नेमीश्वरनी पास, हाथ.
रुपचंद रंगे मल्या, मोरा. राजुल लीयो संयम भार, हाथ ७

ढाल -९, (तर्ज : उपर प्रमाणे)

श्री नेमी राजिमती एकठा, साहेलडीया,
जइ चढ्या श्री गिरनार, जिनगुण वेलडीया,
पुठेथी राजुल रीजावीया, सा. संयमवती राजुल नार, जिनगुण. १
आज्ञा लेई राजुल एकली, सा. गिरनार उपर गुफा मांय, जिनगुण.
वाटे जाता वर्षा थई, सा. भीजाणा राजुलना चीर, जिनगुण. २
गुफामां जई सुकव्यां, सा. लागु ते काचु नीर, जिनगुण.
अति सुकोमल सोहामणो, सा. राणी राजिमतीनुं (रुप) शरीर, जिनगुण. ३
रहनेमी तपस्या करे, सा. देखी राजिमती निचोवे चीर, जिनगुण.
प्रगटथी ते बोलीयो, सा. भाभी म करो मन उदास, जिनगुण. ४
नेम गयो तो भलो थयो, सा. आपणे करसा भोग विलास, जिनगुण.
उत्तम कुलनो उपनो, सा. तुं बोल विचारी बोल, जिनगुण. ५

संयमरत्नने हारीयो, सा वली कीधी व्रतनी घात, जिनगुण.
रहनेमी तव बोलीया, सा. माता राजिमती उगार, जिनगुण. ६
नेमीश्वर कने मोकल्यां, सा. फरी लीधो संयम भार, जिनगुण.
पीयु पहेला मुगते गया, सा. राजिमती तेणी वार, जिनगुण. ७
नेम राजुल केवल लई, सा. पहोता मुक्ति मोजार, जिनगुण.
रुपचंद रंगे मल्या, सा. प्रभु उतारो भवपार, जिनगुण. ८

(३)

(तर्ज : मेंहदी रंग लाग्यो)

मेंहदी ते वावी मालवे, एनो रंग गयो गिरनार रे, मेंहदीनो रंग लाग्यो, १
नानो देवर मारो लाडलो, लावे मेंहदी ना पान रे, मेंहदी . २
वाटी घोटी ने भर्या वाटका, भाभी रंगो तमारा हाथ रे, मेंहदी. ३
हाथ रंगीने दीयर शुं करुं रे, जोनार गया गिरनार रे, मेंहदी. ४
रुपीयो मुकशुं दीयरना हाथमां, जोजो पियुजीना गांव रे, मेंहदी. ५
मारा अंतरना साहेबा ने एलु कहेजो, थोरे बेनड परणे घरे आवो रे, मेंहदी. ६
बेनड परणे तो भले परणे, तमे झझो आपजो भात रे, मेंहदी. ७
मारा अंतरना साहेबा रे एलु कहेजो, थोरे भाई परणे घरे आवो रे, मेंहदी. ८
भाई परणे तो भले परणे, तमे झाझी सणजो जान रे, मेंहदी. ९
मारा अंतर साहेबा ने एलु कहेजो, थोरे माडी मोदी रे घरे आवो रे, मेंहदी. १०
माडी मोदी तो भले मोदी, तमे भणजो स्मरण पाठ रे, मेंहदी. ११
मारा अंतरना साहेबा ने एलु कहेजो, थोरे बापा मोंदा ने घरे आवो रे, मेंहदी. १२
बापा मोदां तो भले मोदां, तमे आपजो सदाव्रत रे, मेंहदी. १३
मारा अंतरना साहेबा ने एलु कहेजो, थोरे राजुल पुकारे घरे आवो रे, मेंहदी. १४
चालो रे साथी चालो भाई बन्धु, अब मत करजो ढील रे, सहेसावन जइये. १५
मारा अंतरना दीवडा ने एलु कहेजो,
थोरे सखीयो रोवे घरे आवो रे, सहेसावन जइये. १६
श्री आत्म वल्लभ सूरि अर्ज पुकार,
संयमना दर्शन थाय रे, सहेसावन जइये. १७

(४)

(तर्ज : सारी सारी रात तेरी याद सतावे)

नेमजी सहेसावन अमने मलीने सिधावो, एक वार आवीने राजुल, मनडा मनावो रे,
व्हाला मारा नेमजी, नेमजी सहेसावन अमने मलीने सिधावो, १
हुं छुं अबला तोरा, चरणोनी दासी, दर्शन देखाडी शुं, जाओ छो नाशी,
दर्शन देखाडी शुं जाओ छो नाशी, व्हाला मोरा नेमजी, २
आव्यो शियालो देह, थर थर धूजे,
नेमजी चाल्या ने राजुल, रह्या रह्या झुरे, नेमजी. व्लाहा. ३

आव्यो उनालो नेम, केम जाओ छो भागी,
नदीने किनारे जइने, रथ पाछो वाली, नदीने. व्हाला. ४
आव्यो चोमासा नेम, पंखीए घाल्या छे माला,
नेमजी चाल्या ने, राजुल कोण रखवाला, नेमजी. व्हाला. ५
शेत्रुंजा उपर केवड क्याारा,
में नो, ता जाण्या नेम, आटला अटारा, में नो, ता व्हाला. ६
शेत्रुंजा उपर दूधना क्यारा,
में नो, ता जाण्या नेम, दुःखना दहाडा, में नो, ता व्हाला. ७
शेत्रुंजा उपर वेर्या छे मोती,
नेमजी चाल्या ने, राजुल मेल्या छे रोता, नेमजी. व्हाला. ८
शाने कारण आटलो मोह लगाड्यो,
दर्शन देखाडी, जुनो प्रेम जगाड्यो, दर्शन, व्हाला. ९
उदयरत्न कहे नेम निरागी, नेमजी चाल्या ने राजुल मुक्तिना वासी,
नेमजी चाल्या ने राजुल, मुक्तिना वासी रे, व्हाला मारा नेमजी. १०

(५)

(तर्ज : मारा प्रभुजी मुजने तारो रे)

व्हाला रे मारा, पेहला तो प्रीत हमसुं कीधी,
हसीने ताली दीधी रे छेल छबीला, व्हाला रे मारा, नेमजी ते तोरण आव्यां,
आ पशुडे शोर सुणाव्यां रे, छेल छबीला, १
व्हाला रे मारा, नेमजी ए शाला ने बोलावी,
पूछ्युं आ माडवे शोर शाना रे, छेल छबीला, २
व्हाला रे मारा, रात्रे राजुल बेन परणशे,
प्रभाते गोरव दइशुं रे, छेल छबीला, ३
व्हाला रे मारा, नेमजी ए रथ पाछो वालीयो,
आ वलता दीन दयाल रे, छेल छबीला, ४
व्हाला रे मारा राजुल रडता निकल्यां,
आ भरीया भीम तलाव रे, छेल छबीला, ५
व्हाला रे मारा, ससरानी टेव घणी भुंडी,
आ रीस राखसे उंडी रे, छेल छबीला. ६
व्हाला रे मारा, जेठनी लाज घणी धरती,
हुं परण्या पेला डरती रे, छेल छबीला, ७
व्हाला रे मारा, नणंद कंटकनो घोडो,
जेठानी जमनो जोडो रे, छेल छबीला, ८
व्हाला रे मारा ,दीयरीयो पडीयो छे केडे,
पाडोसण मेणा देशे रे, छेल छबीला, ९

व्हाला रे मारा, पीयरमां केम रहेवाशे,
ए दोहीला दिवस केम जासे रे, छेल छबीला, १०
व्हाला रे मारा, कंसनुं राज्य घणुं भुडुं,
आ कोई मेले कुडुं रे, छेल छबीला, ११
व्हाला रे मारा, पडोसण छे घणी भुंडी,
आ बलवा मेले पुडी रे, छेल छबीला, १२
व्हाला रे मारा, हीरविजय गुण गाया,
ए पुरण पदवी पाया रे, छेल छबीला, १३

(६)

(तर्ज : रंगताली रंगताली रंगताली रे रंगमां)

नेम प्रभु ए रथ पाछो वाली रे, कल्प पंथ थयो तत्काली रे,
त्राय त्राय ते पाडवार ताणी रे, नाथ मने मेलीने जाय गिरनारी रे, १
रोमे रोमे जानैया थोके रे, सुणी वातो भेला थई लोके रे,
राणी राजलु धरतीमां चोके रे, नाथ. २
मने अन्न उदक नवी भावे रे, रोता रोता रात दिवस जावे रे,
मने क्रोड विचार घणा आवे रे, नाथ. ३
मने भक्षण आभूषण कोने देवे रे, वली एकांते वात कोण कहेशे रे,
ओशीयाली अनेक लोक कहेवे रे, नाथ. ४
अर्धनिद्रामां स्वप्न देखाडी रे, सुति निद्रा ते सखीयो जगाडी रे,
सुख दीधा ते सर्वगाली रे, नाथ. ५
मने स्वप्नु दीधेलुं अपारे रे, मने प्रीतम ते दीन संगाथ रे,
वली अग्निमां रोम रोम व्यापे रे नाथ. ६
वीण वांके शुं मेलो व्हेली रे, रोती रोती राजुल एमे कहेती रे,
रथ आडी ते उभी रहेती रे, नाथ. ७
कुलवंती छे तमने घणी नारी रे, प्रीतम केम मेलो छो कुंवारी रे,
हवे अमे शुं थया अकारी रे, नाथ. ८
संजम लेवो हतोजी तमारे रे, गीतो भाभी पासे शीदने गवराव्यां रे,
आवा तोफान शीद ने मचाव्यां रे, नाथ.
साची एम राजुल नवि जाणी रे, करी केवल तत्क्षण नारी रे,
पीय पहेला ते शीवमां समाणी रे, नाथ. ९
प्रभुए चार संघ स्थापी रे, शिव पहोंच्यां ते कर्म खपावी रे,
गुरु रुपविजय जाउं वारी रे, नाथ. १०

(७)

(तर्ज - वेष जोई स्वामी आपणुं)

अगर चंदन गुरु ओरडा, फूलडे बिछावुं प्रभुनी शेय्या रे,

नवी गमे ओरडा ने ओसरी, नवि गमे केवलीयो भरतार रे,
लीधा रे अबोला नेम जन्मना, पाल्या रे अबोला नेम भव तणा, १
समुद्रविजय कुल चंदलो, शिवादेवी मात मल्हार रे,
तोरण आवी पाछा फर्या, सुणी सुणी पशुनो पुकार रे, लीधा. २
आठ भवनी प्रीतडी, नवमें भवे तोडी दीधी रे,
कुंवारी मेली मने आ भवे, प्रगट्या पुरवना पाप रे, लीधा. ३
नानपणे नथी पीयर सासरुं, मोटपणे नथी मोसाल,
कंत विना कुडा कलंक चडे, सुणो सुणो जादवराय रे, लीधा. ४
नथी व्हाला हाथों हाथ मेलव्या, नथी नाखी कंठे वरमाल रे,
नथी चड्या चौरीना चोगटे, नथी चाख्यो साकरीयो कंसार रे, लीधा. ५
नथी ताण्या ससराना घुघंट्य, नथी लाग्या सासुने पाय रे,
पियर न दीठी साकर सुखडी, ना वरे न दीधा शणगार रे, लीधा. ६
रत्नविजय गुरु ए कहे, होजो होजो मंगलमाल रे,
प्रभु पासे जइ संयम लीधो, पहोच्यां मुक्ति मोझार रे, लीधा. ७

(९)

सरस्वती स्वामी ने विनवुं रे, सदगुरु लागुं छुं पाय हो नेमजी,
भाभी दियरने भोलवे रे, परणो राजिमती नार हो नेमजी,
भाभी दियर ने भोलवे रे, १
उग्रसेन घरे छे बेटडी रे, तेनुं छे राजिमती नाम हो नेमजी, भाभी.
लग्न लीधा छे उतावला रे, साथे छे बलभद्र भाई हो नेमजी, भाभी. २
जमणमां लाडु लापसी रे, साकरीयो कंसार हो नेमजी, भाभी.
घारीपुरी ने घेबराजी, मोतीचूरनो स्वाद हो नेमजी, भाभी. ३
नेमजी ते शाला ने बोलाव्या रे, मांडवे आवडो सो शोर हो नेमजी, भाभी.
राते राजुल बेनी परणशे रे, प्रभाते गौरव देशु हो नेमजी, भाभी. ४
नेमजी तोरणथी पाछा वल्या रे, जई चढ्या गढ गिरनार हो नेमजी, भाभी.
नेमजी ए रथ पाछो वालीयो रे, जई चढ्या गुफा मांय हो नेमजी, भाभी. ५
राजुलनी सखी विनवे रे, काला छे नेम भरतार हो नेमजी, भाभी.
काला छे हेमरथ हाथीया रे काला छे माथाना केश हो नेमजी, भाभी. ६
काजलनी भरी डाबडी रे, मुकी छे गोखला मांय हो नेमजी, भाभी.
जाणे जाशे काले सासरेजी, आंजीश आंखनी अणीयार हो नेमजी, भाभी. ७
घरेणानो भर्यो छे डाबडोजी रे, मुक्यो छे पेटी मांय हो नेमजी, भाभी.
जाणे जाशे काले सासरेजी, सजीशुं सोल शणगार हो नेमजी, भाभी. ८
नानपणे नथी जोयु सासरुं रे, मोटपणे नथी जोयुं मोसाल हो नेमजी, भाभी.
नथी काढ्या ससराना घुंघटा रे, नथी लागी सासुने पाय हो नेमजी, भाभी. ९
नथी दीधी दीयरने सुखडी रे, नथी साभल्यां नंणदना मेणा हो नेमजी, भाभी.

हीरविजय गुरु हीरलोजी, वीरविजय गुण गाय हो नेमजी, भाभी. १०

(८)

जुनागढ री राजकुमारी , निरखे राजकुमार,
ए मारग जाता देखी, मांजी सुनजो राजकुमार,
थोडा दर्शन देता जाइजो सुनजो राजकुमार, १
पुठे फिरने देखीया, बोलो राजकुमार,
किकण हेलो मारीयो ने, कतरोक मारौ काम, थोडा,. २
कया राजा रा लाडला ने , कावण आपरो नाम,
कठिने आप रे पधारनो ने, किसो आपणो धाम, थोडा. ३
समुद्रविजयजी रो लाडलो ने, नेमजी मारो नाम,
जुनागढ मारे जावणो ने, शौरीपुरी मारो धाम, थोडा. ४
कया राजा री लाडली ने, कावण आपरो नाम,
कठिने आपरो सासरो ने, कठिने पियर रो धाम, थोडा. ५
उग्रसेन राजा री लाडली ने, राजुल मारो नाम,
सौरीपुरी मारो सासरो ने, जुनागढ पीयर रो धाम, थोडा. ६
हिवडे घुंघट काढीया, शर्माया नेम कुमार,
हाथ जोड ने अर्ज करुं, सुणजो मारा भरतार ,थोडा. ७
नवा गेहुआरी लापसी ने, हरीया मुंगो री दाल,
थाल भरी परोसीया ने, जीमो मारा भरतार, थोडा. ८
मोतीयासुं मेहल जडावुं, तोरण वधावुं आज,
हाथी चढीया वेगा आवजो ने, उभी जोऊला वाट, थोडा. ९
दयाना सागर नेमजी, छोडाव्यां पशुओ आज,
तोरणथी रथ फेरव्यो ने, राजुल मूर्च्छित थाय. १०
नारी नरकनी खाण छे, सुनजो राजुलनार,
में तो संयम आदरो, थोरो कोईक विचार, थोडा. ११
शिवादेवीना लाडला ने, सुनजो नेम कुमार,
में भी साथे चालुं हो, संसार तरवा नाव, थोडा. १२
हीरविजय गुरु हीरलो ने, लालविजय गुण गाय,
थारो सेवक शरणे आयो, भवजल पार उतार, थोडा. १३

(९)

(तर्ज : हे निल गगन के तले , तर्ज : ए आयो अलगा रो सुमटो रे)

हे सरस्वती स्वामी ने विनवुं, मोतीलाल तीनवरीयाजी,
हे सदगुरु लागुजी पाय, मारा ते वरीया ना वरीयाजी,
हे माधवपुर नो मांडवो, सौरीपुरी नो शीरताज, १
हे कोने ते लखी कंकोतरी रे, कोने ते रांध्यो कंसार रे,
उग्रसेने ते लखी कंकोतरी रे, रुकमणी ए रांध्यो कंसार रे, हे माधव. २

पश्चिमथी आव्या पानना बिडला रे, गिरनारथी आव्या नारियल रे,
राजुल बेठी गोखमां रे, जुवे ते जाननी वाट रे, हे माधव. ३
कइ दिशाथी जान आवशे रे, उडे छे अबील गुलाल रे,
राजुल ते सहीयरने विनवे रे, विवाहमां होशे विघ्न रे, हे माधव. ४
छप्पन कोडी जादव मल्या रे, सत्यभामा गावे छे गीत रे,
नेमजी ते तोरण आवीया रे, पशुडे मांड्यो पोकार रे, हे माधव. ५
नेमजी ते शाला ने तेडावीया रे, मांडवे आवडो शो शोर रे,
राते राजुल बेनी परणशे रे, प्रभाते गोरव देवाय रे, हे माधव. ६
जाजो रे पशुडां पाणी रे पीवा, नगरीमां करो रे कल्लोल रे,
धिक पड्युं मारे परणवुं रे, चाली पड्युं संसार रे, हे माधव. ७
नेमजीये रथ पाछो वालीयो रे, जई चढ्या गढ गिरनार रे,
रोता राजुल बेनी निसर्या रे, मनावे मांय ने बाप रे, हे माधव. ८
पाछा वलो राजुल बेनी पातलीया रे, एथी भले रो भरतार रे,
सखी साहेली मेणा मारशे रे, राजुल ने कालो भरतार रे, हे माधव. ९
काला ते भ्रमर हाथीया रे, कालो ते मेघ मल्हार रे,
काली ते कस्तूरी झगमगे रे, काली ते काजल मेश रे, हे माधव. १०
घरेणा भरेलो मारो डाबडो रे, मेल्यो छे पटारानी मांय रे,
जाणु ते जाशुं काले सासरे रे, सजीश सोल शणगार रे, हे माधव. ११
काज भरी मारी डाबडी रे, मेली छे गोखनी मांय रे,
जाण्युं ते जाशुं काले सासरे रे, आंजीश आंखनी अणीयार, हे माधव. १२
राजुल बेनी तमारो कपडो रे, शीवडाव्यो मंगलवार रे,
न पहेर्यो पीयर सासरे रे, न पहेर्यो मां ने मोसाल रे, हे माधव. १३
न काढ्या ससराना घुंघटा रे, न लागी सासुने पाय रे,
न काढ्या जेठना घुंघटा रे, न वांद्या जेठाणीना पाय रे, हे माधव. १४
न खवडावी दीयरने सुखडी रे, न ओल्यो नणंदीना केश रे,
न चढ्या चौरीना चोगटे रे, न जम्या कंसार रे, हे माधव. १५
हाथथी हाथ न मेलाव्यो रे, न पहेरी वरमाला रे,
पुरुषने वाली पाघडी रे, राजुलने वालो भरतार रे, हे माधव. १६
नेमजी ते कागल लखी मोकल्यो रे, अमे छीये गढ़ गिरनार रे,
संयम लेवुं होय तो आवजो रे, पाम्या छे केवलज्ञान रे, हे माधव. १७
राजुल बेनी निसर्या रे, संयम लेवा ने काज रे,
संयम लई केवल पामीया रे, साध्यो छे आत्म काज रे, हे माधव. १८
हीरविजय गुरु हीरलो रे, मोतीवाला जिनवरीयारीजी,
लब्धिविजय गुणज गावे, मारा ते वरीयाना वरीयाजी, हे माधव. १९

(तर्ज : बोल बोल आदेश्वर व्हाला.)

आज रंग वरसे मारा, नेम कुंवर विण राजुल तरसे रे, आज रंग. १
तीस लाख घोडला रे उपर, जीण विनायत करसो रे,
कांई वीश लाख, हाथीयो रे उपर, होदो धरसो रे, आज रंग. २
सेस गोपीया युं फरमावे, अरज नेमजीसुं करसो, रे,
कांई, हुंकारो भर दीयो नेमजी, व्याव करसो रे, आज रंग. ३
घर घर मंगल गावे गोपीया, इन्द्र ज्युं ज्युं गाजे रे,
कांई अजब रंगीला जानीया, केसरीया करसे रे, आज रंग.४
द्वारका रा नाथ नेमजी, जुनागढ़ पर जासी रे,
कांई समुद्रविजयजी रा लाडला, तोरणीये आसी रे, आज रंग. ५
छप्पन क्रोड जादव मिल आया, देख देख मन भटके रे,
कांई तोरण आवी पाछा फरीया, मेरे मन में खटके रे, आज रंग. ६
सूरत सोहनी मूरत मोहनी, मुख पूनम रो चन्दो रे,
दीपविजयजी री विनंती, भवपार उतारो रे, आज रंग. ७

(११)

मारा माथा ना मोड रे, मनना कोड रे, नेम कहीये तमोने कटेलुं,
नथी मारे कोई खोड रे, कहुं छुं कर जोड रे,नेम समजो तो सारु एटलुं. १
हुं तो जाणुं काले जइश सासरे, शिवादेवीने सासुने आशरे,
मारा मननो उमंग, थयो भागी ने भंग, नेम कहीये तमोने केटलुं, २
नथी एवो बनाव कांई सांभल्यो, नेम तोरण आवी पाछा फर्या,
जदुकुलमां आ रीत, केम लागे उचित, नेम. ३
लोक लाखो ओलंभा आपशे, मने तमने गाणामां गावशे,
नही दुनिया जीताय, दोष कोने देवाय, नेम. ४
मारु धार्युं मल्युं सहुं धूलमां, नथी आवुं बन्युं जदु कुलमां,
नाथ आव्यां हरखाय, जतां सौने शरमाय, नेम. ५
नोतुं शेष कर्म भोगावली, जान सजी लाव्यां केम आवडी,
एवो मारो शुं वांक, नेम केहशो ने कांक, नेम. ६
मारी आठ आठ भवनी प्रीतडी, नव भवमें भूल्या कंई रीतडी,
शिवादेवीना बाल, हुं तो छोडुंना साथ, नेम. ७
नेम राजुल दीक्षा आदरे, नेम पहेला राजुल शिव संचरे,
एवो प्रीतीनो रंग, चन्द्र चित्त अभंग, नेम. ८

(१२)

(तर्ज : पेले डुंगरीये मे तो आदिनाथ वोंदो)

कणो रे कारण नेमजी, महेल चणायो,
काणो रे कारण राखी बारी, रसीला नेमजी दर्शन देजो १
बैठक रे कारण राजुल महेल चणायो,

राजुल जोवाने राखी बारी, रसीला २
कणो रे कारण नेमजी बाग बगीचा
काणो रे कारण लाव्यां प्याला रसीला. ३
फूलों के कारण राजुल बाग बगीचा,
केशर रे कारण लाव्यां प्याला, रसीला. ४
कणो रे कारण नेमजी तोरण बंधाव्यां,
कणो रे कारण राखी डोरी, रसीला. ५
परणवा रे कारण राजुल तोरण बंधाव्या,
मोक्ष रे कारण राखी डोरी, रसीला. ६
कणो रे कारण नेमजी रथ पाछो वालीयो,
कणो रे कारण राजुल त्यागी, रसीला. ७
पशुओ रे कारण राजुल रथ पाछो वालीयो,
संयम रे कारण राजुल त्यागी, रसीला. ८
हीरविजय गुरु हीरलो कहेवाय, लालविजय गुण गाय,
रसीला नेमजी दर्शन देजो, ९

(१३) श्री नेमिनाथजी बारमासा

कारतक महिना कोने कहिये, देखाडो तो गिरनार जइये,
सासरियाना मेणा सहिये, वेला घरे आवो ने मारा वाला, १
मागसर महिने मारे तेने मलवुं, वाला वचन लख्युं ए हलवुं
हवे शुं कहिये नाथ तुमने, वेला घरे आवो ने मारा वाला, २
पोष महिने परवश कीधी काया, हजु नाव्यां शिवादेवीना जाया,
तमे शाने लगाडी माया, वेला घरे आवो ने मारा वाला, ३
मा महिने मंदिर बेसी रोती, मारी सखीयोना सुख सर्व जोती,
आंसु ढाली रस रस रोती, वेला घरे आवो ने मारा वाला, ४
फागन महिने फगफग होली, सैयर भरो रे गुण तणी जोली,
नाथ तुम बिना कुण खेले होली, वेला घरे आवो ने मारा वाला, ५
चैत्र महिने चिंता घणी रेहती, शुं कहिये नाथ हो तमने,
हवे आवी मलो रे, अमने, वेला घरे आवो ने मारा वाला, ६
वैशाख महिने वाटलडी जोती, मारी सखीयो कहे वात खोटी,
पालवडे, आंसु लुती, वेला घरे आवो ने मारा वाला, ७
जेठ महिने जीवडो घबरायो, नाथ तुम वियोगनी वाते,
हवे प्राण हमारा जासे, वेला घरे आवो ने मारा वाला, ८
अषाढ़ महिने जंबुडी उगी, जंबुडीना छीलडा उग्या,
नाथ हसवुं रमवुं भूल्या, वेला घरे आवो ने मारा वाला, ९
श्रावण महिने सरोवरीना वरसे, मारा बेन बनेवी जोवा तरशे,
एवुं हृदय अमारुं फरके, वेला घरे आवो ने मारा वाला, १०

भादरवो भरपुर गाजे, देश विदेश घणा जई आवे,
मारो संदेशो कोई लावे, वेला घरे आवो ने मारा वाला, ११
आसो महिने दिवाली आवे, सहु घरे हरो नरनारी,
हुं तो दीक्षा लेवा ने उजमाली, वेला घरे आवो ने मारा वाला, १२
हीर विजय गुरु हिरलो, लब्धि विजय गुण गावे,
प्रभु आ भवपार उतारो, वेला घरे आवो ने मारा वाला, १३

(१४)

सखी तोरण आवी कंत, पाछा वलीया रे,
मुज फरके दाहिणुं अंग, तिणे अटकलीआ रे, सखी. १
कुण जोशी ए जोयो जोष, चुगल कुण मीलीआ रे,
कुण अवगुण दीठा आज, जिणथी टलीया रे, सखी. २
जाओ जाओ रे सहीओ, दूर श्याने छेडो रे,
पातलीओ श्यामवान, वालम तेडो रे, सखी. ३
जादव कुल तिलक समान, एम न कीजे रे,
एक हास्य ने बीजी हाण, केम खमीजे रे, सखी. ४
इहां वाये झाझ समीर, वीजली झबके रे,
बपैया पियुं पोकार, हइडुं चमके रे, सखी. ५
डर पावे दादुर शोर, नदीओ माती रे,
घनगर्जारव घोर, फाटे छाती रे, सखी. ६
हरितांशकु पेर्या तांहि, नवरस रंगे रे,
बावलीयो नवसरों हार, प्रीतम संगे रे, सखी. ७
में पूर्व कीधा पाप, तापे दाझी रे,
पडे आसुंधार विसाद, वेलडी वाधी रे, सखी. ८
मने चडावी मेरु शिष, पाडी हेठी रे,
केम सहेवाये महाराज, विरह अंगीठी रे, सखी. ९
मने परणी प्राण आधार, संयम लेजो रे,
हुं पतिव्रता छुं स्वामी, साथे वहेजो रे, सखी. १०
एम आठ भवोनी प्रीत, पीउडा वलशे रे,
मुज मनना मनोरथ नाथ, पुरण फलशे रे, सखी. ११
पछी चार महाव्रत सार, चुंदडी दीधी रे,
रंगीली राजुल नार, प्रेमे लीधी रे, सखी. १२
मैत्र्यादिक भावना चार, चौरी बांधी रे,
दही ध्यानानल सलगाय, कर्म उपाधी रे, सखी. १३
धयो रत्नत्रयी कंसार, एकी भावे रे,
आरोगे वरने नार, शुद्ध स्वभावे रे, सखी. १४
तजी चंचलता त्रिकयोग, दंपती दोय मलीया रे,

श्री क्षमाविजय जिन नेम, अनुभव कलीया रे, सखी. १५

(१५)

(तर्ज : वाजा वागे पारस दरबार)

स्वस्तिक श्री रैवतगिरिवरा, वाला नेमजी जीवनप्राण,
लेख लखुं होशे करी, राणी राजुल चतुर सुजाण, वेला घरे आवजो. १
मारा जीवन यादवराय, वार न लगाडशो, में तो लखीया लेख होशे करी,
मनमां लावजो वली वली जोय, वेदक जाण तस संभलावजो, वेला. २
क्षेम कुशल वर्ते छे इहां, वाला जपतां प्रभुजीनुं नाम,
साहिब तुम सुखशाता तणी, मुज लखजो लेख ज ताम, वेला. ३
साव सुवर्ण कागल करुं, वली अक्षर रयण रचंत,
मांहे मणि माणिक मोती जडुं, हुं तो पियु गुण प्रेमे लखंत, वेला. ४
जे तोरणथी रे पाछा वलीया, तेने कई रीते समजावुं,
पण मन न रहे मारुं, ए तो चाले पुराणी प्रीत, वेला. ५
वाला दिवस जेम तेम निर्गमुं, मने रयणी वर्ष समान,
वाला जो होय मन मलवा तणुं, तो वेली करजो सार,वेला. ६
भरयौवने पियु घरे नही, तेनो एले गयो अवतार,
मने बोले बोले दुख दाखदे, वाला उंडा मर्म विमांस, वेला. ७
वाला सहुको रमे निज मन्दिरे, ए तो कामिनी कंथ समान,
मारी थर थर ध्रुजे देहडी, वाला सुनी देखीने सहेज, वेला. ८
वेला वीती हशे ते जाणजो, वाला विरहनी वेदना पुर,
तुमे चतुर छो चित्तमां समजजो, वाला न लहे मूरख भुंड, वेला. ९
वाला रंग पतंग दिसे भलुं, मारा नखमां तावड रीठ्ठु, वाला,
फाटे पण फीटे नही, हुं तो वारी चोल मजीठ्ठ, वेला. १०
वाला उत्तम सज्जन प्रीतडी, जेम जलमां तेल निरधार,
वाला छांयडी त्रीजा पहोरनी, ए तो वड जेवडी विस्तार, वेला. ११
स्वामी दूर थकी गुण सांभलुं, मारुं मन मलवा थाय,
वालेश्वर मुज विनंती, एतो ज्यां त्यां कही न जाय, वेला. १२
वाला एक मुकी बीजी जो मले, तेना मनमां नही तस स्नेह,
वाला लीधा मुकी जे करे, ए तो आखर आपसे छेह वेला. १३
मारा मनमां हतुं ते मली गयुं, एहनी जगमां रहे सुवास,
मारा मननुं दुख मांडी लख्युं, ए तो आंसुडे गली गली जाय, वेला. १४
वाला जे जे उत्तम कुलनी प्रीतडी, तेहनी उत्तम उपमा तास,
वाला खावा-पीवाने पहेरवा, वली मन गमता शणगार, वेला. १५
भरयौवने पियु घरे नही, वाला वसवुं दुर्जन वास,
वाला बालक ने विद्या भणी, भरयौवने भावे भोग, वेला. १६
वाला वृद्धपणे तपस्या करे, ए तो अविचल पाले योग,

वाला कागल में तो होसे लखीयो, ए तो साचा मित्र कहाय, वेला. १७
नेम राजुल कागल भले लखीयो, एनी पूरी छे मन केरी खंत,
श्री विनयविजय उवज्झायणो, शिष्य रुपविजय गुण गाय, वेला. १८

(१६) राजुल बार मासा

राजुल ऊभी विनवे रे प्रिया, सुनजो नेम कुमार,
आप पोते संजम लीयो रे वारी, जई चढ्या गढ गिरनार
अब घरे आय जादव नेमजी रे १
दोष कोई दाख्यो नही रे पिया, लीधो संजम भार,
विना अवगुण किम परिहरो रे वारी, चुक बतावो भरतार, अब. २
आशा विलुणी हुं रही रे पिया, होंश रही मनमाय
दिन जावे पिया वरस ज्युं रे वारी, छ गुणी रात गिणाय, अब. ३
भुखो तो भोजन चाहतो रे पिया, तिरसो रे चाहे नीर,
में तो तुमकुं चाहती रे पिया, सांभल नेमकुमार, अब. ४
मेला वरसे रे मेहुला रे पिया, आभा चमके वीज,
तुम रिसाइ ने क्युं गया रे वारी, आई रे श्रावण की वीज, अब. ५
श्रावण आयो रे साहिबा रे पीया, गाज रह्यो घन घोर,
बुंद लगे पिया ताहरी रे वारी, जादव लीयो चित चोर, अब. ६
नेमिजिणंद पाछा वल्यां रे पिया, आयो भाद्रव मास,
दादुर पपैया बोलीया रे वारी, प्रीतम नही मुज पास अब. ७
नैना निद आवे नहि रे पिया, आयो मास आसोज,
नेमि मुज मूकी गया रे वारी, अब किम मानुं मोज, अब. ८
कार्तिक कंथ न आवीया रे पिया, उभी जोऊँ हुं वाट,
महेल पधारो साहिबा रे वारी, सुनि हिंडोला खाट, अब. ९
मगसर वेरी आवियो रे पिया, देवण लाग्यो दुख,
ऊंधे पडखे पोढवो रे वारी, सब गया मुज रुष, अब. १०
नेमि जिणंद पाछा वल्या रे आयो रे पापी पोष,
तुम गिरिवर वसी रह्या रे वारी, अब छोडो पिया रोष, अब. ११
माह महिनो आवीयो रे पिया, वाये शीतल वाय,
शियाला केरी रेण में रे वारी, वालम आवे दाय, अब. १२
ठंड पडे कंपती रे पिया, नही नणदलनो रे वीर,
रात काढू रोवती रे पिया, आंखो भीज्यो रे चीर, अब. १३
फागन महिनो आवीयो रे पिया, सबको मन हरखाय,
में फागन किम रमुं रे वारी, वालम गया वनवास, अब. १४
चैत्र मास चमकीयो रे पिया, फूली सब वनराय,
फूली हे त्रीया कामणी रे वारी, कंथ पिया सुखदाय, अब. १५
वैशागे वेलु तपे रे पिया, दाझे तन सुकुमाल,

कामणगारा कंथजी रे वारी, वेगे आय संभाल, अब. १६
जेठ तपे रुत आकरी रे पिया, पूछी सखी नही वात,
गिरि गुफामां विराजीया रे वारी, जादव नेमिनाथ. १७
अषाढ़ आछितरे रे पिया, छोड्यो सब संसार,
तिनसंया परिवार शुं रे वारी, पहोत्यां गढ़ गिरनार, अब. १८
रागभरी राजिमती रे पिया, लीधो संजम भार,
चोपन दिन पहेली गया रे वारी, पहोत्यां मुक्ति मोजार, १९
सदगुरु साचा भेटिया रे पिया, अमरचंद्र गुरुराय,
रुपचंद्र पाय नमुं रे वारी, राखो मुज चरणनी पास, अब. २०
चंद्र एक नव जाणिये रे पिया, भला अग्यार गुंथार,
श्रावण मास तिथि अष्टमी रे वारी, चंद्रवार रुषकार, अब. २१
मुरधन दशमांहे अछे रे पिया, नाम ऋषि चंदराय,
तिहां श्रावक सब वसे रे वारी, समजु करे धर्मना काम, अब. २२

(१७) राजुल चुंदडी-१

वावा आबु गढोरी रुखडी, वावा तांतो गये अजमेर, रंगावो राजुल चुंदडी,
इण चुंदडी रो सवा लाख मोल, रंगावो राजुल चुंदडी, १
वावा पाली रे फूलीजे रुखडी, वावा चुंटी चुंटी लावो रे कपास, रंगावो. २
वावा ताणो तणीजे मेडते, वावा नलीया भरीजे अजमेर, रंगावो. ३
वावा चालो चालो वणवीडारी हाट, वणावो राजुल चुंदडी, ४
ओ तो वणवीडारो बेटो निहालीयो, ओतो वणवीडारो लटको जुहार, वणावो. ५
वावा वणे वणावे घरे आवीया, वावा चालो चालो रंगरेजारी हाट, रंगावो. ६
आतो रंगरेजा रो बेटो घरे आवीया, ओतो रंगरेजारो लटको जुहार, रंगावो. ७
वावा रंग रंगावे घरे आवीया, वावा चालो चालो दरजीडा री हाट,
खीलावो राजुल चंदडी, ८
ओतो दरजीडा रो बेटो निहालीयो, ओतो दरजीडा रो लटको जुहार,
खीलावो राजलु चुंदडी, ९
वावा खीले खीलावे घरे आवीया, वावा चालो चालो सोनीडारी हाट,
जडावो राजुल चुंदडी, १०
ओतो सोनीडारो बेटो निहालीयो, ओतो सोनीडा रो लटको जुहार,
जडावो राजुल चुंदडी, ११
इन चुंदडी रो सवा लाख मोल, ओढो ने राजुल चुंदडी, १२
वावा ओढे पेरे ने राजुल आवीया, वावा नेमजी ने नीरखण जाय,
ओढोने राजुल चुंदडी, १३
आतो कीणजी री केवीजे बेटडी, आतो कीणजी री केवीजे घरनार,
ओढो ने राजुल चुंदडी, १४

आतो उग्रसेन घर बेटडी, आतो नेमकुंवर घरनार, ओढो. १५
ओतो समुद्र विजयजी रो लाडलो, वावा जादव कुल अवतार, ओढो. १६
वावा शीवादेवी कुखे जन्मीया, वावा राजलु रा भरतार, ओढो. १७
वावा जान चढे जुनागढ़ सु, वावा जानीया छप्पन क्रोड, ओढो. १८
दावा हाथी घोडा अति गणा, वावा पालो रो सेन पार, ओढो. १९
वावा नेमजी तोरण आवीया, वावा पशुडे मांड्यो पुकार, ओढो. २०
वावा तोरणथी रथ फेरीया, वावा जाय चढीया गढ़गिरनार, ओढो. २१
वावा वैरागे मन वालीयो, वावा लीधो संयम भार, ओढो. २२
वावा राजुल उभी अर्ज करे, वावा सुनजो नेम कुमार, ओढो. २३
स्वामी आठ भवो री प्रीतडी, स्वामी इण भव तोडी न जाय, ओढो. २४
स्वामी भवोभव आपने विनवुं, वावा हाथ गरो रे दीनानाथ, ओढो. २५
नेमजी आप तरीया ने केइ तारीया, वावा तारी राजुल नार, ओढो. २६
वावा हीरविजयजी री जोडली, वावा भवोभव पार उतार, ओढो.
इन चुंदडी रो सवा लाख मोल, ओढो ने राजुल चुंदडी. २७

(१८) राजुल चुंदडी-२

सरस्वती स्वामीने वीनवुं हो साहिबा, सदगुरु लागु छुं पाय रे,
केशरीया नेम आवो ने मंदिर माहरे १
चंपक वरणी चुंदडी हो साहिबा,
जइ रही गढ़ गिरनार रे, केशरिया, २
कोणे दीठी ने कोणे मोकली हो साहिबा, कोना खर्चेला द्रव्य रे,
केशरीया नेम आवो ने मंदिर माहरे ३
कृष्ण दीठी ने बलभद्र मोलवी हो साहिबा,
नेमजी ने खर्चेला द्रव्य रे, केशरीया ४
कोण घोडे ने कोण हाथी हो साहिबा,
कोण बेसण पालखडी, केशरीया. ५
कृष्ण घोडे ने बलभद्र हाथी हो साहिबा,
नेमजी ने बेसण पालखडी, केशरीया. ६
केई दिशाथी जान आवशे हो साहिबा,
केई दिशे उडशे अबील गुलाल रे, केशरीया. ७
उगमणी दिशाथी जान आवशे हो साहिबा,
उडशे अबील गुलाल रे, केशरीया. ८
ऊंचे चंढु ने नीचे उतरुं हो साहिबा,
जोवुं छुं जाननी वाट रे, केशरीया. ९
नेमजी ते मांडवे आवीया हो साहिबा,
मांडवे आवडो शो शोर रे, केशरीया. १०
नेमजी ते तोरणे आवीया हो साहिबा,

पशुडे मांड्यो पोकार रे, केशरीया ११
नेमजी ते साला ने पूछीयुं हो साहिबा,
मांडवे आवडो शो शोर, केशरीया. १२
राते राजुल बेनी परणशे हो साहिबा,
प्रभाते पशुओ नो गोरव रे,केशरीया. १३
केडे थी कटारो काढीयो हो साहिबा,
तोड्या पशुओना दोर रे, केशरीया. १४
भठ पड्युं आ परणवुं हो साहिबा,
शल्य वडो संसार रे, केशरीया. १५
नेमजी ते रथ पाछो वालीयो हो साहिबा,
जइ चढ्या गढ गिरनार रे, केशरिया. १६
राते राजुल बेनी चालीया हो साहिबा,
रोवे छे मांय ने बाप रे, केशरीया. १७
बांधव ते बेनी ने विनवे हो साहिबा,
नेमजी भले रो भरतार रे, केशरीया. १८
सरखी साहेलीयो मेणा बोलशे हो साहिबा,
राजुल भले रो भरतार रे, केशरीया. १९
बांधव ते बेनी ने विनवे हो साहिबा,
नेमजी काला भरतार रे, केशरीया. २०
काला ते कामण हाथी हो साहिबा,
काला अटवीना मेघ रे, केशरीया. २१
काली कस्तूरी मांहे घणी हो साहिबा,
काला माथा केरा केश रे, केशरीया. २२
हुं छुं करुं राजुल पातला हो साहिबा,
घडीना लख्यां ने लेख रे, केशरीया. २३
राजुल तमारो कचुंवो हो साहिबा,
शीवडाव्यो शनिवार रे, केशरीया. २४
नेमजी तमारो मोलीयो हो साहिबा,
लीधा छे आदित्य वार रे, केशरीया. २५
कागल खुट्या अकालमां हो साहिबा,
स्याही खुटी मेघ रे, केशरीया. २६
विधाता वेरण हुइ हो साहिबा,
सिद्ध ने लख्या न लेख रे, केशरीया. २७
हीरवीजय गुरु हीरलो हो साहिबा, वीर विजय गुण गाय रे,
केशरीया नेम, आवो ने मंदिर माहरे, २८

(१९) श्री नेमिनाथजी शलोको

सरस्वती माता हुं तुम पाय लागुं, देव गुरु तणी आज्ञा मांगु,
जिह्वा अग्रे तुं बेसजे आई, वाणी तणी तुं करजे सवाई. १
आघो पाछो कोई अक्षर थावे, माफ करजो दोष कांई नावे,
तगण सगण ने जगणना ठाठ, ते आदे देई गण छे आठ. २
कीया सारा ने कीया निषेध, तेनो न जाणुं उंडारथ भेद,
कविजन आगल मारी शी मति, दोष टालजो माता सरस्वती. ३
नेमजी केरो कहीशुं श्लोको, एक चित्तथी सांभलजो लोको,
राणी शिवादेवी समुद्र राजा, तस कुल आव्या करवा दीवाजा. ४
गर्भ कार्तिक वदि बारसे रह्या, नव मासने आठ दिन थया,
प्रभुजी जन्म्यानी तारीख जाणुं, श्रावण सुदि पांचम चित्रा वखाणुं. ६
अनुक्रमे प्रभुजी मोटा रे थाय, क्रीडा करवाने नेमजी जाय,
सरखे सरखा छे संगाते छोरा, लटके बहु मूलां कलंगी तोरा. ७
रमता रमता जाय छे तिहां, दीठी आयधशाला छे जिहां,
नेम पूछे छे सांभलो भ्रात, आते शुं छे रे कहो तमे वात. ८
त्यारे सरखा सहु बोल्यां त्यां वाण, सांभलो नेमजी चतुर सुजाण,
तमारो भाई कृष्णजी कहीए , तेने बांधवा आयुध जोइए, ९
शंख चक्र ने गदाए नाम, बीजो बांधव घाले नही हाम,
एहवो बीजो कोई बलीयो जो थाय, आवा आयुध तेने बंधाय.१०
नेम कहे छे घालुं हुं हाम, एमां भारे शुं मोटुं छे काम,
एवुं कहीने शंख ज लीधो, पोते वगाडी नाद ज कीधो. ११
ते टाणे थयो मोटो डमडोल, सायरना नीर चढ़ीया कल्लोल,
पर्वतनी टुंको पडवाने लागी, हाथी घोडा तो जाय छे भागी. १२
झबकी नारीयो नव लागी वार, तुट्यो नवसेरो मोतीनो हार,
धरा धुजीने मेघ गडगड़ीयो, मोटी इमारतो तूटीने पडीया. १३
सहुना कालजा फरवाने लाग्या, स्त्री पुरुष तो जाय छे भाग्या,
कृष्ण बलभद्र करे छे वात, भाई शो थयो आ ते उत्पात. १४
शंखनाद तो बीजे नव थाय, एहवो बलीयो ते कोण कहेवाय,
काढो खबर आ शुं थयुं, भांग्युं नगर के कोई उगरीयुं. १५
ते टाणे कृष्ण पाम्या वधाई, ए तो तमारो नेमजी भाई,
कृष्ण पूछे छे नेमने वात, भाई शो कीधो आ ते उत्पात्त. १६
नेमजी कहे सांभलो हरि, में तो अमस्ती रमत करी,
अतुली बन दीठुं नानुडे वेशे, कृष्णजी जाणे ए राज्यने लेशे. १७
त्यारे विचार्युं देव मोरारी, एने परणावुं सुन्दर नारी,
त्यारे बल एनुं ओछु जो थाय , तो तो आपणे अहिं रहेवाय, १८
एवा विचार मनमां आणी, तेड्या लक्ष्मीजी आदे पटराणी,
जलक्रीडा करवा तमो सहु जाओ, नेमनो तमे विवाह मनावो. १९

चाली पटराणी सखे साजे,चालो देवरीया नावाने काजे,
जलक्रीडा करता बोल्या रुकमणी, देवरीया परणो छबीली राणी, २०
वांढा नव रहीये देवर नगीना, लावो देराणी रंगना भीना,
नारी बिना तो दु:ख छे घाटु, कोण राखशे बार उघाडुं. २१
परण्या विना तो केमज चाले, करी लटको घरमां कोण माले,
चूले फूंकशो पाणीने गलशो, वेहला मोडा तो भोजन करशो. २२
बारणे जाशो अटकावी तालु, आवी असुरा करशो वालु,
दिवाबत्तीने कोण जे करशे, लींप्या विना तो उकेडा वलशे. २३
वासण उपर तो नही आवे तेज, कोण पाथरशे तमारी सेज,
प्रभाते लुखो खाखरो खाशो, देवता लेवा सांजरे जाशो. २४
मननी वातो तो कोने कहेवाशे, ते दिन नारीनो ओरतो थाशे,
परोणा आवीने पाछा जाशे, देश विदेशे वातो बहु थाशे. २५
म्होटाना छोरुं नानेथी वरीया, म्हारुं कह्युं तो मानो देवरीया,
त्यारे सत्यभामा बोल्या त्यां वाण, सांभलो नेमजी चतुर सुजाण. २६
भाभीनो भरोसो नाशीने जाशे. परण्या विना कोण पोतानी थाशे,
पहेरी ओढीने आंगणे फरशे, झाझां वाना तो तमने करशे. २७
ऊंचा मन भाभी केरा केम सहेशो, सुख दुखनी वातो कोण आगल कहेशो,
माटे परणोने पातलीया राणी, हुं तो नही आपुं न्हावाने पाणी. २८
वाढां देवरने विश्वासे रहिये, सगा वहालामां हलका ज थईए,
परण्या विना तो सुख केम थाशे, सगाने घरे गावा कोण जाशे. २९
गणेश वधावा कोने मोकलशो, तमे जाशो तो शी रीते खलशो,
देराणी केरो पाड़ जाणीशुं, छोरु थाशे तो विवाह मांडीशु. ३०
माटे देवरीया देराणी लावो, अम उपर नथी तमारो दावो,
त्यारे राधिका आघेरा आवी, बोल्या वचन तो मोढु मलकावी. ३१
शी शी वातो करो छो सखी, नारी परणवी रमत नथी,
कायर पुरुषनुं नथी ए काम, वावरवां जोइए झाझेरां दाम. ३२
झांझर नुपुर ने झीणी जवमाला, अणघट वीछियां घाटे रुपाला,
पगपांने झाझी घुघरीओ जोइए, म्होंटे सांकले घुघरा जोइए. ३३
सोना चुडंले गुजरीना घाट, छल्ला अंगुठी अरिसा ठाठ,
घुंघरी पोंची ने वाक सोनेरी, चन्दन चुडीनी शोभा भलेरी. ३४
कल्लां सांकला उपर सिंहमोरा, मरकत बहुमूलां नंग भलेरां,
तुलशी पाटिया जडाव जोइए, काली कंठीथी मनडुं मोहिए. ३५
कांटली सोहिये, घुघरीयाली, मनडुं लोभाये झुमणुं भाली,
नवसेरो हार मोतीनी माला, काने टंटोडा सोनेरी गाला. ३६
मचकणीयां जोइए मूल्य झाझानां, झीणां मोती पण पाणी ताजाना,
नीलवट टीलडी शोभे बहु भारी, उपर दामणी मूलनी भारी,

चीर चुंदडी घर्चोलां साडी, पीली पटोली मांगशे दहाडी. ३७
बांट चुंदडीओ, कसबी सोहिए, दशहरा दिवाली पहेरवां जोईए,
मोघां मूलनां कमरवां कहेवाय, एवडुं नेमथी पूरुं केम थाय. ३८
माटे परण्यानी पाडे छे नाय, नारीनुं पूरुं शी रीते थाय,
त्यारे लक्ष्मीजी बोल्यां पटराणी, दीयरना मननी वातो में जाणी. ३९
तमारुं वयण माथे धरशुं, बेऊनुं पूरुं अमे करशुं,
माटे परणो अनुपम नारी, तमारो भाई देव मोरारी. ४०
बत्रीस बजार नारी छे जेहने, एकनो पाड़ चढसे तेहने,
माटे हृदयथी फिकर टालो, काकाजी केरुं घर अजवालो. ४१
एवुं सांभली नेम त्यां हसीया, भाभीना बोल हृदय वसीया,
त्यां तो कृष्णने दीधी बधाई, निश्चे परणशे तमारो भाई. ४२
उग्रसेन राजा घरे छे बेटी, नामे राजुल गुणनी पेटी,
नेमजी केरो विवाह त्यां कीधो, शुभलग्ननो दिवस लीधो,
मंडप मंडाव्यां कृष्णजी राय, नेमने नित्य फुलेका थाय. ४३
पीठी चोलेने मानिनी गाय, धवल मंगल अति वरताय,
तरीया तोरण बांध्या छे बार, भली गाय छे सोहागण नार. ४४
जान सजाई करे त्यां सारी, हलबल करे त्यां देव मोरारी,
वहु वारुं वातो करे छे छाने, नहि रहिये घेरने जाइशुं जाने. ४५
छप्पन क्रोड जादवनो साथ, भेला कृष्ण बलभद्र भ्रात,
चढ़ीया घोडले म्याना असवार, सुखपाल केरो लाघे नहि पार. ४६
गाडा वेलो ने बगीओ बहु जोडी, म्याना गाडीए जोतर्या धोरी,
बेठा जदव ने वेढ़ वांकडीया, सोवन मुगट हीरले जडीया. ४७
कडा पोंचियो ने बाजुबंध कशीया, शालो दुशालो ओढे छे रसीया,
छप्पन कोडी तो बरोबरीया जाणुं, बीजा जानैया केटला वरवाणुं. ४८
जानडीओ शोभे बालुडे वेषे, विवेक मोती परोवे केशे,
सोल शणगार धरे छे अंगे, लटके अलबेली चाले उमंगे. ४९
लीलावट टीली दामणी, चलके, जेम बिजली बादले झलके,
चन्द्रवदनी मृगां जो नेणी, सिंहलकी जेहनी नागशी वेणी. ५०
रथमां बेसी बालक धवरावे, बीजी पोतानुं चीर समरावे,
एम अनुक्रमे नारी छे झाझी, गाय गीतने थाय छे राजी. ५१
कोई कहे धन्या राजलु अवतार, नेम सरीखो पामी भरथार,
कोई कहे पुण्य नेमनुं भारी, ते थकी मली छे राजुल नारी. ५२
एम अन्योन्य वाद वदे छे, म्होढ़ा मलकावी वातो करे छे,
कोई कहे अमे जइशुं वहेली, बलदने घी पाइशुं पहेली. ५३
कोई कहे अमारा बलद छे भारी, पहोंची न शके देव मोरारी,
एवी वातो ना गपोटा चाले, पोतपोताना मगनमां महाले. ५४

बहोत्तेर कलाने बुद्धि विशाल, नेमजी नाहीने धेरे शणगार,
पहेर्या पीताम्बर जरकशी जामा, पासे उभा छे नेमना मामा. ५५
माथे मुगट ते हीरले जडियो, बहुमूलो ए कसबीनो घडीयो,
भरे कुंडल बहुमूला मोती, शहेरनी नारी नेमने जोती. ५६
कंठे नवसेरो मोतीनो हार, बांध्या बाजुबंध नव लागी बार,
दशे आंगलीए वेढ़ ने वींटी, झीणी दिसे छे सोनेरी लींटी. ५७
हीरा बहु जडीया पाणीनां ताजा, कडा साकला पहेरे वरराजा,
मोतीनो तोडो मुगटमां झलके, बहु तेजथी कंलकी चलके. ५८
राधाए आवीने आंखडी आंजी, बहु डाही छे नव जाय भांजी,
कुमकुम टीलुं कीधुं छे भाले, टपकुं कस्तूरी केरुं छे गाले. ५९
पान सोपारी श्रीफल जोडे, भरी पसने चढ़ीया वरघोडे,
चढ़ी वरघोडे चउटामां आवे, नगरनी नारी मोतीए वधावे. ६०
वाजा वागे ने नाटारंभ थाय, नेम विवेकी तोरण जाय,
घुंसल मुसलने रवइओ लाव्यां, पोंखवा कारण सासुजी आव्यां. ६१
देव विमाने जुवे छे चढ़ी, नेम नहि परणे जाशे आ घड़ी,
एवामां कीधो पशुए पोकार , सांभलो अरजी नेम दयाल. ६२
तमे परणशो चतुर सुजाण, परभाते जाशे पशुना प्राण,
माटे दयालु दया मनमां दाखो, आज अमोने जीवता राखो. ६३
एवो पशुओनो सुणी पोकार, छोडाव्यां पशुओने दयाल,
पाछा तो फरीया, परण्या ज नही, कुंवारी कन्या राजुल रही. ६४
राजुल कहे छे न सिध्या काज, दुश्मन थया छे पशुओ आज,
सांभलो सर्वे राजुल कहे छे. हरणीने तिहां ओलंभा दे छे. ६५
चन्द्रमांने ते तो लांछन लगाड्युं, सीतानुं तें तो हरण कराव्युं,
म्हारी वेला तो क्यांथी जागी, नजर आगलथी जाने तुं भागी. ६६
करे विलाप राजुल राणी, कर्मनी गति में तो न जाणी,
आठ भवनी प्रीतिने ठेली, नवमें भव कुंवारी मेली. ६७
एवुं नव करीए नेम नगीना, जाणुं छुं मन रंगना भीना,
तमारा भाईए रणमां रझलावी, ते तो नारीने ठेकाणे लावी. ६८
तमे कुलतणो राखो छो धारो, आ फेरे आव्यो तमारो वारो,
वरघोडे चढ़ी मोटो जश लीधो, पाछा वलीने फजेतो कीधो,
आंखो अंजावी पीठी चोलावी, वरघोडे चढ़ता शरम न आवी. ६९
महोटे उपाडे जान बनावी, भाभीओ पासे गाना गवरावी,
एवा ठाठथी सर्वने लाव्यां, स्त्री पुरुषने भला भमाव्या. ७०
चाचन लागे तो पाछेरा फरजो, शुभ कारज म्हारुं ये करजो,
पाछा न वलीया एकज ध्यान, देवा मांड्यु तिहां वरसीदान. ७१

दान देइने विचार किध, श्रावण सुद छठ्ठनुं मुहूरत लीध,
दीक्षा लीधी त्यां न लागी वार, साथे मुनीवर एक हजार. ७२
गिरनारे जइने कारज कीधुं, पंचावन में दिन केवल लीधुं,
पाम्या वधाई राजुल राणी, पीवा न रह्यां चांगलु पाणी. ७३
नेमने जई चरणे लागी, पीऊजी पासे मोज त्यां मांगी,
आपो केवल तमारी कहावुं, शुकन जोवाने नही जावुं. ७४
दीक्षा लईने कारज कीधुं, झटपट पोते केवल लीधुं,
मल्युं अखण्ड आतम राज, गया शिवसुन्दरी जोवाने काज. ७५
सुदिनी आठम अषाढ़ धारी, नेमजी वरीया शिववधू नारी,
नेम राजुलनी अखंड गति, वर्णन केम थाये मारी ज मति. ७६
यथार्थ कहुं बुद्धि प्रणाणे, बेउनां सुख ते केवली जाणे,
गाशे भणशे ने जे कोई सांभलशे, तेना मनोरथ ए पूरा करशे. ७७
सिद्धनुं ध्यान हृदय ए धरशे, ते तो शिववधू निश्चय वरशे,
संवत ओगणीस श्रावण मास, वदि पांचमनो दिवस खास. ७८
वार शुक्रने चोघडीयुं सारुं, प्रसन्न थयुं मनडुं मारुं,
गाम गांमडाना राजा रामसिंघ, कीधो श्लोको मनने उछरंग. ७९
महाजनना भाव थकी मे कीधो, वांची श्लोको म्होटो जश लीधो,
देश गुजरात रेंवाशी जाणो, वीशा शरमाली नात प्रमाणो. ८०
प्रभुनी कृपाथी नवनिधि थाय, बेऊ कर जोडी सुरशशी गाय,
नामे देवचन्द पण सुरशशी कहीए, बेऊनो अर्थ एकज लहीए. ८१
देव सूरज ने चन्द्र ज छे शशी, विशेष वाणी हृदयमां वसी,
ब्यासी कडीथी पूरो में कीधो, गाई गवडावी सुयश लीधो. ८२

श्री पार्श्वनाथजी के स्तवन

(१) श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथजी स्तवन

मारी कल्पवेलडी मूर्ति श्री अंतरीक्ष पार्श्वनी, एक समय लंकापति रावण,
हुकम आप फरमावे, माली सुमाली विद्याधर बे, कार्य करण तस जावे रे, मारी. १
जाय विमान झडपथी तेहनुं, जेम गगने गुब्बार,
मध्याहने भोजन वेला ए, विमान हेठे उतार्या रे, मारी. २
तस सेवक मन संशय उपन्युं, प्रतिमा घरे विसारी,
प्रभु पूजन विण भोजन न लिये, मुज स्वामी बलशाली रे, मारी, ३
वेलुमय मूर्ति निपजावी, करी पूजन तैयारी,
स्वामी ए पूजन करी भोजन, लिया शरीर सुखकारी, मारी, ४
जाता मूर्ति ने पधरावी, सरोवरमां उच्छेरंगे,
अधिष्टायक देव अखंडित, राखी तिहां उमंगे रे, मारी, ५
एक दिन विमलपुरनो राजा, श्रीपाल कृष्टि आवे,

हाथ मुख प्रमुख अंगोने, पखाली निज घर जावे रे, मारी, ६
मुखडुं निरोगी देखी रानी, फरी त्यां जई नवरावे,
कंचनसम काया राजानी, जोई जोई अचरिज पामे रे, मारी, ७
बलि बाकुला नाखी पट्टरानी, बोली मधुरी वाणी,
जो कोई देवी देव होय तो, द्यो दर्शन हित आणी रे, मारी, ८
एम करी घेर आवीने सुती, स्वप्ने देवी दीठी,
पार्श्वप्रभुनी प्रतिमा इहां छे, एम वाणी सुणी मीठी रे, मारी, ९
रोगी राजा निरोगी थयो ते, जिनजी तणो सुपसाय,
ते कारण प्रतिमा काढीने, गाडे दीयो पधराये रे, मारी. १०
काचे तांतणे गाडलुं बांधी, राजाये थवुं धुरमां
पण पाछुं वाली जोया विना, जावुं जरुर निज पुरमां, मारी. ११
जो पाछुं वालीने जोसे, तो प्रतिमा तिहां रहेशे,
भूल्यो बाजीगर सोचे तिम, चितां दुख सहेशे रे, मारी. १२
एक स्वप्नुं देखीने रानी, निद्रामांथी जागी,
प्रेमधरीने देव गुरु स्मरण करवा लागी रे, मारी. १३
तेमज करीने पृथ्वीपति चाल्यो, बोझथी हाथी न हाले,
शंका उपनी प्रतिमा केरी, मुख वाली तिहां भाल्युं रे, मारी. १४
प्रतिमा अधर रही त्यां आगल, गाडुं निकली चाल्युं,
विना विचारे कीधुं ते, राजाना दिलमां चाल्युं रे, मारी. १५
पण प्रतिमा उपर प्रीतिथी, श्रीपुर नगर वसावी,
रहेवा लाग्यो त्यां राजा, नगर लोकने वासी रे, मारी. १६
चैत्य प्रतिष्ठा महोत्सव कीधो, जगमा जश बहु लीधो,
प्रतिदिन त्रिकाल पूजा करीने, निजभव सफलो कीधो रे, मारी. १७
ते काले पनिहारी बेडलुं, लई नीचे जइ शकती,
हमणां तो अंगलुहनुं नीकले, दीप शिखा जुओ झगती रे,मारी. १८
दुषमकाल में एम प्रभुनी, मूरती अधर बीराजे,
ते कारण अंतरीक्ष पार्श्वजी, नाम जगतमां गाजे रे, मारी. १९
ते प्रभुनी यात्रा करवाने, अमलनेरथी आवे,
रुपचंद मोहनचंद पोते, संघ लइ शुद्ध भावे रे, मारी, २०
संवत् ओगणीशसे छप्पननी, महाशुदि दशमी सारी,
लक्ष्मीविजय गुरुराय पसावे, हंस नमे वारंवारी रे, मारी. २१

(२) श्री पार्श्वनाथजी दशभव स्तवन

(तर्ज : साबरमती के संत तुने)

शंखेश्वर दरबारमां गावुं मधुरा राग, वामादेवीना नंद तुमे,
सुणजो वीतराग, जय जय जय श्री पार्श्वनाथ. १

पोतनपुरी पहले भवे, समकितने लीधा, मरुभूति नामे तमे,
सत्कार्यने कीधा, खमावता निज भाईने, मृत्यु शीरे लीधा.
समताधरी आपे अहो, पामे न कोई ताग. जय २
बीजे भव हस्ती बन्या, जिन धर्म ने पाम्या, सर्पे दीधो विष डंक ने,
तोये तेम खम्या, मृत्यु थयुं स्वर्गे गया, दिल धर्ममां जाम्या,
वैभव हे जिनराज, समाधि छे तमारी साथ ३
धरे चोथे भवे, वैराग्यने पाम्या, राज्य तजी रखियामणुं,
संसारनी माया, अणगार थइ विचरे, जिन ध्यानने ध्याया,
झेरी डस्यो भुजंग तोये, प्रेमना निदान ४
बारमें स्वर्गे गया, भव पांचमे उजमाल,
त्यांथी च्यवी छट्ठे भवे, विदेह अवतार, कुमार व्रजनाभ नाम,
संयम स्वीकार, भीले कर्यो तीर धार, मुनि धीर वड भाग,५
ग्रेवयेके सुरदेवता, भवसातमें सुजाण, त्याथी च्यवी विदेहमां,
चक्री बन्या कल्याण, सुवर्णबाहु नाम गुण, रत्ननी छे खाण,
दीक्षा ग्रही जिनराज पासे, धन्य हे नरनाथ ६
निकाचता जिन नामने, अणगार महावीर, वनराज समरी वेरने,
वारे मुनिवर धीर, नवमे भवे स्वर्गे गया, खील्युं महाखमीर,
वैभव जिनराज तुमे, शिवपुरीनो पाग, ७
जंबूद्धीप गंगा तीरे, वाणारसी आया, त्यांथी च्यवी दशमें भवे,
प्रभु पास कहाया, अश्वसेन कुलराज जयनाद कराया,
वैभव भर्या संसारनो, कीधो प्रभु ए त्याग, ८
संसार कारागृहनी सहुं बेडीओ तोडी, वैराग्यनी हांकल करी,
मोह हांडीओ फोडी, सिद्धिवधू साथे तुमे, शुभ प्रीतने जोडी,
तोड्या अने मोड्या सवि संसारना विखवाद, ९
मोक्षे गया जिन आप मुकी, जीवोने अनाथ, विकराल आ संसारनो,
रुडो गयो संगाथ, माणेक मुनि कहे मने, तारजो जगनाथ, निवारजो
संसारनां रखडेलनो सौ थाक, वामादेवीना नंद तुमे सुणजो वीतराग १०

(३)

ऊँ नेम पार्श्वप्रभु पंकजे, विश्वचिंतामणी रत्न रे,
ऊँ ह्रीँ धरणेन्द्र पद्मावती, वैरोट्या करो मुज यत्न रे, ऊँ नमो. १
अब मोहे शान्ति तुष्टि महापुष्टि, धृति कीर्ति विद्यायिरे
ऊँ ह्रीँ अक्षर शब्दथी, आधि व्याधि सब जाय रे, ऊँ नमो. २
ऊँ ह्रीँ श्री प्रभु पार्श्वजी, मूलना मंत्रनुं बीज रे,
पार्श्वथी सर्व दुरित टले, आय मिले सवि चिज रे, ऊँ नमो. ३

ऊँ ह्रीँ असिआउसा नमो नमः तु त्रैलोक्यनो नाथ रे,
चोसठ इन्द्र टोले मली, सेवे प्रभु जोडी हाथ रे, ऊँ नमो. ४
ऊँ अजिता दुरिआ तथा, अपराविजया जया देवी
दश दिशीपाल गृह यक्ष ए, विद्या देवी प्रसन्न होय सेवी रे, ऊँ नमो. ५
गोडी प्रभु पार्श्व चिंतामणी, थंभणो अहिछ्तो देव रे,
जगवल्लभ तुं जग जागतो, अंतरीक्ष वरकाणा करुं सेव रे, ऊँ नमो. ६
श्री शंखेश्वरपुरी मंडणो, पार्श्वजिन प्रणत तरुं कल्प रे,
वारजो दुष्टना वृंदने, सुजश सौभाग्य सुख कंद रे,ऊँ नमो. ७

(४)

(तर्ज : खम्मा मारा नंदजीना लाल)

वहालु प्रभु पासजीनुं नाम, माया केवी रे लगाडी,
क्षणमां सो सो वार संभारुं, विसरे नही कोई काल, माया. १
अश्वसेन कुल मंदिर दीवो, वामा देवीनो बाल, माया. २
वाराणसी नगरीमां जन्म्या प्रभुजी, नाम रुडुं पार्श्व कुमार, माया. ३
वाराणसीमां बालवयमां अतुल, ज्ञानी वैराग्य अपरंपार, माया. ४
मातापिताना आग्रहथी रे,परण्या प्रभावती नार, माया. ५
पहोंच्या कुमार कमठ पासे, अश्व खेलावता कुमार, माया. ६
नाग कढाव्यो काष्ट चीरावी, संभलाव्यो नवकार, माया. ७
मंत्र प्रभावे धरेन्द्र आय, मोक्षदायक नवकार, माया. ८
वार्षिक दान देई, दीक्षा ज लीधी, विचरे वसुंधा धार, माया. ९
मेघमाली आव्यो क्रोध करीने, वर्षावे मेहुलानी धार, माया. १०
धरणेन्द्र आवी मेघ निवार्यो, राग द्वेष नही, समभावमां एक तान, माया. ११
कर्म खपावी केवल पाया, कीधा बहु उपकार, माया. १२
सम्मते शिखरे मोक्षे सिधाव्या, नित्यानंद शरण ग्रहे, माया. १३

(५) पोषदशमी स्तवन

प्रभुजी ओ बनारसी नगर में, रिद्धि सिद्धि सघली पाई ओ, जयकारी
जिनराज, उपकारी जिनराज, बनारसी नगरीमां, १
प्रभुजी ओ वामाराणी ने, चौदह सपना लाधा हो, जयकारी २
प्रभुजी ओ पोष दशमी ने, पारस प्रभु जनमीया हो, जयकारी. ३
प्रभुजी ओ शिखर उपर चढने, सोहन थाल बजाया ओ जयकरी. ४
प्रभुजी ओ सोनारी छुरीयोंसुं, प्रभुजी रो नालों पर नालियों ओ, जयकारी. ५
प्रभुजी ओ सोनारी झारी ने, रुपा के कुंटे नवराव्या ओ, जयकारी. ६
प्रभुजी ओ पाणी ने बदले, दूधोसु नवराव्यां ओ, जयकारी. ७
प्रभुजी ओ इंद्राणी मिल प्रभुजी रो, महोत्सव करीयो ओ, जयकारी. ८
प्रभुजी ओ चोखाने बदले, मोतीडासुं वधाव्यां ओ, जयकारी. ९

प्रभुजी ओ पिला पिताम्बर, प्रभुजी ने अंग लपेटिया ओ, जयकारी. १०
प्रभुजी ओ धर्म पालकडी, माताजी रे पास पोढाया ओ, जयकारी. ११
प्रभुजी ओ हिवडे आपरे, जैन धर्म री कुंची ओ, जयकारी. १२
प्रभुजी ओ करणी आपरी, नवली अधिकी ऊँची ओ, जयकारी. १३
प्रभुजी ओ वीस वर्ष में, परण्या सुन्दर नारी ओ, जयकारी. १४
प्रभुजी ओ त्रीस वर्ष में, राजपाट सब त्यागा ओ,जयकारी. १५
प्रभुजी ओ सौ वर्षो री, सघली आयु पाली ओ, जयकारी. १६
प्रभुजी ओ मूर्ति आपरी, नीलवर्ण में सोहे ओ, जयकारी. १७
प्रभुजी ओ दान शियल तप भावना, दिल में धारी ओ,जयकारी. १८
प्रभुजी ओ रतन मुनीश्वर, स्तवन बनायो अति भारी ओ, जयकारी. १९

(६) श्री पार्श्वनाथजी जन्म कल्याणक स्तवन

ढाल-१, (तर्ज : प्रभु तारे रे मंदिरे आवीया अमे तरवाने)

दशमो भव जिनवर तणो मन रंगीला,
भावे सुणो नरनार, लाल मन रंगीला. १
जंबूद्वीप सोहामणो, मन रंगीला, सघला द्वीप मोजार, लाल मन रंगीला,
निरंगीला मन रंगीला, पार्श्वकुमार पुण्यवंत, लाल मन रंगीला, २
दक्षिण भरत वखाणीये, मन रंगीला,
नयरी वाराणसी सार, लाल मन रंगीला, ३
अश्वसेन नृप जाणिये, मन रंगीला,
वामादेवी उर हार, लाल मन रंगीला.४
दशमां कल्प थकी आवी, मन रंगीला,
आयु पुरव वीश, लाल मन रंगीला. ५
चैत्र चित्त चौथे च्यवी, मन रंगीला,
वामादेवी उर हार, लाल मन रंगीला,६
चौद सुपन देखी राणी, मन रंगीला,
हवे विनवे छे राय, लाल मन रंगीला७
सुपन विचार सुंदर जाणी, मन रंगीला,
राय मन हर्ष अपार, लाल मन रंगीला ८
सुपन पाठक पंडित आणी, मन रंगीला,
पूछे स्वप्न विचार, लाल मन रंगीला, ९
सुत होशे त्रिभुवन धणी, मन रंगीला,
सकल लोक आधार, लाल मन रंगीला, १०

ढाल - २ (तर्ज : सोने जैसा रूप है तेरा)

पोष वदि दशमी भली रे, जन्म्या पार्श्व जिणंद, छप्पन दिककुमारी कहे रे,
सुती करम आनंद रे, भविका पूजो पार्श्व जिणंद,

दीठे परमानंद रे भविका, जेहने सेवे सुरनर इन्द्र रे, भविका, १
सोहमपति तिहां आवियो रे, लाग्यो मायने पाय,
रत्न कुक्षी तुं धारणी रे, ते जाण्यो त्रिभुवनराय रे, भविका. २
मेरु जाई नवरावशुं रे, करशुं महोत्सव काज,
तु मत बिहे मोरी मावडी रे, आणी आपशुं बाल रे, भविका. ३
इम कही मेरु पधरावीयाजी, पंच रुपे करी हाथ,
चौसठ इन्द्रे नवरावीयाजी, टाल्या पाप व्यापार रे, भविका. ४
इन्द्रे जन्म महोत्सव करीजी, आणी आप्यां बाल,
प्रभाते बहु हरखी करी रे, जन्म महोत्सव लाल रे, भविका. ५

ढाल - ३ (तर्ज :- सांभलोजी सस्नेही प्यारा)

शेरी मांहे रमतो दीठो, पार्श्व कुमार नानडीयो रे,
रुमझुम रुमझुम करता चरणे नेऊर, हाथ उछाली दडियो रे,
हारे हाथे सोवन खडीयो रे, १
शिर टोपी ओपे रुपाली, काने कडी बाकडीयो रे,
हैये हार अनुपम सोहे, केडे कंदोरो जडीयो रे, शेरी. २
धमधम करता घुंघरा वागे, मचमचती मोजडीयो रे,
ठमक ठमक पगला भरतो, माताने मन चढीयो रे, शेरी. ३
नाना मंदिर रमत करतो, फेंके दडबडियो रे,
माता कुमार बोलावे हरखे, आवे ठमका देतो रे, शेरी.४
पूनमचंद समो मुख दीठे, अणीयारी आंखडीयो रे,
कमल नाभ सरखा बाहुडिया, पापणी जक पांखडीयो रे, शेरी. ५
सोहामणी खंधो लई चढीयो, कांई देई पाऊं पडीयो रे,
कुंडल तणाई माचा करतो, इन्द्राणी कर चढीयो रे, शेरी. ६
सरखा सरखी टोली मलीने, वावरे सुखडीयो रे,
शेरी मांहे फेरी देईने, रस घुंटे शेलडीयो रे, शेरी. ७
इम अनुक्रमे जगगुरु वांधे, रुपे रतिपति घडियो रे,
पार्श्वकुमार जाया जिण वेला, ते सफलो चोघडियो रे, शेरी, ८
सकल मनोरथ पुण्ये फलीया, सुत सुख करुं सापडियो रे,
शुभविजय प्रभुना गुण गाया, अम शुं भाग्य उघडीयो रे, शेरी. ९

(तर्ज : अखंड सौभाग्यवती)

तमे बोलो बोलो ने पारसनाथ, बालक तमने बोलावे,
तमे आंखलडी खोलो एकवार, बालक तमने बोलावे १
मारा करेला कर्मो आजे नड्या, आवडा ते लेख कोने लखीया,

मारा पूर्वना प्रगट्या छे पाप, बालक. २
कंठ सुकाणो मुखेथी बोलातुं नथी, श्वास रुंधाणो आंखेथी देखातुं नथी,
हुं तो रडुं छुं हैया फाट, बालक. ३
मारा आशाना दीपक बुजाई गया, चारे कोर अंधकार छवाई गयुं,
मारा जीवनमां पडी हडताल, बालक. ४
तमे शान्तिनगरमां पोढी गया, तरछोडी छतां अमे आवी गया,
तमे क्यां सुधी करशो विचार, बालक ५
तारा विना आंसू मारा कोण लुं छे, तारी भक्तिना भाव कोण पूछे,
ज्ञानविमल सदा गुण गाय, बालक. ६

(८) श्री वामादेवी थाल

(तर्ज : माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे)

माता दामादे बोलावे, जमवा पासने,
जमवा वेला थई छे, रमवा शीद जाय,
चालो तात तुमारा, बहु थाय उतावला,
वहेला हालो ने, भोजनीयां ठाढां थया, माता. १
मातानुं वचन सुणीने, जमवाने बहु प्रेमशु,
बुद्धि बाजोठ ढाली, बेठा थई होंशीयार,
विनय थाल अजुवाली, लालने आगल मुकीयो,
विवेक वाटकीओ, शोभावे थाल मोझार, माता. २
समकित शेलडीना, छोलीने गट्टां मुकीया,
दाननां दाडम दाणां, फोली आप्या खास,
समता सीताफलनो, रस पीज्यो बहु राजीया,
जुगति जामफल प्यारा, आरोगो ने पास, माता. ३
मारा नानडिया ने, चोखा चित्तना चुरमां,
सुमति साकर उपर, भावनुं मेलुं घृत,
भक्ति भजीया पीरस्या, पास कुंवरने प्रेमशुं,
अनुभव अथाणा चाखोने, राखो सरत, माता. ४
प्रभुने गुण गुंजा ने, ज्ञान गुंदवडा पीरस्या,
प्रेमना पेंडा जमजो, मान वधारण काज,
जाणपणानी जलेबी, जमतां भांगे भुखडी,
दया दुधपाक अमीरस, आरोगोने आज, माता. ५
संतोष सीरोने, वली पुण्यनी पुरी पीरसी,
संवेगशाक भला छे, दातार ढीली दाल,

मोटाई मालपुवाने, प्रभावनानां पुडलां,
विचार वडी वघारी, जमज्यो मारा बाल, माता. ६
रुचि रायतां रुडां, पवित्र पापड पीरस्या,
चतुराई चोखा, ओसावी आप्या भरपुर,
उपर इंद्रिय दमन दुध, तप तापे तांतु करी,
प्रीते पीरस्युं जमजो, जगजीवन जगतुर, माता. ७
प्रीति पाणी पीधां, प्रभावतीना हाथथी,
तत्त्व तंबोल लीधा, शीयल सोपारी साथ,
अकल एलाइची आपीने, माता मुख वदे,
त्रिभुवन तारी तरज्यो, जग जीवन जगनाथ, माता. ८
प्रभुना थाल तणां जे, गुण गावे ने सांभले,
भेद भेदांतर समझे, ज्ञानी ते कहेवाय,
गुरुगुमान विजयनो, शिष्य कहे शिरनामी ने,
सदा सौभाग्यविजय, गावे गीत सदाय, माता. ९

(९)

(तर्ज : नदी रे किनारे रायवर)

सम्मेतशिखर मुजने वाल रे लागे,
प्रकट वसे छे व्हाला पार्श्वनाथ सखी, सम्मेतशिखर मुजने वाल रे लागे, १
आटलो संदेशो जइने प्रभुजी ने कहेजो,
भव सागर क्यारे जालशो हाथ सखी, सम्मेतशिखर. २
क्रोध अग्निनी ज्वाला मुजने बाले छे,
कृपा वारिने क्यारे करशो वरसाद सखी, सम्मेतशिखर. ३
काम स्वरुपी हस्ती कचडी नाखे छे,
शठता स्वरुपी सिंह करे छे नाद सखी, सम्मेतशिखर. ४
हुं तो दास छुं प्रभु पार्श्व जिणंदनो,
सहेजे सलुणो मारो कोडीलो कंत सखी, सम्मेतशिखर. ५
सृष्टि न देखुं आतो रात भयंकर,
नजरे न आवे प्यारो प्रेमीलो पंथ सखी, सम्मेतशिखर. ६
हिंसा उलक ज्यां त्यां चोर फरे छे,
आलस अजगर रुपी भारे छे त्रास सखी, सम्मेतशिखर. ७
कुटुंम्ब कबीलो ए तो साचो शियालवा,
घेरी रह्या छे मुजने आवी चौपास सखी, सम्मेतशिखर. ८
अंतरना बेली प्रभु क्यारे उगारशो,
हैयामां हवे मारे कांई नथी काम सखी, सम्मेतशिखर. ९
करुणाना सागर प्रभुजी ज्ञान उजागर,

व्हालु लाग्युं छे प्रभु आपनुं धाम सखी, सम्मेतशिखर. १०
अमीरस झरती मूरति प्यारी लागे छे,
कुमुदने व्हालो जेम शरदनो चंद सखी, सम्मेतशिखर. ११
सम्मेतशिखर वासी पार्श्व जिणंदनी,
वामा देवीनो रुडो लाडीलो नंद सखी, सम्मेतशिखर. १२
नटडीने दोर उपर जेवी छे सुरता,
एवी प्रभुनी साथे मारी छे प्रीत सखी, सम्मेतशिखर. १३
पद्मविजयसूरि ए रीते बोल,
प्रभुजी ए संभाली रुडी राखी छे रीत सखी, सम्मेतशिखर. १४

(१०)

तुं प्रभु मारो हुं प्रभु तारो, क्षण एक मुजने ना रे विसारो,
महेर करी मुज विनंती स्वीकारो, स्वामी सेवक जाणी निहालो, १
लाख चौरासी भटकी प्रभुजी, आव्यो छुं तारे शरणे हो जिनजी,
दुर्गति कापो शिवसुख आपो, स्वामी सेवक जाणी निहालो, तुं. २
अक्षय खजानो प्रभु तारो भर्यो छे, आपो कृपालु में हाथ धर्यो छे,
वामानंदन जग वंदन प्यारो, देव अनेरा मांही तुं छे न्यारो, तुं. ३
पल पल समरुं नाम शंखेश्वर, समरथ तारण तुं ही जिनेश्वर,
प्राण थकी तुं अधिको व्हालो, दया करी मुजने नेहे निहालो, तुं. ४
भक्त वत्सल तारुं बिरुद जाणी, केड न छोडु एम लेजो जाणी,
चरणोनी सेवा नितनित चाहुं, घडी घडी हुं मनमां हे उमाहुं, ते. ५
ज्ञानविमल तुज भक्ति प्रभावे, भवो भवनां संताप समावे,
अमीय भरेली तारी मूर्ति निहाली, पाप अंतरना देजो परजाली, तु प्रभु. ६

(११)

(तर्ज : मेरा जीवन मोरा कागज)

पार्श्वप्रभु परमेश्वरा रे, आपजो जगत दयाल,
सभारुं नित्य साहेबा रे, श्वास मांहे सो वार,
अरजी स्वीकारो आ दासनी रे, राखो रंकनी लाज, पार्श्व. १
चौरासीलाख योनि चउगतिमां, भमियों हुं वार अनंत,
भव अनंता तिहां भोगव्यां रे, आव्यो न कर्मनो अंत, पार्श्व. २
छेदन भेदन दु:ख सहया रे, जन्म जरा दिन रात,
कषाये बहु कुटीयो रे, तुटेना विषयना तार, पार्श्व.३
तेहना रागथी तातजी रे, कीधा कुकर्म विशेष,
हाल बेहाल हुं तिहां हुओ रे, लई नही शान्ति लेश, पार्श्व.४
आपे ए पदथी उगर्यो रे, क्रोड गमे किरतार,
अलेणुं केम अभागीयुं रे, श्रेय करो मुज सार,पार्श्व.५

जेवो तेवो जाणजो रे,अन्ते आपनो दास,
उपाधिथी उगारजो रे, आवीने पूरजो आश, पार्श्व.६
अन्ते आपने तारवो रे, ढील करो शुं काम,
ललितविजय लेखे लह्यो रे, आपोने शान्ति आराम, पार्श्व.७

(१२)

(तर्ज : सिद्धाचलना वासी)

शंखेश्वर पार्श्व तारी, मूर्ति कामणगारी, तारा दर्शनथी भव दु:ख जाय,
भवि जन लागे छे प्यारी, केवी चमत्कारी, तारा १
शंखेश्वरमां तुंही बिराजे, महिमा तारो श्री जगमांहे गाजे,
आव्यो दर्शनने काजे, धन्य घडी आजे, तारा. २
प्रतिमा सुन्दर शोभे पुराणी, दामोदर जिन वारे भराणी,
केवी सुन्दर लागे, नीरखता भव दु:ख भागे तार. ३
महापुण्योदये तुं मलीयो, मारो भवनो फेरो टलीयो,
कदी नही छोडुं तारुं ध्यान, हे करुणानिधान, तारा. ४
काल अनादि निगोदे हुं वसीयो, पुद्गलना रंगे हु रसीयो,
हवे कर तुं उद्धार, आतमना रे आधार, तारा. ५
विघ्न निवारण संकट चुरण, मनोवांछितना छो पूरण,
बतलावो मुक्ति मिनार, जावुं भवने किनारे, तारा. ६
भवो भव तुम चरणोनी सेवा, मुजने आपोने देवाधिदेवा,
तुं छे साचो मारो नाथ, शंखेश्वर पार्श्वनाथ, तारा. ७
वामा उर सरोवर हंस, अश्वसेन कुल अवसंत,
दूरथी आव्यो तारी पास, पूरजो हर्षनी आश, तारा. ८

(१३)

(तर्ज : चालो सखी सिद्धाचल जईये)

सुणो सखी शंखेश्वर जइए, विश्वंभरने शरणे रहीए,
दु:ख छंडीने सुखीया थईए, सुणो सखी शंखेश्वर जइए, १
नमी ए देवाधिदेवा, साचे शुद्धे करुं सेवा,
चित्त वसे सांचु ज कहेवा, सुणो. २
आणी कष्ट थकी तो आरे, सेवक साहिब दिल धारे,
भरावी दामोदर वारे, सुणो, ३
पडिमा पार्श्वनाथ तणी, गंगा जमना मांहे घणी,
काल अंसख्य जिनेन्द्र भणी, सुणो. ४
लवणोदधि व्यंतर नगरे, भुवनपतिमां एम सघले,
पूजी भाव घणे रे अमरे, सुणो. ५
चंद्र सूर्य विमाने, कल्पे सौधर्म इशाने,

अर्ची बारमां गीर्वाणे, सुणो. ६
जादव लोक जरा वासी, राम हरि रह्यां उदासी,
अठ्ठम ध्यान धरे आसी, सुणो. ७
पद्मावती देवी तुठी, शंखेश्वर प्रतिमा दीधी,
जादव लोकनी जरा नीठी, सुणो. ८
पार्श्व प्रभुजीनो जश व्यापे, शंखेश्वर नगरी थापे,
सेवकने वांछित आपे, सुणो. ९
गामे गामे ओच्छव थावे, थोके गुणीजन गुण गावे,
शंखेश्वर नगरी पावे, सुणो. १०
ते प्रभु भेटणने काजे, शा मूलचंद सुत श्री पामे,
संघवी माणेक शा नामे, सुणो. ११
वंशे वडा छे श्रीमाली, इच्छाचंद माणेक जोड भली,
गुर्जर देशनो संघ मली, सुणो. १२
अढारसो सीत्तोतेर वरसे, मागशर वद पडवा दिवसे,
विश्व भर भेट्या छे उलसे, सुणो. १३
साहिब मुख देखी हसतां, श्री शुभवीर विघ्न हरतां.
प्रभु नामे कमला वरता, सुणो. १४

श्री महावीरस्वामी के स्तवन

(१)

(तर्ज : शेत्रुजा गढना वासी रे)

दरिसन आव्या रे हो दरिसन आव्या रे हो, देवानंदा ब्राह्मणीजी,
साथे लीधो पोतानो कंथ, एक रथ बेसी रे हो, दंपती होय संचर्याजी,
वंदन आव्या तिहां श्री भगवंत, दरिसन. १
घरेणा ते पेहर्या रे हो, अति ही जडावनाजी,
शोभे शोभे अप्सरा मनोहार, रुमझुम करती रे हो, हिंडे प्रेमशुंजी,
अढार देशना दासी छे साथ, दरिसन. २
अतिशय देखीने हो, हेठा उतर्याजी,
पाला थईने आव्या प्रभुजीनी पास, पंच अभिगम रे हो,
दंपति दोय साचव्याजी, सेवा ते कीधी मनने उल्लास, दरिसन. ३
ऊंभा ते थईने हो, जुवे सुंदरीजी, नयन कमल किहां नवि जाय,
तन मन उल्लस्या रे हो, देवानंदा ब्राह्मणीजी,
नजर ते खेंची पाछी नवि जाय, दरिसन. ४
प्रभुजीने देखी न हो, पानो आवियो जी, प्रफुल्लित देहडीने अंग नमांय,
कश ते तुटी रे हो, कचुंकी तणीजी,
बल्लीया ते बाह्योमां नवी समाय, दरिसन. ५

गोयम पूछे रे हो, श्री भगवंतनेजी, आ नंदा केम जुवे छे मेषा मेष,
देहडी फूलीने रे हो, पानो आवीयाजी,
आटली नारीमां दीसे छे एक दरिसन. ६
भगवंत भाखे रे हो, सुणो गोयमाजी, आ नंदा छे मोरी माय,
देहडी फूलीने रे हो, पानो अवियोजी,
माय बेटानुं हेत जणाय, दरिसन. ७
वाणी सुणीने हो, हरख्या गोयमाजी,
हरख्या सर्व सभाना लोक ज्ञानविमल कहे धन धन एह सतीजी,
कर्म खपावी गया दोय मोक्ष, दरिसन. ८

(२)

(तर्ज : मार प्रभुजी मुजने तारो रे)

सुत सिद्धारथ सुत कंदो रे, वीर जिणंदा,
भवि चातक चित्तहर चंदा रे, त्रिशलाना नंदा, मोहनजी मारा,
मातानी भक्तिमां राता, नंदिवर्धन छे भ्राता रे, वीर जिणंदा, १
बालुडा प्रभुजी, बालपणे बलवंता,
जग जीवनजी जयवंता रे, वीर जिणंदा. २
प्रीतम प्रभुजी प्यारा, परण्या यशोदा नारी,
ते पुण्य पतिव्रत धारी रे, वीर जिणंदा. ३
वैरागी वहाला, त्रीस वर्ष थया त्यागी,
पण शिवरमणीना रागी रे, वीर जिणंदा. ४
त्रिभुवनना तारक, तप तपीया, बहुभारी,
पण तुज रत्न कुख धारी रे, वीर जिणंदा ५
शरणे हुं आव्यो, सहाय लेवाने तुमारी,
स्वीकारो अरजी अमारी रे, वीर जिणंदा. ६
लटकाला लटके, चंदनबाला ने तारी,
तारा मुखडा उपर जाऊं वारी रे, वीर जिणंदा. ७
केवल गुणवंता, केवलज्ञानने पामी,
बन्या शिवरमणीना स्वामी रे, वीर जिणंदा. ८
महावीर प्रभुजी प्यारा, हृदय मंदिर मांहि रहेजो,
शुभवीर अमर पद देजो रे, वीर जिणंदा. ९

(३)

(तर्ज : माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे)

माता त्रिशला बुलावे, जीमवा कारणे,
तुमे चलो प्रभु, वीर जिणंद,
थोरा पिताजी ओ, उभा वाट निहालता,

भोजन टाढा होवे, आवो परमानन्द, माता. १
प्रभुजी आमलकी क्रिडा, करवा निकल्या,
माता उभी जोवे, वीर कुंवरनी वाट,
सखीयो ने ओलंभा दे रही,
तुमे वेगे चालो, त्रण भुवनना नाथ. माता. २
प्रभुजी देवताए पिशाच, रुप बनावीओ,
प्रभुजी ने खंधे, लई उडी जाय,
प्रभुए मुष्ठि बले, पटकीने पछाडीयो,
भोरींग खेची नाख्यो, रमणभूमिनी बाह्य, माता. ३
प्रभुजी नाई धोई, माता पासे आवीया,
आवी बेठा राजा, सिद्धार्थ ने खोला मांय,
पछी लेई खोले, माताए हुलरावीया,
मुखडुं जोई जोई, आनंद आनंद थाय, माता. ४
माताजीए जुगतीसु, बाजोठ बिछवीयो,
तेनी उपर दया थाल धरवाय,
विवेक वाटिकाया, तो रख दीनी ते उपरे,
तुमे बेठो बेठो, तीन भुवनना नाथ, माता. ५
यह तो लब्धिना, लाडु मंगावीया,
वली पुन्यका, पेंडा परमाण,
यह तो पाप का, पापड चुरता,
तुमे जीमो जीमो, श्री जगनाथ, माता. ६
शीलकी शेरलडी मंगावीने,
महासंतोष सीताफल जाण,
जिहां मुगति को, मगज मंगावीयो,
माता त्रिशला, पीरसे हित काज, माता. ७
यह तो ज्ञान का, गुंजाकीणी जाणिया,
यह तो कर्म कंसार, कियो दूर,
वली तपस्या को दुधपाक जाणीए,
तुम जीमो जीमो, आतम भरपुर, माता. ८
यह तो सोना की जारी, जल निर्मलो,
यशोदा राणी उभी, हाजर लई आप,
प्रभु पीवो पीवो, गंगाजल निर्मलो,
सुख सेजा पीवो, जग जीवोना नाथ, माता. ९

बीडा पान सुपारी इलाइची,
ल्यो श्री वीर कुंवर तंबोल,
मुख में धरो, संतोषशुं,
हाजर यशोदा, करे रंग रोल, माता. १०
इणी परे गायो माता, त्रिशला सुतनो थालडुं,
जो कोई गावे सुणे, लेशे पुत्र तणो ए लाभ
श्री बीजवाडा नगर में, वर्णव्यो वीरनो थालडुं,
गावे तेने होजो मंगलमाल, मानविजय गुण गावीयो,
शोभा जोवे अपरंपार, माता. ११

(४)

चमके चमके चांदलीयो चमके छे,
तिहां पावापुरीमां बोले मोर, चांदलीयो १
ज्यारे त्रिशलाने चौद स्वप्न आवे छे,
प्यारे जनम्या छे वीर कुंवर चांदलीयो २
तिहां चौसठ इन्द्रो आवे छे, प्रभुने मेरु शिखर लइ जाय, चांदलीयो. ३
तिहां सोना रुपाना पारणा छे, झुलावे त्रिशला माता, चांदलीयो. ४
प्रभु आठ वर्षना थाय छे, त्यारे निशाले भणवा जाय, चांदलीयो. ५
ज्यारे पंडित वीरजीने पूछे छे, त्यारे नव व्याकरण भणी जाय, चांदलीयो, ६
प्रभु यौवनवयने पामे छे, त्यारे परणे यशोदा नार, चांदलीयो. ७
ज्यारे मात पिता स्वर्ग सिधावे छे, त्यारे दीक्षानो उदय थाय. चांदलीयो. ८
ज्यारे वीर प्रभु दीक्षा लेता छे, त्यारे नंदीवर्धन करे कल्पांत, चांदलीयो. ९
हजु मात पितानो वियोग चाले छे, वली साथे तमारो वियोग, चांदलीयो. १०
ज्यारे वीर प्रभु देशना आपे छे, त्यारे तार्या कई नरने नार, चांदलीयो. ११
ज्यारे वीर प्रभु मोक्षे सिधावे छे, त्यारे गौतम ने केवल ज्ञान थाय.
त्यां हीरविजय गुण गाय, चांदलीयो. १२

(५)

(तर्ज : देवी श्री पार्श्वतणी मूर्ति अलबेलडी)

प्यारा छो प्राण थकी व्हाला जिणंदजी, जुओ छो शेनी वाट रे,
वीर मारा पार उतारजो, मोक्षगामी भवथी उगारजो १
अज्ञान दशामां बहुपाप कीधा छे, कहुं शुं मारी वात रे, वीर. २
झांझवाना जल सरखा सुखोना मोहमां, आखर बन्यो, बेहाल रे, वीर. ३
रागी द्वेषी मारा झेरी जीवनमां, नेत्र अंजन अमीछांट रे, वीर. ४
वासनाना तत्त्वो बूरा मुंझवे छे, अमने काढो ए कर्मना काट रे, वीर. ५
डगले पगले प्रभु आपने संभारु, अंतरना जाय उच्चाट रे, वीर.६
पतित पावन मारी जीवन उद्धारक, हैयामां वसजो नाथ रे, वीर. ७

दर्शन पूजन तारा भावे करीने, जावे सुयश मुक्ति घाट रे, वीर. ८

(६)

(तर्ज : राखना रमकडा)

ज्ञानना ए दीवडाने वीरे जगमग राख्या रे,
त्रण लोकना नाथे सौना तिमिर टाली नाख्या रे. १
डगले पगले रंग रागमां, भान भूली सौ म्हाले,
द्वेष क्लेशने वेर झेरमां, दिव्य जीवनने गाले रे, ज्ञानना. २
स्वप्न सरीखी जुठी माया, रंग पतंग जिम काया,
माया मोह मदिरा पान करावी, कर्म नाच नचाव्यां रे, ज्ञानना. ३
माया ममता दुर तजे जे, चौरासी नव रुले,
ममता मांही रमता ते तो, परमात्म पद झुले रे, ज्ञानना. ४
काल अनंत हुं भमीयो तोये, आश न पूरी थई,
सुखडानी दुखडानी वातो, जेवी तेवी रही रे, ज्ञानना. ५
विक्रमे आत्म लब्धि लक्ष्मण, कीर्ति प्रसरे सर्वे,
मुक्तिना सुखडानी मोजो, चेतन चाखो सर्व, ज्ञानना. ६

(७)

(तर्ज : मथुरामां खेल खेली आव्या)

वीर तारुं नाम व्हालुं लागे हो स्वाम, शिवसुख दाया,
क्षत्रियकुंडमां जनम्या जिणंदजी, दिगकुमारी हुलराया हो स्वाम, शिव. १
माथाना मुगट छो आंखोना तारा, जन्मथी मेरु कंपाया हो स्वाम, शिव. २
मित्रोनी साथे रमत रमता, देव भुंजग रुप ठाया हो स्वाम, शिव. ३
निर्भय नाथे भुंजग फेंकी, आमल क्रीडा ते सोहाय हो स्वाम. शिव. ४
महावीर नाम देवनाथे त्यां दीधु, पंडित विश्मय पाम्या हो स्वाम, शिव. ५
चारित्र लइ प्रभु कर्मो हटाया, केवलज्ञान प्रगटाया हो स्वाम, शिव. ६
हिंसा मृषा चौरी मैथुन वारी, परिग्रह बूरा बताया हो स्वाम, शिव. ७
आत्मकमलमां शैलेसी साधी, शिव लब्धि उपाया हो स्वाम, शिव. ८

(८)

(तर्ज - उडीयो उडीयो रे)

दुखियारी दु:ख मांहे करे रे विनंती, वीर सुनजो, महावीर
सुनजो, चंदना जोवे हे थोरी वाट, प्रभुजी ओ १
राजा दधी रे वन री लाडली रे, बीके वीच बजारे , ओ २
मुला शेठानी घरे दास, प्रभुजी ओ. २
शेठ धने राखी लाडसुं रे, मुला रोज कीयो झगडो (२)
एक दिन राच्यो नवो रास, प्रभुजी ओ. ३

शेठ धना रा पगला धोवती रे, केश पानी में डुब्या (२)
धन्ने उंचाया ऊँचा केश प्रभुजी ओ ४
पापण शेठाणी ऊंधो सोचीयो रे, मन में लागी झालो झाल (२)
चन्दना रे सिंह मुला आप, प्रभुजी ओ ५
हाथ पावो में हथकडी बेडीयो हो, काटया केश रुपाला ओ (२)
ऊण्डा घर में दिया नोक, प्रभुजी ओ६
चार दिनोसु धन्नो आवियो रे, देखीया ताला लाग्या ओ (२)
मन में हुओ धन्नो उदास, प्रभुजी ओ७
चंदना सतीने काढी घरसुं रे, धन्नो देखीने चकराय,
तीन दिनो रो उपवास, प्रभुजी ओ ८
तीन उपवास रे पारणे रे, लाव्या बाकुलानो आहार (२)
मन में व्होरावण री हे आश, प्रभुजी ओ ९
कौशंबी नगरी रे बारणे, श्री वीरजी पधार्या (२)
धन्नो शेठ धरे भाव, प्रभुजी ओ १०
बारे जाता रे प्रभु देखिया रे, नही आंखो में आंसू (२)
पाछा वल गया महावीर, प्रभुजी ओ. ११
पाछा वलता ए चंदना देखीया रे, छूट्टी आंसुडानी धार (२)
जाओ जाओ मत थे महावीर, प्रभुजी ओ १२
पाछा वली ने प्रभु देखीयुं रे, वरसी आंसुडानी धार (२)
आवे ने दियो धर्मलाभ, प्रभुजी ओ १३
इन्द्र इन्द्राणी देखण आवीया रे, वर्षिया सौनेयाना मेह (२)
चन्दना सती री जय जयकार, प्रभुजी ओ १४
हीरविजय गुरु हिरलो रे, वीरविजय गुण गाय (२)
चन्दना जोवे हे थोरी वाट, प्रभुजी ओ १५

(९)

करे विनंती चंदनबाला वीरने रे,
मारे घरे पधारो, जीवनना आधार,
मारे घरे पधारो, प्राण जीवन आधार,
करे विनंती चंदनबाला वीरने रे, १

साखी

बाल मृगावती राणीए पुत्री प्रिया घरे प्यार,
धनावह शेठ शेठानी ने, करे विनंती अपार,
लावी प्रेम नजर करी, गरीब सेवक उपरे रे,
आपो प्रभुजी दर्शन, दु:खडाना हरनार, करे. २

साखी

कोई वोरावे लापसी, विविध भात रसाल,
कोई वोरावे लाडवा, पेंडा मोहनथाल,
हुं तो आपीश लुखा, बाकुला वीरने प्रेमथी रे,
ते वोरो तो प्रभुजी, आवो मारे द्वार, करे. ३

साखी

सोवनथाल रतने जडी, कांई शोभित लेई हाथ,
आपे तेमां विध विध सही, मेवा पकवान सार,
मारी पासे ते सामग्री एके नथी रे,
सुपडामां राख्या छे बाकुला तैयार, करे. ४

साखी

सोल शणगार सजी करी, पहेरी नवरंग चीर,
उभी घर घर आंगणे, वाट जोती प्रभुवीर,
हुं तो बैठी उद्वभट वेषे उंबरा बिचमां रे,
स्मरण करती प्रभुनुं श्वासोश्वास मोजार, करे. ५

साखी

मोटा ने मोटा गणे, एहीज जगत वहेवार,
मोटा छोटा सरखा गणे, एहीज वीतराग आचार,
हुं तो करगरी अरज करुं छुं वारंवार, करे. ६

साखी

घर घर फरता आवीया, वीर प्रभु सती द्वार,
एक बोल अपूर्ण रह्यो, पाछा वल्या तेणी वार,
पूरव पूण्य बिना दान लाभ किहांथी मले रे,
एम चिंतवता चाली आंखे आंसू धार करे. ७

साखी

तेर बोल पुरण थया, प्रभु आवी धर्यो हाथ,
बाकुला लेइ सती हाथथी, पारणुं कर्यु जगनाथ,
साडी बार क्रोड सुवर्ण वृष्टि तिहां थई रे,
सुर दुंदुभि वागे देव करे जय जय कार, करे. ८

साखी

सोल बोल संपूर्ण थया, सति शिर वाध्योवान,
सुख सघला आवी मल्या, जुओ प्रभाविक दान,
दीक्षा लीधी सती ए, वीर प्रभुना हाथ थी रे,
छत्रीश हजारमां थयां छे शिरदार, करे. ९

साखी

पांच मास पचवीस दिने, पारणुं करे जगनाथ,
प्रभाते उठी सहुं जनो, स्तवन गावो रसाल,
वीर मुनि कहे आपो दान, वीरने प्रेमथी रे,
दानथी जीव अनंता तर्या संसार, करे विनंती चंदनबाला प्रेमथी रे. १०

(१०) श्री वीरप्रभु हालरडुं

(तर्ज : कुकडा तारी बोली मने मीठी मीठी लागे)

कोण झुले पालणे ने, कोण जुळे पालणीये, त्रिशलाजीनो लडलो झुले,
सोनेरी सोना पारणीये, रुपेरी रुपा पालणीये, १
झुलो झुलो वीर मारा पालणीयामां झुलो,
रुडा हालरीयामां झुलो, रुडा पालणीयामां झुलो, २
सोना केरु पारणुं ने, उपर जडिया हीरा रेशम दोरी मात हिंचाले,
झुलो मारा वीरा, रुडा हालरीयामां झुलो रुडा. ३
इन्द्र इन्द्राणी मली हुलरावे, सुरनर नारी आवे, मधुर कंठे गाय हालरडा,
वीरने स्नेहे झुलावे, रुडा हालरीयामां झुलो, रुडा ४
जीके भरीयुं आंगडीयुं ने, जरीनी टोपी माथे, लाव्यां रमकडा रमवा काजे,
मेवा मिठाई साथे, रुडा हालरीयामां झुलो, रुडा. ५
माता त्रिशला हरखे हरखे, मुखथी एम वदती, मोटो थाजे भणवा जाजे,
आशीष देइ हसंती, रुडा हालरीयामां झुलो, रुडा. ६
परणावीश हुं नवली नारी, जोवनवंती तुजने, मात पिताना कोड पूरजे,
होश हैये छे मुजने, रुडा हालरीयामां झुलो, रुडा. ७
जैन शासनमां तुं एक प्रगट्यो, आंगण मारे दीवो, कर्म ने कापी धर्म ने स्थापी,
अमृत रसने पीवो, रुडा हालरीयामां झुलो, रुडा. ८
धर्म देशना आपी जगने, उद्धारणे जग प्राणी, आत्म साधना साधी वरजे,
विजयशीव पटराणी, रुडा हालरीयामां झुलो, रुडा पालणीयामां झुलो, ९

(११)

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे,
गावे हालो हालो हालरुवानां गीत,
सोना रुपाने वली, रत्नेजडियुं पारणुं,
रेशमदोरी घुंघरी वागे, छुम छुम रीत,
हालो हालो हालो, हालो मारा नंद ने १
जिनजी पास प्रभुजी, वरस अढीसे अंतरे,
होशे चोवीसमो तीर्थकर, जिन परिमाण,
केशी स्वामी मुखथी, एवी वाणी सांभली,
साची साची हुई ते, मारे अमृत वाण, हालो. २
चोदे स्वप्ने होवे, चक्री के जिनराज,
वीत्या बारे चक्री, नही हवे चक्री राज,

जिनजी पास प्रभुना, श्रीकेशीगणधार,
तेने वचने जाण्यां, चोवीशमां जिनराज, हालो. ३
मारी कुखें आव्यां, त्रण भुवननां शिरताज,
मारी कुखें आव्या, संघ तीरथनी लाज,
हुंतो पुण्य पनोती, इंद्राणी थई आज, हालो. ४
मुजने दोहलो उपन्यो, जे बेसुं गज अंबाडीये,
सिहांसन पर बेसुं, चामर छत्रधराय,
ए सहु लक्षण मुजने, नंदन ताहरा तेजना,
ते दिन संभारुं ने, आनंद अंग नमांय, हालो. ५
करतल पगतल लक्षण, एक हजार ने आठ छे,
तेहथी निश्चय जाण्या, जिनवर श्री जगदीश,
नंदन जमणी जंधे, लंछन सिंह बिराजतो,
में पहेले सुपने, दीठो विशवावीश, हालो. ६
नंदन नवला बंधव, नंदीवर्धनना तमे,
नंदन भोजइओ ना, दियर छो सुकुमाल,
हसशे रमशे भोजाईओ, कही दियर मारा लडका,
हसशे रमशे ने वली, चुंटी खणशे गाल,
हसशे रमशे ने वली, ठुंसा देशे गाल, हालो. ७
नंदन नवला चेडा, राजाना भाणेज छो,
नंदन नवला पांचसे मामीना, भाणेज छो,
नंदन मामलीयाना, भाणेजा सुकुमाल,
हसशे हाथ उछाली, कहीने नाना भाणेजा,
आँखो आंजी ने, वली टपकुं करशे गाल, हालो. ८
नंदन मामा मामी, लावशे टोपी आंगला,
रतने जडीयां झालर, मोती कसबी कोर,
नीला पीला ने वली, राता सरवे जातिना,
पहेरावशे मामी, महारा नंद किशोर, हालो. ९
नंदन मामा मामी, सुखलडी बहु लावशे,
नंदन गजवे भरशे, लाहु मोतीचूर,
नंदन मुखडा जोईने, लेशे मामी भामणा,
नंदन मामी कहेशे, जीवो सुख भरपुर, हालो. १०
नंदन नवला चेडा, मामानी साते सती,
मारी भत्रीजी ने, बेन तमारी नंद,
ते पण गजवे भरवा, लाखण सांइ लावशे,
तुमने जोई जोई होशे, अधिको परमानंद, हालो. ११
रमवा काजे लावशे, लाख टकानो घुंघरो,

वली सुडा मेंना, पोपट ने गजराज,
सारस हंस कोयल, तीतर ने वली मोरजी,
मामी लावशे रमवा, नंद तमारे काज, हालो. १२
छप्पन कुमरी अमरी, जल कलशे नवरावीया,
नंदन तमने अमने, केली घरनी मांहे,
फूलनी वृष्टि कीधी, योजन एकने मंडले,
बहु चिंरजीवो आशीष, दीधी तुमने त्याहें, हालो. १३
तमने मेरुगिरि पर, सुरपतिये नवरावीया,
निरखी निरखी हरखी, सुकृत लाभ कमाय,
मुखडा उपर वारुं, कोटि कोटि चंद्रमां,
वली तन पर वारुं, ग्रह गणनो समुदाय, हालो. १४
नंदन नवला भणवा, निशाले पण मूकशुं,
गज पर अंबाडी, बेसाडी म्होटे साज,
पसली भरशुं श्रीफल, फोफल नागर वेलशुं,
सुखलडी लेशुं, निशालीयाने काज, हालो. १५
नंदन नवला मोटा, थाशो ने परणावशुं,
वहुवर सरखी जोडी, लावशुं राजकुमार,
सरखा सरखी वेवाई, वेवाणोने पधरावशुं,
वर वहुं पोंखी लेशुं , जोई जोईने देदार, हालो. १६
पियर सासर म्हारा बेहुं, पक्ष नंदन उजला,
मारी कुखें आव्या, तात पनोता नंद,
म्हारे आंगणे फलिया, सुरतरु सुखना कंद, हालो. १७
इणी परे गायुं माता, त्रिशला सुतनुं पारणुं,
जे कोई गाशे लेशे, पुत्र तणा साम्राज्य,
बीलीमोरा नगरे वर्णव्युं, वीरनुं हालरुं,
जय जय मंगल होजो, दीपविजय कविराज, हालो. १८

(१२)

चंदनबाला उभी, वाट जुवे छे. अट्ठमना पारणा मांय रे,
वीर प्रभु प्रेमे पधारजो, १
पगमां छे बेडीयो ने, मांथु मुंडाव्युं, अडद बाकुला कर मांय रे, वीर. २
एक पग द्वारने, एक पग बारणे, अतिथीनी वाट जोवाय रे, वीर. ३
नयरी कोसबीमां, वीर प्रभु आव्या, अभिग्रह करोडो कराय रे, वीर. ४
नीत नीत गोचरीये, घेर घेर फरता, लीधा विना पाछा फराय रे, वीर. ५
पांच मास वीत्या ने, पच्चीस दिवसो, अभिग्रह नही पूराय रे, वीर. ६

वीर प्रभु निरखी ने, चंदना हरखी, प्रभुजी ते देखी ने जाय रे, वीर. ७
आंसुडा सारती, चंदना विनवे, शा माटे पाछा जवाय रे, वीर. ८
आवो आवोने स्वामी, श्याने सिधावो, दिलडुं अमारुं दुभाय रे, वीर. ९
पूर्ण अभिग्रह, थयो जाणीने, चंदना ने द्वारे अवाय रे, वीर. १०
अडद बाकुला, वहोरावे चंदना, हैयामां हर्ष न माय रे, वीर. ११
बेडी तूटी ने, नुपूर बने छे. सोनेरी वाले सोहाय रे, वीर. १२
आकाशे वागी, देव दुंदुभि, फूलडानी वृष्टिथी त्यां,
जय जयकार वर्ताय रे, वीर.१३
बाकुला वहोरावी, मोक्ष जेणे लीधो,
श्याने ये चंदनबाला कहाय रे, वीर. १४
आत्म लब्धि, लक्ष्मण सूरिनी, कीर्ति जग फेलाय रे, वीर. १५

(१३)

(तर्ज : बोल आदीश्वर वाला)

तार तार महावीर अंतरा नाथ भमरजी रे, के भवजल पार उतार,
तु उपकारी सदा गुणवंतो, दर्शन थोरा करसो रे, के भवजल पार उतार.१
सूक्ष्म निगोदे बादर में, वहां काल अनंतो गुमाव्यो रे,
जन्म मरणरा दुखडा रो, कांई, पार न पायो रे, के भवजल. २
जल तुंबिका न्याय उर्ध्व, स्थावर स्थिर ठायो रे,
बिना भाव भव अटवी रो कांई, अंत न आयो रे, के भवजल.३
तर सामे तृष्णा नही छीपी, ओर द्रष्टि नहीं जागी रे,
महामोह की अंध धुंध में, वहां लय लागी रे, के भवजल. ४
आर्य अनार्य नरक निगोदे, उर्ध्व अधो धायो रे,
प्रबल मोह मिथ्यात्व उदये, दर्शन नहीं पायो रे, के भवजल. ५
भव में नाटक भमतो चेतन, नानाविध दुख पायो रे,
अकाम निर्जरा करता, कर्म ढाले आयो रे, के भवजल. ६
पुरव पुण्यरो खीलीयो अंकुरो, मनुष्य देह शुभ पायो रे,
आर्यक्षेत्र उत्तम कुल में भी, धर्म सवायो रे, के भवजल. ७
बालपणे हंस खेल कुदकर, टंटो झगडो कीनो रे,
ओलंभा घर घरा खमता, काम न कीनो रे, के भवजल. ८
घर घरा गपाटा मारे, चाडी चुगली खावे रे,
चोटे बेसी निंदा में थुं, अक्कल गुमावे रे, के भवजल. ९
पांच चोर लाग्या मुज केडे, भुंडो हाल कहायो रे,
विविध पणे इस दुनिया में, घणो नाच नचायो रे, के भवजल.१०
जैसे प्रकृति नाच नचावे, वैसे रंगभर खेले रे,
छेल छबीलो घणो हठीलो, नहीं कोई समजे रे, के भवजल. ११
इत्यादिक चउगति चोकमां विविध वेदना भुक्ति रे,

सहज भावरी आई वृत्ति, तब सुनी मुक्ति रे, के भवजल. १२
प्रबल मोह कोई मद हुओ, तब अंतर द्रष्टि जाणी रे,
दर्शन करतां जिनजीरा कांई, भ्रमणा सब भागी रे, के भवजल. १३
परिपक्व स्थिति हो जावे, तब सहज द्रष्टि खुल जावे रे,
गुरुराजरी पूर्ण कृपा से, आनंद चित्त जोग जगावे रे, के भवजल. १४
उदय प्रकृत्ति देख शुभाशुभ में समयमां चित्तलायो रे,
कपूर प्रभुरा ध्यान में, आनंद खूब पायो रे, के भवजल पार उतार. १५

दिवाली के स्तवन

(१)

सिद्धारथ कुल कमल दिवाकर, सोवन वान शरीर,
राणी तारो चिरंजीवो महावीर १
था था थैं थैं नाटक करता, भरी नवरावे नीर, राणी. २
आव्या इन्द्रथी आनंद पाम्या, धरता मुनि मन धीर, राणी. ३
भर निद्रामांथी त्रिशला रे जाग्या, बैठा हरख धरी धीर, राणी. ४
इन्द्र ते जिनना ओच्छव करता, मेरु शिखर भरे नीर, राणी. ५
सुर लोको सहुं जोवा रे मलिया, देवे पहेराव्या चीर राणी. ६
दिवाली दिन पोषह करीये, राजाए ढाल्या नीर, राणी. ७
आसो वदि अमावस्यानी राते, पाछली घडी एक सार, राणी. ८
गणणुं गणीए ने वीर समरीए, हणीये पाप अढार, राणी. ९
महावीर स्वामी मुक्ते रे पहोच्या, गौतम केवलज्ञान, राणी. १०
राणी तारो चिरंजीवो महावीर ११
पंडित लक्ष्मीविमल पभणे, देवे वखाण्या धीर,
राणी तारो चिरंजीवो महावीर १२

(२)

(तर्ज : सिद्धाचलना वासी जिनने लाखो प्रणाम)

आओ वीर प्यारे नैया डुब रही है, नैया डुब रही है, सिद्धारथ के तुम हो प्यारे
त्रिशला रानी के दुलारे, वीर कहाने वाले, नैया डुब रही है १
जन्मोत्सव प्रभु इन्द्र करावे, क्षीर सागर से कलश मंगावे,
मेरु हिलाने वाले, नैया. २
लागी लगन लेने की दीक्षा, ज्येष्ठ भ्रात की मानी शिक्षा,
विनय बताने वाले, नैया. ३
चंडकौशिक ने आके काटा, निकली श्वेत दुध की धारा,
स्वर्ग पहुंचाने वाले नैया. ४
पांवो में प्रभु खीर रंधावे, कानो में कीले गढवाये,
रहम बताने वाले, नैया. ५

गहरी गहरी नदियां नाव पुरावी बडे बडे भवरा,
नाव गहरापानी हो गई हानी मोरी नैया ६
जैसे चंदनबाला को तारी, गौतम को दीक्षा प्यारी,
तारो नाव हमारी, नैया. ७
आतमरामे आनंद गुण गावे, वल्लभ वीर के शरणे आवे,
पार लगाने वाले, नैया डुब रही है. ८

(३)

(तर्ज - साधुजीने तुबडु व्होरावीयुजी)

महावीर स्वामी प्रभु मोटका जो, जगमां जय जिनराज जो,
हस्तिपालरायनी विनंती जो, धारी पावापुरी आया जो,
दिन दिवाली नो दीपजो १
चरम चोमासु महावीर जो, रह्या पावापुरी मायं जो,
दर्शन करवाने कारणे जो, सुरनर आवे ने जाय जो, दिन. २
देश अढारनां राजीया जो, लगता पौषध दोय ठाय जो,
वीर वाणी वरसावता जो, पहोर सोले सुखदाय जो, दिन. ३
आसो वद अमावश्यानी जो, सांजे गौतम गणधार जो,
देवशर्मा ने प्रतिबोधवा जो, मुक्या वीरे तेणी वार जो. दिन. ४
वीरनो निर्वाण जाणी ने जो, आव्यां चोसठ इन्द्र जो,
रात मांहि रचना रची जो, जुवे नर नारीना वृंद जो, दिन. ५
कनेरी गोख ने गोखले जो, श्रेणी दीप समान जो,
रह्यो विविध रंगना जो, ठाम ठाम देवी ना गान जो, दिन. ६
ते दिन दीप मालिका जो, पड्युं जग मांहि नाम जो,
बे दिन अणसण पालीने जो, पहोंच्या शिवपुर गाम जो, दिन. ७
गौतम गया ते रात्रिमां जो, वीर पाम्या निर्वाण जो,
प्रातः काले तव आविया जो, देखी मूर्छाणा जाणजो, दिन. ८
वीर वजीर एम विनवे जो, सामु जुओ एक वार जो,
देवशर्माने में बुझव्यो जो, आप आणा नीरधार जो, दिन. ९
मौन धारी महावीर जो, केम बेठा आ वार जो,
रीसाणा शुं अपराधथी जो, सेवक मुक्यो विसर जो, दिन. १०
मुखडुं जोई प्रभु तुम तणुजो, झुरे सहुं परिवार जो,
हसी बोलवो रे वाल्हा जो, पामे हर्ष अपार जो, दिन. ११
दुःख घणा जन जाणीये जो, वीर समो नही कोय जो,
वीरना वजीर सरिखा जो चीवर भींजाये रोय जो, दिन. १२
संशय हवे कोण छेदशे जो, गौतम कहेशे कोण आय जो,
दिल दाजे छे माहरुं जो, दहाडा दोहिला थाय जो, दिन. १३

निरागी साथे नेहलो जो, रागीथी केम थाय जो,
वीतराग भाव ने भावता जो, नीज आतम नीमांय जो, दिन. १४
चढीया गौतम ध्यानमां जो, पाम्या केवलज्ञान जो,
देह दहन करी वीरनुं जो, पहोंच्या देवो विमान जो, दिन. १५
उत्तम दिन छे आजनो जो, करो ज्ञान दीवाय जो,
अलस आलस काढीने जो, पौषध करवो सदाय जो, दिन. १६
वीर वजीर दीप मालिका जो, गातां पूरे मन होड जो,
हीरविजय गुरु हीरलो जो, लब्धिविजय कहे कर जोड़ जो, दिन. १७

(४)

(तर्ज : महेंदी रंग लाग्यो)

दीवाली दिन वीरजीए पहोंच्या, मुक्ति मोजार रे, आंखडी आंसू भरी.
सुना दिवस सुनी रातडी रे, सुनो आ भारत देश रे, आंखड़ी. १
वीर प्रभुनुं निर्वाण जाणी ने रे, देव देवी आवे तत्काल रे, आंखडी.
शोक छवायो चिंहु दिशी रे, वीर वीर करे पोकार रे, आंखडी. २
देवोनो कोलाहल सुणीने, मूर्च्छित थया गौतमस्वाम रे आंखडी.
हां हां प्रभु तमे शुं कर्यु रे, मुकी गया गौतम बाल रे, आंखडी. ३
गौतम गौतम कही कोण बोलावशे, कोण करशे संभाल रे, आंखडी.
अंत समय दूर कर्या रे, जाण्यु के आवशे साथ रे, आंखडी. ४
घडी क्षण नही विचारता रे, छोडी गया केम नाथ रे, आंखडी.
निराधार बालक हुं थयो रे, केम जाय दिन रात रे, आंखडी. ५
प्रश्न कोणे जई पूछशुं रे, कोण देशे जवाब रे, आंखडी.
हुं रागीथी भूलीयो रे, वीर हता वीतराग रे, आंखडी. ६
मोक्ष सिधावे वीर प्रभु ने, गौतम ने केवलज्ञान थाय रे, आंखडी.
वल्लभ सहुने पाय लागता रे, महोत्सव करे इन्द्र आय रे, आंखडी. ७

श्री गौतमस्वामीजी विलाप स्तवन

(१)

दुहा

वीर प्रभु आज्ञा थकी, जाप उरे वीर लीज.
गया गौतम प्रतिबोधवा, देवशर्मा ए द्विज १
प्रतिबोध ए विप्रने, रात रह्यां त्यां वार,
शोक सहित देवो करे, कोलाहल आकाश २
स्तब्ध बनी चित्त जोडीयुं, कर्या साबदा कान,
पड्या शब्द देवो तणा, वीर लह्यां निर्वाण ३
फाल पडी तव उरमां, उपन्यो कंप शरीर,
बालक जेम रडी पड्या, याद करी प्रभुवीर ४

वज्र सम ए छातडी, हाथ रही न लगार,
ध्रुसक ध्रुसक लहे ध्रुसका, नेण वहे चौधार ५
कंपारी खूब जोशमां, व्यापी अंग उपांग,
वपु हाथमां नवि रह्युं, भोंय पड्या ते वार ६
आव्या शुद्धिमां यदा, बोले तेणी वार,
वीर वीर बस बोले एक, अन्य नही उच्चार
प्रीतवीर थी जेहती, उच्चारे ते वार,
भूतकाल ताजो करी, वली रड्या कै वार ८
हे प्रभो आ बालनी, लेशे खबरो कोण,
आधार तमे चाल्या गया, सहाय हवे अम कोण, ९
उगती शंका माहरी, पूछीश कोने नाथ,
देवे उत्तर कोण मुज, कवण राखशे लाज, १०
जनार जो जावा चाहे, रोक्या न रोकाय,
न आपे घटतुं कर्यु, आपने जे न सुहाय ११
पण हती जे प्रीतडी, न याद करी ते काल,
जवा उतावल मोक्षमां, त्यागी शुं तत्काल, १२

(२)

(तर्ज - दिल के अरमा आंसूओ में , तर्ज - प्रितडली बंधाणी रे)

शासन नायक प्राण प्रभु हे वीरजी, प्रीतडी तोडी मुज उपरथी साच जो,
अलगो कीदो आप कनेथी नाथजी, आवशे जाणे लेवा मुजमां भाग जो,
मन मंन्दिरना वासी व्हाला वीरजी, १
भूल्या साहिब हट करता न आवडे, होत कह्युं जो अधिकना मुज पासे जो,
कपट करी मुजथी शुं चाली निकल्या,
आवत नही तुम साथ खरे खर नाथ जो, मन.२
आप गया नोधारो मूकी मुजने, दुखना डुंगर उग्या दीन दयाल जो,
भरत भवि तुम प्रेम तले पागल बन्या,
छेह कीधो तेओने पण कृपाल जो, मन. ३
याद करी तुम दिव्य जीवन ए सौ रडे, शोक त्यजेना उर थकी,
दिन रात जो, मिथ्यामतिनो पार नहि आ विश्वमां,
हाम नथी हैयु शुं करीये तात जो, मन. ४
वातो शीतल वायु पण थंभी गयो,
नदी सागरना नीर पड्या कई स्थिर जो,
सरोवरमां हंसो चारो चरवो त्यजी,
मींची आंखो उभा शोके स्थिर जो, मन. ५
करमाया तरुवर सौ आप रवि विना, खरी पड्या कई भूपर पर्ण कुसुम जो,

त्यजी गुंजन पंखी सौ माले लई चढ्यां,
शोक तणी पशुओ पाडे कै बुम जो मन. ६
भूल्या साहिब ओलंभो तमने न हो, पाम्यो छुं हुं कर्म तणा फल मुज जो,
आप करो तेमां शंका शी माहरे, मान कीधुं हित घणुं छे मुजजी, ७
मनमां मोटी तुमने ए शंका हती, निर्वाण जो गोयम रहेशे पास जो,
खेद प्रसारी आत्म गुण हानी करे,
समज्यो साहिब भलु कर्यु छे काज जो, मन. ८
सत्य कहुं तो आप हता वीतराग जी, निरागी हो कसूरना तल भार जो,
गुण ए तुजमां जाण्यो में आजे विभो,
धिक धिक निंद आतम महारो तात जो, मन. ९
गौतम चढिया भाव मिनारा उपरे, भावना आवी एकत्व मन मांह्य जो,
निर्मल पंचम ज्ञान प्रकाश्युं ते समे,
सुरनर गण महिमा आनंद भर गाय जो, मन. १०

श्री साधारणजिन के स्तवन

(१)

(तर्ज : मथुरामां खेल खेली आव्या)

जिन जीवन प्रभु म्हारा, अबोलडा शाना लीधा छे,
तमे अमारा अमे तमारा, वास निगोदमां रहेता, अबोलडा.
काल अनंत स्नेही प्यारा, कदीय न अंतर करता,
बादर स्थावरमां बेहुं आपण, काल असंख्य निर्गमता, अबोलडा. १
विकलेन्द्रियमां काल संख्याता, विसर्या नवि विसरतां,
नरक स्थाने रह्या बेहु साथे, तिहां पण बहुं दु:ख सहता, अबोलडा. २
परमाधामी सन्मुख आपण, टगटग नजरे जोता,
देवना भवमां एक विमाने, देवना सुख अनुभवता, अबोलडा. ३
एकण पासे देव शय्यामां, थेई थेई नाटक सुणतां,
तिहां पण तमे अमे बेउ साथे, जिन जन्म महोत्सव करता, अबोलडा. ४
तिर्यचगतिमां सुख दु:ख अनुभवता, तिहां पण संग चलंता,
एक दिन समवसरणमां आपण, जिन गुण अमृत पीता, अबोलडा. ५
एक दिन तमे अने अमे बेउ साथे, वेलडीए वलगीने फरतां
एक दिन बालपणामां आपण, गेडीदडे नित्य रमता, अबोलडा. ६
तमे अमे बेउ सिद्ध स्वरुपी, एवी कथा नित्य करता
एक कुल गौत्र एक ठेकाणे, एकज थालीमां जमतां, अबोलडा. ७
एक दिन हुं ठाकोर तमे चाकर, सेवा माहरी करता,

आज तो आप थया जग ठाकोर, सिद्धि वधूना पनोता, अबोलडा. ८
काल अनंतनो स्नेह विसारी, काम कीधा मन गमता,
हवे अंतर कीम कीधु प्रभुजी, चौदराज जई पहोंच्या, अबोलडा. ९
दीपविजय कविराज प्रभुजी, जगतारण जगनेता,
निज सेवकने यशपद दीजे, अनंत गुणी गुणवंता, अबोलडा. १०

(२)

जेवो तेवो पण प्रभुजी, तमारो कहेजो,
आटली आ विनंती मारी, ध्यानमां लेजो, जेवो. १
तमे अमे रमीया भेला, नाथ अनंती वेला,
प्रीतलडी पाली समकित, सुखलडी देजो, जेवो. २
कागलनो कटको के, संदेशो नही पहोंचे,
कोणे कहुं जइने प्रभुने, संदेशो देजो, जेवो. ३
शक्ति नथी पण भक्ति, मुक्ति ने खेंचे,
लोह चुंबक लोहने, तुम निर्वह जो, जेवो. ४
जीवने देहलपुरमां, मोह लुंटारे घेर्यो,
धर्मराजाने प्रभुजी, व्हारे अही भेजो, जेवो. ५
मोटानो महिमा मोटो, आशरो मोटो,
सेवक रत्नविजय मांगे, शिवसुख देजो, जेवो. ६

(३)

(राग : अखंड सौभाग्यवती)

सेवा करता छूटे मारा प्राण, जीवन मारुं धन्य बने,
तारुं नित्य रहे एकतान, जीवन. १
मारा श्वासतणो विश्वास नही, सुखे जीववानी एके आश नहि,
मने आपजे अमृतदान, जीवन, २
ममता मायानी छायामां भान भूल्यो, चोराशीना चक्करमां खुब रुल्यो,
तने सोप्युं छे जीवन सुकान, जीवन. ३
आधि व्याधि उपाधिना ताप टले, भवि जीवने मुक्तिना मेवा मले,
भव सागरमां यान समान, जीवन. ४
तारुं शासन मल्युं मारा भाग्योदये, में आचर्युं नही मारा पापोदये,
भवोभव मानुं तारी आण, जीवन. ५
बुद्धितिलक तुं स्वामी छे माहरो, साचो सेवक बनुं प्रभु हुं ताहरो,
भुवनशेखर करे गुणगान, जीवन मारुं धन्य बने, जीवन. ६

(४)

(राग - आज मारा प्रभुजी)

आज मारा प्रभुजी, सामु जुओ ने, सेवक कही ने बोलवो रे,

एटलुं हुं, मन गमतुं पाम्यो, रुठडां बाल मनावो, मारा सांई रे, १
पतित पावन, शरणागत वत्सल, ए जस जगमां चावो रे,
मन रे मनाव्यां, विण नही मूंकु, एही ज मारो दावो रे, मोरा. २
कबजे आव्यां, विण नही मूंकु, जिहां लगे तुम सम थावो रे,
जो तुम ध्यान विना शिव लहीये, तो ते दाव बतावो, मारो. ३
महागोप ने, महानिर्यामक, एवा एवा विरुद धरावो रे,
तो तुम आश्रित ने उद्धरतां, बहु बहु शुं रे कहावो, मोरा. ४
ज्ञानविमल गुणनो निधि महीमा, मंगल एही वधावो रे,
अचल अभेदपणे अवलंबी, अहोनिश एहि दिल ध्यावो रे, मोरा. ५

(५)

मारी नावलडी मझधार, तारो प्रभु एक ज छे आधार,
शासन पामी ताहरुं रे नही चिंता तलभार,
पूरवना कोई अढलक पुण्ये, दीठो तुम देदार, तारो प्रभु, १
अनादिकालनी अंतरनी, प्रभु वात सुणावुं नाथ,
कृपा करीने तुं सांभलजे, बीजो नथी सांभलनार, तारो प्रभु. २
देव नरकने मनुष्य तिर्यचमां, दुःख सह्या वारंवार,
विषय कषायमां मस्त बनीने, फुल्यो हुं फुलणहार, तारो प्रभु, ३
वाणी विलासोने विषय विकारो, काया कुडु करनार,
इन्द्रियोनी प्रभु वासना भुंडी, लपटाणो तारणहार, तारो प्रभु, ४
क्रोध करीने मानी बनीने, कपट किधा बहुवार,
सहुथी भुंडो लोभ चंडाल छे, पापो करावे अपार, तारो प्रभु ५
तु वीतरागीने हुं छुं रागी, भक्ति करुं भारो भार,
भ्रमर इलिका न्याये प्रभुजी, थईशुं तुम सम नाथ ६
शांत मुद्रा तारी मुखनी सुन्दर, अखियन छे अविकार,
सविकारी अमे आव्यां शरणे, तार तार मुज तार, तारो प्रभु ७
मनमोहन प्रभु अरज अमारी, सुणजोने आ वार,
सुयश मांगे सेवा तुमारी, तरवा भवजल पार, तारो प्रभु, ८

(६)

सखी री आज आनंद की घडी आयी, करके कृपा प्रभु दरिशन दिनो,
भव की पीडा मिटाई, मोह निन्द्रा से जागृत करके,
सत्य की सान सुनाई तन मन हर्ष नमाई, सखी री १
नित्या नित्य का तोड़ बताकर, मिथ्या द्रष्टि हराई,
सम्यग ज्ञान की दिव्य प्रभा को, अंतर में प्रगटाई,
साध्य साधन दिखलाई सखी री. २

त्याग वैराग्य संयम योग से, निस्पृह भाव जगाई,
सर्व संग परित्याग कराकर, अलख धून मचाई,
अपगत दु:ख कहलाई, सखी री ३
अपूर्व करण गुण स्थानक, सुखकर श्रेणी क्षपक मंडवाई
वेद तीन का छेद कराकर, क्षीण मोह बनवाई,
जीवन मुक्ति दिलाई. सखी री ४
भक्त वत्सल प्रभु करुणासागर, चरण शरण सुखवाई
जश कहे ध्यान प्रभु का ध्यावत, अजर अमर पाई,
द्वंद सकल मिट जाई. सखी री. ५

आत्मस्वभाव स्तवन

(१)

(तर्ज : ये मां मने रमता ने बंधाई आई ये मां)

प्रभु वीरनो पंथडो व्हालो लागे हो राज, पंथी अमे परदेशना
पड्या, भूल्यानो हाथ कोई झालो हो राज, पंथी अमे परदेशना १

साखी

वास कीधो निगोदमां ने, काढ्यो काल अनंत,
एकज श्वासोश्वासमां, भव सत्तर विशेष,
ज्या काय एक, जीव जुंजवा हो राज. पंथी. २

साखी

आहार श्वास साथे सौ, मरवुं पण बहु वार,
फरी फरीने उपन्यो, एज निगोदमां नाथ,
आवा जन्म मरण, दुख भोगवी हो राज, पंथी. ३

साखी

भाडभुंजा धाणी भूंजे, उछले दाणा अपार,
पण तेमां पाछा पडे, निसरे कोक ज वार,
एवा भुंज गामथी अमे, निकल्या हो राज, पंथी. ४

साखी

आदु मूलामां उपन्यो, डुंगळी लसण मोजार,
मूल्य विना मने वेचीओ, ना रह्युं मान लगार,
आपी लसण कली, अदकलाणमां हो राज पंथी. ५

साखी

पंचेन्द्रियमां आथड्यो, निरधनीयो निरधार,
दु:ख सही हलको थयो, वली विकलेन्द्रिय मोजार,
ज्यां काल संख्याता, तिहां काढीया हो राज, पथी. ६

साखी

पंचेन्द्रिय तिर्यचमां, बलद थई बहु वार,
मारो खाधी आकरी, उपर परोणा भार,
मूंगा मूंगा सह्यां ए मारने हो राज, पंथी. ७

साखी

भरुचनां पाडा थई, खेंच्युं पाणी पखाल,
आंतरडा ऊंचा थया, चढता ऊंचा ढाल,
एक ढलक ढलक, आंसू ढलीयो हो राज, पंथी. ८

साखी

विकट पंथ वटावीने, नवभर नगर मोजार,
आर्य कुलमां उपन्यो, साथे रिद्वि अपार,
नवी राख्यो वलाव, कोई साथमां हो राज पंथी. ९

साखी

कंचन ने बीजी कामिनी, वली कुटुम्ब ने काय,
मोहे दूतो मोकल्या, उभा मारग माय,
राग द्वेष लूंटारे मने, लूंटीयो हो राज, पंथी. १०

साखी

लूंटी रिद्वि माहरी, कीयो हाल बेहाल,
शुद्ध शान सवी विसरी, पड्य मोह जंजाल,
न्याय मांगे शरण प्रभु वीरनुं हो राज, पंथी अमे परदेशना. ११

(२)

(तर्ज : वीराओ बाई रे मोमेरे वेगा आवजो)

चेतन नगरीमां मनराज रीसाईने बेठा, रीसाईने बेठा अवला मारगेजी पेठा,
के तो मनराज तमारो पोसाग सीवडावीए,
पोसाग सीवडावीएने मनडा मनावी ए मनराज, रीसाईने बेठा, १
जिन आणा आगलानो तपस्यानी टोपी,
धीरजना धोतीया पहेरावुं, हो मनराज. २
के तो मनराज तमारो शणगार सजावीये,
शणगार सजावीयेने मनडा मनावीए हो मनराज. ३
नवपद हार रुपी नवसेरो हार,
चारित्र चंदरवा, बंधावुं हो मनराज. ४
शुभ करणी कुंडलोने बुद्धि बेरसडा,
मित्रता मुगट धरावुं हो मनराज. ५
को तो मनराज तमने फूलेके चढावीए,

फूलके चढावी ए ने मनडा मनावीए हो मनराज. ६
हर्षना हाथीयोने ध्यान अंबाडी,
समकित सकडे फेरवावुं हो मनराज.७
के तो मनराज तमने विगते वधावी ए,
विगते वधावीए ने मनडा मनावीए ८
स्थिरताना थाल मांही मृदुताना मोती,
वैराग्य थालथी वधावुं, हो मनराज. ९
को तो मनराज तमने फूलके जमाडीए,
फूलके जमाडीए ने मनडा मनावीए हो मनराज. १०
संतोष शीरोने प्रेमनी पुरी,
भक्तिना भजीया पीरसावुं हो मनराज. ११
पुण्यना पुडला ने दयानी दाल,
सभ्यता शाक पीरसावुं हो मनराज. १२
ज्ञान गुंदवडाने दमनना दूध,
व्रतनी वेढमी परीसावुं हो मनराज. १३
पवित्र पेंडाने गम केरा गांठिया,
अनुभव अथाणां पीरसावुं हो मनराज. १४
शान्तिनी सेव ने सत्यनी साकर,
निरंजन घी पीरसावुं हो मनरजा. १५
को तो मनराज तमने मुखवास करावीए,
मुखवास करावीए ने मनडा मनावीए हो मनराज. १६
विवेक वाटकीमां श्रद्धा सोपारी,
स्याद्वाद तंबोल खवडावुं हो मनराज. १७
आनंद एलची ने लक्षण लवींगडा,
विनय वरीयाली चवरावुं हो मनराज. १८
बोधी बीज बाजीओ ने समभाव सोगठां,
चतुराई चोपट पथरावुं हो मनराज. १९
को तो मनराज तमने कबजामां लावीए,
कबजामां लावीए ने कर्म खपावीए हो मनराज. २०
मनरुपी घोडा ने सदगुरु लगाम,
उपदेश अंकुश धरावुं हो मनराज. २१
कहो तो मनराज तमारुं स्वरुप सजावीएने,
ज्योति जगाडीए हो मनराज. २२
अध्यात्म आरसी ने तत्त्व रमणता,
आत्मस्वरुपमां जमावीए हो मनराज. २३

धीरविमल कहे मन वस करी ने,
मन वस करीने शिवसुख धरीए हो मनराज. २४
मन वस करवामां श्रुत केरी सांकली,
मुक्तिना मारगमां खेलावुं हो मनराज. २५

श्री २४ तीर्थंकर पुत्र-पुत्री परिवार संख्या स्तवन

राजा राणा रे कुटुंब घणो रे मन. मोहन मेरे, दीपती कुंवरोनी ऋद्धि, मन. १
ऋषभदेवजी ने बेटी दोय, मन. भरतादिक सो पुत्र मन. २
संसारी सगपण जाणी ने, मन. काचा सुत ज्युं नाख्यो तोड, मन. ३
सघलाए संजम आदर्सो, मन. प्रभुजीए कीधो मुक्तिनो वार, मन. ४
अजितनाथजी ने बेटा नही, मन. सेजे टली गया पाप, मन. ५
संसारी सगपण जाणीने, मन. प्रभुजी ए मनमां नही आण्यो संताप, मन. ६
संभव अभिनंदन सुमतिजीने मन. त्रणे ने त्रण त्रण पुत्र, मन. ७
पद्मप्रभुजी ने तेरे बेटा, मन. ज्यारे भारी घरा रा पुत्र, मन. ८
सुपार्श्व ने सत्तर बेटा, मन. चंद्रप्रभुजी ने दश आठ पुत्र, मन. ९
सुविधीनाथजीने ओगणीश बेटा, मन. ज्यारे करता लेर, मन. १०
शीतलनाथ वासुपूज्यजीने, बारे दोय बेटा मन. श्रेयांसनाथजीने नवाणुं पुत्र, मन. ११
विमलनाथ कुंवर पदे, मन. संजम लेइ धार्यो करमशुं जुध, मन. १२
अनंतनाथजी ने अठयासी बेटा, मन. धर्मनाथजी ने ओगणीश पुत्र, मन. १३
शांतिनाथने दोढ क्रोड बेटा, मन. ज्यारे लागी जरघा जोत जगीश, मन. १४
कुंथुनाथजी ने दोढ क्रोड बेटा, मन. अरनाथजी ने स्वा क्रोड, मन. १५
मल्लिनाथजी कुंवारा रह्या, मन. ज्यारे बाल ब्रह्मचारी लार, मन. १६
मुनिसुव्रतनाथजी ने अगीयारे बेटा, मन. वली नेमीनाथजी बाल ब्रह्मचारी. मन. १७
पार्श्वनातजी बेटा नही, मन. महावीरस्वामीने बेटी एक, मन. १८
प्रभुजीए संजम आदर्यो मन. मुक्तिनगरीमां दीधी टेक मन. १९
इण चोवीशी मांहे सवाचार करोड बेटा, मन. वली चारसोने सात पुत्र, मन. २०
सत्तरह जिनजीने बेटा हुआ, मन. त्रण बेटीनी चाली वात. मन. २१
अजित विमल मल्लिनाथजी, मन. नमि नेमि पार्श्वनाथ जशवंत, मन. २२
शीतलवादी हुवा श्री महावीरजी, मन. ज्यारे बेटानो नही फंद, मन. २३
आरण घणा विण कया प्रभु, मन. भवजल पार उतार, मन. २४
ज्ञान सदा सुंदर भणो, मन. मंडल श्री महावीर, मन. २५

थोय संग्रह

श्री बीज तिथि स्तुति

अजुवाली ते बीज सोहावे रे, चंदा रूप अनुपम भावे रे,
चंदा विनतडी चित धरजो रे, श्री सीमंधरने वंदना कहेजो रे. १

वीश विहरमान जिनने वंदो रे, जिन शासन पूजी आणंदो रे,
चंदा एटलु काम मुज करजो रे, श्री सीमंधर ने वंदना कहेजो रे २
श्री सीमंधर जिननी वाणी रे, ते तो पिता अमीय समणी रे,
चंदा तमे सुणी एमने सुणावो रे, भव संचित पाप गमावो रे ३
श्री सीमंधर जिननी सेवा रे, जिन शासन आणंद मेवा रे,
तूं तो होजो संघनी माता रे, जगत् चंद्र विख्याता रे ४

श्री पंचमी तिथि स्तुतियां

(१)

श्री नेमिः पंचरुपत्रिदशपतिकृत-प्राज्यजन्माभिषेक,
श्चचंत् पंचाक्षमतद्विरमदभिदा, पंचवक्त्रोपषमानः,
निर्मुक्तः पंचदेहया : परम सुखमय प्रास्तकर्म प्रपंच,
कल्याणं पंचमी सत्तपसि वितनुतां, पचम ज्ञानवान्वः १
संप्रीणन् सच्चकोरान् शिव तिलकसमं, कौशिकानंद मूर्तिः,
पूण्याब्धि प्रीति दायी शितरूचिरिवयः स्वीयगोभिस्तमांसि,
सांद्राणि ध्वंसमान : सकल कुवलयो-ल्लासमुच्चैश्चकार,
ज्ञानं पुण्यज्जिनौघ सत्तपसि भविनां, पंचमीवासरस्य २
पीत्वा नानाभिधार्थामृतरससमं, यांति यास्यंति जग्मु,
जींवा यस्मादनेके विधिवद्स्मरतां प्राज्य निर्वाणपुर्याम्,
यात्वा देवाधिदेवा गमदशमशुधा-कुंडमामंदहेतु,
स्तत्पंचम्यांस्त पस्युद्यतविशदधियां भाविनामस्तु नित्यम ३
शक्रश्चचन्दर-विग्रहाश्च धरणब्रह्मेन्द्र शान्त्यंबिका,
दिक्पालाः सकपर्दिगोमुखगणि चक्रेश्वरी भारती,
येऽन्ये ज्ञान तपः क्रियाव्रत विधि, श्री तीर्थ यात्रादिषु,
श्री संघस्य तुरा चतुर्विध सुरा स्ते संतु भद्रं कराः ४

(२)

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमी जिणंद तो,
श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारद को चंद तो,
सहस वरस प्रभु आउखुं ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो,
अष्ट करम हेले हणी ए, पहोंता मुक्ति महंत तो १
अष्टापद पर आदिजिन ए, पहोंता मुक्ति मोझार तो,
वासुपूज्य पंचापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो,
पावापुरी नगरीमां वली ए, श्री वीर तणुं निर्वाण तो,
सम्मेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिववहु तेहनी आण तो २
नेमिनाथ ज्ञानी हुआ ए, भाखे सार वचन तो,
जीवदया गुण वेलडी ए, कीजे तास जतन तो,

मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो,
अनंत तीर्थकर एम कहे ए, परिहरीए परनार तो ३
गोमेध नामे यक्ष भलो ए, देवी श्री अंबिका नाम तो,
शासन सानिध्य जे करे ए, करे वली धर्मना काम तो,
तपगच्छ नायक गुणनीलो ए, श्री विजयसेन सूरिराय तो,
ऋषभदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ४

श्री अष्टमी तिथि की स्तुतियां

(१)

वीर जिनेसर कहे भवि भावे, अष्टमी व्रत आदरीये जी,
आठमे अनर्थदंड निवारी, आठे मद परिहरीये जी,
आठ पहोरनो अहोरत्त पोसो, आठमने दिन करीये जी,
आठ प्रवचन माता पाली, अष्ट महासिद्धि वरीये जी १
संभव वीर सुपास ए जिनना, आठम च्यवन कल्याण जी,
आद्य अजित नमि सुव्रत सुमति, ए आठमे जनमीया जाण जी,
चैतर वदि आठमे आदिसर, लहे दीक्षा महानाण जी,
पास नेमि अभिनंदन आठम, पद पाम्या निर्वाण जी २
चंद्रानन वारिषेण आठमे, अष्ट मे द्वीप पूजीजे जी,
अष्ट प्रकारी पूजा रचीने, अट्ठाई महोत्सव कीजे जी,
आठमे स्नात्र अट्ठोत्तरी कीजे, अष्ट करम छेदीजेजी,
आठमो अंग उपांग ए आठमे, सांभली शिवपद लीजे जी ३
शशीवयणी मृगनयणी सुंदर, देवी सिद्धाई सारी जी,
मातंग जक्ष महाबली सुरगण, सेवित समकित धारी जी,
विजयप्रभसूरि ध्यान धरी सदा, शासन सानिध्य कारी जी,
प्रेम विबुध सीस दर्शन देजो, सुखसंपत्ति हित धारी जी ४

(२)

श्री आदिनाथं नतनाकिनाथं, लक्ष्मीसनाथं कृत पापसाथं,
सर्वगतान्त कृत हेम हीरं, संसार दावानल दाह नीरं १
निर्वाणयोषिद् धनबद्ध रागं, सश्रीकभालं, गदशाकिनागं,
संस्तौमि सरणं शीत कर्म वीरं, सम्मोह धूली हरणे समीरं २
विसारदोन्तीत गुणत्य तानं, मीडे वृषांके विगताभिमानं,
सदब्रह्म शत्रा पहतं शरीरं, मायारसा दारण सार सीरं ३
कल्याणकन्दोदयकन्दकल्प, शदां शीतारथे कविधान कल्पे,
आदिप्रभु पुन्य समा भ्रकीरं, नमामि वीरं गिरि सार धीरम् ४

श्री एकादशी स्तुति

एकादशी अति रूअडी, गोविंद पूछे नमे,
किण कारण ए पर्व मोहोटुं, कहो मुजसुं तेम,

जिनवर कल्याणक अति घणां, एकसो ने पचास,
ते कारण ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उपवास १
अगीआर श्रावक तणी प्रतिमा, कही ते जिनवर देव,
एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिम रेव,
चोवीस जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग,
जेम गंग निर्मल नीर जेहवो, करो जिशुं रंग २
अगिआर अंग अलावीए, अगीआर पाठां सार,
अगीआर कवली वीटणा, ठवणी पुंजणी सार,
चावकी चंगी विविध रंगी, शास्त्र तणे अनुसार,
एकादशी एम उजवो, जेम पामीए भवपार ३
वर कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय,
भूज दंढ चंड अखंड जेहने, समरतां सुख थाय,
एकादशी एम मन वशी, गणी हर्ष पंडित शिश,
शासन देवी विघ्न निवारो, संघ तणा निश दिश ४

श्री तेरस स्तुति

भावानयानेगनरिद विंदं, सव्विंद संपुज्ज पयारविंदं,
वंदे जसोनिज्जिय चारुचंदं, कल्लाणकंदं पढमं जिणिदं १
चित्तेगहारं रिउदप्पवारं, दुक्खग्गिवारं, समसुक्खकारं,
तित्थेसरा दिंतु सया निवारं, अपार संसार समुद्द पारं २
अन्नाण सत्तुक्खलणे सुवप्पं, सन्नाय संहिलिय कोह दप्पं,
संसेमि सिद्धंत महो अणप्पं, निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं ३
हंसाधिरुढा वरदाणधन्ना, वाएसिरीदाण गुणो ववण्णा,
निच्चंपि अम्ह हवउप्पसन्ना, कुंदिंदु गोक्खीरतुसार वन्ना ४

श्री चैत्री पूनम स्तुति

विमलाचल मंडण, नाभिनरींद मल्हार,
जिहां बहु मुनि संयुक्त, पुंडरीक गणधार,
इण गिर आव्या, पंच कोडी परिवार,
चैत्री पूनम दिन, पाम्या भवजल पार १
अष्टापद गिरिवर, अर्बुद तीरथ उदार,
सम्मेतशिखर गिरि, श्री तीर्थ गिरनार,
इत्यादिक तीर्थ, सकल तीर्थ अवतार,
चैत्री पूनम दिने, त्रिभुवन तारणहार २
ए तीरथ यात्रा, कारण जे जन आवे,
छहरी विधिपूर्वक, करता शिवपद पावे,
मोटो गिरिमहिमा, सूत्रे गणधर बोले,
चैत्री पूनम दिन, ए समो कोई न तोले ३

ए गिरिवर उपरे, पंखी काग न आवे,
जे अभव्य हुइ जन, तेह न जाई नावे,
चक्केश्वरी गोमुख, तीरथ ना रखवाल,
मुनि रत्नविलम कहे, संघनी करे संभाल ४

श्री ऋषभजिन स्तुति

(१)

ऋषभ जिनेश्वर अति अलवेसर, केशर चरचित कायाजी,
श्री शेत्रुंजय गिरिवर मंडन, आदि जिनेसर रायाजी,
श्री सीमंधर स्वमुखे बोले, शेत्रुंजागिरि गुणवंतोजी
जे भवि भावधरीने सेवे, ते थाशे भंगवंतोजी १
केशर चंदन घसीय कर्पूर, मृगमद मांहि भेलीजेजी,
चउवीसे जिनवर पूजा कीजे, मानवभव फल लीजेजी,
कृष्णागुरु नो धूप उवेखी, नाटक जे जन करशेजी
इणि परे जिनवर पूजा करशे, ते भवसायर तरशेजी २
जिनवर वाणी अमीय समाणी, सुणीये निज मन आणीजी,
अंग इग्यार ने बार उपांग, छ छेद मूल सूत्रे गूंथाणीजी,
भणो भणावो लखो लखावो, ए समकितनी करणीजी,
जिनवाणी भविप्राणी निसुणी, तिणे शिवरमणी परणीजी ३
नव जोबन पुण्यवंती बाला, आवे अति सुकुमालाजी,
देवी चक्केश्वरी नयन विशाला, कंठे कुसुमनी मालाजी,
धरमी जनना संकट चूरे, आपे ऋद्धि भंडाराजी,
पंडित मेरुविजयनो सेवक, नयविजय जयकाराजी ४

(२)

प्रह उठी वंदु, ऋषभदेव गुणवंत,
प्रभु बेठा सोहे, समवसरण भगवंत,
त्रण छत्र विराजे, चामर ढाले इन्द्र,
जिनना गुण गावे, सुरनर नारीना वृंद १
बारपर्षदा बैसे, इन्द्र इन्द्राणी राय,
नव कमल रचे सुर, तिहां ठवतां प्रभु पाय,
देव दुंदुभि वाधे कुसुम धृष्टि बहु हुन्त,
एवा जिन चौवीस, पूजो एकण चित २
जिन जोजन भूमि, वाणीनो विस्तार,
प्रभु अर्थ प्रकाशे, रचना गणधर सार,
सो आगम सुणतां, छेदीए गति चार,
जिन वचन वखाणी, लीजे भवनो पार ३

जक्ष गौमुख गिरूवो, जिननी भक्ति करेव,
तिहां देवी चक्केसरी, विघन कोडी हरेव,
श्री तपगच्छनायक, विजयसेनसूरिराय,
तस केरो श्रावक, ऋषभदास गुण गाय ४

(३)

प्रभाते बालक, बपोरे जवान, सांजे बुढापो, एवा रुषभदेव १
प्रभाते केशर, बपोरे गुलाब, फुलडानी छाया, आंगीनो छे ठाठ २
दूर देशथी हुं आव्यो, दर्शन द्यो दातार, त्रण प्रदक्षिणा दईने, पेठो गंभारा मांही ३
चक्केसरी केसरी, संघना रखवाला, श्री संघना सुरा, विघ्नने दूर टाल ४

श्री शान्तिनाथ स्तुतियां

(१)

वंदो जिन शांति, जास सोवन कांति,
टाले भव भ्रांति, मोह मिथ्यात्व शांति,
द्रव्य भाव अरि पांति, तास करता निकांति,
धरता मन खांति, शोक संताप वांति १
दोय जिनवर नीला, दोय रक्त रंगीला,
दोय धोला सुशीला, काढता कर्म कीला,
न करे कोई हीला, दोय श्याम सलीला,
सोल स्वामीजी पीला, आपजो मोक्ष लीला २
जिनवरनी वाणी, मोह वल्लि कुपाणी,
सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी,
अर्थे गुंथाणी, देव मनुष्य प्राणी,
प्रणमो हित आणी, मोक्षनी ए निशाणी ३
वाघेसरी देवी, हर्ष हियडे धरेवी,
जिनवर पाय सेवी, सार श्रद्धा वरेवी,
जे नित्य समरेवी, दुःख तेहना हरेवी,
पद्मविजय कहेवी, भव्य संताप खेवी ४

(२)

शान्ति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे,
सुमित्रने घेर पारणुं, भव पार उतारे,
विचरंता अवनि तले, तप उग्र विहारे,
ज्ञान ध्यान एक तानथी, तीर्यचने तारे १
पास वीर वासुपूज्यजी, नेम मल्ली कुमारी,
राज्य विहुणा ए थया, आपे व्रत धारी,
शान्तिनाथ प्रमुखा सवी, लही राज्य निवारी,

मल्ली नेम परण्या नहि, बीजा घरबारी २
कनक कमल पगलां ठवे, जग शान्ति करीजे,
रयण सिंहासन बेसीने, भली देशना दीजे,
योगावंचक प्राणियां, फल लेता रीजे,
पुष्करावर्तना मेघमां, मगसेल न भीजे ३
क्रोड वदन शुकरारूढो, श्याम रुपे चार,
हाथ बिजोरू कमल छे, दक्षिण कर सार,
जक्ष गरुड वामपाणी ए, निकुलाक्ष वखाणे,
निर्वाणीनी वात तो, कवि वीर ते जाणे ४

(३)

(मालिनी वृत्तम्)

सुकृतकमलनीरं, कर्म्म गोसार सीरं, मृगरुचिरशरीरं, लब्ध संसार तीरम्,
मदनदहन वीरं, विश्वकोटीरहीरं, श्रयति गिरिप धीरं, शान्ति देवगंभीरम् १
जलधिमधुर नादा, निस्सदा निर्विषादाः, परम पदरमादा, स्त्यक्त सर्व प्रमादाः,
दलित परविवादा, भुक्तदत्त प्रसादा, मदकजशशिपादाः, पान्तु जैनेन्द्र पादाः २
दुरति तिमिर सूरं, दुर्म्मता स्कन्ध शूरं, कुहठ फणी मयूर स्वादुजिदहारहुरम,
अशिवगमन तूरं, तत्व भाजाम दूरं, श्रृणुत वचन पूरं, चार्हता कर्ण पूरम् ३
जिनपनवनसारा, नश्चमत्काराः, श्रृतमित सुखाराः, कर्म पाथोधिताराः,
शुभतरुजलधाराः, सारसा दृश्य धारा, ददतु सपरिवारा, मंगल सूपकाराः ४

श्री मल्लिजिन स्तुति

(तर्ज : वरस दिवसमां अषाढ चोमासु...)

श्री मल्लिकुमरी प्रभु मल्लिनाथ, नाम ग्रह्यां बे जोडी हाथ,
सांभलजो सहु साथ, नाम लिया दुःख दूर बलाय,
अघोर पाप ते कर्म पलाय, तो नाथ मल्लि मलाय,
मिथिला नगरी कुंभसेनराय, प्रभावती कूखे तुम्हे आय,
चउद सुपन दिखलाय, जब जगदीश योनि यंत्रे जाया,
छप्पन दिक्कुमरी जिन ध्यान, गोरडी सहुए गाया १
चोसठ इन्द्रासन डोलाय, सुघोषा घंट बजडाया,
सुरासुर इन्द्र बोलाय, मेरु उपर नमण कराय,
सहस अट्ठोतरी पूजा थाय, वांजित्र नृत्य गवाय,
मल्लिकुमरी पालणे पोढाय, अठ्ठाई महोत्सव नंदीश्वरे आय,
सुर निज थानिक जाय, इम नर नारी मोटा छोटा,
गुण गातां मल्लिकुमरी थया मोट, भोग करम कर्या खोटा २
षड्मित्र पूरव भवना राया, परणवा मल्लिकुमरी आया,
पूतली द्रष्टांत दिखलाया, एकेको कवल संचित जे छेद,

उघाडी ढांकण नाम निर्वेद, उछले दुर्गध पाम्या खेद,
शरीर अनित्य भवि पडि बोह्यां, षट्राय दीक्षा देई तीर्थकर सोह्यां,
त्रिगडे त्रिभुवन जग मोह्या, धरम ध्वज इन्द्रादिक धरंतां,
दुंदुभिगयेण गीत नृत्य करंता, परखदा बारे नित्य सुणंता ३
अमृत वाणी साकर सरखी, भविजन के हैया मांहे परखी,
त्रिलोकीजन नाम से हरखी, नीलावरण मोहन जयकारी,
सहस पंचावन आयु पाली, सम्मेतशिखर शिवधारी,
कुबेर यक्ष जिनधर्म दीपाय, चतुर्विध संघ सहु सुखपाय,
देवी वइरुट्टाने ध्याय, श्री विजयसेनसूरीश्वर राया,
बुध सुखरत्न गुरु प्रणमुं पाया, वनीत विजय गुण गाया ४

श्री मुनिसुव्रतजिन स्तुति-भरुचमंडन

(तर्ज : श्री शत्रुंजय तीरथ सार)

भरुच बंदरे बांधे विहार, श्री मुनिसुव्रतजिननो सार, शिल्पतणे अनुसार,
राजपुत्री सुदर्शना नामे, पूरवमां शमली ठाणे, जिहां नवकारने पामे,
साठ जोजन करी विहार, कर्यो अश्वतणो उपगार, चैत्य अश्व अवतार,
ते तीर्थपतिना पणमे पाय, पाप सकल भविना दूर थाय, भवथी पार पमाय .१
हिंसक प्राणी समळी जाणो, सात दिवसनी भूखी माणो, एकज ग्रास प्रमाणो,
लीधो मांसनो घातक जाणे, मारे तीर तदा ते टाणे, तरफडे तने प्राण,
नवकार मंत्र मुनि ते ठाणे, नांखे सुंदर तेना काने, बांधे पुण्य महाने,
अनंत श्री जिनना गुणगाने, महामंत्र नवकारना स्थाने, लीधो राजभवल्हाणे .२
राजपुत्री यौवनवय पामे, बेठी पिता पासे सभा ठामे, ठाठ व्यवहारीनो जामे,
छींक आवी व्यवहारीने ज्यारे, नवकार पद बोले ते त्यारे, जातिस्मरण तव धारे,
चौदपूरव नो सार वधारे, काम साध्युं तेणे ते नवकारे, आवी छे भवने किनारे,
आवी भरुचे देवल बांधे, पुण्यनी पेटी लीधी निजखांधे, श्री जिनधर्म आराधे. ३
वरुणदेव वरदत्ता देवी, भक्तिभावे जिनवर सेवी, मुक्ति छे जेमने लेवी,
रुमझुम (२) नूपुर रणके, गले मोतीनो हार ते झलके, रुप अधिक जस खलके,
जिनवर जोई मनडां मलके, शासन विघ्न हरे एक पलके, स्तवे जिणंद उमलके,
आत्मकमलमां लब्धि आणे, मुनिसुव्रत जिनभक्ति वखाणे, जन्म सफळ इम जाणे .४

श्री नेमीनाथ स्तुतियां

(१)

राजुल वर नारी, रूपथी रतिहारी,
तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी,
पशुआं उगारी, हुआ चारित्रधारी,
केवल श्री सारी, पामीया घाती वारी१

त्रण ज्ञान संयुता, मातानी कुंखे हुँता,
जनमे पुर हुंता, आवी सेवा करंता,
अनुक्रमे व्रत करंता, पांच समिति धरंता,
महियल विचरंता, केवली श्री वरंता २
सवि सुखर आवे, भावना चित लावे,
त्रिगडुं सोहावे, देव छंदो बनावे,
सिंहासन ठावे, स्वामीना गुण गावे,
तिहां जिनवर आवे, तत्व वाणी सुणावे ३
शासन सुरी सारी, अंबिका नाम धारी,
जे समकिती नरनारी, पाप संताप वारी,
प्रभु सेवा कारी, जाप जपीए सवारी,
संघ दुरित निवारी, पद्मने जेह प्यारी ४

(२)

सुर असुर वंदित पाय पंकज, मयणमल्ल मक्षोभितं,
घन सुघन श्याम शरीर सुन्दर, शंख लंछन शोभितं,
सिवादेवी नंदन त्रिजग वंदन, भविक कमल दिनेश्वरं,
गिरनार गिरिवर शिखर वंदु, श्री नेमीनाथ जिनेश्वरं १
अष्टापदे श्री आदिजिनवर, वीर पावापुरी वरुं,
वासुपूज्य चंपा नयर सिद्धा, नेम रेवागिरि वरुं,
समेतशिखरे वीश जिनवर, मुक्ति पहोता मुनिवरुं,
चोवीश जिनवर नित्य वंदु, सयल संघ सुहंकरुं २
अगीयार अंग उपांग बार, दशपयन्ना जाणिये,
छ छेद ग्रंथ पसत्थ सथ्था, चार मूल वखांणिये,
अनुयोगद्वार उद्धार-नंदी, सूत्र जिनमत गाइये,
वृत्ति चूर्णि भाष्य पिस्तालीश, आगम ध्याइये ३
दोय दिशि बालक दोय जेहने, सदा भवियण सुख करुं,
दु:ख हरि अंबा लुंव सुन्दर, दुरित दोहग अपहरुं,
गिरनार मंडन नेमी जिनवर, चरण पंकज सेविए,
श्री संघ सुप्रसन्न मंगल, करो ते अंबा देवीए ४

(३)

(यह स्तुति चार बोली जाती है.)

श्री नेमिनाथ महिमा भंडार १
सवि जिन बिंब जुहार २
तेहनी वाणी अमृतसार ३
अंबिका वाडी विघ्न निवार ४

(४)

गिरनार ते नेमनाथ गाजे रे, राणी राजुल ध्रुसके रुवे रे,
मारो शामलीओ गिरधारी रे, एने हरणो ने हरणी बचावे रे १
एक चडता चडती दीसे रे, अष्टापद जिन चोवीसे रे,
शेत्रुंजे जईने जुहारो, रे, आबुजी जई दुख वारो रे २
ज्यां चोत्रीश अतिशय छाजे रे, त्यां बेठा नेमिनाथ गाजे रे,
नेमिनाथनी वाणी मीठी रे, सहु सुणजो समकित प्राणी रे ३
त्यां बेठा अंबिका भारी रे, एने नाके सोनानी वाली रे,
सहु संघना संकट चूरे रे, नयविमलना वंछित पूरो रे ४

(५)

(यह स्तुति चार बार बोली जाती है)

गिरनारे गीरवो, व्हालो नेमी जिणंद्,
अष्टापद उपर, पूजी धरो आनंद,
सिद्धांतनी रचना, गणधर करे अनेक,
दीवाली दीवसे, द्यो अंबाई विवेक १

श्री पार्श्व जिन स्तुतियां

(१)

पास जिणंदा वामा नंदा, जब गर्भे फली,
सुपना देखे अर्थ विशेषे, कहे मघवा मली,
जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये,
नेमिराजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लिए१
वीर एकाकी चार हजारे, दीक्षा धुर जिनपति,
पास ने मल्ली त्रयशत साथे, बीजा सहसे व्रति,
षट् शत साथे संयम धरतां, वासुपूज्य जगधणी,
अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुजने घणी २
जिनमुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरु वेलडी,
द्राक्ष विहासे गई वनवासे, पीले रस सेलडी,
साकर सेंती तरणा लेती, मुखे पशु चावती,
अमृत मीठु स्वर्गे दीठुं, सुर वधु गावती ३
जगमुख दक्षो वामन यक्षो, मस्तके फलावली,
चार ते बांही कच्छपवाही, काया जस श्यामली,
चउकर प्रौढा नागारूढा, देवी पदमावती,
सोवन कान्ति प्रभुगुण गाती, वीर घरे आवती ४

(२)

सकल सुरासुर सेवे पाया, नयरी वाणारसी नाम सोहाया,
अश्वसेन कुल आया,
दश ने चार सुपन दिखलाया, वामादेवी माता जाया,

लंछन नाग सोहाया,
छप्पन दिग्कुमारी हुलराया, चोसठ इन्द्रासन डोलाया,
मेरुशिखर नवराया,
नील वर्ण तनु सोहे काया, श्री विजयसेन सूरीश्वर राया,
पास जिनेश्वर गाया १
विद्रुम वर्णा दोय जिणंदा, दो नीला दो उजवल चंदा,
दो काला सुख कंदा,
सोले जिनवर सोवनवर्णा, शिवपुरवासी श्री परसन्ना,
जे पूजे ते धन्ना,
महाविदेह जिन विचरंता, वीसे पूरा श्री भगवंता,
त्रिभुवन ते अरिहंता,
तीरथ स्थानक नामुं ए शिश, भाव धरीने विश्वावीस,
श्री विजयसिंह सूरीश २
सांभल सखरा अंग अगियार, मन शुद्धे उपांगज बार,
दश पयन्ना-सार,
छेद ग्रंथ वली षट् विचार, मूल सूत्र बोल्या जिन चार,
नंदी अनुयोग द्वार,
पणयालीश जिन आगम नाम, श्री जिन अरथे भाख्या जाम,
गणधर गुंथे ताम,
श्री विजयसेन सूरींद वखाणे, जे भविका निज चित्तामां जाणे,
तस घर लक्ष्मी जाणे ३
बीजापुरमां स्थानक जाणी, महिमा म्होटे तुं मंडाणी,
धरणींद्र धणीआणी,
अहोनिश सेवे सुर वैमानी, परचो पूरण तुं सर्पराणी,
सेवक पार उतारो,
श्री विजयसेनसूरीश्वरराया, श्री विजयदेवगुरु प्रणमी पाया,
ऋषभदास गुण गाया ४

(३)

(तर्ज : मनोहर मूरति महावीर तणी)

शंखेश्वर पास जुहारीये, देखी लोचन ठरीये,
पूजी प्रणमीने सेवा सारी, भवसायर पार उतारीये १
शंत्रुजय गिरनारगिरि वर्या, प्रभु आबु अष्टापद शिववर्या,
एवा तीरथ पाय लागीये, झाझा मुगति तणा सुख मांगीये २
समोसरण आवी पर्षदा मले, स्वामी उपर छत्र चामर ढले,
वाणी सुणता सवि पातक टले, भवि जीवनां मनवंछित फले ३
पद्मावती परचो पूरती, सेवकनां संकट चूरती,

पार्श्वजिननो महिमा धरावती, वीरविजयना वंछित पूरती ४

(४) श्री भीडभंजन पार्श्वनाथ स्तुति

(यह स्तुति चार बार बोली जाती है)

भीडभंजन पास प्रभु समरो, अरिहंत अनंतनुं ध्यान धरो,
जिनागम अमृत पान करो, शासन देवी सवि विघ्न हरो १

श्री महावीर जिन स्तुतियां

(१)

मनोहर मूर्ति महावीर तणी,
जिणे सोल पहोर देशना पभणी,
नव मल्ली नव लच्छी नृपति सुणी,
कहि शिव पाम्या त्रिभुवन धणी १
शिव पहोत्या रिषभ चऊदश भक्ते,
बावीस लह्या शिव भास थीते,
छठ्ठे शिव पाम्या वीर वली,
काती वदि अमावस्या निरमली २
आगामी भावी भाव कह्यां,
दीपावली कल्पे जेह लह्या,
पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्या,
सवी तहत्ति करीने सद्ह्यां ३
सवि देव मली उद्योत करे,
परभाते गौतम ज्ञान वरे,
ज्ञानविमल सदा गुण विस्तरे,
जिन शासनमां जयकार करे ४

(२)

जय जय भवि हितकर, वीरजिनेश्वर देव,
सुरनरना नायक, जेहनी सारे सेव,
करुणारस कंदो, वंदो आनंद आणी,
त्रिशलासुत सुन्दर, गुणमणि केरो खाणी १
जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे,
पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे,
ते च्यवन जन्म व्रत, नाण अने निर्वाण,
सवि जिनवर केरा, ए पांचे अहिठाण २
जिहां पंच समिति युत, पंच महाव्रत सार,
जेहमां प्रकाश्या, वली पांचे व्यवहार,
परमेष्ठि अरिहंत नाथ सर्वज्ञ ने पारग,
एह पांच पदे लह्यां, आगम अर्थ उदार ३

मातंग सिद्धाई, देवी जिन पद सेवी,
दुःख दुरित उपद्रव, जे टाले नित मेवी,
शासन सुखदायी, आई सुणो अरदास,
श्री ज्ञानविमल गुण, पूरो वंछित आश ४

(३)

(यह स्तुति चार बार बोली जाती है)

वीरं देवं नित्य वंदे,
जैना पादा युष्मान पान्तु
जैनं वाक्यं भूयादू भूत्यै,
सिद्धा देवी दद्यात् सौख्यं १

(४) गंधार मंडन श्री महावीर जिन स्तुति

गंधारे महावीर जिणंदा, जेने सेवे सुर नर इंदा, दीठे परमानंदा,
चैतर शुद तेरस दिन जाया, छप्पन दिक्कुमारी गुणगाया, हरख धरी हुलराया,
त्रीश वरस पाली घरवास, मगरस वद दशमी व्रत जास, विचरे मन उल्लास,
ए जिन सेवा हितकर जाणी, एहथी लहीये शिव पटराणी पुण्यतणी ए
खाणी, १
ऋषभ जिनेश्वर तेर भव सार, चंद्रप्रभ भव आठ उदार, शान्तिकुमार भव बार,
मुनिसुव्रत ने नेमकुमार, ते जिनना नव नव भव सार, दश भव पार्श्वकुमार,
सतावीश भव वीरना कहीये, सत्तर जिनना त्रण त्रण लहीये, जिन वचने सद्हीए,
चोवीश जिनो एह विचार, एहथी लहीये भवनो पार, नमतां जय जय कार. २
वैशाख शुद दशमी लही नाण, सिंहासन बेठा वर्धमान, उपदेश देवे प्रधान,
अग्नि खूणे हवे पर्षदा सुणीय, साध्वी वैमानिक स्त्री गणीये,
मुनिवर त्यांही ज भणीये, व्यंतर ज्योतिषी भुवनपतिसार,
एहवे नैऋत्य खूणे अधिकार, वायव्य खूणे एनी नार,
इशाने सोहीये नरनार, वैमानिक सुर थई पर्षदा बार,
सुणे जिनवाणी उदार, ३
चक्केसरी अजिया दुरिआरी, काली महाकाली मनोहारी, अच्चुआ संता सारी,
ज्वाला सुतारया ने असोया, सिरीवत्सा वरचंडा माया,
विजयांकुसी सुखदाया, पन्नति निव्वाणी अच्चुआ धरणी,
वैरुट्याच्चुआ गंधारी अघहरणी, अंब पउमा सुखकरणी,
सिद्धाई शासन रखवाली, कनकविजय बुध आनंदकारी,
जसविजय जयकारी, ४

(५)

सरर खललल, ध्रसग् छब छब, नवण जल क्रोडो मणो,
खण खण त्रोंड, त्रोंड तणक टन् टन्, घोष कलशाओ तणो,
सुर संघ नाचे, छणण छुम छुम, रणण झुं झुं जय करो,

ए वीर विभुनो, जन्म महोत्सव, जगतनुं मंगल करो, १
पिपि पीव पु पूं पूं, तणण तिंती, भणण भुं भुं वागता,
धप खणण खलबल, तडाक् ध्रीं ध्रीं, धडाक् धूं धूं गाजता,
जय जय सुनन्दा, जयउ भद्दा, जयउ खत्तीउ बलधरो,
चोविस जिननो दीक्षा उत्सव, शांति सदुण पाथरो, २
गम सारी धपनी, तुं तिणिं तूं, वीणा वागे सुस्वरे,
धाधा ततक् धीं, धपम ध्रों ध्रों, देव वाजां अनुसरे,
स्वाद्वाद नय निक्षेप भंगी, द्रव्य गुणनो सागरो,
श्री वीर वाणी धोध सहुनो, कर्म मल दूरे करो, ३
कडकडड् भूस, कड्डाक् करी, भडवीर भैरव चूरतो,
धम धम अवाजे चालतो, जिन भक्त पडचा पूरतो,
चारित्र दर्शन, विघ्न भंजन, धर्म रक्षा तत्परो,
मणिभद्रजी कल्याण माला, संघने कंठे धरो, ४

(६)

(मालिनी छन्दः)

कनकसम शरीरं, प्राप्त संसार तीरं, कुमतघन समीरं, क्रोध दावाग्निनीरम्,
जलधिजलगभीरं, दम्भूसार सीरं, सुरगिरिसमधीरं स्तोमि भक्त्या च वीरम्. १
नमदखिल सुरेन्द्राः, पापपंके दिनेन्द्राः, कुमत मृगमृगेन्द्राः, कर्मवृक्षे गजेन्द्राः,
सुगुणमणि समुद्राः, साधु चकोर चन्द्राः, गतघन तरतन्द्रा पान्तु वः, श्री जिनेन्द्राः २
जिन वदन ह्रदान्तात्, निर्गता वार्द्धिकान्ता,
सुपत्सलिल पूता, पापपं कौधहंत्री,
जन्ममरण नित्या द्वादशांगी विचित्रा,
मुनिजन हितकर्त्री, मोक्ष सौख्य प्रदात्री, ३
जितनयन कुरंगी, श्याम वेणी भुजंगी, जिनमुखकज भृंगी,
श्वेत निविऽजडिम रोग, ध्वंसने मातृ लिंगी,
श्रृत निचयवरांगी, देही मे देवी सद्गीः ४

श्री सिद्धचक्र स्तुतियां

(१)

वीर जिनेश्वर अति अलवेसर, गौतम गुणना दरियाजी,
एक दिन आणा वीरनी लइने, राजगृही संचरिया जी,
श्रेणिक राजा वंदन आव्या, उलट मनमां आणी जी,
पर्षदा आगल बार विराजे, हवे सुणो भवि प्राणी जी १
मानव भव तमे पुण्ये पाम्या, श्री सिद्धचक्र आराधो जी,
अरिहंत सिद्ध सूरि अवज्झाया, साधु देखी गुण वाधो जी,
दरिसण नाण चारित्र तप कीजे, नवपद ध्यान धरीजे जी?
धुर आंबिल तप विधिसुं करतां, वांछित सुख कोणे लीधो जी?

मधुर ध्वनि बोल्या श्री गौतम, सांभलो श्रेणिकराय वयणा जी,
रोग गयो ने संपदा पाम्या, श्री श्रीपाल ने मयणा जी ३
रू मझुम करती पाये नेउर, दीसे देवी रूपाली जी,
नाम चक्केसरी ने सिद्धाई, आदि जिनवर रखवाली जी,
विघ्न क्रौड हरे सहु संघना, जे सेवे एना पाय जी,
भाणविजय कवि सेवक नय कहे, सानिध्य करजो माय जी ४

(२)

अरिहंत नमो, वली सिद्ध नमो, आचारज वाचक साधु नमो,
दर्शन ज्ञान चारित्र नमो, तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो १
अरिहंत अनंत थया थाशे. वली भाव निक्षेपे गुण गाशे,
पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं, आंबिल तप गणणुं गणो विधिशुं २
छःरि पाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परे भव तरशे,
सिद्धचत्रने कुण आवे तोले, एहवा जिन आगम गुण बोले ३
साडा बार वर्ष तप पूरो, ए कर्म विदारण तप शूरो,
सिद्धचक्रने मन मंदिर थापो, नय विमलेश्वर वर आपो४

(३)

प्रह उठी वंदु, सिद्धचक्र सहाय,
जपीये नवपदनो, जाप सदा सुखदाय,
विधि पूर्वक ए तप, जे करे थई उजमाल,
ते सवि सुख पामे, जिम मयणा श्रीपाल १
मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत,
तस कर्म संयोगे, कोढी मिलीयो कंत,
गुरु वयणे तेने, आराध्युं तप एह,
सुख संपदा वरीया, तरीया भवजल तेह २
आंबिल ने उपवास, छट्ठ वली अठम दश,
अट्ठाई पंदर मास, छ मास विशेष,
इत्यादिक तप बहु, सहु मांहि शिरदार,
जे भक्तिण करशे, ते तरशे संसार ३
तप सानिध्य करशे, श्री विमलेश्वर यक्ष,
सहु संघना संकट, चूरे थई प्रत्यक्ष,
पुंडरिक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य,
बुध दर्शनविजय कहे, पहोचे सकल जगशि ४

(४)

जिन शासन वंछित, पुरण देव रसाल,
भावे भवि भणिये, सिद्धचक्र गुण माल,
त्रिहुंकाले तेहनी, पूजा करे ऊजमाल,

ते अजर अमर पद, सुख पामे सुविसाल १
अरिहंत सिद्ध वंदो आचारज उवज्झाय,
मुनि दरिशणनाण, चरण तप ए समुदाय,
ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय,
ए ध्याने भविना, भवकोटी दु:ख जाय २
आसो चैतरमां सुद सातमथी सार,
पूनम लगी कीजे, नव आबिल निरधार,
दोय सहस गणणुं, पद सम साडा चार,
एकाशी आंबिल, तप आगम अनुसार ३
श्री सिद्धचक्र सेवक, श्री विमलेसर देव,
श्रीपाल तणी परे, सुख पूरे स्वयमेव,
दु:ख दोहग नावे, जेह करे तेहनी सेव,
श्री सुमति सुगुरुनो, राम कहे नित्य मेव ४

श्री वर्धमान तप स्तुति

वर्धमान तप ओली पालुं, त्रिविधे त्रिविधे पातक टालुं,
शरीर अने जीव भिन्न निहालुं, श्रावक गुणठाणुं अजवालुं १
अतीत अनागत ने वर्तमान, त्रिगडे बेसी करे व्याख्यान,
कोई नही ए तपनी तोले, वीश विरहमान इम बोले २
अंतगड आगमनी वाणी, आचार दिनकर ग्रंथ निशानी,
तप शूरा अणगार कहीजे, पूजी प्रणमी लाहो लीजे ३
शासन सुरवर करे सहाया, तपसी नरना पूजे पाया,
विमलेश्वर यक्ष प्रसन्न, धर्मरत्नना करे जतन्न ४

श्री पजूसण स्तुतियां

(१)

(तर्ज : वीर जिनेश्वर अति अलवेसर)

वीर जिनेश्वर अति अलवेसर, प्रात: समय प्रणमीजे जी,
वडा कल्पनो वखाण सुणीने, छट्ठ तणो तप कीजे जी,
जन्म कल्याणक पडवा दिवसे, ओच्छव महोत्सव कीजे जी,
पूरव पुण्ये पर्व पजुसण, आव्या लाहो लीजे जी १
प्रात: समे दीक्षा कल्याणक, बीजे दिवसे चित्तधरीए जी,
सांज समे स्वामी मुक्ते पहोंच्या, तास भवियण अनुसरीए जी,
त्रीजे दिन आदि पास नेमिसर, पंच कल्याणक सुणीये जी,
चोवीश जिनना अंतर कहीये, सत्य वचन चित्तधरीये जी २
आठ दिवस लगी अमर पलावो, दान संवत्सरी दीजे जी,
तप अट्ठम करी बारसो सुणीये, मुगति तणां फल लीजे जी,
थिरावली ने समाचारी, पट्टावली गुण कीजे जी,

लखो लखावो भणो भणावो, शास्त्र सो प्रणमीजे जी ३
संवच्छरी पडिक्कमणुं कीजे, खामणा साथे करीए जी,
पारणे स्वामिवच्छल करता, पुण्य भंडारने भरीये जी,
शासन देवी समकित धारी, संघ सकल हितकारी जी,
विजयसिंहसूरि पभणे, बुद्धिविजय जयकारी जी ४

(२)

पर्व पजुसण पुण्ये पामी, वीर वचन आराधो जी,
सामायिक पडिक्कमणुं पोसह, भाव सहित सहु सोधो जी,
मनुष्य देह श्रावक जन्मारो, ए सवि दुर्लभ लाधो जी,
समकित शुद्ध करो भवि किरिया, जिम गुण ठाणे वाधो जी १
चोविश जिनवर केरो महातीम, कल्पसूत्र मांहे भाख्यु जी,
पुण्यवंत जे श्रवणे सांभली, हृदय कमल मांहे राख्युं जी,
क्रोध माया लोभ मद केरो, वीरे दुषण दाख्यो जी,
चार प्रकारे धर्म प्रकास्यो, शिवरमणी सुख चाख्यो जी २
आठ दिवस अट्ठाई पालो, कर्म काठीया टालो जी,
जीवदया जतन सुं पालो, मन संवेगे वालो जी,
मायानो मकरजो मालो, टालो चंचल चालो जी,
जन्म जरा मरण भय टालो, सिद्धनां सुख निहालो जी ३
नव वखाण श्रवणे सांभली, देह निर्मल निहालो जी,
छट्ठ अट्ठमनो तप आराधी , विधन विशेष जाय जी,
श्री तपगच्छ गुरु धर्मधुरंधर विजय देवसूरि भाखे जी,
जक्ष चक्केश्वरी सानिध्य करजो, संतोषी गुण गाय जी ४

(३)

पर्व पजुसण पुण्ये पामी, श्रावक करे ए करणी जी,
आठे दिन आचार पलावे, खांडण पीसण धरणी जी,
सूक्ष्म बादर जीव न विणासे, दया ते मननां जाणे जी,
वीर जिनेश्वर नित्य पूजीने, शुद्ध समकित आणे जी १
व्रत पाले ने धरे ते शुद्ध, पाप वचन नवि बोले जी,
केसर चंदने जिन सवि पूजे, भवभय बंधन खोले जी,
नाटक करीने वाजिंत्र वगाडे, नर नारीने टोले जी,
गुणगावे जिनवरना इणविध, तेहने कोई न तोले जी २
अट्ठम भक्त करी लई पोसह, बेसी पौषघशाले जी,
राग द्वेष मद मच्छर छांडी, कूड कपट मन टाले जी,
कल्पसूत्रनी पूजा करीने, निशदिन धर्मे म्हाले जी,
एहवी करणी करतां श्रावक, नरक निगोदादि टाले जी ३
पडिक्कमणुं करीये शुद्ध भावे, दान संवत्सरी दीजे जी,

समकितधारी जे जिनशासन, रात दिवस समरीजे जी,
पारणे वेला पडिलाभी, मनवांछित महोत्सव कीजे जी,
चित्त चोखे पजुसण करशे, मन मान्या फल लेशे जी ४

(४)

सतरभेदी जिन पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजे जी,
ढोल ददमा भेरीने फेरी, झलरी नाद सुणीजे जी,
वीरजिन आगल भावना भावी, मानवभव फल लीजे जी,
पर्व पजुषण पूरव पुण्ये, आव्या एम जाणीजे जी १
मास पास वली दसम दुवालस, चत्तारि अट्ठ कीजे जी,
उपर वली दश दोय करीने, जिन चोवीसे पूजीजे जी,
वडा कल्पनो छट्ठ करीने, वीर चरित्र सुणीजे जी,
पडवाने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजे जी २
आठ दिवस लगे अमर पलावी, अट्ठमनुं तप कीजे जी,
नागकेतुनी परे केवल लहिये, जे शुभ भावे रहिये जी,
तेला घर् दिन त्रण कल्याणक, गणधर वाद वदीजे जी,
पास नेमीश्वर अंतर त्रीजे, ऋषभ चरित्र सुणीजे जी ३
बारसो सूत्र ने समाचारी, संवच्छरी पडिकमीए जी,
चैत्य प्रवाडी विधिशुं कीजे, सकल जंतुने खमीजे जी,
पारणाने दिने स्वामिवच्छल, कीजे अधिक वडाई जी,
मानविजय कहे सफल मनोरथ, पूरे. देवी सिद्धाइ जी ४

श्री शत्रुंजयगिरि स्तुतियां

(१)

शत्रुंजय मंडण, ऋषभ जिणंद दयाल,
मरुदेवा नंदन, वंदन करूं त्रिकाल,
ए तीरथ जाणी, पुरव नवाणुं वार,
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार १
त्रेवीश तीर्थङ्कर, चढीया इण गिरिराय,
ए तीरथना गुण, सुरअसुरादिक गाय,
ए पावन तीरथ, त्रिभुवन नहि तस तोले,
ए तीरथना गुण, सीमंधर मुख बोले २
पुंडरिकगिरि महिमा, आगममां परसिद्ध,
विमलाचल भेटी, लहिये अविचल रिद्ध,
पंचमी गति पहोंता, मुनिवर कोडा कोड,
इण तीरथ आवी, कर्म विपाक वीछोह ३
श्री शत्रुंजय केरी, अहोनिश रक्षा कारी,
श्री आदिजिनेश्वर, आण हृदयमां धारी,

श्री संघ विघन हर, कवड जक्ष गणभूर,
श्री रविबुध सागर, संघना संकट चूर४

(२)

(यह स्तुति चार बार बोली जाती है ।)

विमलगिरि सहु तीरथराजा, नाभिके नंदन जिनवर ताजा,
भवजलधि को जहाजा,
नेमिविना जिनवर त्रेवीश, समवसरे सहु विमल गिरीश,
भविजन पूरे जगीश,
सिद्धक्षेत्र जिन आगम भासे, दूर भवि अभव्य निरासे,
गिरि दरिसण नवि पासे, कवड यक्ष चक्केसरी देवी,
सानिध्य कर सुख लेवी, आतम सफल करेवी, १

श्री पुंडरीकस्वामी स्तुति

(यह स्तुति चार बार बोली जाती है) **(तर्ज : वीर जिनेश्वर अति अलवेसर)**

पुंडरीक मंडण पाय प्रणमीजे, आदीश्वर जिनचंदाजी,
नेम विना त्रेवीश तीर्थंकर, गिरि चढीया आणंदाजी,
आगम माही पुंडरीक महिमा, भाख्युं ज्ञान जिणंदाजी,
चैत्री पूनम दिन देवी चक्केसरी, सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी,

श्री वीशस्थानक स्तुति

वीशस्थानक तप विश्वमां मोट, श्री जिनवर कहे आपजी,
बांधे जिनवर त्रीजा भवमां, करीने स्थानक जापजी,
यथा थशे सवि जिनवर अरिहा, ए तपने आराधीजी,
केवलज्ञान दर्शन सुख पाम्या, सर्वे टाली उपाधिजी १
अरिहंत सिद्ध पवयण सूरि स्थविर, वाचक साधु नाणजी,
दर्शन विनय चरण बंभ किरिया, तप करो गोयम ठाणजी,
जिनवर चारित्र पंचविध नाण, श्रुत तीर्थ एह नामजी,
ए वीशस्थानक आराधे ते, पामे शिवपद धामजी २
दोय काल पडिक्कमणुं पडिलेहण, देववंदन त्रणवारजी,
नोकारवाली वीश गुणीजे, काउसग्ग गुण अनुसारजी,
चारसो उपवास करी चित्त चोखे, उजमणुं करो सारजी,
पडिमा भरावो संघ भक्ति करो, ए विधि शास्त्र मोजारजी ३
श्रेणिक सत्यकि सुलसा रेवती, देवपाल अवदातजी,
वीशस्थानक तप सेवा महिमा ए, थया जगमांहि विख्यातजी,
आगम विधि सेवे जे तपीया, धन्य धन्य तस अवतारीजी,
विघ्न हरे तस शासन देवी, सौभाग्य लक्ष्मी दातारजी ४

श्री रोहिणी स्तुति

श्री वासुपूज्य जिनेश्वर, पूजो मनने रंगे,

रोहिणी नक्षत्रे, उपवास करो अति चंगे,
सात वर्ष उपरे, सात मास परिमाण,
ए तप रोहिणीनो, आपे महानंद ठाण १
वासुपूज्यजी नंदन, नरपति मघवा नाम,
तस पत्नी लक्ष्मी, तस तनया अभिराम,
ते रोहिणी जोवनवंती, परणी राय अशोक,
एम सकल जिनेश्वर, भाखे बुझववा लोक २
सुंदरी एक रडती, देखी पूछे नारी,
कुण नाटक होवे, नृप कहे तुं मद भारी,
राय नांख्यो धरती, अंगज तोहे प्रसन्न,
इम आगम वाणी, निसुणो तेम धन्य धन्य ३
तव शासन देवी, धर्यु सिंहासन तास,
राजाने राणी, मन हुवो हर्ष उल्लास,
रोहिणी तप कारक, एम लहे वंछित भोग,
बुध हंसविजय शिष्य, धीरनो सौख्य संजोग ४

श्री दीपावली स्तुतियां

(१)

(तर्ज : श्री महावीर मनोहरुं)

सुख संपत दायक वीरजी, सोवन्न वरण सोहे,
त्रिशला नंदन गुण नीलो, दीठे भवि मन मोहे,
सिद्धार्थ सुत दिन मणि, मोह तिमिर ने खोहे,
सोल पहोर दीये देशना, भविजन ने पडिबोहे, १
देव शर्माने बुझवा, मोकल्या गौतमस्वाम,
दीपाली दिन दीपते, पाम्या शिवपुर ठाम,
वलता सुरमुख सांभली, वीर तणुं निर्वाण,
पडवे गौतमस्वामीने, उपनुं केवलनाण, २
अतीत अनागत थया थाशे, कल्याणक अनंत,
स्वाति नक्षत्रे साहिबो, पहुंतो मुक्ति पंथ,
सकल पर्व शिर सेहरो, दीवाली पर्व सार,
विधिशुं पर्व आराधतां, पामीए भवपार, ३
नंदीवर्धने सुदंसणा, करे ए संसार असार,
ज्ञानामृत भोजन करो, जिम पामो भवपार,
श्री रुप विजय कविराय विराजतो, माणेक कहे निरधार,
भवसायरथी उद्धरी, आपो शिवपुर सार, ४

(२)

सिद्धारथ ताता, जगत विख्याता, त्रिशला देवी माय,

तिहां जगगुरु जन्म्या, सवि दुःख विरम्या, श्री महावीर जिनराय,
प्रभु लईने दीक्षा, कहे हित शिक्षा, दे संवत्सरी दान,
बहु करम खपेवा, शिवसुख लेवा, कीधो तप शुभ ध्यान १
वर केवल पामी, अंतरजामी, वद कार्तिक शुभ दिस,
अमावस्या जाते, अडधी राते, मुक्ते गया जगदीश,
वली गौतम गणधर, महा मुनिसर, पाम्या पंचमनाण,
थया व्रत प्रकाशी, शिव विलासी, पाम्या मुक्ति निदान २
सुरपति संचरीया, रत्न उद्धरीया, रात थई जिहां काली,
जिहां दीवा कीधा, कारज सिध्या, निशा थई अजुवाली,
सहु लोके हरखी, नजरे निरखी, पर्व कीयो दीवाली,
वली भोजन भक्ते, निज निज शक्ते, जीमे सेव सुवांली ३
सिद्धायिका देवी, विघ्न हरेवी, वांछित दे निरधार,
करे संघ ने साता, जेम जगमाता, एनी शक्ति अपार,
जिम जिन गुण गावे, शिवसुख पावे, सुणजो भाविकजन प्राणी,
तिहां चन्द्र जतीसर, महा मुनीसर, जंपे एहवी वाणी ४

(३)

(राग : शार्दूल विक्रीडित वृत्तम)

पापायां पुरि चारु षष्ट तपसा, पर्यंक पर्यासन,
क्ष्मापाल प्रभु हस्तिपाल विपुल ,श्री लेखशालां गतो,
गोसे कार्तिक दर्शनाग करणे, तुर्यारकान्ते शुभे,
स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं, संस्तौमि वीरं जिनम् १
यद्गर्भापगमनोद्भव व्रत वर, ज्ञानाप्ति भद्र क्षणे,
संभूयासु सुपर्वसन्त तिरहो, चक्रे महस्तत्क्षणात्,
श्रीमन्नाभिभवादिवीर, चरमास्ते, श्रीजिनाधीश्वराः,
संघायानघ चेतसे विदधतां, श्रेयांस्यने नांसि च २
अर्थात्पूर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिधः,
तत्पश्चाद् गणनायका विरचयां, चक्रुस्तरां सूत्रतः,
श्रीमत्तीर्थ समर्थनैक समये, सम्यग्दृशां भूस्पृशां,
भूयाद् भावुक कारकं प्रवचन, चेतश्चमत्कारियत् ३
श्री तीर्थाधिपतीर्थ भावनपरा, सिद्वायिका देवता,
चञ्चच्चक्रधरा सुरा सुरनता, पायादसौ सर्वदा,
या चक्रेऽवम कष्ट हस्तिमथने, शार्दूल विक्रीडितं मे ४

श्री सीमंधर जिन स्तुति

श्री सीमंधर मुजने वाला, आज सफल सुविहाणुंजी,

त्रिगडे तेजे तपता जिनवर, मुज तुठा हुं जाणुंजी,
केवल कमला केली करंता, कुल मंडण कुल दीवोजी,
लाख चोराशी पूरव आयु, रुकमणी वर घणुं जीवोजी १
संप्रति काले वीशे तीर्थंकर, उदया अभिनव चंदाजी,
केइ केवली केई बालक परण्या, केई महिपति सुखकंदाजी,
श्री सीमंधर आदि अनोपम, महाविदेह क्षेत्रे जिणंदाजी,
सुरनर कोडा कोडी मली वली, जोवे मुख अरविंदाजी २
सीमंधर जिन मुखडुं जोवा, हुं अलजायो वाणीजी,
आडा डुंगर आवी न सकुं, वाट विषम अरु पाणीजी,
रंग भरी राग धरी पाय लागुं, सूत्र अर्थ मन सारोजी,
अमृतरसथी अधिकी वखाणी, जीव दया चित्त धारोजी ३
पंचागुली में प्रत्यक्ष दीठी, हुं जाणुं जगमाताजी,
पहेरण चरणा चोली पटोली, अधर विराजे राताजी,
स्वर्ग भुवन सिंहासन बेठी, तुंहीज देवी विख्याताजी,
सीमंधर शासन रखवाली, शान्तिकुशल सुख साताजी ४

श्री पंचतीर्थ स्तुति

श्री शत्रुंजय मुख्य तीर्थ तिलकं, श्री नाभिराजां गजं,
वंदे रैवत शैल मौलि मुकुटं, श्री नेमीनाथ यथा,
तारंगे ऽप्यजितं जिनं भृगुपुरे, श्री सुव्रतं स्थंभने,
श्री पार्श्व प्रणमामि सत्यनगरे, श्री वद्धमानं त्रिधा १
वंदेऽनुतर कल्प तल्प भुवने, ग्रैवेयके व्यंतरा,
ज्योतिष्कामरमंदराद्रिवसती, स्तीर्थङ्करानादरात्,
जंबू पुष्कर धातकीषु रूचके, नंदीश्वरे कुंडले,
येचाऽन्येऽपि जिना नमामि सततं, तान् कुत्रिमाऽकृत्रिमान् २
श्री भद्वीरजिनास्य पद्महृदतो, निर्गम्य तं गौतमं,
गंगा वर्तनमेत्य या प्रविभिदे, मिथ्यात्व वैताढ्यकं,
उत्पत्ति स्थिति सहंति त्रिपथगा, ज्ञानांबुदा वृद्धिगा,
सा मे कर्ममलं हरत्वविकलं, श्रीद्वादशांगी नदी ३
स्वर्णालंकार वल्गान् मणि किरणगण, ध्वस्तनित्यांधकारा,
हुंकारारावदूरी कृतसुकृतजन-व्रातविघ्नप्रचारा,
देवी श्रीअंबिकाख्या जिनवरचरणा-भोजभृङ्गी समाना,
पंचम्यांह्यस्त पोऽर्थ वितरतु कुशलं, धीमतां सावधाना४

श्री नवतत्व भावगर्भित स्तुति

जीवा जीवा पुण्य ने पावा, आश्रव संवर तत्ताजी,
सातमे निर्जरा आठमे बंध, नवमे मोक्ष पद सत्ताजी,

ए नवतत्ता समकित सत्ता, भावे श्री अरिहंताजी,
भूज नयर मंडण रिसहेसर, वंदो ते अरिहंताजी १
धम्माधम्मागासा पुग्गल, समया पंच अजीवाजी,
नाण विन्नाण शुभाशुभ योगे, चेतन लक्षण जीवाजी,
इत्यादिक षट् द्रव्य प्ररुपक, लोकालोक दिणंदाजी,
प्रह उठी नित्ये नमीये विधिसुं, सित्तरिसो जिनचंदाजी २
सूक्ष्म-बादर दोय एकेन्द्रिय, बिती चउरिन्द्रि दुविहाजी,
तिविहा पंचिदा पज्जता, अपज्जता ते विविहाजी,
संसारी असंसारी सिद्धा निश्चय ने व्यवहारजी,
पन्नवणादिक आगम सुणतां लहिये शुद्ध विचारजी ३
भुवनपति व्यंतर ज्योतिषवर, वैमानिक सुर वृन्दाजी,
चोवीश जिनना यक्ष यक्षिणी, समकित द्रष्टि सुरिंदाजी,
भूजनगर महिमंडल सघले, संघ सकल सुख करजोजी,
पंडित मानविजय इम जंपे, समकित गुण चित्त धरजोजी ४

श्री अध्यात्म स्तुति

(१)

पुण्य नी करणी पक्खीना दिवसे, वात अचंभ में दीठीजी
बारे जणीया पोषध करीने, कथलो करवा बेसीजी,
एक कहे मारे मारो स्वामी रुडो, मुजने लाड लडावेजी,
रिसाई भुखी सुई रहेती, सुखडीओ लई आवेजी १
बीजी कहे मारो आजनी राते, उंदरे आटो खाधोजी,
हवे रोटला शाना करीशुं, चोखानी खिचडी रांधुजी,
त्रीजी कहे तुं तो भान विनानी, वखत विनानी उंघेजी,
कामथी तुं तो अंध थई ने, तुजने कांइ नवी सुजेजी. २
चोथी कहे मारो स्वामी भाग्यशाली, नित्य नवा घाट घडावेजी,
आच्छा वस्त्रने वली चोलीया, मोतीना हार पहेरावेजी,
खावा पीवानुं सुख घणुं छे, घरणा हांडला धोवेजी,
पांचमी कहे मारे माथुं घणुं दुखे, मुजने नवी बोलावेजी. ३
छट्ठी कहे मारे माथे धणी, वाते वातमां मारेजी,
दुखना दरिया मारे घणा छे, वली घरमांथी काढेजी,
ज्ञानविमलसूरि एणी पेरे बोले, दुख सुख मति दाखोजी,
धर्म स्थाने वाता करसो तो, कर्म बांधी ने घेर जाशोजी ४

(२)

नारीजी मोटाने कंथजी छोटा, वलता लावे पाणीना लोटा,
पूंजी वीना वेपारज मोटा, करतां आवे घरमां टोटां १

मेरु पर्वत हाथी चडीयो, कीडीनी फुंके हेठे पडीयो,
कीडीना दरमां हाथी पेठो, रत्न कहे में अचरीज दीठो २
सूका सरोवर हंसज महाले, पर्वत उडीने गगने चाले,
शिवसुंदरी कहे वेल धडुके, सायर तरंता झांझते अटके ३
पंडित एहना अर्थज कहेजो, नही तो बहुश्रुत चरणे रहेजो,
श्री शुभवीरनुं शासन पामी, खाधा पीधा न करो खामी ४

(३)

उठी सवेला सामायिक लीधु, पण बारणुं नवी दीधुंजी,
कालो कूतरो घरमां पेठो, घी सघलुं तेणे पीधुंजी,
उठो वहुअर आलस मूकी, ए घर आप संभालोजी,
निज पतिने कहे वीरजिन पूजे, समकितने अजवालोजी १
वली बिलाडे झडप जडपावी, उत्रेज सर्वे फोडीजी,
चंचल छैया वार्या न रहे, त्राक भांगी माल त्रोडीजी,
तेह विना रेंटियो नवि चाले, मौन भलुं केने कहीएजी,
ऋषभादिक चोवीश तीर्थकर, जपीये तो सुख लहीयेजी २
घर वार्शीदु करो ने वहुअर, टालो ओजीसालुजी,
चोरटो एक करे छे हेरुं, ओरडे द्योने तालुंजी,
लपके पाहुणा चार आव्या छे, ते उभा नवि राखोजी,
शिवपद सुख अनंता लहीये, जो जिनवाणी चाखोजी ३
घरनो खुणो कोण खणे छे, वहु तमे मननां लावोजी,
पहोले पलंगे प्रीतम पोढ्यो, प्रेम धरीने जगावोजी,
भावप्रभ सूरि कहे नही ए कथलो, अध्यात्म उपयोगीजी,
सिद्धायिका देवी सानिध्य करेवी, साधे ते शीवपद भोगीजी ४

(४)

सिद्धाचलना संघ कढावो, गिरनारना बिंब भरावो,
आबुजीना चेला थाशुं, काजो काढीने मोक्षे जाशुं १
मारी नोकारवाली सारी, मारा मंत्रि भलेरा भारी,
मारी तुम शुं प्रीतडी लागी, मने मोक्षे पहोंचाडोने भाई २
मारे अवसर व्हेला आवो, सुख संपत झाझी लावो,
साकरीया मेवा छे मीठा, में नजरे आदीश्वर दीठा ३
सोगटडा मांडो ने सोल, नीला पीला राता ने चोल,
वच्चे मेलो परवारीना पासा, जुओ कर्म तणा तमासा ४

(५)

डाले बेठी एक सूडली, तस चांच न आवे,
चण लेवा ने कारणे, समुद्रमां जावे, डाले बेठी एक सुडली १

आप वरण लीली नही, तस चांच छे लीली,
चांचे ते इंडा मुकती, सायरमां झीली, डाले बेठी एक सुडली २
एरे इडां चांप्यां घणां, ते चांप्यां नवि खूटे,
एनि भक्ति जे करे, तेना पातिक छूटे, डाले बेठी एक सुडली ३
हरखविजय पंडित कहे, ए कोण छे सुडी,
एनो अर्थ जे करे, तेनी बुद्धि छे रुडी, डाले बेठी एक सुडली ४

(६)

सोवनवाडी फूलडे छाई, छाब भरी हुं लावुंजी,
फूलज लावुं ने हार गुथावुं, प्रभु ने कंठे सोहावुंजी,
उपवास करुं तो भूखज लागे, उनुं पाणी नवि भावेजी,
आंबिल करुं तो लुखु न भावे, नीवीए डुचा आवेजी १
एकासणुं करुं तो भूखे न रही शकु, सुखे खाऊ त्रण टंकजी,
सामायिक करुं तो बेसी न सकुं, निदां करुं सारी रातजी,
देरे जाऊं तो खोटी ज थाऊ, घरनो धंधो चुकुजी,
दान दऊं तो हाथ ज ध्रुजे, हेये कंपव छूटेजी २
जीवने जमडानुं तेडुं आव्यु, सर्वे मेलीने चालोजी
रहो रहो जमडाजी आजनो दहाडो, शेत्रुंजे जइने आवुंजी,
शेत्रुजे जइने द्रव्यज खरचुं, मोक्षमार्ग हुं मांगुजी,
घेला जीवडा घेलुं शुं बोले, एटला दिवस शुं कीधुजी ३
जाते जे जीवे पाछळ भातु, शुं शुं साथे आवेजी,
काची कुलेर खोखरी हांडी, काष्टना भारा साथेजी,
ज्ञानविमलसूरि एणी परे भाखे, ध्यावो अध्यात्म ध्यानजी,
भावभक्तिशुं जिनजी ने पूजो, समकीतने अजवालोजी ४

श्री बीज तिथि सज्झाय

(१)

(तर्ज : लीली लीबडी हो राज)

सखी मारा चौंकमां रे, उगतो बीजनो चंद्र निरखीये,
चंद्र विमाने शाश्वत जिनवर, प्रणमी पातक हरीये,
मन वचन काया स्थिर करीये तो, भव दरिये झट तरीये, सखी. १
माता पिता सुत सासु ससरो, नावलीयो रुप रेलो,
कारमो ए कुटुंब कबीलो, मलीयो पंखी मेलो, सखी. २
अभिनंदन सुमति शीतल जिन, वासुपूज्य अरस्वामी,
जन्म च्यवन शीव नाण च्यवनना, कल्याणक गुणग्रामी, सखी. ३

वर्तमान चोवीसीए ए दिन, कल्याणक जिन केरा,
अनंत चोवीशी ए अनंत कल्याणक, थाशे एम भले रा, सखी. ४
दुविध धर्म प्रकाश्यो बीजे, कहे प्रभु भवी आधारजो,
ध्यान दोय तजी दोय आदरजो, राग द्वेष दोय हरजो, सखी. ५
नय निश्चय व्यवहार उभयथी, तत्वातत्व प्रकाशे,
बीज दिवस भवी उभय प्रकारे, आराधो उल्लासे, सखी. ६
ए दिन तप जय करतां भावे, नरक तिर्यंच गति वारे,
देव मनुष्य गति पुण्य महोदय, अनुक्रमे शीव सुख सारे, सखी. ७
कर्म बीज बीज दिन तप तपतां, जड मूलथी बली जावे,
सहज कला कला निधि सूरि उदये, जगदानंद सुख पासे, सखी. ८

(२)

बीज कहे भवी जीवने रे लोल, सांभलो आणी रीज रे, सुगुणनर.
सुकृत करणी खेतमां रे लोल, वावो समकित बीज रे, सुगुणनर १ धरजो धर्मशुं प्रीतडी रे लोल, करी निश्चय व्यवहार रे, सुगुणनर,
इह भव परभव भवो भवे रे लोल, होवे जय जयकार रे, सुगुणनर, २
क्रिया तो खातर नांखीए रे लोल, समता दीजे खेड रे, सुगुणनर,
उपशम नीरे सींचीए लोल, उगे समकित छोड रे, सुगुणनर, ३
वाड करो संतोषनी रे लोल, ते पाखल तस ढोर रे, सुगुणनर,
व्रत पच्चक्खाण चोकी ठवो रे, लोल, वारजो कर्म रुपी चोर रे, सुगुणनर. ४
अनुभव केरी मंजरी रे लोल, मोरे समकित वृक्ष रे, सुगुणनर,
श्रुत चारित्र फल उतरे रे लोल, ते फल चाखजो शिष्य रे, सुगुणनर. ५
ज्ञानामृत रस पीजिए रे लोल, स्वाद ल्यो सम तंबोल रे, सुगुणनर.
एणे रसे संतोष पामशो लोल, लेशो भव निधि कुल रे, सुगुणनर. ६
इणविध बीज तुमे सद्हो रे लोल, छांडी राग ने द्वेष रे, सुगुणनर.
केवल कमला पामीए रे लोल, वरीए मुक्तिसुं विवेक रे, सुगुणनर. ७
समकित बीज जे सद्हे रे लोल, ते टाले नरक निगोद रे, सुगुणनर.
विजय लब्धि सदा लेहो रे लोल, नित्य नित्य विविध विनोद रे, सुगुणनर. ८

श्री पंचमी तिथि सज्झाय

(१)

सरस्वती चरण नमी करी रे लोल, प्रणमी सह गुरुपाय रे, सुगुणनर,
पंचमी तप महिमा कहुं रे लोल, चतरु सुणो चित्तलाय रे, सुगुणनर,
पंचमी प्रेमे तप करो रे लाल, १
वीरे स्वयं मुखे वरणव्यो रे लोल, ए तपनो अधिकार रे, सुगुणनर,
कर्म निवारण कारणे रे लोल, शिव सुख लहीये सार रे, सुगुणनर, २

कार्तिक सुद दिन पंचमी रे लोल, पंच वरस पंचमास रे, सुगुणनर,
नमो नाणस्स गुणणो गणो रे लोल, करे चोविहार उपवास रे, सुगुणनर, ३
पडिक्कमणा दोय कीजिये रे लोल, देव वंदो त्रण वार रे, सुगुणनर,
आराधो भावे करी रे लोल, विनय धरी सुविचार रे, सुगुणनर, ४
मति श्रुत अवधि मन:पर्यय रे लोल, केवलनाण उदार रे, सुगुणनर,
ज्ञान पंचमी गुण ज्ञानना रे लोल, परखो मन धरी प्यार रे, सुगुणनर, ५
ज्ञान पंचमी तप कीजिये रे, लोल, थिर करी मन वचन काय रे, सुगुणनर,
परम पद दस्य पामवा रे, लोल, उत्तम एह उपाय रे सुगुणनर, ६
ज्ञान विना किरीया नही रे लोल, किरीया विण नहि ज्ञान रे, सुगुणनर,
ज्ञान किरीया रा जोगथी रे लोल, वरीये अमर विमान रे, सुगुणनर, ७
पईठी अनुभाग प्रदेशथी रे लोल, कर्म बंधन चऊंभेद रे,सुगुणनर,
ज्ञानी निजगुण भाव थी रे लोल, चऊगति करम विच्छेद रे, सुगुणनर, ८
वरदत्त गुणमंजरी रे लोल, आराध्यों तप एह रे, सुगुणनर,
पार भवोदधि पामीयो रे लोल, जई वसीया शिवगेह रे, सुगुणनर, ९
तिम भवी भावे कीजिये रे लोल, पंचमी तप गुणसार रे, सुगुणनर,
पंचमी गति सुख पामीये रे लोल, हंसविजय जय जयकार रे, सुगुणनर, १०

(२)

गुरु चरण पसाउले रे लाल, पंचमी नो महिमांय रे हो आतम,
विवरीने कहीशुं सुणो रे लाल, सुणंता पातक जाय रे आतम,
पंचमी तप प्रेमे करो रे लाल, १
मन शुद्धे आराधतां रे लाल, तूटे कर्म निदान रे हो आतम,
आ भव सुख पामो घणा रे लाल,
परभव अमर विमान रे हो आतम, पंचमी तप २
सयल सूत्र चरना करी रे लाल, गणधर हुआ विख्यात रे हो आतम,
ज्ञाने करी ने जाणता रे लाल,
स्वर्ग नरकनी वात रे हो आतम, पंचमी तप. ३
गुरु ज्ञाने दीपता रे लाल, ते तरीया संसार रे हो आतम,
अजुवाली पक्ष पंचमी रे लाल,
करो उपवास जगीश रे हो आतम. पंचमी तप. ४
नमो नाणस्स गणणुं गणो रे लाल, नवकारवाली वीश रे हो आतम,
पंचमास शक्ति ए उजवो रे लाल, जेम मनने उल्लास रे हो आतम, पंचमी तप. ५
वरदत्त ने गुणमंजरी रे लाल, तप थई निर्मल थाय रे हो आतम,
कीर्तिविजय उवझायनो रे लाल,
कांतिविजय गुण गाय रे हो आतम, पंचमी तप ६

(३)

प्रवचन वचन विचारीयेजी, वली घरे घर्म विचार,
गुरु परंपरा भगवतीजी, सेवीजे सुविलास चतुर नर,
समजो धर्म विवेक, १
मुक्ति महेलनो दीवडोजी, पहलो ज्ञान प्रकाश,
ज्ञान विना तप जप क्रियाजी, नावे फल निरधार, चतुर.. २
एकेन्द्रिय सुत नारकीजी, न करे कवल आहार,
ज्ञान विना जिनजी कहेजी, तेहने तप आचार, चतुर. ३
पृथ्वी पाणी प्रमुखनाजी, थावर भेद अनेक,
प्रगटपणे तेहने नहीजी, पापस्थानक एक चतुर. ४
तो पण अज्ञान पणेजी, लागे सघला रे पाप,
ज्ञानी ने बहु निर्जराजी, भाखे अरिहंत आप , चतुर, ५
दया पाले पारेवडुंजी, डुक्कर शुद्ध आहार,
नागा चौपद सहुं फरेजी, तो पण नही भवपार, चतुर, ६
जाणे जीव अजीवनेजी, वली त्रस स्थावर प्राण,
ते जीवने जिनजी कहेजी, शुद्धपणे पच्चखाण प्राण, ७
रागद्वेष छंडे सहीजी, ज्ञानी निज पण जाण,
ज्ञान शुद्ध क्रिया फलेजी, ज्ञाने होवे उज्ज्वल ध्यान, चतुर. ८
गुण उपयोग छे जीवनेजी, पहेलो ज्ञान प्रकाश,
मानविजय वाचक वदेजी, जुवो जुवो ज्ञान उजास, चतुर. ९

श्री आठ कर्म सज्झाय

प्रभु कर्म लाग्या छे मारा केडले,
घडीये घडीये आतमराम मुंझाय रे, प्रभु. १
ज्ञानावरणीये ज्ञान रोकीयुं दर्शनावरणीये कर्यो दर्शन घात रे, प्रभु. २
वेदनीय कर्मे वेदना मोकली, मोहनीय कर्मे खवडाव्यो मार रे, प्रभु. ३
आयुष्य कर्मे ताणी बांधीयु, नाम कर्मे तो नचाव्यो नाच रे, प्रभु. ४
गोत्र कर्मे बहु रखडावीयो, अंतराय कर्मे तो वाल्यो छे आडो आंक रे प्रभु. ५
आठ कर्म ने जे वश करे, तेने घरे होजो मंगलवामाल रे, प्रभु. ६
आठ कर्मने जे जीतशे, तेनो होशे मुक्तिपुरीमां वास रे, प्रभु. ७
हीरविजय गुरु हीरलो पण्डति रत्नविजय गुण गाय रे, प्रभु. ८

श्री अष्टमी तिथि सज्झाय

(१)

सरस्वती चरण नमी करी, आपो वचन विलास, भवियण,
अष्टमी तप हुं वर्णवुं, करो सेवक ने उल्लास,
भवियण, अष्टमी तप भावे करो, १
आणी हर्ष अपार, भवियण, तो पार पामशो भव तणो,

करशो कर्मनो छेद, भवियण, अष्टमी तप भावे करो. २
अष्ट प्रवचन पालीए, टालीये मदना ठाम, भ.
अष्ट प्रातिहार्य मन धरी, जपीए जिननुं नाम, भ. ३
ज्ञान आराधन तेह थकी, लहीए शिवसुख सार, भ.
आवागमन ते नवि करे, ए छे जगत आधार, भ. ४
एहवो तप तुमे आदरो, आराधो जिन धर्म, भ.
तो तुम छुटशे आपदा, टालशो चउगति भर्म, भ. ५
तीर्थकर पदवी लहे, तपथी नवे निधान, भ.
जुओ मल्ली कुंवरी परे, पामे बहुगुण ज्ञान, भ. ६
ए तपना छे गुण घणा, भाखे श्री जिन इश, भ.
श्री विजयरत्नसूरीशनो, वाचक देवसूरीश, अष्टमी तप भावे करो ७

(२)

आठम कहे आठ मदनो, प्राण मुको ते ठामरे,भवियण हितधरी,
आठ प्रकारे आत्मा, ओलखो तुमे अभिराम रे, भवियण हितधरी १
पडिक्कमणा पोसह करी, तोडो दुखना वर्ग रे, भवियण हितधरी,
समिति गुप्ति सुधा धरी, मेलो सुख अपवर्ग रे, भवियण हितधरी २
अष्टमहा गुण सिद्धना, ध्यावो ते निशदिन रे, भवियण हितधरी,
अष्ट महा सिद्धि संपजे, पहुंचे मनह जगीश रे, भवियण हितधरी, ३
देवनी करो हाजरी, दिल पाक करी मन कोई रे, भवियण हितधरी,
मनरुपी बनावीये, गुरु ज्ञान लगाम जोड रे, भवियण हितधरी ४
शीलनी पाखर नाखीये, तप रुपी खडग हाथ रे, भवियण हितधरी,
क्षमा बखतर पहेरीने, ध्यान कमाण सलोथ रे, भवियण हितधरी, ५
विरति तीर चलावीने, अष्टकर्म मन मोडी रे, भवियण हितधरी,
विषय कषाय जे आकरा, तेना ते मस्तक तोडी रे, भवियण हितधरी. ६
श्री जिन आगल आवीने, मुजरो करो कर जोड रे, भवियण हितधरी,
श्री जिन केरा पसायथी, मोक्ष शहेरे कर जोडरे, भवियण हितधरी ७
आठम दिन शुभ जाणी ने, धर्मना करीए वखाण रे, भवियण हितधरी,
कपटनो कोट उडाडीने, बांजे ज्युं जीत निशान रे, भवियण हितिधरी ८
इणी परे भावशुं, आदरे प्राणी जेह रे, भवियण हितधरी,
लब्धि कहे भवी तस परे, प्रगटे पुण्यनी रेह रे, भवियण हितधरी ९

श्री एकादशी तिथि सज्झाय

(१)

आज मारे एकादशी रे, नणदल मौन करी मुख रहीये,
पुछ्यानो पडुत्तर पाछो, केहने कांई न कहीये, आज. १
मानो नणंदोई तुजने व्हालो, मुजने ताहरो वीरो,

धुमाडाना बाचका भरता, हाथ न आवे हीरे, आज, २
घरनो धंधो घणो कर्यो पण एके न आव्यो आडो,
परभव जाता पालव झाले ते मुजने देखाडो, आज. ३
मगसर सुदि अदियारस मोटी, नेवु जिनने निरखो,
दोढसो कल्याणक मोटा, पोथी जोई जोई हरखो, आज. ४
सुव्रत शेठ थयो शुद्ध श्रावक, मौन धरी मुख रहीयो,
पावकपुर सघलुं परजाल्युं, एहने कांई न दहियो, आज. ५
आठ पहोरनो पोषध करीए, ध्यान प्रभुनुं धरीए,
मन वचन काया जो वश करीए, तो भव सायर तरीये, आज. ६
ईर्यासमिति भाषा न बोले, आडुं अवलुं पेखे,
पडिक्कमणा शुं प्रेम न राखे कहो किम लागे लेखे, ७
कर उपर तो माला फिरती, जीव फरे वन मांही,
चितडुं तो चिहुं दिशी डोले, इण भजने सुख नाही, आज. ८
पौषध शाले भेगा थई ने, चार कथा वली साधे,
काईक पाप मिटावण आवे, बार गणुं वली बांधे, आज. ९
एक उठंती आलस मरडे, बीजी उंघे बेठी,
नदियो मांही कांईक निरसती, जई दरियामां पेठी, आज. १०
आई बाई नणंद भोजाई, नानी मोटी वहु ने,
सासु ससरो मा ने मासी, शीखामण छे सहुने, आज. ११
उदयरत्न वाचक उपदेशे, जे नरनारी रहेशे,
पोषध मांहे प्रेम धरीने, अविचल लीला लेशे, आज. १२

(२)

(तर्ज : व्याव बिदणी बिलखुं)

भर्या निवाणा में झीलण लाग्या, जल में कोगला जे करसी,
इण करणी सुं होय पखाल्यो, अणतोल्या पाणी भरसी,
व्रत बडो रे भाई एकादशी, प्रभुजी रा ज्ञान विना मुक्ति किसी. १
परण्यो बाप बेटी साथे, उपर घमेडो उण रे पडसी,
इण करणी सुं होय कागलो, क्रां क्रां करतो फरसी, व्रत. २
गोखे बेठी दांतण मोडे, परनारियां चित्त जे धरसी,
इण करणी सुं होय भडुरो, विष्टा में मुंडो भरसी, व्रत. ३
भरी सभा में झुठो बोले, कूडी कूडी गवाही जे देसी,
इण करणी सुं होय गधेडो, गली गली भुंकतो फरसी, व्रत. ४
ग्यारस रे दिन माथो धोवे, जुंआ लीखां जो मरसी,
भंगी रे घर बेटी होसी, तारत बोरती फरसी, व्रत. ५
ग्यारस रे दिन लीपण घाले, कीडी मकोड़ी वहां मरसी,

तेली रे घर बदलीयो होसी, दोनो आंखो त्यां बंधसी, व्रत. ६
ग्यारस रे दिन छाणा वीणे, ऊदेइ भांवडी त्यां मरसी,
इण करणी सुं होय रीछणी, वन वन मांहे भमती फरसी व्रत. ७
ग्यारस रे दिन उपवास करीने, कोलो सकरकंद जे भकसी,
इण करणी सुं होय वांदरो, रुंख रुंख पर फरतो फरसी, व्रत. ८
कांदा मूला खाय बटाटा, राते भोजन जे करसी,
इण करणी सुं होय चींचडो, ऊंधे माथे नित टरसी, व्रत. ९
मन मेला थई बाबरा, परनारी ने तकलो फरसी,
इण करणी सुं पडे नरक में, जमडा जेने विदरसी, व्रत. १०
फुच फजीता घाले पापी, कूड़ा कलंक मन धरसी,
इण करणी सुं होय बोकडो, जन्म मरण बहु करसी, व्रत. ११
ग्यारस रे दिन उपवास करीने, दया धर्म दिलमां धरसी,
शुभ रमणी संतति लीला, सुख पालसी बैठा फरसी, व्रत. १२
जिन आगम पर श्रद्धा लावी, मौन धरी तप आदरसी,
सकल करमनो अन्त करीने, शिव सजनी सेजां वरसी, व्रत. १३
मन वच काया वश करीने, एकादशी व्रत आदरशे,
हीरविजयनी शिखडी सारी, सर्वे लेजो उरमां अवधारी, व्रत. १४

श्री रोहिणी सज्झाय

(भरत नृप भावशुं ए - ए देशी)

श्री वासुपूज्य जिणदंना ए मघवा सुत मनोहार,
जपो तप रोहिणी ए, रोहिणी नामे तस सुता ऐ,
श्रीदेवी मात मल्हार, ज्यो, करे तस धन अवतार जयो, १
पद्मप्रभुना वयणथी ए, दुर्गधा राजकुमार जयो.
रोहिणीतप ते भवे ए, सुजस सुगंध विस्तार जयो २
नरदेव सुरपद भोगवी ए, ते थयो अशोकनरिंद जयो.
रोहिणी राणी तेहनी ए, दोयने तप सुख कंद जयो. ३
दुरभिगंधा कामिनी ए, गुरु उपदेश सुणंत जयो.
रोहिणी तप करी दुःख हरिए, रोहिणी भवदुखवंत. जयो. ४
प्रथम पारणा दिन ऋषभनो ए, रोहिणी नक्षत्र वास, जयो.
त्रिविधे करी तप उच्चरे ए, सात वरस सात मास जयो. ५
करो उजमणुं पूर्ण तपे ए, अशोकतरु तल ठाय, जयो.
बिंबरयण वासुपूज्यनुं ए, अशोक रोहिणी समुदाय जयो. ६
ऐकसो एक मोदक भला ए, रुपा नाणां समेत, जयो.
सात सत्यावीश कीजिये ए, वेशे संघ भक्ति हेत. जयो. ७
आठ पुत्र चारे सुता ए, रोगसोग नवि दीठ जयो.

प्रभु हाथे सयंम लह्युं दंपती केवल दीठ जयो.८
कांति रोहिणीपति जिसी ए, रोहिणीसुत सम रुप जयो.
ए तप सुख संपद दीये ए, विजयलक्ष्मीसूरि भूप जयो. ९

श्री पर्युषण सज्झाय

(१)

(तर्ज : हारे मारे ठाम धर्मना साडा पचवीश देश जो ,)

हारे मारे दिवस धर्मना, श्रावण भादरवो मास जो,
ते मांहे श्री पर्व पजुसण, जाणीए रे लोल, १
हारे मारे त्रणसो आठ, दिवसमां कीधा पाप जो,
आठ दिवसमां धोवा, धर्मना पाणीए रे लोल, २
हारे मारे भविक लोको, सर्व मली रंग जो,
उपश्रय देव गुरु, आराधता रे लोल, ३
हारे माारे तप जप पूजा, भक्ति भावना जाणजो,
अजर अमर पद, शिवतरु सुरतरु साधता रे, लोल, ४
हारे मारे छट्ठ अठ्ठम ने, आठ करो उपवास जो,
मासखमण ने पासखमण, तपस्या करो रे लोल, ५
हारे मारे जीव दया ने, ज्ञान दान विस्तार जो,
साहम्मीभक्ति, निर्मल हृदय आदरो रे, लोल, ६
हारे मारे सामायिक, पडिक्कमणा पौषधव्रत जो,
जीवा जोणी, लाख चोराशी खमावीये रे लोल, ७
हारे मारे खमत खामणा, करवा संघ समक्ष जो,
रुठडा साजन माजन ने, मनावीये रे लोल, ८
हारे मारे सात क्षेत्रे, मदद करो भली भात जो,
चंचल लक्ष्मी खर्ची, लाहो लीजिये रे लोल, ९
हारे मारे काया माया, सफल करो भवी जीव जो,
जन्म मरणना दु:खडा, फेर न लीजिये रे लोल, १०
हारे मारे चौगति चुरण, चौथ संवच्छरी पर्व जो,
चोक्खे चित्ते चतुर थई, चुको नही रे लोल, ११
हारे मारे चारे चरणा, चार प्रकारे धर्म जो,
चौथा आराना सुखडा, ते मीलसे रे लोल, १२
हारे मारे पर्युषण कथा, सुणो धरी प्रेम जो,
त्रिविधे (२) पाप कर्म, वोसीरावीये रे लोल,
हारे मारे कर्म निकाचित, क्षय कारण श्री पर्व जो,
आराधक श्री धर्मरत्न पद, ध्यावजो रे लोल, १४

(२)

(तर्ज : जिम जिम अरिहा ने सेवीये रे,)

पर्व पजुसण आवीया रे, धर्म करो भवि लोक सलुणा,
बारे माससमां मोटका रे, आठ दिवस शुभ जोग, सलुणा, १
धर्म ध्यान करो शुभ भावशुं रे, अट्ठाईना व्याख्यान, सलुणा,
चोथ ध्यान छट्ठ अट्ठम करो रे, पडिक्कमणा पच्चक्खाण, सलुणा, २
कल्पसूत्र सुणो भावथी रे, एकवीश बार प्रयत्न, सलुणा,
वीर कहे गौतम प्रत्ये रे, ते जीव मोक्ष लहंत, सलुणा, ३
मंद कषायी आतमा रे, पर्युषणे तरी जाय, सलुणा,
कुमति कदाग्रही बापडा रे, पर्युषणे तरी जाय, सलुणा, ४
बार मासना पारने रे, धोई निर्मल थाय, सलुणा,
पर्वाधिराज पसायथी रे, तिर्थाधिराज थवाय, सलुणा, ५
त्रण पांच दोय आदरो रे, सात आठ करो दूर, सलुणा,
चार पांच दश बारथी रे, धर्मरत्न सुख पुर, सलुणा, ६

(३)

पर्व पर्युषण आवीया रे लाल, कीजे घणुं धर्म ध्यान रे भविकजन,
आरंभ सकल निवारीये रे लाल, जीवने दीजे अभयदान रे, भ. प. १
सघला माससमां मास वडो रे लाल, भादरवो मास सुमास रे, भ.
तेहनां आठ दिन रुयडा रे लाल, कीजे सुकृत उल्लास रे, भ. प. २
खांडण पीसाण गारना रे लाल, नावण धोवण जेह रे, भ.
एहवा आरंभने टालीये रे लाल, वांछो सुख अछेह रे, भ. प. ३
पुस्तक वांचीने राखीये रे लाल, ओच्छव करीए अनेक रे, भ.
धर्म सारु वित्त वावरो रे लाल, हैडे आणी विवेक रे. भ. प. ४
पूजी अर्चीने आणीये रे लाल, श्री सदगुरुनी पास रे, भ.
ढोल ददामा फेरियां रे लाल, मांगलिक गावो गीत रे, भ. प. ५
श्रीफल सरस सोपारीयो रे लाल, दीजे स्वामीने हाथ रे, भ.
लाभ अंनता बतावीया रे लाल, श्रीमुख त्रिभुवन नाथ रे, भ. प. ६
नव वाचना श्री सूत्रनी रे लाल, सांभलो शुद्ध भावे रे, भ.
साहमिवत्सल कीजिये रे लाल, भवजल तारवा नाव रे, भ. प. ७
चित्ते चैत्य जुहारिये रे लाल, पूजा सत्तर प्रकार रे, भ.
अंग पूजा सदगुरु तणी रे लाल, कीजिये हर्ष अपार रे, भ. प. ८
जीव अमारी पलावीये रे लाल, तेहथी शिवखुस होय रे, भ.
दान संवत्सरी दीजिये रे लाल, इण समो पर्व न कोय रे. भ. प. ९
काउस्सग करी सांभलो रे लाल, आगल आपणे कान रे, भ.

छट्ठ अट्ठम तपस्या करो रे लाल, कीजे उत्तम ध्यान रे, भ. प. १०
इणविध पर्व आराधशे रे लाल, लेशे सुखनी कोड रे, भ.
मुक्ति मंदिरमां महालशे रे लाल, मतिहंस नमे कर जोड रे, भ. प. ११

(४)

शीख सुणो सखी माहरी, बोले वचन रसाल,
तुम कुखडीए रे उपज्या, सोभागी सुकुमाल त्रिशला गर्भने साचवे, १
तीखुं कडवुं कषायनुं, खारा खाटानी जात,
मधुरा रस नवी सेवीये, वपु मलय परिहार, त्रिशला. २
अति उनुं अति शीतलडुं, नयणे काजल रेख,
अति भोजन नवि कीजिए, तेल न चोपड रेह, त्रिशला. ३
स्नान विलेपन ताहरुं, मत जाणी दुःखमांय,
हलवे मधुरे रे बोलीए, आशी सुखनी वाण त्रिशला. ४
गाडे वहेले हिंडोलतां, धब धब चीलमचाल,
अति शीयल जग सेवनां, वीणसे पुत्रना काज, त्रिशला. ५
जेम जेम दोहला रे उपजे, तेम तेम देजो बहुमान,
भोग संयोग ने वारजो, होशे पुत्र निधान, त्रिशला, ६
एणी परे गर्भने पालता, पुत्र थयो शुभ ध्यान,
संघमां जय जय सहु करे, हीरविजय गुण गाय, त्रिशला. ७

(५)

(तर्ज : आज मारे एकादशी रे)

आज मारे मन वस्या रे, भविजन पर्व पजुसण मोटा,
होली बलेव ने नोरता जाणो, ए सर्वे खोटा, आज. १
चोथ छट्ठ अट्ठम अट्ठाई, मासखमण पण करीए,
देव गुरु आणा मन धरीये, तो भव सायर तरीये, आज. २
अट्ठाईधर नो पोषह लीजे, गुरु वाणी रस पीजे,
कल्प घरे पधरावो भगते, भावे मन उलसीजे, आज. ३
कुंवर गयवर खंध चडावो, ढोल निशान वजडावो,
कल्पसूत्र गुरुपासे राखी, पूजा भावना भावो, आज. ४
तेलाधर दिन रुडो जाणी, काठीया तेर ने वारो,
संवत्सरी दिन बारसे सुणीने, क्रोध कषायने मारो आज. ५
मन वचन कायाए जे कीधा, पाप कर्म जे कूडा,
मिच्छामि दुक्कडम् दई करीने, पडिक्कमणा करो रुडा. आज. ६
सरल चित्त आणी मनवाली, जे नर नारी भणशे,
कहे लघु बालक नीतिविजयनो, अविचल लीला वरशे, ७

(६)

भवी जीवोना भाग्य उदयथी, पर्व पजुसण आव्या रे,
वर्षनुं सरवैयुं चोखुं करवां, आठ दिवस जणाव्यां रे, भवी. १
कर्म अजीर्ण मटाडवा माटे, पर्युषण दिन रुडा रे,
होली बलेव ने नोरता आदि, लौकिक पर्व छे कुडा रे, भवी. २
जन्म मरणनुं जोर हठाववा, आश्रव द्वार निवारो रे,भवी.
माया ममतानुं मूल कारण, मोह तिमिर निवारो रे, भवी. ३
कर्म कादवने शोषवा माटे, शास्त्रमां तपस्या वखाणी रे,
ज्ञान अग्निनो दाह लगाडी, कर्म फोडो जेम धाणी रे, भवी. ४
निवृत्ति चित्तनी करवा सुणजो, कल्प सिद्धांतनी वाणी रे,
जेम उधारना सरवाला खेंची, काढज्यों वर्ष कमाणी रे, भवी. ५
उधार बोजो ओछो करजो, जो जो न थाय देवालुं रे,
मनुष्य जन्ममां जे नथी करतां, तेनुं तो थाय भोपालुं रे, भवी. ६
मुद्रा लेख प्रभुं वीरनो जाणी, जीवोने निर्भय कीजे रे,
नवविध भावोनो लोच करीने, व्याख्यान नव सुणीजे रे, भवी.७
समान धर्मनुं वात्सल्य करवुं, भक्ति भाव धरीने रे,
गुणनुं राग गुण राग करीने, दुखनी दीनता हीजे रे, भवी. ८
क्षमापना करो सर्व जीवो ने, अंतर वैर विचारी रे,
प्रद्योतन नृपने उदयन भूपे, जेम कर्या तेम धारी रे भवी. ९
निर्मल करवा त्रण शल्योने, अठ्ठम तपस्या भलेरी रे,
नागकेतु परे शम दम राखी, जेम न थाय भव फेरी रे, भवी. १०
वार्षिक दिनना पाप सडानुं ओपरेशन चित्त धरजो रे,
प्रतिक्रमण संवत्सरी करीने, निर्मल चेतन करजो रे,भवी. ११
आत्मिक गुणने विकसित करवा, देवाधिदेव जुहारो रे,
सद् द्रव्य सात क्षेत्रथी पूरी, जिन आणा शिर धारो रे, भवी. १२
आवक जावकना खाता तपासी, शान्तिना बीज रोपावो रे,
जैनशासननो डंको देवाडी, जैनधर्म दीपावो रे, भवी. १३
सर्टिपीकेट सद्गुरुनुं लईने, भवनुं भ्रमण निवारो रे,
भवसागरथी पर उतरता, नाविक ए तारनारो रे, भवी. १४
पंच कृत्योथी पर्व उजवीये, धर्मनी पुष्टी वधारी रे,
नीतिविजयनो उदय करीने, मेलवीये शीवनारी रे, भवी. १५

श्री वर्धमानतप सज्झाय

(१)

मोरा चेतन हो कहुं अनुभव वात के, सांभल स्थिर थई मित्र तुं,
जिम पाम हो तुं शिवसुख सार के, क्षणमां होय पवित्र तुं, १
तप आंबिल हो करजे वर्धमान के, विघ्न विदारण केसरी,
अष्ट सिद्धि हो आणिमादिक थाय के, प्रगटे ऋद्धि परमेश्वरी, २

भय साते हो तस दूर पलाय के, आंबिले बली नही द्वारिका,
देव सानिध्य हो करे हरे सहु कष्ट के, मंत्र तंत्र फलकारका, ३
मयणासुंदरी हो श्रीपाल नरेश के, ए तपथी सुखीया थयां,
केई सेव्यो हो अतप सुर वृक्ष के, भक्ति मुक्ति पदवी लह्यां, ४
नवकारशी हो तोडो एकसो वर्ष के, नरकायु सुरनुं करे,
तेम पोरसी हो वर्ष एक हजार के, अयुत साढ़पोरसी हरे, ५
एक लाख हो पुरिमढ़ हरंत के, एकाशन दश लाखनुं,
निवी करता हो क्रोड एक कपाय के, एकलठाणा दश क्रोडनुं, ६
कापे सो क्रोड हो वर्ष एकलदत्ति के, हजार क्रोड वर्ष आंबिले,
उपवासे हो दश सहस्त्र क्रोड के, नरक आयुष तुं कापीले, ७
ए व्याख्या हो मध्यम फल जाण के, केवल लहे उत्कृष्टथी,
दशधारो हो ए असि सूर्यहार के, मुष्टि ज्ञाने ग्रहो मुष्टिथी. ८
नमो तवस्स हो गणो दोय हजार के, खमासमणा बार छे,
गणो लोगस्स हो बार काउसग्ग रूप के, साचो कर्म कुठार छे. ९
यथाशक्ति होकरो तप अनुकुल के, संजम श्रेणि आदरो,
तप तपो हो वर्धमान परिणाम के, धर्मरत्न पद अनुसरे, १०

(२)

प्रीतम सेंती विनवे, प्रमदा गुणनी खाण, मेरे लाल,
अवसर आव्यो साहिबा, करशुं तप वर्धमान, मेर लाल,
आंबिल तप महिमा सुणो, १
बहुंत गई थोडी रही, कीधा बहुला स्वाद, मेरे लाल,
पिंड पोष्यो बहु लालचे, हवे छोडो उन्माद, मेरे लाल, आंबिल, २
खाडी त्रण क्रोड रोम छे, पोणा बे बे रोग, मेरे लाल,
देहना दंड छे एटला, दूर करो सब रोग, मेरे लाल, आंबिल. ३
षट कोटीनी उपरे, साडा बार लाख प्रमाण, मेरे लाल,
आंबिल तीव्र हुताशने, काया कंचनवान, मेरे लाल, आंबिल. ४
सवा चौद वरस लगे, उपवास शतमान, मेरे लाल,
खडग धारा व्रत पालशुं, धरशुं जिनवर आण, मेरे लाल, आंबिल. ५
नाण मंडावी भावशुं, सामी सामण साथ, मेरे लाल,
उजमणा करवा भलां, पूजशुं त्रिभुवन नाथ, मेरे लाल, आंबिल. ६
नियाणुं करशुं नहि, समता भाव उदार, मेरे लाल,
धर्मरत्न आराधवा, अमृत क्रिया विचार, मेरे लाल, आंबिल. ७

श्री सिद्धचक्र सज्झाय

(१)

गुरु नमतां गुण उपजे, बोले आगम वाण,

श्री श्रीपाल ने मयणा, सदाये गुणखाण,
श्री मुनिचंद्र मुनीसर, बोले अवसर जाण, श्री. १
आंयबिल नो तप वरणव्यो, नवपद नवेरे निधान.
कष्ट टले आशा फले, वाधे वसुधावान, श्री. २
रोग जाए रोगी तणा, जाये शोक संताप,
व्हाला वृंद भेला मले, पुण्य वधे घटे पाप श्री, ३
आसो शुदि सातम थकी, तप मांड्यो तनु हेत,
पूरो तप पूनम लगे, कामिनी कंत समेत, श्री, ४
चैत्र शुदि सातम थकी, नव आंयबिल निरमांय,
इम एकादशी आंयबिले, ए तप पूरो थाय, श्री, ५
राज्य निकंटक पालतां, नव शत वरस वीलीन,
देशविरति पणुं आदरी, दीपाव्यो जगजन, श्री, ६
गजरथ सहस ते नवभला, नव लाख तेजी तुखार,
नवकोडि पायदल भलुं, नव नंदन नव नार श्री, ७
तप जप क्रिया उजवी, लाधुं नवमुं स्वर्ग,
सुर नरना सुख भोगवी, नवमे भव अपवर्ग, श्री, ८
हंसविजय कविरायनो, जिम जल उपर नाव,
आप तर्या पर ने तारवे, मोहन सहज स्वभाव, श्री. ९

(२)

मारा हाथमां ते नवकारवाली, मने अरिहंतनो आधार जो,
मने सिद्धचक्रनो आधार जो, मने भगवंतनो आधार जो. १
सासु चाली सुथार घरे चाली, लावी पेटीमां साप जो,
उठो वहुवर घरेणा पहेरो, हो गई फूलनी माल जो. २
चाली चाली दरजी घरे चाली, लावी कपडामां साप जो,
उठो वहुवर कपडां पहेरो, हो गयो नवसेरो हार जो, ३
चाली चाली कुंभार घरे चाली, लावी घडामां सांप जो,
उठो वहुवर पाणी छाणो, हो गई फूलनी माला जो, ४
उठो वहुवर सेलज करवा, नदीए बोला नीर जो,
सासुए वहुने धक्को मेल्यो, वहु पहोच्यां पहेले तीर जो, ५
ज्यारे सासुए धक्को दीधो, धरती धर्मनुं ध्यान जो,
सासु उभा टगमग जोवे, वहु पहोच्यां देवलोक जो ६
नवपदजीनुं ध्यान धरतां, घर घर नव निधान जो,
रुपविजय गुरु एणी पेरे बोले, सोहीए सोवनवान जो, ७

श्री श्रीपाल-मदनमंजुषा सज्झाय

व्हाणमां रुवे छे मदनमंजुषा, करती अतिशे विलाप रे,

पियुजी पियुजी झंखे घणुं, धरती मनमां संताप रे, व्हाणमां. १
मध्य दरिये व्हाण चलावता, उदय थया सर्व आज रे,
पड्या पियु आ समुद्रमां, अबला थई आपो आप रे, व्हाणमां. २
खरो वैरी थयो आ वाणीयो, जेणे कीधो कालो केर रे,
निराधार मुकी ते मुजने, लीधुं किया जन्मनुं वैर रे, व्हाणमां. ३
मुज रुपे मोह्यो ते पापीयो, कुबुद्धिनो करनार रे,
काली राते ते मुज कंथने, नांख्या समुद्र मोजार रे, व्हाणमां. ४
ऊंचे आभ ने नीचे नीर छे. अंधारी छे तेमज रात रे,
नजरे न देखु मारा नाथने, पाम्या समुद्र विघात रे, व्हाणमां. ५
दूर रह्यां पीय सासरा, तुटी पड्यो जन्म आधार रे,
प्रभुजी विणा मारुं कोई नही, छो तुम जगनाथ आधार रे, व्हाणमां ६
कुशल करो मुज कंथने, छो प्रभु दीनदयाल रे,
वेला पडी विषम दुखनी, हुं छुं अज्ञानी बाल रे, व्हाणमां. ७
अन्नजल लेवा ते मुजने, आजथी करु छुं पच्चखाण रे,
ध्यान धरुं जिनराजनुं, वांछु प्रभुजीनी छांय रे, व्हाणमां. ८
हीरविजय गुरु हीरलो, वीरविजय गुण गाय रे,
विनयविजय गुरु राजीयो, तेहना वंदु नित्य पाय रे, व्हाणमां. ९

श्री श्रीपाल राजा पूर्वभव सज्झाय

(तर्ज : पहले भवे एक गामनो रे,)

हिरण्यपुर नामे नयरमां रे, राय नामे श्रीकांत,
श्रीमती नामे राणी तेहनी रे, शुद्ध समकितवंत रे, प्राणी,
आराधो सिद्धचक्र, जिम लहिये सुख अभंग रे, प्राणी, आराधो सिद्धचक्र. १
राजा मिथ्यामति अति घणो रे, करे हिंसा ते कुजात रे, प्राणी २
एक दिन शिकारे जावता रे, सातसो उल्लंठ साथ,
काउस्सग्ग ध्यानमां स्थिर रह्यां रे, मुनि देखे नरनाथ रे, प्राणी. ३
हांसीथी श्रीकांत राजा कहे रे, कुष्ट रोगे पीड्यो ऐह,
उल्लंठ सातसो एम सुणी रे, पीडे मुनिवर देह रे, प्राणी. ४
ताडना करे मुनिने घणी रे, जेम जेम उल्लंठ लोक,
तेम तेम राजी हुवे राजा रे, बांधे पापना थोक रे, प्राणी. ५
एक दिन शिकारे एकलो रे, गयो राजा धरी प्यार,
मृग आव्यो हाथमां रे, भूल्यो मारग तेणीवार रे, प्राणी,६
नदी नजीक आवता रे, देखी मुनिवर एक,
काने झालीने जलमां बोलतो रे, पाडे पुकार अनेक रे, प्राणी. ७
एक दिन झरुखे बेसीने रे, नगर निहाले राय,
भिक्षार्थे भमतो मुनि देखीने, राजा दिल दुभाय रे, प्राणी. ८